ज्ञानतरङ्ग ॥

گیان ترنگ

जिसको

शाहजहांपोरीय सरहीग्रामनिवासि कायस्थवंशो-
द्भव बख्शीरामात्मज मंगलदास ने अत्युत्तम
तीन खण्डों में निर्मित किया

जिसके

प्रथम खण्ड अर्थात् ज्ञानतरंगमें मन बुद्धि के सम्बाद
द्वारा प्रश्नोत्तर की रीतिसे संसार और तज्जनित प-
दार्थ के अनित्यत्वका वर्णन–द्वितीय खण्ड अर्थात्
मंगलबिनोदमें सगुणपक्ष निर्बाण शिक्षाका सविस्तार
वर्णन-तृतीय खंड अर्थात् सर्वसिद्धांत सप्तशतिका में
प्रकृति पुरुष का सम्यक् बिचार वेदांत ज्ञान उत्तम २
छन्दों में वर्णित है

वही

आर्य्यजनपूजित वैदिकमततत्पर श्रीमान् मुंशी
नवलकिशोरने आर्य्यावर्त्तनिवासिज्ञानाभिलाषियों
के हितार्थ

लखनऊ

स्वकीय यन्त्रालय में मुद्रित करवाया
जून सन् १८८६ ई० ॥

दूसरीबार ३०००

इस मतबे में जितने प्रकारके वेदान्त भाषाकी पुस्तकछपीहैं उनमेंसे कुछ इसमें लिखी हैं ॥

——※——

योगवाशिष्ठभाषा

दोभागोंमें जिसमेंवशिष्ठजीने रामचन्द्रजी से वैराग्य,मुमुक्षु,उत्पत्ति स्थिति,उपशम, निर्वाणादि छः प्रकरणोंमें आत्मयोगब्रह्मज्ञान लखाकर सन्देहदूरकियाहै,और यह पुस्तक आदिकविबाल्मीकिजीकीबनाईहुईहै कि उन्होंने भरद्वाज से उपदेश कियाहै संस्कृतमें श्लोकबद्धथी पर पहले जब यह भाषा ग्रन्थ हमको मिलाथा भाषा इसकीठीक न थी सो कारख़ानेकी तरफ़से पंडित प्यारेलालजीसे इसकी बोलियां सुधरवाकर और उनके पुनः अवलोकन से छापागया जिससे यहग्रन्थ अत्यन्तसुगम होगया ॥

पारसभाग

जिसमें वेदांतमतानुसार काम,क्रोध,मद,लोभ, मोहाहंकारके नाश का उपाय और दान, व्रतकरनेके लाभ औरप्रीति,दया,सत्यासत्य, चोरी ईर्षादि बहुतसे देहसम्बंधी कर्मोंका निर्णय,इतिहास, कथा औरदृष्टांत युक्तहैं जो छापेख़ानेको अयोध्यानिवासि युगलानन्यशरण वैकुण्ठवासी के पुस्तकालय से उनके स्थानापन्नमहात्मा जानकीवरशरणजीके द्वारा बड़े परिश्रमसे प्राप्तहुई अब हम थोड़ीसी बातें इस पुस्तक के अन्तर्गत बिषयोंकी महात्माओंकी रुचिकेलियेलिखतेहैं साधनके कालकाबर्णन, आत्मसत्ताके अभ्यासका बर्णन, जीवकी सेना, जीवका स्वभाव,जीवकी पराधीनता का बर्णन, भगवत्कीपहिंचान,भगवत्की निर्लेपताका कथन, तत्व औरनक्षत्रोंका व्याख्यान,मायाकाबिस्तार,छल औरउसका खंडन, परलोककी पहिंचान, मृत्युका कथन, जीवकी अखण्डताका बर्णन,प्राण चेतना, चैतन्य कलाकी कथा,यममार्गके कष्ट,नास्तिकोंकेमतकाखण्डन, भगवत्की प्रतीति,आचारधर्म, ज्ञानदेने,दानब्रतकरने, पाठकरने,ध्यान लगाने, स्मरणकरने, साधुसंगति,एकांत में भजनकरने का बर्णन,कठोर वचनके त्यागनेकाकथन,कामबासना और इच्छाकेत्यागकरनेके शुभफल, अधिक बोलनेके बिघ्न,क्रोध,ईर्षा, माया की प्रीति,तृष्णा, कृपणता के



अथ ज्ञानतरंग ॥

—०—

सो० ॥ शीतनाथकीबाल तासुतनयशिरचन्द्रधर । बाँधवता-रककाल तिहुँपुरपूज्यसुविघ्नहर ॥ बन्दत तवपदधूरि करौ कृपा वारणबदन । उपजैआनँदभूरि देहुसुमति हरिकुमतितन ॥ दो० ॥ हैअखण्ड अविनाशजो पुरुषपुरातनईश । वेददेव मानसउरग ध्यावत जाहिमुनीश ॥ चौ० ॥ वेदचारि जेसबजगजाने । ऋग यजु साम अथर्व बखाने ॥ जोऋगवेद सोऔरबतावै । यजुर्वेद कुछ औरसुनावै ॥ सामवेदकी अकथकहानी । समुझहिंचतुर न जाइ बखानी ॥ कहैअथर्वण आनप्रकारा । एकब्रह्मकृत चारिबिचारा ॥ दो० ॥ चारौध्यावत एकही बरणतगुणगंभीर । ज्यहिमारग सचु-पावज्यहि गहेसुमारगधीर ॥ चौ० ॥ नहिंआश्चर्य बिबुधमनलावैं । चारौमारग सत्यबतावैं ॥ ऋषयतपेश्वरादि संन्यासी । वैष्णवमु-ड़िया औरउदासी ॥ निजमति सरिसताहि सबगावैं । कोऊतासु पार नहिंपावैं ॥ देवसुरेश आदि बुधिमाना । गावहिंजासु प्रताप प्रमाना ॥ शेषसहसयुग रसनाजाही । बरणतजाहि नअन्तक-हाही ॥ व्यासआदि मानस तनुधारी । विविधभांति जिनकथा पसारी ॥ तिनहुँनभेदपाव ज्यहिकेरा । तपकीन्होसहिदंडघनेरा ॥ निशिचरआदि महाबलवाना । यवनादिक जे अधिक सुजाना ॥ जिनकी संज्ञा असुरन माहीं । वेदपन्थडोलतते नाहीं ॥ विविध

भांति तिनखोजलगायो। जाकरकतहुं खोजनहिं पायो॥ अपरौ चतुर जगत बहुतेरे। यतनकिये ज्यहिहेतु घनेरे॥ पाव न जासु खोज कहुंभांती। जासुनाम हरजप दिनराती॥ दो०॥ जोपरमातम एकरस व्यापक जलथल माहिं। अजयअनीह अमानज्यहि द्वैतभाव कछुनाहिं॥ तासुचरण बन्दौंसमुद देहुसुमति करतार। नशैसकलअघ कालिमा बाढ़ैबुद्धिबिचार॥चौ०॥ पुनिबंदौंअजचरण गुणाकर। कुमतितिमिरकहँ ज्ञानदिवाकर॥ ज्यहिबहुभांति सृष्टिउपजाई। अतिश्रमकरि रचिरुचिर बनाई॥ सेवतजासु कमल पद बानी। करतजो अज्ञानी कहँज्ञानी॥ सचराचरसमस्ततनुधारी। रचेकमल.भवसकल बिचारी॥ तासुपदारविंदशिर नाऊँ। हरैकुमति निर्मल बुधिपाऊँ॥ पुनिप्रणवों गरुड़ासन स्वामी॥ कृपाउदधि उर अन्तर्यामी॥ सदादास निजरक्षा करई। सुखद सदैव दुःखबहु हरई॥ जबजब असुर अनीति प्रचारैं। धर्म क्रियाकर मूल उखारैं॥ निन्दैं वेद विघ्न मखआधा। दुष्ट अनेक लगावैं बाधा॥ तबतब मनुजरूप करि धारा। मारिखलन पुनि धर्म प्रचारा॥ लक्ष्मीजासु चरणनित सेवै। महा अनंद बंदिपद लेवै॥ थावर जंगम जीवघनेरे। रक्षकरमानाथ सबकेरे॥ दो०॥ ताकारणमायापते विष्णु पुरातनरूप। बन्दौं पादसरोज तुव दे बुधि तिहुंपुर भूप॥ चौ०॥ पुनिबन्दौं शंकर सुखकारी। चन्द्रभालजो उमाबिहारी॥ भोलानाथ कृपाअबकीजै। हरिदुखकुमति सुःखबुधि दीजै॥ फिरिविनवों शारदा भवानी। कुमतिनाश निर्मलकर बानी॥ जाहिप्रसन्न गिरातू होई। यश भाजन जगमें भोसोई॥ दो०॥ इष्टदेवमम कीशपति महाबीर सुखदाय। हरौ विघ्नदुख दासके सुमति देहु कपिराय॥ लहो विभीषण राजभल अरु सुग्रीव कपीश। तवदाया दायानिधे महाबीर ममईश॥ चौ०॥ बन्दौं गुरू पिता अरु माता। ज्ञान सुमति अरु जन्मके दाता॥ मित्रआदिजेममहितकारी। प्रणवोंतिनकेचरणबिचारी॥ कोविद भूसुर जेजगमाहीं। जिनकेशत्रु मित्रकोउनाहीं॥ तिन

के चरणकमल धरि ध्याना। निर्णयकरौं मनोहर ज्ञाना ॥ दो० ॥ वर्तमान अरु भूतकवि होनहार जेकोय । प्रणवोंसबके पदपदुम कृपाकरौ अब सोय ॥ चौ० ॥ दुष्ट प्रकृति जिनकी जगमाहीं। परभल जेनहिं देखि सकाहीं ॥ और के यशहि जे दोष लगाव-हिं। धर्मकथा पढ़ँ भूलि न जावहिं ॥ जो चोरी अपकारीपावहिं। तौ निज देवहिं अजा चढ़ावहिं ॥ यहि प्रकार औरौ खलकेते । बर्णन करौं कहां लगि तेते ॥ बन्दौं ते सब निज हित लागी। होहु प्रसन्न सकल छल त्यागी ॥ निज कर्त्तव ममहेतु बिसारी। देहु अशीष मनोरथकारी ॥ बिधि निर्माण सृष्टि जहँताई । प्रण-वों सबहिं सुप्रेम बढ़ाई ॥ मोहिं प्रसन्न चराचर होहू । आशिष देहु सुखद करि छोहू ॥ दो० ॥ पुनि अब बन्दौं शारदा जो सुधि बुधिदातार। सदा सहायक होहु अब बरणौंग्रन्थ बिचार ॥ चौ०॥ संवत विक्रम करौ बिचारा । हनुमत पिता शत्रु पतितारा ॥ नि-राकार गामी महिधारी ॥ अब शाकः कहँ अग्रबिचारौ । रावण रिपु अरुदंति समेता । ऋषय धरायुत कवि गनिलेता ॥ माधव अक्षय तीज शशिबारा। तादिन ग्रन्थलीन अवतारा ॥ अबहौंनाम कहौं शुभ याको। कविजन अर्थ बिचारौ ताको ॥ चाहत जाहि सुभग योगीजन । प्रथमहिं ताहि लिखौ स्थिरमन ॥ तापाछेलै उदधि हिलोरा। सुन्दर सुखद नाम कविजोरा ॥ राज्य सुभग गौरंड बिराजै। नीति सहित परजा सुखराजै ॥ दो० ॥ अबधरि ध्यान प्रवीणजन सुनो पुरातन ज्ञान। मनको बुद्धि प्रबोधजिमि मनमानी परमान ॥ एक समय मन बुद्धिद्वउ भयउ एकढिग आय। मन पूछै तब बुद्धिसों कहुतू मोहिंबुझाय ॥ (मनउवाच) चौ० ॥ कहुबुधि कबते ईश्वर भयऊ। कबते सकल सृष्टि निर्म-यऊ ॥ ब्रह्मा बिष्णु सुशंकरजोई । का ईश्वर कहियतहै सोई ॥ (बुद्धिरुवाच) सुनमन ईश्वरकीन प्रमाणा । आपहि आपभयो निर्माणा ॥ भेदकाहु पायोनहिं वाको। रूपरेखकहुंगेह न ताको ॥ अजय निरंजन अगुण अपारा । अगजग दुहूंबातते न्यारा ॥ नहिं

मानस नहिं पशु नहिं देवा । नहीं भुजंग करिय ज्यहि सेवा ॥ व्यापक सकल सृष्टिमहँ ऐसे । शोणित सब शरीर महँ जैसे ॥ सबके गुण अवगुणसो देखै । पाप पुण्यकी लयखनी लेखै॥ पापी नहिं धर्मातम सोई । चाहत जौन तुरतसो होई ॥ जोतुम ब्रह्मा विष्णु बखाने । शंकर कहँ ईश्वर करिजाने ॥ तेपरमातम पद अधिकारी । सो निर्णय सबकहव अगारी ॥ अब सुन ज्यहिबिधि सों येभयऊ । जौनी बिधि ईश्वरपद लयऊ ॥ अरु ज्यहिभांति सृष्टिनिर्माणा । करिचौरासीयोनि प्रमाणा ॥ जवनधरा ब्रह्माण्ड पतारा । सत रज तम गुण कोउ न प्रचारा ॥ ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर नाहीं । गणपति फणपति कोउ न तहांहीं ॥ अग्नि बायु जलदेव न नागा । वेद ग्रंथ कोउ नहिं अनुरागा ॥ नहिं मानस नहिंसर्प कराला । जीवजंतु नहिंकाक मराला ॥ दो० ॥ विद्या चौदह तबनहीं नहिं हनुमत न सुरेश। नहिं नारद शारद चतुर नहींभये असुरेश ॥ चौ० ॥ बरुणकुबेर न तब यमराजा । जाति धर्म नहिं एकौसाजा ॥ तपीजपी नहिं मुनि संन्यासी । उदय न चन्द्र सूर सुखरासी ॥ सकल पसार तिहूंपुर जोई । तब न कछू जानो मनसोई ॥ इन्द्रीआदि ज्ञान विज्ञाना । मोहक्रोध कछु नाहिं बखाना ॥ तब निज एक चराचर साईं । निराकार महँ बैठगुसाईं ॥ स्वइ परब्रह्म वेद जो गावै । बार बार ज्यहि शम्भु मनावै ॥ इच्छा कुछ ताके जो आई । सोमाया यह जगत कहाई ॥ फिरिके सुखद शब्दयकबोला । ओंकार यहमन्त्रअमोला ॥ दो० ॥ ताते ब्रह्मा विष्णु अरु उपजे शुभत्रिपुरारि । निराकार महँ बासलिय तीनोंजन सुखकारि ॥ चौ० ॥ मायाबहु बिचारिकरिहारी । ताबश भयो न एक मुरारी ॥ तब ओंकार वेदलै आई । तिन कहँ दै यहिविधि समुझाई ॥ कह्यो सृष्टिकी रचना करहू । आज्ञावेद शीशपर धरहू ॥ ब्रह्महि कीन्ह बनावनहारा । शंकर शिरहन्तक पदधारा ॥ बिष्णु महा ज्ञानी गुणरासी । प्रतिपालक भो रमाबिलासी ॥ पांच तत्त्वकरि सृष्टिउपाई ।

बिबिध भांति कीन्हीनिपुणाई ॥ तब त्रैगुण दिय वेद बताई। ब्रह्मा रजगुण लीन्हसिधाई ॥ तमगुण शिव किय अंगीकारा। सतगुण हरि तनु कीन्हप्रचारा ॥ दो०॥ यहि बिधि तिहुंगुण तिहुं पुरुष एक एक महँ लीन। ब्रह्मपुरी महँ बैठि पुनि विश्व रचन चित दीन (मनउवाच)॥ चौ० ॥ जो तुम कहौ ब्रह्मपुरनामा। जहां बिरंचि कीन्ह निजधामा ॥ का सो पुरी रहै बिधि आगे। बैठि जहां निज कारज लागे (बुद्धिरुवाच) प्रथम ब्रह्मपुर लीन बनाई। तापाछे पुनि सृष्टिउपाई ॥बरुण कुबेर इन्द्र यमराजा। अग्नि वायु शशि सूर समाजा ॥ धरा पताल स्वर्ग इत्यादी। रचे देव अरु दैत्यबिषादी ॥ मनुज उरगपशु खग सुबनाये। वेदधर्म कहि सकल बुझाये ॥ जाकहँ जौन ठाम बिधि दयऊ। तहां सुशोभित सो पुनि भयऊ ॥ यहि बिधि सृष्टि सकल उपजाई। बहुत भांति करि बिधि निपुणाई (मनउवाच) दो० ॥ प्रथम कहा तुम कहौपुनि विष्णु भयो जिमिईश। सो अब मोहिंबिचारि कहु नावों तव पद शीश (बुद्धिरुवाच) सामवेद यहकहतहै तीनिबातको ज्ञान। तत्त्व मसीये तीनि पदजानत कोइसुजान॥ चौ ० ॥ तत्पद ईश महा सुखकारी। जीव भयोत्वंपद अधिकारी॥ असिपद ब्रह्मजो प्रथम बखाना। निर्गुण निराकार भगवाना ॥ जाहि जपहिँ हरि हर विधि देवा। निशि दिन जासु करैं अति सेवा॥ सबमें लिप्त सबनते दूरी। सब जीवनकर जीवनमूरी ॥ दो० ॥ ये तीनों पुनिएकहैं भेद नहींहै नेक। जिमि छाया द्रुम जगतमें कोकरि सकै विवेक ॥ चौ० ॥ भयोपरन्तु भेदयहि तेरे। भाषेकविन सो लखेयनेरे॥ हरिमाया ज्यहिजगत नचायो। काहू जीव जीतिनहिँ पायो ॥ भे मायाबश बिषय बिलासी। तमगुण गहे भये दुखरासी ॥ आपुहिभूलि मया लपिटाने। मोह आदि जिनदेह समाने ॥ सुनुमनते सबजीव बखाने। कर्त्ताक्रिया कर्म नहिँजाने ॥ ज्यहि मायानिज बशकरि लीन्हो। बिबिध भांति बिष जीवहिदीन्ही ॥ तमरजत्यागि गहोगुण साँचा। बिषय राग

मन जासु न राँचा॥ कामक्रोध मोहादिक बांधे। आपनपद निज करतल सांधे॥ सो सच्चिदानन्द गुणरासी। तत्पद कही सो रमा बिलासी॥ यहिबिधि विष्णुईश पदपायो। ज्यहियश वेदपुराणन गायो॥ स्वइ अवतार सृष्टिमहँ धरई। बिबिध भांति लीला सो करई॥ जब बहुपाप धरा अधिलेई। सकैन भार पाप सोखेई॥ तब नारायण पास पुकारै। बिबिध भांति अस्तुति अनुसारै॥ तासु टेरसुनि रमाविहारी। धरैंमनुज तन जनदुख हारी॥ ज्यहि बिपरीत वेदतेपावैं। ताकहँ हति यमलोक पठावैं॥ देइबताइ सुपंथ जीवकहँ। बहुज्ञानी गुणखानि जगतमहँ॥ दो०॥ अब सुनु असिपद ब्रह्मको निर्णयमन चितलाय। जाहिसुने संदेहतुव बिबिध भांतिबहिजाय॥ असिपद पूरणब्रह्महै निराकार जुनिरेह। व्यापक सबजगमें रहै सत्यजानु मनयेह॥ चौ०॥ जीवईश दूनों महँ व्यापै। ज्यहि बहुभांति सुवेद प्रलापै॥ ईशजीवजो समकहि दीजै। तौ बड़दोष शीशपर लीजै॥ तत्पदमनो सिन्धु परमाना। बिंदु समान जीव अनुमाना॥ असि पद मनो नीर बुधिमाना। दोनोंमांझ समान समाना। अथवा तत्पदज्यों नरभूपा। त्वंपदहै किसानके रूपा॥ मानस असिपद कहतसुजाना। यहिबिधि तीनोंपद परमाना॥ निजआतम खोजैजो भाई। सो निरगुण पद महँठहराई॥ श्रद्धा सहित विष्णु लवलावै। सोई सगुण पंथ कहावै॥ दो०॥ दूनोंपंथ पुनीतअति भक्तिमुक्ति दातार। अब जो मनसंदेह कछु कहुसो कहौंबिचार॥ (मनउवाच) अधिक भयो संदेहम्वहिँ अबसुनु बुधि मनलाय। करि बिस्तार बताइये सब शंका मिटिजाय॥ भाषोसबमें एकरस पारब्रह्म भगवान। द्वैतभाव वाके नहीं सो मानी परमान॥ अब कहु रूपस्थूलतें ईश धरेहैजोय। कैसेवाकी देहमें तिहुँपुर बर्तनहोय॥ (बुद्धिरुवाच) सुनुतोसों अबकहौं बुझाई। जिमिसस्थूल रूपकृत सांई॥ शीश तासुआकाश बिराजै। पवन श्वासमहँ शोभासाजै॥ सूरज चंद्र नयन उजियारा। कालरूप भ्रुववंक पसारा॥ पलकचालिनिशि

शीस कहावै। अग्नि तासुमुख शोभा पावै॥ मांसहिधरारुधिरजल धारा। पर्वत अस्थि बनस्पति वारा॥ चरण पताल हृदय कर-तारा। द्वैभुज हरिहररूप सम्हारा॥ सकललोकता उदरसमाने। माला मेघशुक्रता जाने॥ अलख अरूप अनादि कृपाला। धरे विराट रूपकृत ख्याला॥ दो०॥ होयविधाता आपुस्वइ रचै सृष्टि बहुभांति। थावर जंगमजीव जे बहु विधि नानाजाति॥ बहुरि आपुह्वै रमापति रक्षत सबको धाय। शंकरह्वै संहारकृत सो प्रभु त्रिभुवनराय॥ (मनउवाच) याविधि धरकेरूपको करतख्याल बहुआहि। यहमोको समुझायकहु कबत्यागतहैं ताहि॥ (बुद्धि-रुवाच) चौ०॥ भलिपूछसितैं बातबिचारी। हौंयह बात कहौं निरधारी॥ थिरह्वैसुनुतजि दुबिधाजीकै। जसजानोंतसकहौंभली कै॥ जाहि विरंचि कहत कवि ज्ञानी। तासु आयुपर घटितक-हानी॥ आयुदीय वर्ष शतकेरी। पाई विधि काली न घनेरी॥ सतयुग त्रेताद्वापर जानो। कलियुग सहित प्रमाण बखानो॥ स-त्रह लख बसुविंश हजारा। कृतयुग की परमाण बिचारा॥ जहँ चहुं चरण धर्मके राजैं। सुखद चारि अवतार बिराजैं॥ सहसछा-नबे द्वादश लाखा। त्रेतायुग परमाणसुभाखा॥ तीनिपादशुभधर्म समेता। त्रैअवतार धरे हरि त्रेता॥ चौंसठि सहस लक्षवसु जा-हीं। द्वापरयुग येवर्ष सिराहीं॥ द्विपद धर्म तहँ वेदबताये। द्वै स्वरूपहरि धरे सुहाये॥ बत्तिस सहस लाखपुनि चारी। कलियुग की परमाण बिचारी॥ धर्म चरणतहँ एक कहोई। एकबार अव-तारसुहोई॥ जामहँ नरयुवतीहैं जोई। मारग वेद चलत कोइ कोई॥ रहै न लीक धर्मकी भाई। महादुखित नरनारि तहांई॥ निजनिज धर्म सबै परित्यागे। आय धर्मके मारग लागे॥ दो०॥ तेंतालिस लख सहस नख वर्षैं जबचलिजाय। एकचतुर्युग होत तब कहत सकल कबिराय॥ चौ०॥ जाय हजार चतुर्युग बीती। होय ब्रह्मदिन तब कहनीती॥ कल्पकहत विधिके दिन काहीं॥ चौदह इंद्रमरैं त्यहिमाहीं॥ दिवस प्रमाण कहीहै जेती। बरण-

त बिबुध निशा पुनितेती ॥ दिनभरिजोविधि सृष्टिबनावै। निशा समय मायामहँ जावै ॥ जाकहँ प्रलय कहत कबिज्ञानी । सो बृह्माकी रैनि बखानी ॥ जादिन जन्म बिधातालेई । आज्ञा वेद ताहि दिनदेई ॥ वाही दिनते जगउपजावै। विविधप्रकार सजीव बनावै ॥ पुनि जब अन्त होइ विधिकेरा । तबहीं महाप्रलयकी बेरा ॥ तब न धरा इत्यादिक रहई। यहविधि सत्य सत्य श्रुति कहई ॥ निशा दिवस बृह्माको जोई। बहे जात तामें सबकोई ॥ दिवस जन्म निशि कालकलेवा। क्यहिविधिपारजायभवखेवा ॥ मानस कहौ करैकाभाई। आयुदीय नेकसीपाई ॥ दो० ॥ बिधिके उपबूतहीं धरत तनबिराट् भगवान। तासु मरतहो तजत त्यहि तैंनिज जिय अनुमान ॥ (मनउवाच) उतपति स्थिति नाशजो जगको बर्णनकीन। सोसमुझो भलिभांतिहौं रही न शंकापीन ॥ अबपरंतु समुझाय कहु मानस तनुको भेव। कौन तत्त्व करि सो बनो यह मेटो अहमेव ॥ (बुद्धिरुवाच) व्योम वायु अरु अग्नि जल पृथ्वीयुत येपांच। इन तत्त्वनकरि तनु बन्यो बरणतबुधजन सांच ॥ पांच तत्त्वये जोकहे पांचतत्त्व गुणऔर। शब्दस्परशरूप रस गन्धिकहत कविमौर ॥ चौ०॥ नासानयन जीभ त्वकजानो॥ श्रुतिसह इन्द्रिय ज्ञान बखानो ॥ गुदा लिंग कर पद मुखजोई। इंद्रिय पांच कर्मकी सोई ॥ प्राणअपानरुव्यानसमाना। और उदान मनो बुधि साना ॥ पांचतत्त्व सूक्षम तनुपाई। सप्रह थूल प्रकट ये भाई ॥ इनकरि सब देहिनकी शोभा। इनहीं ते नर तनु सुखदोभा ॥ इनकरिपाप सुकृतनरकरई। इनकरक्रिया कर्म अनुसरई॥इनतेस्वर्गनरकपथ धावै। इनकरि हरिपुरशोभा पावै ॥ इनहींते संसार पसारो। पांच तत्त्व ये प्रकट निहारो ॥ (मनउवाच) दो० ॥ पांचतत्त्वकरि जो भये सप्रह सूक्षमनाउ। कौनकहांतेकासोगुणयहमोको समुझाउ ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ बाणीकान व्योमते भाई। एक कहै दूजे सुनिपाई ॥ त्वचौ हस्त द्वै प्रकृति समीरा। दोउस्परशहिजानत धीरा ॥ नयनचरणइंद्री

है जोई। प्रकटीअग्नितत्त्वतेसोई॥ नयनचहैं ज्यहिरूपहिदेखा। पाततहां पहुँचाव विशेखा॥ लिंगजीभ जलते बुधभाषे। दोऊ रस विलास अभिलाषे॥ गुदानाक पृथ्वी अनुमाने। गन्धि करै यक दूजी जानै॥ प्राण अपान समान बखानो। व्यान उदान पांच ये जानो॥ पांचठौर ते गुण पुनिपांचा। एकैपवन अंश यह सांचा॥ दो०॥ धरातोयवाताग्निमिलि व्योमतत्त्वयेपांच। पांचौ के शुभ अंशकरि मनबुधि उपजेसांच॥ जेती इन्द्री देहकी भोग करैंकहुँकोय। स्वादनजानै तासुको मनबुधि जानैसोय॥ मनहूँते पुनि चतुर जन बुद्धि महासिरदार। होइ सुमति जादेहमें करै ताहि भवपार॥ (मनउवाच) यह सूक्षम इन्द्रीनको है बखान किय जौन। थूलभई जाभांति सों वर्णनकीजै तौन (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ पांचतत्त्व ऊपर जे गाये। तिनहीं ते तन थूल बनाये॥ एकएकके करिकरि पांचा। रचेपचीस भणतबुधसांचा॥ सोयहपंचीकरणकहावै। भगवतगीताभलिकरिगावै॥ अस्थित्वचा रोमानसमाला। धरातत्त्वते करतप्रकाला॥स्वेदशोणपितलाररुरेता। तत्त्वोदककबिपंचकहेता॥ क्षुधातृषामुख कांतिकहावै। नींद और आलसबुध गावै॥ इनकीउपपति लिखितेभाखी। विदित करीकुछ गुप्तनराखी॥ धाइकूदिचलि कुरिकरिबोई। और पसारनि पौनकहोई॥ दो०॥ शीश कंठ हिय उदरकटि व्योम तत्त्व करि होइ। यह समुझो पंचीकरण कही पचीसो जोइ॥ कही पचीसौ प्रकृति ये थूल जीव तन माहिं। सुनुतिनको पुनि भेद कछु जो तू जानत नाहिं॥ चौ०॥ यद्यपि पांच पांचकरि गाई। तदपि कहौं जो ज्यहि अपनाई॥ अस्थि मुख्य पृथ्वीपल नीरा। अग्नि नाटिका त्वचा समीरा। रोम व्योम जल रेत बिचारी। पित्त तेज अरु स्वेद वियारी॥ रुधिर मही अरु लार अकासा। क्षुधा तेज पुनि पौन पियासा॥ सुखमा जल अरु आलसधरनी। नींद अकाश अंशतेबरनी॥ धावनिवायु पसारनिनाका। कूदनि लिखि गावत कबिबाका॥ इला सकोच चलनि जलजानो। थिर

नभ खण्ड वायुपहिंचानो ॥ हियसिखि उदर नींदकटि धरनी। जोज्यहि तत्त्व मिली सोबरनी ॥दो०॥ अस्तिरेत अरु भूख पुनि धावनि शिरये पांच। इलानीर सिखि पवन नभ क्रमते खालिस सांच । याविधि थूल शरीरधरि जीवकरत बहुभोग । दुखसुख नरकरुस्वर्गपुनि पावतरोग निरोग ॥ इनहींतेकरिसुकृतनरमेटि देततन पाप। पारब्रह्मईश्वर भजत देखत प्रकटप्रताप ॥ सूक्षम थूलशरीरहीं कहे तोहिं समुझाय । अबजोपूँछे सोकहौं श्रीहरि पद शिर नाय ॥ (मनउवाच) प्रथमकहे तुम तीनिगुण सत रज तमयेनाम। परख कहा जाविधिलहैं नरतनमें बिश्राम (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ सकलबस्तुकरहीविज्ञाना । अतिसुशीलबहुभांति सुजाना ॥ निर्मल बुद्धि भजै भगवाना। मोहादिक जातननसमाना ॥ मायाजाहि नसकै भ्रमाई। स्वई सतोगुण जानिय भाई ॥ ज्ञानहोइ निर्मलतन जासू। सबविधि बिद्या विनयप्रकासू ॥लोभसहित पुनिसब व्योहारा। सोरजगुण बुधकरतबिचारा ॥ आपुहिभूलि ईशबिसरायो। कामादिक मदते बौरायो ॥ अदयाचित्त महा कटुबानी । ज्ञानविवेक बातनहिंजानी ॥ मायामोहलोभकै बाधा । रामभजनलगि कांधनकांधा ॥ अपरीदोष अधिक तनदेखौ ।ताहितमोगुण चितमहँ लेखौ॥ जो सतगुणको मारगगहई। अन्तसमय हरिपुरसोलहई॥रजगुणहूंकी यहगतिभाई। दृढ़मति रहै तौस्वर्गहिजाई॥तमतेकेवल नरकबसेरा। अमित वर्षलहुनहिं निरबेरा॥दो०॥निजआतम चीन्ह्योनहीं रहोमोह आधीन। महा कृतघ्नी जानियम डारिनिरै मनदीन (मनउवाच) मोहिंभईशंका सुनत जीवनरकमें बास। प्रथमभन्यो तुमब्रह्मलव अबकसनरक निवास(बुद्धिरुवाच) चौ०॥आदिअन्त अबकहौं कहानी। करणी तुमलीजो पहिंचानी ॥ मिलि त्रियपुरुष अंशदुहुकेरा। उपजत सुतसुखदाय घनेरा ॥ त्रियशरीर महँ मलजो रहई। अतिअपवित्र वेद बुधकहई ॥ पूरुषतन करकाम अघोरा। बिधि सँयोग तियनर करजोरा ॥ मिलि नरमल तियमल जमिगयऊ। हरि

इच्छा निर्मिततन भयऊ॥ उदरहृदय भुजकंठ बनायो। मुख नासिका नयन भुजभायो॥ शीश सुडौलरचयो जगनाथा। गुदा लिंग इत्यादिक साथा॥ कीन्ह सजीव प्रभा निजडारी। नाटक विद्याकरि असुरारी॥दो०॥ बांधिअधोमुख दयोत्यहि नहिंपायो अवकास। निजसेवा यहखेलहित करिहरि चित्तहुलास॥ चौ०॥ अधमुख बँधे बिकलभो जीवा। सबशरीर लिपटो मलपीवा। अतिदुर्गंधि अन्नपच केरी। विह्वल प्राणन सकति निवेरी॥ भक्ष मातुकटु जादिन काहू। उठीउदर ज्वाला तनदाहू॥ जठरानल अतिकठिन बखानी। जाबश विकलहोत सबप्रानी॥ परबश परो न मारगकोई। निजमन कृत बिचारभो सोई॥ विदित बात यहसबजग अहई। दंडपरे नरहरि हरि कहई॥ नहिंरक्षक कउ गर्भबसेरे। सूझेपाप जन्म बहुकेरे॥ कहै प्रथम जो पातक कीन्हा। ताकारण श्रीहरि दुखदीन्हा॥ दो०॥ अबनारायण कृपा करियहिदुखते निरवारु। त्यागि सर्व भवकामना करिके ज्ञान विचारु॥ करिहौंसब जपयोग अरुभक्ति कृपानिधि तोरि। सत्य सत्य यहसत्य प्रभु करुरक्षा अबमोरि॥ सुनिनिबन्ध दायानिधे प्रभुमानी परमान। तारक्षाहित आपुहीआये श्रीभगवान॥चौ०॥ शीत उष्ण माता जोखावै। प्रभु निजकरसों ताहि बरावै॥ जो कछुकष्ट जीवकहँ होई। नाशैसकल कृपानिधि सोई॥ रूपचतु-भुज धरे खरारी। सन्मुख तासुरहैं सुखकारी॥ जस जननी पालै निजबाला। तसजीवहि रक्षक गोपाला॥ देखाचहै भजन यहु करिहै। भक्तिहेतु जगसुख परिहरिहै॥ जबते ईश भयो रखवारा। तबते तन न कलेश प्रचारा॥ गर्भदिवस यहिबिधि चलिगयऊ। जन्मलेनकर अवसर भयऊ॥ व्यथित शरीरगई सुधिभूली। पचयन्त्रतनभेजिमिशूली॥ दो०॥ मुर्छितभो क्षण-मात्रतब जन्मलेतकेबार। चेतसमय चहुंदिशनहीं देखा निज रखवार॥ अतिअधीरह्वैजीवतब कीन्हो कठिन बिलाप। कहां कहां यहशब्दज्यों करैल्यो निजजाप॥चौ०॥ धाइधाइ असनान

कराई। कीन्हो स्वच्छ शरीरहिजाई॥ जबलगि नहिं कीन्होपय पाना। तबलगि नहिंभूलो भगवाना॥ क्षीरपान कीन्ह्यो ज्यहि बेरा। मोहराज तनकीन्ह बसेरा॥ बिसरि नियन्धरही सुधि नाहीं। माया जबहिंगही हितबाहीं॥ तेल फुलेल शरीर लगावैं। जननी हलरावैं दुलरावैं॥ उबटितनहिं चौतनि घिरडारहिं। सुभग पलँगपर लै पौढ़ारहिं॥ आपु काजगृह लागेंसोई। सोहत बालशुद्धि तनखोई॥ स्वेदज जीवकीट इत्यादी। काटहिंतन दुखदाय बिषादी॥ दो०॥ जब शरीर कीटनगह्यो रोयो बाल अधीर। बैनकहै समरथनहीं जोभाषै निजपीर॥चौ०॥ करै बिलाप सुनैनहिं कोई। दुखद कीटलागे तनसोई॥ कतहुंमातु सुनिपाव जोवानी। लियेउठायहरो दुखआनी॥ क्षुधावंत आकुल तनभयऊ। मातु सदनकारज चितदयऊ॥ सूझत इतउत नयन पसारा। ह्वैअधीर तबरोयपुकारा॥ सुनि सुतरुदनमातुचलिआई। सुखी कीन्हपयपान कराई॥ कुछ दिनबादि चले निजपांयन। मातुपिताकहँ अतिसुख दायन॥ जहँतहँ खेलनमहँ चितदयऊ। तृषाक्षुधा भूलतह्वै भयऊ॥ नहिँभावत गृहखेल बिसारी। फिरैसंग बालक ह्वैचारी॥दो०॥ मातुपिता दिनशोधिकै गुरुपहँ दीन्हपठाय। पढ़ैलाग विद्यातहां नैकनैक चितलाय॥चौ०॥ जों उत्तमकुल भो अवतारा। तौ विद्यागुण कीन्ह बिचारा॥ जोपै नीचगृह जन्मत भयऊ। तौ यहदशा खेलमहँ गयऊ॥ यहिबिधि बालापन गा बीती। नाकीन्ह्यसि जो प्रथम कहीती॥ नर उपकार करत जोकोई। मानतसकल जन्मभरिसोई॥ महाकष्टते ईशबचायो। ताकहँ कतहुँन शीशनवायो॥ तरुण अवस्था तनमहँआई। मैन व्यथाते तनतपछाई॥ ज्ञातबन्धु मिलिकीन्ह विवाहा। मनप्रसन्न तनबड़ उत्साहा॥ बहु आभरण सजेतनमाहीं। लखि निज रूपन अंगसमाहीं॥ दो०॥ मनफूले मारग चलत देखत अपनी छांहिं। कहत महासुंदरबने कोऊहमसम नाहिं॥चौ०॥ जो कुछ ज्ञान चित्तमहँआयो। तौ कारजमहँ जिय बहिलायो॥ जोमूरुख

विद्यादिक हीना । कामविवश तौ फिरै मलीना ॥ ताके परतिय लाजबिसारे । धर्मकथाते चलहिं नियारे ॥ कहैजो कोउ यहकाज ननीका । तौ सुनिबैन करैं मुख फीका ॥ जो कदाचि सम्पति विधि दयऊ । तौ फिरिअधिक गर्वउर छयऊ ॥ गालफुलाय चलैं मगमाहीं । जनुतिहुँ पुरीभूपये जाहीं ॥ मित्रनहू सन मीठी बानी । संपति मदन कहैअज्ञानी ॥ काहुइकहै न मधुरीबाता । अहंकारबश उरन समाता ॥ दो० ॥ साधुसंतकहँ देखिकर करैंहँसी तेमूढ़ । बादिमुड़ायो मूड़तुमलहोनअर्थअगूढ़ ॥ चौ०॥ ज्यहिविधि जन्मदीन नरकेरा । त्यहिजग भोगरच्यो बहुतेरा ॥ तजिपाखण्ड करो जगभोगा । बे कारणयह सहौबियोगा ॥ सुनतहि वचनसाधु मुसुकाहीं । जिनके क्रोधलोभ कछुनाहीं ॥ जोविधि जन्मरंकगृह दयऊ । तौचिन्ताबहुविधि तनछयऊ॥ प्रमदातनय सुताहितलागी । फिरैंजहां तहँ रंकअभागी ॥ करैंकृषी अथवा व्योपारा । पर सेवाकरि दिवस निवारा ॥ अथवा भिक्षाटन नितकरहीं । जग छलिधूति उदरनिज भरहीं ॥ प्रिय सुत फाँसि मोह गलडारी । भजैन हरिपद भयोदुखारी ॥ दो० ॥ गई भूलिसबचतुरई चिन्ता ग्रसितशरीर । मिलैनधन उरशांतिनहिं जहँतहँ फिरैंअधीर ॥ पेट खलाये जगफिरैं त्रियातनय के हेत । हरिमाया अतिप्रबलज्यहि कर्‌यो सचेत अचेत ॥ प्रभुसों कियो निबंध जो भूलि गयो जड़ सोय । कहौजगतमहँ आइफिरि कसन दंडबुधहोय॥चौ० ॥ भटकतही बीते तरुणाई । जरादेह मधि तब नियराई ॥ तृष्णाबढ़ी अमलतन भयऊ । तबहूँनईश चरण मनदयऊ ॥ अल्प दृष्टि पद द्दौथर हरहीं । बैठिउठहिं तब अतिबलकरहीं॥ इन्द्रीसकल भईं बलहीना । कामाधिक तनते भो क्षीना ॥ पौरुषबिन उद्यमनहिं होई । प्रियबालक पूछत नहिं कोई ॥ क्रोधबढ़ो नहिं बरणि सिराहीं । कहैनीति त्यहिपति अलसाहीं ॥ बैठरहैं जड़रूप दुवारे । जातनिकट कोउनाहिं पुकारे ॥ गयोबुढ़ाय शिथिल तन भयऊ । ईश्वरचरण चित्तनहिं दयऊ॥ दो०॥ षट विकार जे देहमें बीती

तिनमहँपांच। छठी आइ नियराइ रहि तबहुँन हरिपद यांच॥ (मनउवाच) षट विकार कासो कहत कहौ मोहिं समुझाय। जिन्हैंजानिकै मानिभय हौंसुमिरौं सुरराय (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ जन्म होत यह प्रथम विकारा। दूसर तनकर बढ़त बिचारा॥ तीसर बालअवस्था भाई। चौथीभणत विवुध तरुणाई॥ पंचम जरा अवस्था सोई। षष्ठम अन्तकाल जोहोई॥ षट विकार ये कहीबखानी। तेतुम सत्यलेहु मनमानी॥ इनमहँ पंचम बीतै लागी। भयो न जीव ईश अनुरागी॥ बीती जरा अन्त नियराना। जसगति भई सो करौं बखाना॥ बाध्यो कफ लाग्यो गलसोई। अन्न पानि कहँ रुचि नहिं होई॥ ऊरधश्वासचली तन माहीं। चन्द्रसूर सन्मुख कउनाहीं॥ जहँ तहँ कफ उगिलहिं उबकाहीं। पड़ेरहैं जल अन्न न खाहीं॥ प्रमदा पुत्र सकल अन-खाहीं। कहैं ईश अबये मरिजाहीं॥ यह घिनौनपन अब न सु-हाई। हारिगये करिवैद्य उपाई॥ कठिनकराल दशायह भाई। धर्मन करो जो होइ सहाई॥ जस माखी मधु जोरि न खाई। छीनेकोल मनहिं पछिताई॥ तिमिसंपदा जोरि गृहमाहीं। दई वराटिक हरिहित नाहीं॥ प्रथमजीव ऐसो अघखानी। तासु पाप किमि कहौं बखानी॥ जन्म समस्त वृथा जड़ खोयो। संपतिहित सुखनींद न सोयो॥ दो०॥ जोदश दोषनसों भरी देह जीव ज्यहिबासु। समनचार करिकोप त्यहि चहैछुड़ावनआसु॥ मुदगर फाँसी हाथलै आये यमके चार। तिनके देखतही विवुध रहीन नेकसम्हार॥ चौ०॥ ह्वैभयभीत तुरत मलमोचा। ताहूसमय न हरिहित शोचा॥ हनि मुदगरन डाल गल फाँसी। काढ्योजीव दशोदिशि गाँसी॥ प्रियातनय सेवक परिवारा। खड़े सकलकृत शोच विचारा॥ नेकन बश काहूको चाला। यमदूतन कीन्हो बेहाला॥ मारिकूटि यमत्यहि लैगयऊ। संगी तासु कोउनहिं भयऊ॥ जिनहित सिगरो जन्मगँवाया। प्रियसुतकोउ कामनहिं आया॥ यमपुर भयो न्याय जबजाई। रक्षक धर्म न

ठहरो भाई ॥ नहिं हरिभजन न परउपकारा। तीरथ ब्रत नहिं नेक अचारा॥ दो० ॥ सतसंगति इत्यादिजे उत्तम जगमें काज। तेनेकहु पायेनहीं तबशोचे यमराज॥ चौ० ॥ महा अधम यह जीव चँडारा। हरिहित नेकन कीन्ह बिचारा॥ कहा दण्ड दीजै यहशोचै। ताअघसमुझि नैनजल मोचै॥ फिरिहरि मायहि शीश नवायो। भीमरूप निजदूत बुलायो॥ कहो डारु यहि कुम्भीपाका। हनै चोंच शिर खुलते काका॥ धरि भुजदूत डार तहँ जाई। जामधिपरे जीवअकुलाई॥ असकरणी कीन्हीजगमाहीं। कहौजीव कसनरक न जाहीं॥ यहिविधिजीव नरकमहँ बासा। रक्षक तासु न कउ दशआसा॥ ब्रह्मक्रांति यहजीव बखानो। निजकरणीते नरकहि सानो॥ दो० ॥ बरणि समस्तकही सुहौं जीवनरक ज्योंबास। अब जोपूंछे सोकहौं छूटै भवभय त्रास॥ (मनउवाच) कहे दोषदश प्रथमतुम सो म्वहिंकहौ बुझाइ। संशय तनको जाइमिटि ज्ञान अधिक सरसाइ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ सुनुदश दोष सहित विस्तारा। योगीजन जो करत विचारा॥ प्रथम शौचभाषत बुधिवाना। द्वितियेतनहि अशुधता साना॥ तृतियेतन दुर्गन्धि कहावै। चौथे बहुत खण्ड बुधगावै॥ पंचम रोगग्रसै तनयेहा। षष्ठमजरै काष्ठवत देहा॥ सप्तम मरै देह सबजानै। अष्टम शिथिलहोय पहिंचानै॥ नवम बहुरिहोवै यहजानो। दशम स्थूलरूप अनुमानो॥ अब जो अपर चहैसो गाऊं। निर्मलमति विज्ञान सुनाऊं॥ येदशदोष बसैं तनमाहीं। अन्तसमय समस्त मिटिजाहीं॥ (मनउवाच) दो० ॥ क्यहि विधिछूटै नरकते कहुतू मोहिं बुझाइ। कासाधे यहिदेहमें जासों हरिपुरजाइ॥ (बुद्धिरुवाच) जो षटउर्मी जीतई मिटै सकल तनताप। होवै जीवनमुक्तनर देखै आपाआप॥ (मनउवाच) सो० ॥ षट उर्मीका आहि यहमोको समुझाइ कहु। फिरिहौं जीतौं ताहि मेटौंतनकी तापसब॥ (बुद्धिरुवाच)॥ चौ० ॥ प्रथमकाम अतिबिवुध कराला। जाबश सबजगजीव विहाला॥

द्वितिये क्रोध पापकरखानी । बिकलहोत जावश सबप्रानी ॥ तृतिये लोभ महादुखरासी । सकल जगत गलडाल स्वफांसी ॥ मोह चतुर्थ वृजन गृहजानो । नरकजीव तावश अनुमानो ॥ पंचम भानबसै तनमाहीं । हरिचरित्र ज्यहि कुछ न सुहाहीं ॥ षष्ठमतन अपमान कहोई । ज्यहिते जीवहि अति दुखहोई ॥ ये षटउर्मीसंतबखानैं । समुझहि चतुर जेज्ञानहिंजानैं ॥ जीवन-मुक्तहोइ इनजीते । नरकजाइ इनके हितहीते॥ (मनउवाच) दोहा ॥ मोहादिक जे तुमकहे व्यापत सबकीदेह । का उतपति किमि जीतिये कहिये सहित सनेह ॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥ सुनुउतपति इनकीचितलाई। सबप्रसंग तुहिंकहौं बुझाई ॥ देश शरीर बसैमन भूपा । तासुत्रिया द्वैमहा स्वरूपा ॥ एकप्रवृत्ति दु-र्भगा नारी। द्वितिय निवृत्ति महासुखकारी ॥ मोहलोभ अरुक्रोध कराला । काम कुभोग दुष्टसबकाला ॥ अहंकार मिथ्या द्विजदो-षा। हिंसा दम्भआदिसहरोषा ॥ पुनि अविवेककहो पाखण्डा। तृष्णा दुःशीलता प्रचंडा ॥ मान अलज्जा आदिकजोई । भयेप्र-वृत्ति जातसब सोई ॥ ज्ञान विवेकाचार विचारा । दान धर्म वै-राग्य सम्हारा ॥ दो० ॥ शांति दया अरु शीलता समसंतोष अ-लोभ । लज्जा क्षमासु चातुरी मनजानिये अक्षोभ ॥सो०॥प्रणय न्याय अरु योगसुख इत्यादिक बसैंतन । निवृति जातये लोग समुझतज्ञानी योगिजन ॥ (मनउवाच) दो० ॥ द्वै माता यक पिताते भयेप्रकटयेसर्व । वैरभयो कारणकहा मेटौ संशयखर्ब ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ विदितबात यहसबजग अहई । वैर विमातनमें कुछरहई ॥ और अधिक याते यहकारण । चहैविवेक जीवकह तारण॥ मोहचहै निजपितु सुखदीन्हा । ताते वैरभाव उनलीन्हा ॥ जो विवेककी पकरै शरणा । सोदेखै श्रीहरिके च-रणा ॥ चलैमोह मारगजोभाई । धर्मरहित नरकहि चलिजाई ॥ जे पंडितजन जगतसयाने । ते विवेककेमारगसाने ॥ अंतसमय पावैं सोई पद । जो ऋषिराज वेद आगम बद ॥ चलै मोहवश

मूरखजोई। अवशिहोहि नरकागमिसोई॥ दो०॥ थिरचितकरि तजि दुर्मतिहि सुनु विवेक की जीति। ज्यहि विधि हार्‌यो मोह दल भाग्योहै भयभीति॥ चौ०॥ पूरब कहो बैरकर हेता। अरु उत्पत्ति सुप्रेम समेता॥ अब सुनु कथा रसाल सोहावनि। बिज्ञानिन कहँ अति मनभावनि॥ गहो जीव जब पंथ विवेका। हरिहि मिलन हित टेक्यसि टेका॥ त्याग्यसि सकलविषयपरिवारा। ज्ञान धर्मकर कीन्ह पसारा॥ तबहीं शोच मोह मन ठयऊ। काम क्रोधकह बोलत भयऊ॥ अरु पाखंड शोक संतापा। लोभादिकजिन अधिक प्रतापा॥ सबसनमिलि यहसम्मत कीना। हतौ विवेक दंडदै पीना॥ तासु सकलदल बांधिसुलेहू। अथवा देश निकारा देहू॥ दो०॥ नाइ चरण शिरमोहसों बोला सुभट पखंड। जीवकरौंहौं आपुवश जीतिविवेक प्रचंड॥ सो०॥ आपु धरौ उरधीर कितीबात यह कृपानिधि। लै असत्यरणधीर जीतिसमर बांधौंरिपुन॥ चौ०॥ असकहि चलो सुभटपाखंडा। निज स्वरूप तब रचो अखंडा॥ झूँठा शिष्य संग त्यहि डोलै। जो प्रतिक्षण असत्य बच बोलै॥ रचे विभूति सर्व तन माहीं। सुन्दर जटा सुशीश स्वहाहीं॥ माला गले परीं द्वै चारी। कान शीश बहु माल सम्हारी॥ मध्य दंड माला भुज छोरा। छाती कांध माल द्वै जोरा॥ टोपा लाल शीशपर सोहै। सुभग कमंडल कर मधि जोहै॥ आवत देखि जीव सतभावा। मध्यबाट मृगचर्म डसावा॥ निज माया पाखंड पसारी। झूंठशिष्यसो बैठ अगारी॥ जिमि बक रंगे चोंचपद नैना। बनै हंस कछुकहै न बैना॥ निर्णय जल पय जब परिजाई। तब सिगरे जग होइ हँसाई॥ तसपाखंड कीन यह माया। लखि स्वरूप जीवहिभल भाया॥ कीन्ह दंडवत पद शिरनाई। चहै कि चलि आसनढिग जाई॥ दो०॥ कही तबहिं ता शिष्यने सुनुरे मूढ़ गवाँर। पाछू गुरु ढिग जायसी प्रथमहिं चरणपखार॥ नेकहु कीन्ह बिचार नहिं निशाचार तू आहि। पदवी शिष्टाचारकी सोतू जानत नाहिं॥

चौ० ॥ ब्रह्म सभा शुभ देव समाजा। शोभित जहां दश्यो दिगराजा ॥ एक समय तेहि सभा गये गुरु। देखतहीउठठाढ़भयेसुर। ब्रह्मा बहु बिचार उरलावा। इनहिं योगनहिं आसनपावा ॥ तब पद बंदि दीन कमलासन। दौकरजोरि मांगि अनुशासन ॥ सो सुर पूज्यगुरू ममराजै। पुण्यस्वरूप महाछबि छाजै ॥ तिन ढिग चलपद बिना पखारे। तैंमूरख अज्ञान महारे ॥ यह सुनि जीव सत्यकरि जाना। तासुबचनकी कीन्ह प्रमाना ॥ शोचकरै शिक्षा यहिलेऊं। अपरबात सिगरीतजि देऊं ॥ दो०॥जबजान्यो जीवहि भ्रमत तबपाव्यो सद्भाव। हारिविवेक बिचारिउर समुझिआपनो दाव ॥ चौ० ॥ सुनुरेजीव भूलमति भाई। जनियाकी बातनपर जाई ॥ शिष्य झूंठ अरु गुरु पाखण्डी। लोकलाज सिगरी यहि छण्डी ॥ जगतसकल छलिबेके काजा। कीन्हसम्हार देह करसाजा ॥ जोलखिभूलि जाहिजग लोगा। सहैंमहा दुखदाय बियोगा ॥ यहसुनि दम्भ आपुइमिकहई। बड़सद्भाव छलीतूअहई ॥ प्रकट कहानी यह जगमाहीं। आपनसम कोउ दूसरनाहीं ॥सुनु तोकहँ भलिबात बताऊं। पुनिअपने मारगमहँ लाऊं ॥ प्रथमहिं तनकहँनीक सम्हारै। ता पाछे पुनि वेद पसारै ॥ दो० ॥ अशुभ रूपजग जेधरे यद्यपिमहा प्रबीन। आदरतदपि न करतकउ करत सभाते भीन ॥ चौ० ॥ यातेभल शरीरका साजै। बिबिध भांति आनँदसो राजै ॥ दानदेइ जग लहै बड़ाई। परधन हरै हेत गुरुताई ॥ बिनस्नान न जल मुखमेलै। करि पूजन पापन कहँ ठेलै ॥ यज्ञकरै जपभांति अनेका। नेमसहित छूटैनहिं टेका ॥ तू कुबेरअरु धर्मन जानै। कहुकहनी तोरीकोमानै ॥ धनाचार तव संग नआई। बिनअहार बसनन बिनुभाई ॥ काहि स्वहाइ ऐस दुखसाथा। सुनतै बचन पीटिये माथा ॥ तब सद्भाव नीति मय बानी। कही बिवेक बिरागइ सानी ॥ दो० ॥ सुनु कहनी मम ध्यानधरि कहौंतोहिं समुझाय। भूषणबसन अनेकबिधि त्रियतन अधिक सोहाय ॥ चौ० ॥ तनशोभा अरुअधिक शृँगारा। कैशो-

भत नृपके धनवारा ॥ दीन चहैनृप समतन साजा। निज दिशि देखिलहै बड़िलाजा॥ कहांवसन भूषणवेपावै। जोशरीर नृपसम सजिलावै॥ नृपसोवत भलिसेज बनाई। दीनधरा पर प्यार इ-साई॥ भूपति सुखित जन्म सबकाटै। दुखिया तन चिन्तानित चाटै॥ रहैसदा स्वाधीन नरेशा। पराधीन परजासु कलेशा॥ बर्तै मध्यभाग हरिदासा। नहिंभूपति नहिंदीन दुरासा॥ जसमहिपरै सेज तससोवै। दुखसुख दुहू बातको खोवै॥ दो०॥ कबहूं भों-जनभूपसम कबहुंक फल आहार। दुहूंबातते रहित कहुं ब्रतहरि हितअनुसार॥ चौ०॥ कहुं शुभ बस्त्र नग्नकहुं रहई। बल्कल कतहुं पहिरि मुद लहई॥ दुखकहुं सुख पावै जगमाहीं। मान अमान बिचारत नाहीं॥ जबयह दशाजीव कहँ आवै। तब हरि मारगभललखिपावै॥ जन्ममनुष्य भयोयहिहेता। भजैईश करि-कै चितचेता॥ नहिंयहि हेतजो चहै बड़ाई। भूषण बसननस्वांग बनाई॥ निजशरीर कर करत सम्हारा। ईशभजन सबभांति बि-सारा॥ करिपाखण्ड जगत छलिपावै। सो प्रभुनहिँ ठगनी महँ आवै॥ देखै तिहूंलोक बिन अंजन। यहिकारण हरिनाम निरंज-न॥ ईश्वरनहिंरीझत लखिरूपा। मोहत लखिनिज दासकुरूपा॥ रूपवंत धनवंतनरेशा। होत न संत समान विदेशा॥ जोपाखंड पंथतव गहई। निश्चय अंतनरक सोलहई॥ पुनिकरिकोप कहै यहदम्भा। बलिहरि हितकिय यज्ञअरंभा॥ दो०॥ दान दियो बहुयज्ञकरि बलिहरिचन्द नरेश। दशाभईसो विदित जग सुनि पाइयतकलेश॥ चौ०॥ व्याध अधम सहजै गतिपाई। गृद्ध सेवरी हरिपुर धाई॥ गणिका अजामील अघखानी। जिनन बिवेक बात कउजानी॥ कुंजर पशु इत्यादि अनेका। लही सुगति तजि पंथ बिवेका॥ वेदशास्त्र सबकरैं विवादा। समुझत जीवहि होत बिषादा॥ कोऊ ईश शंभु कहँ टेरै। कोऊ जगत मात दिशि हेरै॥ बिधिकोऊहरि गणपति भाखै। कोऊटेक सूरपै राखै॥ बसत जीवदेहीमहँ जोई। कस बेदान्त ईश है सोई॥

झगरा यह न होय निरुवारा। ताते कुछ नहिं पंथ तुम्हारा ॥ दो० ॥ कहु पुनि गहि केहि पंथको लेवै ईशरिझाइ। तब सद्भाव अनंदयुत कही ताहि समुझाइ ॥ चौ० ॥ तजि इच्छा अरु मान गुमाना। गहै बुद्धिकर ज्ञान कृपाना ॥ काटि मोह फांसी निज हाथा। ज्ञानी पुरुषनको करि साथा ॥ भजै ईश दुखसुख द्वौ त्यागी। दया धर्म सौंहू अनुरागी ॥ योग भाव आतम निज हेरै। श्रद्धा सहित ईशकहँ टेरै ॥ यहि विधि सो तजि सब पाखंडा। अन्त मुक्ति सोलहै अखंडा ॥ सुनिपाखंड बयनसद्भावा। लज्जायुत अध शीश नवावा ॥ बहुविधि मन बिचारकर सोई। सूझिपरा नहिं उत्तर कोई ॥ अतिदुख सह मृगचर्म उठावा। अमित भांतिकृत मन पछितावा ॥ दो० ॥ हारिपरा खलभला गृह मिल्यो मोहको जाय। समाचार सद्भावकर सर्व कहा समुझाय ॥ मोहराज अति दुखित ह्वै कामहिं कहा बुझाय। जाहु तात पौरुष करो जीव लेहु अपनाय ॥ जीव संग सद्भावइत कह विवेक सों गाथ। हारि जानि पाखंड की हर्षितभो सब साथ ॥ सुनो वृतांत विवेकजू काम कीन्ह दल साज। तब बिचारको प्रबल लखि पठवा जानि अकाज ॥ चौ० ॥ चला कामकरि आपु बनावा। सुमनबान निज धनुष चढ़ावा ॥ सँग ऋतुराज उर्बशी नारी। राग रागिनी ताल सम्हारी ॥ कोकिल पिक अरु तिहुँ गति बाता। मदन दाह उपजै लखि गाता ॥ देखि जीव भल ठाट बनावा। त्यहि अवसर विचार तहँ आवा ॥ लखि बिचारि बोल्यो तब कामा। सुनरे जीव बचन सुखधामा ॥ सुना तु भी सद्भाव संगाती। तजि सुख संग बैठदुखपांती ॥ विधि तनदीन्ह भोग हित लागी। तू मतिमंद दीन्ह त्यहि त्यागी ॥ तातेअवशि त्यागि सद्भावा। त्यहिं शिक्षदेन हेतुहौं आवा ॥ दो० ॥ ब्रह्मा विष्णु हरादि सुर सर्व करत त्रियभोग। जाते अधिकन और कउ सुखभाषत बुध लोग ॥ चौ० ॥ ॥ तब बिचार कह सुनु रतिनायक। अति निलज्ज तव संग कुभायक ॥ जो बड़नीक भोगतुम

कहऊ। जासु गर्ब अति भूलत अहऊ ॥ तासु वृतांत सुनौ चित लाई। पाछू जीवहि देहु भुमाई ॥ त्रियभग अवितरक्तसोंरहई। अरु मल मूत्रभरी बुध कहई ॥ जासु दशासुनि मनघिन आवै ॥ परसतही नर नरक सिधावै ॥ ऋतु वसंत अरु तीनि बतासा। सुमन बाण लखि मोहिंनआसा ॥ परतिय रमण करतजेप्रानी। दुहूं लोक कृत निज करहानी ॥ इत नृप सुनै तुरत धरि मारै। उत यमदूत नरक गहिडारै ॥ दो० ॥ हँसीहोयदुहु लोकमें कहा भोग या माहिं। करै कही तुव जोबसो हमनहोहिंज्यहिपाहिं ॥ यह सुनि खल निज हारि लखि गयो गेह अकुलाय। मोहराज सों हारि निज कही महा दुखपाय ॥ चौ० ॥ बोला नृपतिक्रोध अपुपासा। कहो मेटु अब मम परिहासा ॥ जीति चमू बांधिये विवेका। करिय जीव निज बशरहै टेका॥ छूटै पिताकरै बहुशोगा। नतबियोग यहिमरिहैं लोगा ॥ चल्योक्रोध आज्ञातामानी। अदया हिंसादिक मन आनी ॥ समाचार यह पाव विवेका। बोलि क्षमा कहँ जोकर नेका ॥ क्षमा अहिंसा आदिक धाई। जहां जीव तहँ तुरतहि आई ॥ क्रोध क्षमालखि नवअसकहई। मोदेखत तुवधर्म नरहई ॥ अर्जुनअसज्ञानी जगख्याता। निज कर आपन कुलहि निपाता ॥ दो०॥ परशुराम माताहनी ब्राह्मण मारो राम। शंकर सुत माथा हरो कीन्ह्यो बड़ो अकाम ॥ सो० ॥ यह पौरुष है मोर मोबिन जग जीवै न कउ। मारग चलै न तोर मो सन्मुख कोटिहु किये ॥ चौ० ॥ तपसी मुनिहौं घने बिडारे। आन जीव जग कहा बिचारे ॥ क्षणमहं क्षमा दयाधरि मारौं। बांधि विवेक बंदि गृहडारौं ॥ पलहित पशु पक्षीपरहेता। द्रव्य लागि मानस हनि लेता ॥ पौरुष कौन जीव अपनायो। मोर नाम कहुँ सुनि उनपायो ॥ तबहिं क्षमा क्रोधहि समुझायो। सत्य बचन तुममोहिं सुनायो ॥ जहँ हम जाहिं तहां तुम नाहीं। बिदित अन्य सिगरे जगमाहीं ॥ हरिश्चन्द्र क्रोधहिनहिं लावा। चांडाल गृहआपु बेचावा ॥ मोर-

ध्वज निज शीशचिरावा। धर्मराखि तन क्रोधदुरावा॥ जब कड आय मुष्टिकामारै। तासन लकुटी हनन प्रचारै॥ जो दुरिआय द्वेयकरि क्रोधा। जायपास बिनती करिबोधा ॥ सबसन मधुरी भाषिबाता। शत्रुमित्र करलखैन नाता॥ परदुख देखि दुःख मन लावै। सेवाकरि ता दुखहि दुरावै॥ दो०॥ तपसीमुनि चण्डाल नर पशुपक्षी अरुकीट। येसमस्तहैं ब्रह्मलव हनैयोगसुनु ढीट॥ नैनलाललउर कोपबड़ हारिचला गृहसूत। ज्योंपोरुष लघुकहैबड़ि लज्जालहैं कपूत॥ चौ०॥ जाइक्रोध निजहाल सुनावा। मोह राजमनभा पछितावा॥ ताहीसमय लोभ हँकरावा। काम क्रोध वृत्तांत बतावा॥ सुनतलोभ तनभा अति कोपा। क्षण महँ करौं बिवेकहि लोपा॥ धाइचल्यो जीवहि अपनावै। अरु बिवेक दल समर हरावै॥ जब बिवेकने यहसुधिपाई। सपदि दीन्ह सन्तोष पठाई॥ लखि सन्तोष लाभयह भाखै। मो सन्मुख तोकहँ को राखै॥ ब्रह्मचर्य बैरागीयेही। लोभलालसा लागि न केही॥ जब बराटिकाकी भैचाहा। ईश्वरकीन्ह सोपैसालाहा॥ तबमुद्राया चैभ-क्प्रानी। मुद्रास्वर्ण पावसुख खानी॥ नहिंसन्तोष सम्पदा चाहा। मिलै अधिक धनसो उरदाहा॥ यद्यपि क्षयपतिपद मिलिजाई। तदपिन उर सन्तोष दृढ़ाई॥ दुखियायह बिचार नितकरई। परो मिलै कीपरधन हरई॥ दो०॥ पशुपक्षी इत्यादिजे मोहितत्यागत प्रान। मोबिन सुखपावत नहीं तोहिं तजतकहि स्यान॥ तातें जाहुपराय गृह हानि आपनी जानि। जीवलियो अपनाइ हम त्यागीतेरी कानि॥ चौ०॥ तब सन्तोष कहैसुनु भाई। ऐसियहै तुम्हरी प्रभुताई॥ बलिराजा पहँ गयउन भूले। रह्योसिराय भये अनमूले॥ हरिश्चन्द्र करदुख नहिंलागा। लोभनारि सुततन जिन त्यागा॥ परशुराम कहँ नहिंअपनावा। यक बिंशतिधा धरा बहा-वा॥ स्वर्ण अतोल लङ्क रघुनाथा। दीन दान जग गावत गाथा॥ करणहिं कल नहिं आनि सिखावा। प्रात नित्य अर्जुनहिं लुटा-वा॥ मूरख अविवेकी अज्ञानी। तुव पथ चरण देतते प्रानी॥

संपति दुख सुख लिखा लिलारा। विधि अक्षरको मेटनहारा॥
दो०॥ देवत ईश्वर लहतसो करत ईर्षसो होत। यांचतवाप्रभु सोसदा सकल हमारो गोत॥ विपतिपरे सब धन नशै दुख उपजै भरपूरि। लोभ न लावै भजै प्रभु राम सजीवन मूरि॥ यह सुनि लोभ परायचल बिजय लही संतोष। गहो जीव मारग सुभग जाते पावै मोष॥ चौ०॥ लोभ अजय सुनि मोह रिसाना। पठवा अहंकार बलवाना॥ इतहुं बिनय आपनदलसाजा। बिजय विवेक होत मन भाजा॥ को बहु बकै हार अहँकारा। त्राहि त्राहि ढिग मोह पुकारा॥ अकथ दुःख पायो तब मोहा। निजदल सकल अबलकरि जोहा॥ तबआपुहि उठिचला नृपाला। तासु चलत तन भूतल हाला॥ सुन्यो विवेक मोह चलि आवा। प्रथमहिं धीरजआपु पठावा॥ तापश्चात् सोचकृतआपू। मोहराज कर अधिक प्रतापू॥ अस न होइ कहुं धीरज हारै। करि प्रपंच भूपति त्यहि टारै॥ दो०॥ उचित मोहिं पाछे चलौं हनों सकल आराति। उत धीरज कहँ देखकर मोहराजमुसकाति॥सो०॥ सुन धीरज ममबैन कहौजाय निजनाथसों। उचित बात यह हैन बांध्यो पिता अनीति करि॥ चौ०॥ अस भाषि मोह कोह उरलायो। करिबल अमित जीव अपनायो॥ अरु धीरज प्रतिकहँ असि बानी। जाहु तात नतपैहो हानी॥ जो तुम्हार पथसंग्रह करई। त्रियातनय निज धन परिहरई॥ बाहन बसन विविध भंडारा। राज्य द्रव्य भूषण परिवारा॥ सोदर अति प्रियसदन समाजा। मित्र पिता माता सुखसाजा॥ तुरी भूमिगजअस्त्रसमेता। दासीदास जेनितसुखदेता॥ गोधन आदि बिभूति अनेका। इनतजिहै काकरिय विवेका॥ हिलिमिलि सबसन कीजियनेहा। कबजानिय छूटै यहदेहा॥ दो०॥ सब कर करि प्रतिपाल नित धनपरिवार बढ़ाय। निजधन सों अपनाइये औरको लेइपचाय॥ सो०॥ मोहबचनसुन जीव तामारगसेवन चहत। त्यागन सुखकी सीवतब धीरज असकहतभो॥

चौ० ॥ सुन हमार मत मोहसयाने । ममदेखत तुमआशुपराने॥ शूरन संग सदा हम डोलैं। मोहलीन जे बचन न बोलैं॥ काकी त्रियकाको सुतगेहा । समरभूमि त्यागत निजदेहा ॥ कायरकूर तुम्हारसँगाती । जेइमरी पावत नहिंभांती ॥ सतीशरीर हमारअ-वाला । भस्मकरत तनतजि सबआसा ॥ संपतिघटै बढ़ैचहुंभाई । मनहमार नहिं कछुअकुलाई ॥ यहिबिधि धीरमोह बतलाता । एक एक की सुनतन बाता ॥ त्यहि अवसर विवेकतहँ आयो । बिबिध भांति जीवहि समुझायो ॥ दो० ॥ जन्महोत तननग्नही अंतहु चलतउघार । ध्यानधरौ ममबचनपर नशैमोहव्योहार ॥ चौ० ॥ जबरण शत्रुनसों कठिनाई । त्रियातनय सब छूटतभा-ई ॥ धीरजही तब आवतकामा । संपति भवनरहै सबदामा ॥ अंतसमय जब यमचर आवैं । मात पिता दासीन बचावैं ॥ बा-हन तुरीगयन सबछूटैं । पटभूषण आपुहिते टूटैं ॥ यमचर बां-धि दशौदिशि घेरी । दुर्गतिकरैं जीव सुनतेरी ॥ जिन्हेंमोह आपनो बतावै । तेसिगरे यहनै छुटिजावै ॥ आपनि नारि बतावत जाही। पुत्रकहत माता निजवाही ॥ तासोदर निज भगिनि बतावै । तासुपिता कन्याकरि गावै ॥ ऐस्यइ पितुमाता सुतहाला । कस तुम्हार साझिनकर जाला ॥ सदन आपनो जाकहँ भाषौ । की-टालय ताकहँ अभिलाषो ॥ पशुजानत निजगृह करि ताही । पक्षीश्वान मूषबश जाही । मंजारी आदिकजे देही । निजघर स-मते सकल सनेही ॥ दो० ॥ कहौ तुम्हारा कैस गृह ये समस्त सझियार । त्यागि मोह ताते चतुर करु हरिमिलन बिचा-र ॥ मोहपराजयप्राप्तभो भैविवेककीजीत । जीवगहो तबसत्य पथ हरिसों बाढ़ी प्रीत (मनउवाच) ॥चौ०॥ गहोजीवजबमारग साँचा । पुनिकसकीन्ह कहौ मतराँचा ॥ (बुद्धिरुबाच)जब विवेक जीवहि अपनायो। तब ताकहँ निजपन्थ बतायो ॥ कहिनि सा-धनाचारि विचारी । योगी जन जेकरत नियारी ॥ प्रथम विरा-ग रूरसिखरावा । ता पाछे निज अंग बतावा ॥ शम दम कहि

मुमुक्षु पदद्दयऊ। जीव कृतारथ असकरि भयऊ॥ पुनिमनप्रश्न कीन्ह शिरनाई। सकल वृतांतकहौ समुझाई॥ का विराग का अहै विवेका। का शमदम मुमुक्षु का टेका॥ करै साधना ये नर जोई। परखकहा लक्षणकहु सोई॥ दो०॥ सुनो तात दृष्टान्त शुभ परख साधनाचारि। अस्त०यस्त निर्णयनकछु कहौं सकल निरधारि॥चौ०॥ ब्रह्मादेव राज अहिराजा। यक्षप बरुण सूर यम भ्राजा॥ भूपति रंकधनी सुखखानी। कामी कुटिल गुणी अज्ञानी॥ तिहुँपुर देहधारि जे प्रानी। जो कृतभोग अधिक सुख मानी॥ सो समस्त दुखदा अनुरागी। काकविष्ट सम लखै विरागी॥ असिमति जासु देखियेभाई। सो वैराग्य योग स्यवकाई॥ देहअनित्य सदा छलकारी। आतम नित्य स्वछंद बिहारी॥ सारासार शुभाशुभ जानै। सो विवेक मारग पहिचानै॥ सकल बासना तजिसंसारी। शम दम दान दया अधिकारी॥ दो०॥ बिषयदोष निरखैनहीं दुखसुख लखैसमान। आज्ञा गुरु श्रुति शीशधरि विचरै जगत सुजान॥ अति श्रद्धा यक चित्तह्वै ध्यान समाधि लगाय। ताहि समाधी कहत जग योगिराज सुखपाय॥ चौ०॥आवागमन त्यागहितभाई। बहुबिधि करैयोग चितलाई॥ बासररैनि ईशपद ध्यावै। सोमुमुक्षु पदधारि कहावै॥ यहि बिधि सकल साधनासाधै। भजैआपु आतमनिरुपाधै॥ पूंछि बहुरि मन यहबुधिपाहीं। चित्तअहंमन बुधितन माहीं॥ बसतसकल गावत कविराजा। निर्णयकरि बरणौतिनसाजा॥ सुनोतात तिहुँपुरकर ज्ञाना। बसतचित्त बुधकरत बखाना॥ प्रथमहिं जो विचार कछु आवा। चित्तवहै ज्यहिजीव चितावा॥ करिलेहौं देहौं मैंयेही। शोचत यहै अहंकहु तेही॥ दो०॥ बहुविधिकरै विचारजो काज सिद्धिकेहेत। सोहै मनमन जानिये बरणत बुद्धिनिकेत॥ सब को थिरकरिदेइजो सुन्दरसिखदैतात। सोबुधि ज्ञाउपदेशते काज सिद्धिह्वै जात॥ येई अंतःकरणमन भाषत बुधजनचारि। अन्य भावना होयजो सोबरणौं निरधारि (मनउवाच) लोगकहत सं-

सारके करणयोग तिथिवार। ऋक्षसहित पंचांगशुभ करतसुसिद्धि बिचार॥ चौ०॥ जबपंचांग अशुभ यहहोई। सिद्धिकाज तबहोय न कोई॥ तहां कौनविधि कारज करई। होइ न हानि लाभ संचरई॥ सोविचार म्वहिंकहौ कृपाकरि। ह्वै प्रसन्न उरअधिक दयाधरि॥ दिशाशूल योगिनी बतावै। चन्द्र राहु शुभ अशुभलखावै॥ करै न गौन हानि अनुमानी। जबये अशुभलखै जगप्रानी॥ विष्टमुहूर्त्त विचारत पंडित। कारज कृतलहि सगुन अखंडित॥ योगीजनन विचारत सोई। गौनसिद्धि कारज सिधि होई॥ यहसिद्धांतकहौ समुझाई। ममदुबिधा सबजाइ नशाई॥ दो०॥ गेहीजन रोगहिलहत औषधि करत अनेक। रुष्टपुष्टयोगी रहत बिनऔषधि गहिटेक॥ मज्जन भोजन शैन लघुशंका शंका जौन। इनहींके विपरीतता होत रोग ग्रह तौन॥ इन सबको सिद्धान्त जो सोम्वहिंकहौ बुझाय। पांचतत्त्वको रमणतन ताहि देह समुझाय(बुद्धिरुवाच)चौ० पूंछसि.भलविचार सुखखानी। कहिहौं सकल सुमिरि पदवानी॥ यहपंचांग सत्यकरि जानों। शुभअरु अशुभहिये अनुमानों॥ ज्योतिषमत न योगमतभाई। सबविधि सिद्धिसिद्धि मनपाई॥ तिथि अरुबार योगशुभहोई। सकल सिद्धिदा अशुभ न कोई॥ सबहि उचित सबकरैं बिचारा। याहीकर विशेष निरधारा॥ ज्यहि मतयेन शुभाशुभ भाषैं। सब विधि मंगलसिद्धि प्रकाशैं॥ सो सुरज्ञान सुखद सबभांती। धरियध्यान तापर दिनराती॥ बरणौं सुरज्ञानहि बिस्तारी। निज मतिसम लखि ग्रंथ पछारी॥ दो०॥ यह समुद्रवत ज्ञानहै बीच श्वासकी गौन। निर्णय कारज जगतको जलजीवन समतौन॥ तत्त्वनको निरधारजो सो अगाधता जानु। बहु प्रकारके भेदते मिलत सरितवत मानु॥ तासमुद्रके पारको जानचहै नरकोय। बोहित बिन आरूढ़भे पारजाय किमिसोय॥ चौ०॥ एकपरंतु मोहिं बलुभाई। करैस्वामि गुरुमोरि सहाई॥ आमिष तरणि आपुके बारा। घनैतो बेगिहि होइ उतारा॥ करिहै सो सहाइ

जनजानी। स्वहिंभरोस यहमनक्रम बानी॥ ताते बन्दिजलज पद गुरुके। निर्णयकरौं ज्ञान सुरफुरके॥ सुनो सुरोदय ज्ञान रसाला। कहो उमापति शंभु कृपाला॥ नाड़ी थित बहुबिधि तनमाहीं। जानतबुध मूरख जननाहीं॥ नाभि अधोखग अंड समाना। सबनाड़िनकर स्वइअस्थाना॥ अध ऊरध तिर्छी चहुं धाई। सहस बहत्तरि नाड़ि सिधाई॥ दो०॥ तिनमहँ दशअति श्रेष्ठहैं प्राणस्थित सोजानु। दशमहँ त्रैसुखदा इड़ा पिंगलसुखमनमानु॥ चौ०॥ चौथी गंधारी अनुमानो। हस्त जिह्वा पुनि पूषाजानो॥ यशस्वनी सातवीं बखानो। अलंबुषा अरु कूहू मानो॥ और शंखिनी कहत सुजाना। येदशनाड़ी सहित प्रमाना॥ अब इनकर विश्राम बताऊं। जगत काजहित ज्ञानलखाऊं॥ इड़ाबाम नासा पुटमाहीं। बसत पिंगला दक्षिणताहीं॥ दौसुर पूरणकरै प्रबाहा। सो सुखमना कहत कबिनाहा॥ गंधारी बामाक्ष निवासी। हस्त जिह्वा दक्षिण दृगबासी॥ पूषा दक्षिण श्रुत बिश्रामी। बामेकरण यशस्वनि धामी॥ दो०॥ अलंबुषा मुख बासिनी कूहूलिंग बिराम। शंखिनि मूल स्थानबस दश नाड़ी दशधाम॥ त्रैनाड़ी अतिश्रेष्ठजे प्रथमहिं कही बखानि। तिनहींको सबख्यालहै शुभबिचार अनुमानि॥ चौ०॥ गायत्री अजपा सुखदाई। सोहंहंसः दुबिध बताई॥ नित प्रतिगौन श्वास मगहोई। यकइस सहस छसौ कहु सोई॥ निरगम श्वासहँकार बिचारै। सहितबिन्दु कोजैनिरधारै॥ विसरगसहितसकारप्रबेशा। शुभगमंत्रयहअहै गवेशा॥ यहिसम मंत्रन जपनहिं ज्ञाना। तपन कर्मवियानहिं ध्याना॥ सकल भरमना जेजगमाहीं। जपत मंत्र ते सर्ब बिलाहीं॥ सो वृतांत कहिहौं कछुआगे। सुनोतातअहि हित अनुरागे॥ इड़ा पिंगला सुखमन जोई। सकल सिद्धि दायक है सोई॥ दो०॥ इड़ाबाम पिंगलदहिन नासा अनिवास। दोनों सुरपूरण चलै तब सुखमना प्रकास॥ चौ०॥ इड़ा चन्द्र थिर कारज दायक। पिंगल रबिचर कारज लायक॥ सुखमन

सकल काजकी भंगिनि। केवल ईश भजन की संगिनि॥ जब सुखमना श्वासमग होई। तब न काजकीजो जगकोई॥सुखमन ध्यानअग्नि थितरहई। कारज थिर चरसब सो दहई॥इड़ाचंद्र समरूप बखानो। पिंगल भानु बिषम पहिचानो॥ इड़ा नारि पिंगला पुमाना। सितशशि असित रूपसो भाना॥अबसुनुइड़ा काज चितलाई। थिरकारज कीजिय सुखपाई॥ आभूषण गढ़ गढ़ी बनावै। यात्रादान विवाह करावै॥ दो०॥ अलंकार मणि बस्त्रको बनवाउब तनधारण दानदेव प्रेतिककरम काष्ठकर्मनिर-धार॥ चौ०॥ स्वामिदरश कीजिये मिताई। बणिज वित्त गृह प्रबिशिय भाई॥ सेवा कर्म कृषी आरंभा। बीज बवन मखकर प्रारंभा॥ दिक्षादेइ मंत्रकहुँ जपई। बियारंभ गेहनिज थपई॥ दरश बन्धुअरु बारि बँधाउब। रस साधन शुभ बाग़ लगाउब॥ बापीकूपसमहल तड़ागा। करु शशिचार सहित अनुरागा॥ गीत बाद्य नृत्यादिक कीजै। निधिमहि थापि सकल सुख लीजै॥ भूमिलेब अरु नगर बसाउब। बहु प्रकार जग धर्म चलाउब॥ अपरौकाज लखौथिर जोई। चन्द्रप्रबाह कीजिये सोई॥ दो०॥ इड़ाकाज बर्णनकिये सुनुपिंगलके काम। दूरि होय भ्रम जगत हिय होवैज्ञान बिराम॥ चौ०॥ शास्त्रारथपुनिकरिय बिवादा। चोरीअरु अखेट परसादा॥गजबाजी रथबाहनलीजै। दक्षिणचार प्रयोगहि कीजै॥ पाट पटाम्बर शस्त्र मँगावैं। भेषज करि बिष भूतहटावैं॥ युद्धगमन दक्षिण सुरकरई। निश्चय जीति शत्रुपद हरई॥ त्रिय प्रसंग करु भानु प्रबाहा। सोवन भोजनादि सुख लाहा॥ क्रयबिक्रय सुपुण्य अस्नाना। भयमारग ब्योहार सु-ज्ञाना॥मोहन उच्चाटन बशकर्मा। अस्तंभन मारणजे धर्मा॥खर उष्ट्रादि महिष असवारी। गज अश्वारोहण सुखकारी॥ दो०॥ तीरथब्रत इत्यादिजे चरकारज जगमाहिं। रबिनाड़ी महँ सिद्धि ते होवत संशयनाहिं॥ सो०॥ जबसुखमना प्रबाह होवै दोनों सुरनमहँ। तबनकाज कहजाह अर्थहानि जिय हानिलखि॥

चौ० ॥ शुभअरु अशुभ चरस्थिरकाजा। सुखद दुखद दुहुँ भांति समाजा ॥ काजन प्रश्न न गौनियभाई। जब सुखमना बाह दरशाई ॥ कहुँदक्षिण सुर बायों कबहीं। लखु सुखमना रूपयह तबहीं ॥ केवलकीजिय आतम ध्याना। उठि न थान ते करिय पयाना ॥ दूरिपन्थ स्वारथ अनुरागे। चन्द्रचारलखिचलौ सभागे॥ होयसिद्धिसब बिघ्ननशावै। अर्थसहित निज गृह फिरि आवै ॥ बामकि दक्षिण जोसुर चलई। ताहि बिचारि विबुध मन गुणई॥ बाम बामपद दक्षिण दाहिनि। देइप्रथम सब दिशि दुखनाहिन॥ दो० ॥ ॥ बामचार समपदधरै जैसेद्वै अरु चारि । भानु बिषम जिमि तीनिशर यात्रासिद्धि बिचारि ॥ बामकि दक्षिण जौन सुर पूरण होवै तात। तौनीदिशि पूंछैचतुर काजसिद्धिह्वै जात॥ चौ० बामअग्र ऊरध दिशिहोई। बहैचन्द्र सुरपूछै कोई ॥ कारजसकल सिद्धि पहिंचानै । शुभकारी इमि ताहि बखानै ॥ पृष्ठ ओर दक्षिण अध आशा। प्रश्न करै सुर भानु प्रकाशा ॥ सिद्धि सर्व ताकहँ कहिदीजै। मंगल समुझि सुरोदय लीजै। चहुंदिशि गौनकरिय क्रमयेही। योगिराज बरणत हैं तेही ॥ पूरब उत्तर रबिकीनाड़ी। गमनकरै तोहोय सुखारी ॥ पश्चिम दक्षिण शशि परबाहा। जाय पुरुष उपजै सुखलाहा ॥ यहि बिपरीत गमन जोकरई। प्राणजायकै संकट परई ॥ दो० ॥ शशिमें सम अक्षर कहै जिमि दश द्वादशबीश । वाही दिशिह्वै प्रश्नकृत होय काज कहईश ॥ बिषमबरण बोलैचतुर ज्यों नव ग्यारह सात। भानु उदय दक्षिणदिशा सकल सिद्धिकहु तात॥ उदय सुखमनाहोय जब तबपूंछै जोकोय । अफलहोयँ कारजसबै कहकवि ग्रन्थनिटोय ॥ चौ० ॥ अब तिथिआदि लग्न अरुबारा। चन्द्र सूरसँग करौं बिचारा ॥ शुक्लपक्ष प्रतिपदा जोपावै। तादिनते शशिउदय बतावै ॥ तीनिदिवस शशिउदय प्रधाना। पुनि रबि बहुरि चंद्र फिरिभाना ॥ यहिबिधि कृष्णपक्ष दिनतीनी। परिवाते रबितिथि गनिदीनी ॥ फिरि चन्दा पुनि भानु प्रकासा। समुझत यो-

गिराज सुखबासा ॥ परिवा शुक्लपक्ष शशिराजा। बहै चंद्र उपजै सुखसाजा ॥ कृष्णपक्ष परिवा रबि बहई। सकलानँद दायक कबि कहई ॥ शशितिथि रबि रबि तिथि शशिचारा। अतिकलेश तबचतुर बिचारा ॥ दो० ॥ बहै क्षपाकर द्वैजतिथि शुक्लपक्षभरि पूरि। मंगलमत सुरज्ञानके सुख उपजै तनभूरि ॥ चौ० ॥ प्रात समय शशिनाड़ि प्रकाशा। अरु मध्याह्नहु चन्द्र बिलाशा ॥ संध्याकाल दिवाकर चारा। सबबिधि सुखद मिटै दुखभारा ॥ रहै दिवस भरि शशि सुरमाहीं। अन्यभाव डोलै जब नाहीं ॥ निशिभरि उदय भानुकर होई। अलपकाल नाशक है सोई ॥ यह संयोग जानि परिहरई। सहि दुख अल्पकाल नर मरई ॥ पूरुबवत शशि सूर चलावै। पूरण आयुहोय सुखपावै ॥ पांच तत्त्व पूरब जेगाये। जिनकरि सब जीवन तनपाये ॥ क्रम क्रम बहत श्वासमहँ सोई। महिजल पवन शिखी नभजोई ॥दो० ॥ अहनिशि द्वादश बारतन सक्रम होवत भाय। जगत काजहित हेत सबकहौं सर्व समुझाय ॥ चौ० ॥ द्वादश राशि जगत सब जानै। उदितहोत रबि चतुर बखानै ॥ वृष अरु कर्क कन्यका जोई। वृश्चिक मकर मीनयुतसोई ॥ इनषट लग्ननमहँ शशि बासा। करिय काजलखि लग्न प्रकासा ॥ मेष मिथुन हरितुला बखानौ। धन घटराज भानु जियश्रानौ ॥ जो निर्णय आछी बिधि करई। तौ येराशि त्रिधा उच्चरई। मेषरु कर्क तुला खग जानौ। इनमहँ रबिकर योग बखानौ ॥ वृष केशरी कुम्भअलि जोई। योग निशाकर शुभदा सोई ॥ मीन मिथुन कन्या धन राशी। द्विःस्वभाव सुखमना निवासी ॥ दो० ॥ चन्द्रयोग थिर काजकरु भानुयोग चरसाधु। सुखमनमें सब त्यागिकै निजआतम आराधु ॥ दिनकर निशिकर योगमहँ शुभ अरु अशुभ विचार। काजभंग सुखमन चलत करिये बुध निरधार ॥ चौ० ॥ गुरौ शुक्र बुध औ शशिवारा। बाम नाटिकायोग बिचारा ॥ भौम शनीचर रबिदिन जोई। सूरजयोग सुखद कहुसोई ॥ गुरु बुध

भृगु शशिदिन सितपाखा। चन्द्रउदय उपजै सुखछाखा ॥ असित पक्ष रबि शनिमहि बालक। डोलै भानु मनौं दुखघालक ॥ यहि बिधि लग्नबार तिथि जानी। रबि शशियोग सोकही बखानी ॥ काज शुभाशुभ जगके जेते। पूरबयोग जानि करुतेते ॥ होइ न हानि काजकहु भांती। श्वास निरत जोरह दिनराती ॥ मूरख नरहि त यहमतदीजै। प्राणहानि धनहानि सहीजै ॥ दो० ॥ लघुशंका बामेसुरहि शंका दहिने माहिं। भोजन सुरपिंगल बिषे कीजिय संशय नाहिं ॥ बामे करवट शयननित कीजै चतुर बिचार। यहिबिपरीत किये बिबुध होय रोग अधिकार ॥ दश दिनके बिपरीतते अधिक रोग तनहोय। सो बिचार उरराखिये हानि लहै नहिं कोय ॥ जौनशशिके होहिं रबि तासु उदय पहिचानि। लग्न बिचारै सहजमत मंगलदास बखानि ॥ चौ० ॥ अबसुनु तत्त्व बिचार रसाला। कहौजौन बिधि शंभुकृपाला ॥ पांचौतत्त्व श्वासमग बहई। सुखद दुखद दोनों बिधिअहई ॥ परखब कठिनयोग बिनुजाने। सरल परख जो कहत सयाने ॥ सोहौं बदत सुनो चितलाई। तजि दुबिधा देखौ सुर भाई ॥ द्वादश अंगुल जबसुरडोलै। तबमहितत्त्व भलीबिधि बोलै ॥ षोड़शअंगुल होय प्रबाहा। श्वास तत्त्व जल कह कबिनाहा ॥ अंगुलाष्ट मारुत निरधारा ॥ चतुरांगुल सुरअग्नि बिचारा ॥ पूरण होसुर बाहिरनाहीं। गगनतत्त्व कबि भणत तहांहीं ॥ दो० ॥ अपरौपरख जो योगमत ताहिसुनो चितलाय। तत्त्वपरखि पुनि काजकरु हानिनहोवै भाय॥ चौ० ॥ मध्यमगौन भूमिसुरमाहीं अधोगौन सुरनीर लखाहीं ॥ ऊरध गौन श्वास शिखि बासा। त्रिजगबायु अरु शून्यअकाशा ॥ महिजल तत्त्व दुवौ शुभ भाई। मध्यमफल शिखिचार बताई ॥ गगनमरुत अतिअशुभ बखाने। हानि मृत्युदायक पहिचाने ॥ मध्य अचल सुखदा सुरजानौ। अध आनन्द रूप अनुमानौ ॥ ऊरधश्वास निधनकी दाता। तिर्यगमें उच्चाट कहाता ॥ गगन सदा सब काज नशावत। कौनौ

सिद्धि न जगकउ पावत ॥ यहिबिधि जानितत्त्व कृतकाजा। लहै हानि कोउरंकन राजा ॥ दो० ॥ शीशबास नभकंधशिखि वायु नाभिमहँ बास। जानुदेश महँभूमिजल पाददेशसबिलास॥सो०॥ गगनतत्त्व जबजानुसकलकाज तब त्यागिबुध। मनथिरकरिथरि ध्यानु भजुपरमातम परमनिधि ॥ दो० ॥ मंगल शिखिमय रवि धरा शनिजलमय जलराह। दक्षिणनाड़ी योगशुभ भणतसर्वकवि नाह ॥ सोमनीर मयइलाबुध गुरुमय पवनसुजान। शुक्र अग्नि मयकहत बुध वामनाटिका जान॥ चौ० ॥ तत्त्वपरख अवरौसुनु भाई। कहौंबहुत बिधि त्वहिं समुझाई ॥ चतुष्कोण डोलैरँगपीता। मधुरस्वाद भोगदा अभीता ॥ यहगति धरातत्त्वकी होई। कहो उमा प्रति शंकरसोई ॥ रक्तरंग कटुस्वाद बखानो। ऊरध गौन अग्नि पहिंचानो॥ श्वेतबरण अरु स्वाद सुखारा। वर्तुल गौन जानुजलधारा॥ रंगसितासित अमिल सुस्वादा। तिर्यगगौन पौन सुरनादा ॥ जलकस स्वाद रंगतस जाको। सर्बगौन सुर नभकहुवाको। यहिप्रकार लखि तत्त्वन भाई। सर्व काज तजु गगनहिं पाई ॥ दो० ॥ महिगुरु गुरु जलशनिभृगौ शिखि गुरुरविमहितात। पवनकोगुरुबुध गगनकेशमिअरु राहुकहात ॥पूरब ते जानतचतुर समुझौयाहि बहोरि। पुनिकारज कछुकीजियेमिटै बिघ्न शतकोरि॥सो०॥ आगमकहत बिचारि योगीजनजे योगवित। कहौंसकल निरधारि सुनो चतुर जनग्रन्थ लखि ॥ चौ०॥ चैतशुक्ल परिवाजब आवै ॥ प्रातसमय निजसुरचितलावै ॥ लगै मेष संक्रांतो जबहीं। बेलाप्रात बिचारै तबहीं ॥ संबत भरिकै कर्मबतावै। बिनायोग लखि कोउ न पावै ॥ यहिप्रकार योगीजन जानत। ते निजश्वास निरतसुख मानत ॥ पृथ्वीतत्त्व जो बहै प्रभाता। तौ यहि भांति चतुर कहु बाता ॥ जग सुभिक्षबृद्धि नृपहोई। अधिक वृष्टि सुख पूरण सोई ॥ उपजै अधिक अन्न जग माहीं। सकल उपद्रव रहित तहाहीं ॥ बामेसुर बिशेषफल दायक। दक्षिणचार समा सम लायक ॥ श्वासा मग जलतत्त्व

बिलोकै। समयसुखद सुख उपजै लोकै॥ होयवृष्टि बहु बिधि जगभाई। अरु सुभिक्ष निरोगहि पाई॥ गृहगृह मंगल चार बतावै। जब जल तत्त्व चन्द मग पावै॥ मध्यम फल सुर भानु प्रवाहा। भाषत सकल बिबुध कविनाहा॥ दो०॥ डोलै श्वास जो अग्नि मय राजभंग तबजानु। कालपरै भयभीत जग रोग ग्रसित अनुमानु॥ अल्पवृष्टि अन्नादिहू उपजै अल्पजहान। समय निषिद्ध बिचारिये गावतयोगि सुजान॥ चौ०॥ होयप्रात सुर पवन प्रवाहा। ईति भीति जलअल्प बिचारा॥ अति उत्पात जगतमहँ होई। समय दुखद कहुँ सुखद न सोई॥ बहैमेष संक्रांति प्रकाशा। शून्य फलहु अन्नादिक नाशा॥ अतिहि कराल समय तब जानिय। दुखद समस्त भांति अनुमानिय॥ नीरमही सुखदायक होई। अन्य तत्त्व नहिं सुखकर कोई॥ यहमत कठिन न सबसन होई। चतुरसुजान लखत कोइकोई॥ अबआगे पुनिआन बिचारा। करिहौं निजमति सरिस पुकारा॥ जाकेमन आवै सो कीजो। योग कर्म करिताहि लखीजो॥ दो०॥ श्वास निरतअहि निशिरहै समुझै सो सुरज्ञान। साधन बिन गुहबिन चतुर खोजो सकलजहान॥ मंगलजानत योगनहिं लोग कहत खइबात। मोमनमें बिश्वासनहिं औरनके मनतात॥ चौ०॥ सुनो जगतके काज अनेका। चितथिर करिपुनि सहित बिवेका॥ जल महि तत्त्व बामसुरपाई। थिरकारज कृतसब सुखदाई॥ पावकपवन संगरबिनारी। चरकारज करिहोइ सुखारी॥ तत्त्व वार तिथि राशि गनाई। सुरअरु पक्ष होइ यकठाई॥ चन्द्रयोग अथवा रवियोगा। थिरचरकाज करैंजग लोगा॥ सिद्धि समस्त सर्व सुखहोई। हानिकोहु बिधि लहैन कोई॥ जापर कृपा करैं जगपालक। यहिबिधि लखै युवाअरु बालक॥ तजि मान्यता बड़ाई दोई। कहौं न जानि सुरोदय कोई॥ दो०॥ जब आछी बिधि योगमत जानिलेहुयहिभाय। तबचहुकाहूचतुरको बुधजन देहुबताय॥ सकल सिद्धिकी सिद्धिहैं सबयोगनको योग। मूल-

ख त्यहि जानतनहीं लखत सुलक्षणलोग॥ चौ०॥ मरुत तत्त्व महँगर्भजो रहई। दुखीविदेशी उपजै कहई॥ बह्नितत्त्व के योगहिपाई। अवैगर्भ सुतजियैन भाई॥ धरातत्त्व मधिगर्भ प्रवेशा। उपजै बालक सुखदधनेशा॥ भोगवन्त सुन्दर तन होई। प्रीति करै वासँग सब कोई॥ नीर मध्य भागी धनवाना। होवै बालक चतुर सुजाना॥ प्रगट बिनाशक व्योम बखानो। सुखमनके संसर्गहि जानो॥ आदित राजसुवन कर योगा। खगपति राजसुता कथ लोगा॥ सुखमन मध्य नपुंसक भाषत। जे जन योगधर्म अभिलाषत॥ दो०॥ यहि बिधि भोगिय नारि निज तनया सुत हित लागि। तत्त्वविशेषि बिचारिये देखियहिय निजजागि॥ प्रश्नगर्भकी करैकउ प्रथम श्वास निजदेखु। तापाछे उत्तरकहिय सरमधिज्ञान बिशेखु॥ चौ०॥ पृथ्वीजल सुत योग प्रकाशै। मरुत सुता शिखि गर्भ बिनाशै॥ क्लीव गगन अथवा सुकुमारी। अबनिर्णय सुनुचतुरअगारी॥ निजदक्षिण सुरप्रच्छक दाहिन। नृप समसुत उपजै भ्रम नाहिन॥ प्रच्छकचंद स्वचंद प्रधाना। कन्याविदित करौ बुधिवाना॥ निजसुर शूर निशाकर वाको। होयकुमार सदृढ़कहु ताको॥वाकरभानु क्षपाकर आपू। पतन जन्म ते शोक सँतापू॥ निजवाको एकैसुर होई। सुखद बिचार भनौबुध सोई॥ गुरुबिन कठिन जातनहिं जानो। गुरु गमसकल परत पहिंचानो॥ दो०॥ ऊरधसमदरशी भणत धातु जीव हियहेर। अधोमूल इस्थिरमनी चतुरबखानत टेर॥ धरा मूल मणि उदकहरि जीवरूप पहिंचानु। तजेधातु नभ चतुष्पद जानि स्वतत्त्व बखानु॥ चौ०॥ पूरण सुर पूछै नर कोई। शून्य और नहिंकारज होई॥ शून्यसमय पूछै हितकारी। पुनि पूरण सुर सुखद बिचारी॥ कहैविदेश गयो ममनेही। बहुत दिवससुधि लहीन तेही॥ दिशाबार तिथि अक्षर जानो। सुर संयोगहि पायबखानो॥ सुभगयोग सब सुखद बताइय। यहि बिपरीत अयोग लखाइय॥ सकलयोग सूरजकर होई। प्राचीदिशि उत्तर

शुभसोई॥ पश्चिम दक्षिणमधि संयोगा। आइहि सहितसमाज सभोगा॥ यहिबिपरीत दुखद बुधभाषत। जेनिजसुर निजवश करि राखत॥ दो०॥ धरातत्त्व अस्थिरसुजल आवन थोरे काल। पवनपयान कृतेशिखी गगननाश तनबाल॥चौ०॥ गमनहेतपूछे कउआई। तिथिदिन सुरबिचार चितलाई॥ दक्षिण पश्चिमग्रधि जलभूमै। फलदसुखदकोउ दुखद न दूमै॥ भानुयोग पूरुबउत्तर दिशि। देहबताइ बिचारि दिवानिशि॥अबआगे रणभूमिबिचारा। कहिहौं हौंनिजमति अनुसारा॥ चन्द्रयोग सब बिधि शुभहोई। वरण वार तिथि पक्षौ सोई॥ ऐसे भानु योग जबपाइय। जैति युद्ध महि सकल बताइय॥ दोनों दिशिके पूरुष आई। करैंप्रश्न दुउ युद्ध जताई॥ पूरण सुर ज्यहि दिशि निज होई। प्रथम प्रश्न तिहि दिशिकृत जोई॥ दो०॥ समर भूमि सो जीति है यामें संशयनाहिं। शून्य स्थलके ओरही पूछन दुहुंजन जाहिं॥ जो पाछेते पूछिहै बिजय तासुकी होइ। यामें संशय नाहिनैं कह हर निज मुख सोइ॥ चौ०॥ बामेसम अक्षर जयकारक। दक्षिण विषम वरण अरि जारक॥ सुखमन अमितकष्ट रणदा-यक। काहूबिधि नहिं सो रण लायक॥ दक्षिण बाम जो पूरण होई। त्यहिदिशि पूछैजीतै सोई॥ जो आपुहि रणकाज पधारै। तौ दक्षिणसुर बिजय विचारै॥ शशि सुरबाह प्रथम गहखेता। बिजय लहै निज भूमि समेता॥ अग्नि तत्त्व दिन तिथि रवि केरा। पाइ युद्ध गमनै कबिटेरा॥ दैवयोग अस योगहि पावै। शत्रु जीति सहजै घरआवै॥ बाम दहिन ज्यहि दिशि कहकोई। बहै न निज सुरतिहि दिशिसोई॥ दो०॥ मही तत्त्व जो होइ तहँ उदर घात तब भाषु। घात चरणजल अग्नि उर त्योंसमीर अभिलाषु॥ सो०॥ गगन मांझ शिर घात होवैकुछ संदेहनहिं। पांच तत्त्वकी बात सुर बिचारि रणभूमि कहु॥ चौ०॥ बहैजौन सुर त्यहि दिशि आई। पूंछै समर बीर सुखपाई॥ तब निजसुर महँ तत्त्व बिचारी। कहु सिद्धांत योग सुखकारी॥ समता धरा

बिजय जल देता। कहु रणभंग अग्नि कृतखेता॥ पवनमृत्युदा अशुभ अकाशा। समर देह हउ करत बिनाशा॥ बामे बामे सन्मुख धावै। दक्षिण पृष्ठ शूरलखि जावै॥ जीतै समर कुशल गृहआवै। योगिराज यह योग लखावै॥ पूरुब उत्तर बामबिशेखी। दायक बिजय कहत सुरलेखी॥ जयदा भानुदिशा हौ जोई। दक्षिण पश्चिम जानोसोई॥ दो० ॥ होइ दिवाकर उदय जब करु तब नारि प्रसंग। दुहुँ दिशि बाढ़ै नेहभल होवै प्रीति अभंग॥ चौ० ॥ अर्द्ध रैनि तिय अँगलिपटाई। निज सूरजत्रिय चंद्र मिलाई॥ पियै पुरुष कंदर्प समाना। होवै तिय हियसुख परमाना॥ नारिपवन शशिको निजभानै। करैनारि स्वबशअनुमानै॥ जो यह योग सिद्ध नर करई। ऊषा अनिरुध गतिरति चरई॥ एक जीवदूजहि धरि करै। जीव बश्य होवै अतिहर्षै॥ भानु चार आलिंगत नारी। उपजत सुत सब बिधि सुखकारी॥ अरु तिय बश्य जन्म जगहोई। सकल भांतिसुख नारिहिसोई॥ शशिमें तनया रति सुख हानी। यहै जानि कृत भोग न ज्ञानी॥ दो० ॥ बार बार बर्जति अहौं त्रिय प्रसंग शशिचार। जो कोउ करिहौ हठ सहित हानि बिरुद्ध अपार॥ सो० ॥ जो पूंछै कोउ आय बर कन्याके ब्याहको॥ दीजैचतुर बताय सुर तिथि बार सुलग्न गनि॥ चौ० ॥ चंद्र योग सब बिधि भल पाइय। टीका लग्न प्रबीन बताइय॥ सामग्री बिवाहकी जोई। चंद्रयोग महँ कीजिय सोई॥ भानु योग ब्याहनको जाई। भाईबन्धु जिमावै भाई॥ भाँवरि भानु मध्य शुभडारै। बिघ्नरहित निजसदनसिधारै॥ जो साधन यह चतुर बखानो। ब्याह करत सब सुख पहिचानो॥ अन्य भांति उपजै दुखदेहा। रंग भंग होवै न सँदेहा॥ ऊषा काल उदय बिपरीता। रबिग्रह शशि शशिग्रह तमजीता॥ अति अनीति बहु दोषन लावै। अब कबि तिन कर नाम गनावै॥ छं०॥ सुनु प्रथम मनउद्वेगता अरु द्वितियधनको नाशहै। पुनि तृतिय गौनौं कहुं चतुर्थे दृष्टि सुभग बिनाशहै॥

पंचम विनाशक सुख सबै षष्ठम स्वपदकी हानिहै। फिरि मृत्यु अष्टम होइ निश्चय कहत योग बखानिहै॥ दो०॥ महाकठिन यह समुझिबो गुरु बिन सुनो सुजान। शिष होवै निज धर्म दृढ़ तब सिखवत गुरु ज्ञान॥ चौ०॥ देन लेन रवि योगहिकीजै। दीजैबहु काहू ते लीजै॥ जोशशि योग लेइ ऋणकोई। जन्मांतर लगि अऋणनहोई॥ ऐसे योग क्षपाकर माहीं। देइबहुरि पावै सो नाहीं॥ देइ लेइ सुख मनमहँकोई। दूमहँएककाल वशहोई॥ योगतमारि करोव्यवहारा। यहितेशुभनहिं आनबिचारा॥ धनी पास जब जाइयभाई। बैठियदाहिनओरभलाई॥ दाहिनसुर निज अर्थ उचारै। रवि सँयोग धनलेइ उधारै॥ बिन श्रमअऋण होइ ऋणटूटै। आनँद अमित बैठिगृहलूटै॥ दो०॥ समाचार पूंछै कोउ रोगीको त्वहिंआय। निजसुरभेद बिचारिकै देवै ताहि बताय॥ चौ०॥ दिनकर योग दाहिनी ओरा। पूंछै जियै योगिकहँ भोरा॥ बामअंग निशिनाथ प्रवाहा। रोगीजियै मिटै दुखदाहा॥ चंद्र ओर पूछै रबिबाहा। निश्चय मरणजीव कोताहा॥ जब शशि बहै दहिनि दिशि पूछै। रोगी मरै मनोरथ छूंछै॥ जौननाटिका बहै समीरा। पूंछै तौनओर मतिधीरा॥ रोगी जीवन तुरत बतावै। उमानाथ यहउमहिंलखावै॥ आन योगसब शशिकरलोई। केवलसुर सूरज करहोई॥ कुछ दिन बादि रोगकर नाशा। प्रच्छकलोइनि करिय प्रकाशा॥ दो०॥ दक्षिण दिशिते आइकरि बामेपूछै कोय। बामेसुर बायुबहै सुखदयोग कहुलोय॥ चौ०॥ शशिदिशिते फिर रबिदिशि आवै। रबिन बहैरोगी दुखपावै॥ बाम ओर पूछै रबिबाहा। कछुककालसोमी दुखदाहा॥ जहांशून्य सुखमन करराजू। रोगीनाशैहोइ अकाजू॥ कोटि उपाय रोगि मरिजाई। कहोउमाप्रति शंभुगोसांई॥ कालज्ञान आगे अब भाखौं। जगत काज निज गुप्त न राखौं॥ जोसुर ध्यान रैनिदिनधरई। कालज्ञान ताको लखिपरई॥ कर्त्ता सत्य अकर्त्ताजोई। षके चहौंगतिलहै न सोई॥ चतु-

रसुजान प्रकट यहदेखौ । सुरते परेन जगकुछ लेखौ ॥ दो० ॥ उदय होय बिपरीत सुर एकपक्ष लगुतात । रोगग्रसैतब आय तन सुरमत भाषत बात ॥ चौ०॥ एकमास इमि जब सुरडोलै । सुहृद बंधुको बिपति अतोलै ॥ पक्षतीनि में तन नशिजाई । प्रकट परत बिपरीत लखाई ॥ कैचन्दा कैसूरजकोई ॥ बहै रैनि दिन पूरण जोई ॥ तीनवर्षलग कालनआवै । पाछूअंत होयबुध गावै ॥ बहै पिंगला द्वै दिन राती । युगुल वर्ष पीछे मरिजाती ॥ तीनि दिवस निशिको सुर बहई । बर्ष प्रयंत आप तन रहई ॥ षोड़श अहि निशि सूरप्रबाहा । मास एकलखि जीवन लाहा ॥ मासप्रयंत चलै सुरभाजा । दिवस होइभरि जीवन जाना ॥ सुखमन उदय होय घटि पांचा । छुटैशरीर जानियेसांचा ॥ चन्द्र सूर सुखमना नशाई । आनन पवन बाहदरशाई ॥ चारिदण्डलगिकाया रहई । पाछू प्राण शमन चरगहई ॥ तत्त्वअकाश निशा दिनतीनी । मीचुवर्षपीछे कहिदीनी ॥ दो० ॥ दिनसूरजनिशि चन्द्रमा एक मासकृत गौन । जीवरहै षटमास लगि सत्यसत्य लखुतौन ॥ जानिकाल योगीचतुर प्रथम शून्य ग्रहजाय । काल आइ फिरिजाइ तब लेइ समाधि जगाय ॥ सो० ॥ कहो सुरोदय ज्ञान जसकुछमैं समुझोहिये । अबसुनु सहित प्रमान अजपाको व्योहार कछु ॥ चौ० ॥ प्रथम मंत्र अजपा जोभाषो । वहै मंत्र दृढ़ जिय अभिलाषो ॥ आसन बहुत योग मतगाये । ते सबौंकरि ध्यान लगाये ॥ तिनमहँ पद्म सिद्धद्वै जोई । एकलगाय मंत्र जप सोई ॥ पद्मासन बिशेष फलदाता । शुचिह्वै मंत्रजपै उठि प्राता ॥ मौन जपै उयहि सुनैन कोई । अतिफलप्रद जानियबुधसोई ॥ दृष्टि नासिका अग्र लगावै । शमन जपैमन आन न आवै ॥ चहुंजसमीत क्रिया बिनहोई । तदपि न तासन भाषिय सोई ॥ जन्मांतर लगिजो यहसाधै । जन्म मरण की मेटैबाधै । दो० ॥ तीनिकाल तिहुं लोकमें बिदित मंत्रयह आहि । साधक याको कौन अस सुगतिमिली नहिंजाहि ॥ चौ० ॥ शंकर बिधि

अवतार मुरारी। यहै मंत्रजपिभये सुखारी। अरु हनुमान परमपदगामी। जपियह मंत्रभये अधिनामी॥ ध्रुवप्रहलाद जप्योचितलाई। शुभगति लहीपुरानन गाई॥ नारद सनकादिक बिज्ञानी। भये स्वेच्छाचार प्रमानी॥ ज्ञानी गुणी मुनी संन्यासी। जपतमंत्र यह परम उदासी॥ कलिमहँ बहुतजीव जपियेही। पायसुगति भे परम सनेही॥ रामानन्द कबीर गोसांई। सूरसधन पीपा गतिपाई॥ और अनेक जपीयहिकेरे। बसेपुरुष ते हरिकेनेरे॥ दो०॥ ताकारण अहनिशि चतुर एकबारनित साधु। सुमनध्यान धरिदुचिततजि निजआतम आराधु॥ राजसुखमना कोलहै निशानाथ रविनाहि। कंजासन आरूढ़है तबबिशेष जपुयाहि॥ मोक्षद्वारौं जीवकहँ सुखदसुखमना जानु। अपरनाटिका मोक्षदा मंगलहृदयन आनु॥ (मनउवाच) आतमबास शरीरमहँ सोकैसोहै भाखु। दास आपनो जानिकै जनिदुराव कछुराखु॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ आतम करशरीर महँबासा। लिप्तालिप्त दुहूं बिधि भासा॥ जिमि जन जलघट अगणितभरई। सन्मुख दिनकर केसो धरई॥ पुनिसब घटनि बिलोकैजाई। रविवतरूप सबन महँभाई॥ रवि समान सो रवितेन्यारा। इमि शरीर आतम बिस्तारा॥ अथवा जिमि दर्पण मुखदेखै। दुबिधा भाव बदन नहिं लेखै॥ ऐसेइ आतम बसत शरीरा। लखत सुष्टुधी परम गँभीरा॥ इन्द्रीसकल सोइ बौरावै। सुथिर आपु कहुँजाइन आवै॥ नैनादृश्य श्रवण बिन सुनई। रसना रसन चाखिसुख गुनई॥ दो०॥ ज्ञानेंद्रिय जे पांचहैं कर्मेन्द्रिय जेबाण। तिनकरि सोनहिं जानियत सुनुमन सहितप्रमाण॥ (मनउवाच) ज्ञानेंद्रिय कर्मेन्द्रिजे तिनकरिलखो न जाय। फिरिकैसोहै सो कहौ भ्रमणासकल नशाय॥ (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ सुनुप्रमाण तोहिंकहौं बुझाई। लखिआतमगति रहुअरगाई॥ रूपाक्षेनिरखै रविकासा। ताबिन निशि बुध करत प्रकासा॥ तूझैकुछनहिं नैनपसारे। सबकउलखै सूरबिनकारे॥

रविदेखनहित रविनंहिं चाहिय। इमिआतम स्वभास तनआहि-
य ॥ औरवस्तुखोजे लगिभाई। दीप प्रकाश कीजियत धाई ॥
प्रज्वलितदीप खोजिवेकाजहि। कोप्रकाश दायक सुखभाजहि ॥
वस्तु समस्त नैन सो देखै। नैनलखन हितक्यहि अवरेखै ॥ है
प्रकाश निधि आतमऐसो। दीपकअक्ष भानुभन जैसो ॥ दो० ॥
रविरविदीपक दीपसों नैन नैनसोंदेखु। और वस्तुनहिं चाहिये
ईमिआतम निजलेखु ॥ चौ० ॥ मैंतूचित्त अहँकार कहावे। चारों
एक रूपहै जावे ॥ यकमति यकगति है जबहूँ। तब निरुपाधि
लखैगतिगूढ़ं ॥ इन्द्रीसर्व सोमन आधीना। मनसो बुद्धिअधीन
प्रवीना ॥ जीवाधीन बुद्धिबुध कहई। बिन सूक्षमधी अलख न
गहई ॥ तजिभ्रमणा दुविधासंसारी। मारगज्ञान लखैसुखकारी ॥
उदयज्ञान होतैतममाहीं। दुखदासकल व्यकार नमाहीं ॥ याव-
द्भ्रमणा नशै न भाई। तावद्मोह अग्री न नशाई ॥ मोह नशे-
बिनसुबुधि न होई। बुधिबिन आतम लखैन कोई ॥ दो० ॥
आतम निजचीन्हेबिना जरामरणन नशाय। जन्ममृत्यु के नाश
बिनु लहै न ईश्वरभाय ॥ (मनउवाच) सो० ॥ ब्रह्मलोकेसोआहि
यहमोको समुझायकेहु। निर्गुणगुण अवगाहि तूसमर्थ सब भांति
बुधि ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ कहौं कौन विधि ब्रह्मस्वरूपहि।
कहतबनत नहिंरंकन भूपहि ॥ प्रजाकहौंतो भूपति कोहै। भूप
कहतपुनि प्रजानसोहै ॥ अलखकहौं तौ लखकोउ औरै। लख
किमिकहों अलख बिरमौरै ॥ जोअरूप भाषौंभगवानै। रूपपान
कोउदूसर जानै ॥ गुणमिधि कहों अगुणकहि कहऊं। अगुणकहत
फिरिगुणनहिं लहऊं ॥ बरणिकहौं कर्त्ताहैसोई। तौपुनिअहै अ-
कर्त्ताकोई ॥ अनुभावभनत भेदसंभवमें। संभवबर्णत गुणअनुभव
में ॥ निराकारजो ताकोभाषौं। तौअकार गृहकहि अभिलाषौं ॥
दो० ॥ कहौंबसतबैकुंठमें अथवाश्वेतद्वीप। तौनहिंज्ञानी मानि
है धरेहृदयबुधिदीप ॥ चौ० नारिकहौंतौ असमहाना। पुरुष
कहौंतो दुबिधानाना ॥ कहौंनपुंसक लिंगगवेषा। तौ फिरिज्ञानी

करिहि अँदेशा ॥ सांख्यशास्त्र जोकर्मबतावै। प्रथमचतुर तिनमहँ मन लावै ॥ योगशास्त्र पुनि खोजै कोई । समुझै हृदय रूप हरि सोई ॥ कबि कोविद कउ अस न जहाना ॥ परमात्माकर करै बखाना ॥ वेदशास्त्र कहि नेति पुकारै । और कहा जग जन अघ भारै ॥ ईश्वर सब जीवन तनबासी। बिमल बुद्धि यह भणत उदासी ॥ आपनपौ चीन्हे जो चातुर । समुझै ईशरूप वह सातुर ॥ दो० ॥ आतमही परमातमा याको जानैकोय । मिलै ईश ह्वै ईशमें जलनिधि जलसम जोय ॥ ज्ञान बिना तिहुँलोक में ताहि न जानै कोय । जोकउ ज्ञानी हियलखै कहिनसकैगो सोय ॥ द्वैत भावते रहितहै उपमा दीज़िय कौन। उपमा बिन संसारमें समुझिसकै बुधतौन ॥ चौ० ॥ जबद्वउ सूक्षम थूल शरीरा । ह्वै चैतन्यगहैं सुखपीरा ॥ अरुजब स्वप्नमांझ धसिजाई । मन भ्रमाय निज भ्रमणा पाई ॥ पुनि सुखोप्ति जबहोय जीव कह। तीनि बहिक्रमकरि बिचार गह ॥ इन तीनोंमहँ आपुहि माहीं । छिप्तरहै सब भ्रम मिटिजाहीं ॥ तबवैहोय तुरिय हरि लीना। जहांहोय मन सुख दुखहीना ॥ प्रथमावस्था तीनि बताई। हरिपद प्रीति रहै लवलाई ॥ जपैमंत्र पूरुब जो भाषो। सदृढ़ बुद्धि आतम अभिलाषो ॥ तब मिटिजाय अवस्था भूरी। तुरियः पदहिरहै गति पूरी ॥ दो० ॥ कठिनज्ञान मारगरहै बिरलो कोउ ठहराय। जोसमर्थ पूरबतपी गहै सोय चितलाय ॥ जानब श्रीजगदीश को खोउब मनों अपान। को ऐसो समरथ जगत फिरिकैकरै बखान ॥ चौ० ॥ जिमिपूतरी लौनकीभाई ॥ नीर सिंधुमहँ जाय मिलाई ॥ सो ह्वै जाय मिलितकीलाला । कहो बहुरिको कहैहिवाला ॥ जो कोउकहै कि मैं त्यहि देखा । सो मिथ्या पुतरी दधिलेखा ॥ दूरि दरश करि बहुरि जोआवै। करि अनुमान सोरूप बतावै ॥ कहिनहिंसकहिरूप सबताको । दशदिशि भेद लहो नहिं जाको ॥ जोयेपंथ जगत महँ नाना । तिन सबकर मत सुनु आख्याना ॥ जसबहु अंधगहैं गजधाई

भिन्नभिन्न तनको हरषाई ॥ कउ कठि गहे कांध कउलागो। उदरतले कोउ पद छ्वैभागो ॥ दो० ॥ कोऊगये सुपूंछ त्यहिकोढ पांजरलाग। हाथी छूटे करणते लगेचित्त अनुराग ॥ चौ० ॥ यकठाभये वाद प्रतिबादा। लगोहोय तिनमहँ संवादा ॥ जोकरि लगो सोकरि सम कहई। कांधगहो सोकांध सम लहई ॥ उदरगहो सो कहे छति ऐसे। चरणस्परशस्तंभसुजैसे ॥ पूंछ गहे सो सर्पसम बादे। पांजर परश सोभीति बिवादे ॥ काहू लखो न सो सब नागा। झूँठ कहैं न सत्य अनुरागा ॥ मानै कोउ न कहे काहूके। द्रष्टा कहै देखि ताहूके ॥ कैसेफिरि समुझैंगे अंधे। लगे न देह मथनके धंधे ॥ निज निज सांचु बाद सोभाषैं। रूप समस्त सो यों अभिलषैं ॥ दो० ॥ तजि विवाद गजराजको बहुरि जाय लपिटाय। भिन्नभिन्न तन गहतही.मन भ्रमउपजै भाय ॥ सो० ॥ तब सो थोचै हीय पूंछ गही तब पदहि अब। करिकर गह निज जीय उदर दुहूंकर कुवतहीं ॥ चौ० ॥ इमि बिपरीत ठामकेपरसे। भ्रमभयकार उठैनिज घरसे॥ तबअस मत सब करैंबिशाला। द्रष्टासों पूंछैं गजहाला ॥ जानि भ्रमित द्रष्टा समुझावै। सहित सुनै मनभ्रम बहिरावै ॥ भ्रम बहिरात होय समधीते। लहैंभले शुभ मारगहीते ॥ पुनि बहोरि भ्रमणा तिनपाहीं। चतुरसुजान जातु लखु नाहीं ॥ समधी होत ज्ञान भलपावैं। सांख्यशास्त्र तबदृढ़ करिभावैं ॥ सांख्ययोग इकमत द्वौअहई। साधक दुवो मुक्त पदलहई ॥ अबद्रष्टाके लक्षण कहऊं। भ्रमणा सकलतर्ककी दहऊं ॥ दो० ॥ ज्यहि सबबिधि गजराजको परखो होवैतात। आगेपाछे दशौदिशि द्रष्टाताहि कहात॥ चौ० ॥ अंधप्रबोध होयमन बूझे। ज्ञाननैन सों दगन न सूझे ॥ ऐस्यइ चतुर साधुजन जानौ। द्रष्टवेद गुरूकह मानौ ॥ पारब्रह्म परखब कठिनाई। परखतही गूंगाह्वै जाई ॥ बधिर होय ध्वनि सुनत अनाहत। समुझि समुझि निजमन अवगाहत ॥ नहिं समर्थजो बरणिबतावै। यहिकारण गूंगा समभावै॥ मूकहि माहुर

देइमिठाई। किमि कहिसक मृदुता कटुताई। जो माया कृत होयन तिहुँपुर। उपमा योग ईशकी सोफुर॥ माया कृत तिहुँ लोक बतावत। वेदशास्त्र सब मत समुझावत॥ दो०॥ माया पतिके रूपको कहिनसकत यहिहेत। चतुर बिबुध कवि कुशल जग अलखताहि कहिदेत॥ होत अनाहत ध्वनि चतुर यकसुर रागछतीस। सातौसुर यामेंउठत किमिकहिसकतगवीस॥ राग द्वैचके सुनतको बधिरतो होतसुजान। निर्णयलख अरुअलखको सुनुमन सहित प्रमान॥ चौ०॥ पांच ज्ञान इन्द्रिय जो गाई। सु-निर्णय करिकै प्रथम बताई॥ बाणीकरि जोशब्द उचारा। सुनतश्रवण सों बैनपुकारा॥ नैन ज्योति सों लखत जो भाई। घ्राणेन्द्रिय सों गन्धिलखाई॥ त्वचसों परश ज्ञान जोहोता। सो सबलख मायाकर थोता॥ अपरएक वृत्तांत महावर। कहतसंत अरुवेद जानिफुर॥ मनकरि जो समुझत बुधिसेती। मायाधर्म कहोलखि नेती॥ जो समस्त तिहुँपुरकर ज्ञाना। सोलखरूप धरे भगवाना॥ लखबिस्तारसो अपरम्पारा। धरेबिराटरूपकर-तारा॥ दो०॥ कहौंअलख अबबोधिबहु ग्रन्थसांख्य अरुयोग। समुझोचतुर न प्रथमहीं अबपुनि समुझैं लोग॥ चौ०॥ माया यहअपार कृतजाकी। समुझत हिय मेरी मति थाकी॥ फिरि किमिकहौं अलखलख नाहीं। लखमेंअलख लखालखमाहीं॥ भूतसमस्त आदिहै माया। ज्यहिनिज बलसबनग उपजाया॥ ताकेआदि रूपहैजोई। वहै अलखलखि परतनसोई॥ जोकोउ लखैसुधी ढूंढ़ै। तौसमुझै शुभअलख अगूढ़ै॥ ज्ञानकर्म इंद्रिय सोंजोई। परखि सकत असभयो न कोई॥ ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय जोसों। परखि परैतो अलख नहींसों॥ अलखै लखत अलखयक आपू। जिमिजानत नभनिज परतापू॥ दो०॥ तेसोहै लखालख परमातम यकभांति। सगुणअगुण लख[illegible] है भ्रमबिन हृदयसमाति॥ कहो योग सिद्धांत यह [illegible] सरस बिचारि। अबजो पूंछैसोबहुरि कहौंसहित बिस्त[illegible]

नउबाच) कहौबरखि नवभक्तिजे सतसंगादिक तात। अरु नव बिधिको भजनजो सोकहिये बिख्यात (बुद्धिरुबाच)॥ चौ० ॥ सुनुनव भक्तिकहौं मनतोहीं। पूछ्योभल प्रियलाग्यो मोहीं॥ जबसिद्धांतयोगनिपुणाई। होयनप्रथमकरैयहभाई॥ नवधाभक्तिफलप्रद जोई। तिनकेकरत अचलमनहोई॥ सतसंगतिकृत प्रथमसयाने। भलीभक्तिनिज जियअनुमाने॥ द्वितियेहरि की चर्चाकरहीं। स्वपनों आनधर्मनहिंधरहीं॥ तृतियेगुरुचरणन सों प्रीती। नेमसहित पूजत श्रुतिरीती॥ हरिगुणगान अछलनिर्मोहा। भक्ति चतुर्थसुगतपरद्रोहा॥ वेदपाठहरिमंत्रसुजापा। पंचमभजनभक्तिहरतापा॥ सज्जनधर्म निरंतरधारे। शीलवंतषष्टम हरि प्यारे॥ भूतसमस्त ब्रह्ममयदेखै। सप्तमसंत ईशसमलेखै॥ लाभालाभसोसमसंतोषी। अष्टमहोयनबुधपरदोषी॥तजिप्रपंचश्री हरिशरणाई। नवमगहै दुबिधाइबहाई॥ दो० ॥ यहिबिधि करिनवभक्तिबुध लहैज्ञानसिद्धांत। लहेज्ञानसिद्धांतकेपावैमोक्ष नितांत॥ मोक्षपरेनहिंआनसुख जानत हैं बुधराज। सांख्यधर्म धरयोगरत चहतमोक्षकोसाज॥ चौ० ॥ अबसुनुभजन भावनवजोई। करिबिस्तार कहौंहौंसोई॥ सुमिरणकृत हरियअहित सेती। प्रथम भजन यह भणत सनेती॥ पूजन क्रम बाणी मन जोई। भाव द्वितीय लहै अघ खोई॥ करैं बंदना प्रभु पदकेरी। तीजो भजन भणत बुधटेरी॥ प्रीतम निज हरि कहँ जे जानैं। भावचतुर्थ हृदय अनुमानैं॥ श्रवणकरैहरि यशअछलहीना। पंचमभजन धर्म मतचीना॥ जो दासत्व भाव हिय धरई। षष्टम भजन भाव भवतरई॥ निशिदिन हरि चरणन अनुरागी। सप्तमहरिहित होयबिरागी॥दो०॥ कीरंतनहरियशकरैदुबिधाभावहित्यागि। अष्टम भजन प्रसिद्ध यह कहत बिबुध श्रुति पागि॥ चौ० ॥ आतम ध्यानकरै श्रुतिरीती। नवम भजन यह सदृढ़सप्रीती॥ यहिकृत जरामरण की फांसी। मुक्तहोय यह भणत उदासी॥ भक्ति भजन द्वौ भावबताये। करि विवेकहौं तोहिं

लखाये ॥ दोनोंपद निर्वाणहिं दायक। दोनोंचहुं आश्रमकेलाय-
यक ॥ प्रथमहिं ब्रह्माचार बखानो। द्वितियाश्रम सुगृहस्थीजा-
नो॥ तृतिये वानप्रस्थ बुधगावैं। चौथेसंन्यासहिं समुझावैं ॥ अ-
बचारोंके कर्म बताऊं। सुनुसचेत तोहिं सुमति लखाऊं॥ जब
किशोर बयहोवै भाई। ब्रह्माचार तबहिं मनलाई ॥दो०॥ समु-
झैतव शुभ अशुभजे धर्मपाप जगमाहिं। त्यागासत्त भवमें हुलै
तज निज धर्महिं नाहिं॥ चौ० ॥ ब्रह्मबिचार हृदय निजगुणई।
आनधर्म सबहितसों सुनई॥ जब दुबिधा भ्रमणामिटि जाई।
रहै आपुमें आपु समाई॥ पूरण प्रथमाश्रम इमिहोई। द्वितिया
श्रमहिं गहै बुधसोई॥ कहे पुराण वेदइतिहासा। करै गृहस्थी
धर्मप्रकासा॥ पुत्रत्रियापरिवारहिं मिलिकै। प्रीति रीति सहर-
हिये हिलिकै॥ एकपरन्तुकरै चतुराई। त्रिय सुत लहि न जा-
इबौराई॥ प्रथम बिचार रैन दिनराखै। गेहाश्रम अहनिशि
अभिलाखै॥ बानप्रस्थ फिरि होइ सयानो। त्रिय सँग रहै न
त्रिय रत सानो॥ दो०॥ बहुरि धरै संन्यास को त्यागि सकल
परिवार। ब्रह्मभजन में रतरहै कृत आतमा बिचार॥ चौ०॥
कतहुंक अंतकाल ह्वै जाई। यमनचार सक निकट न आई॥
स्वर्ग नर्क दोनों ते छूटै। वह समर्थ हरि मिलि सुखलूटै॥ जुपै
गृहस्थी में सनिजाई। तौ वह ब्रह्मबिचार नशाई॥ ब्रह्मबिचार
नशत सुनु ताता। इन्द्रभवन यमसदन सो जाता॥ जो दृढ़
धर्म गृहस्थीरह्यऊ। अन्तकाल सो सुरपुर गयऊ॥ दृढ़ता रहित
गेह आसक्ता। बानप्रस्थ ह्वै भौन बिरक्ता॥ रविसुत दूतबांधि
त्यहि भाई। नर्कद्वार दीन्हों ठढ़िआई॥ ब्रह्माचार प्रथम जो
कीन्हा। ताते नर्कवास नहिं दीन्हा॥ दो०॥ बहुरि मनुष्यहि
योनिमें जन्मत भो सहताप। आनयोनि ते रहित भो ब्रह्मबि-
चार प्रताप॥ स्वर्गहु ते तपक्षीण भे पुनर्जन्म जगहोइ। उत्तम
कुल आनन्दमय ब्रह्मचार रतसोइ॥ तब पुनि द्वितिये जन्म में
भजन आतमा ठानि। लहै मोक्ष हरिमें मिलै पुनि नहिं जन्मै

आनि (मनउवाच) जोपै ब्रह्माचारमें गहै धर्म संन्यास। तजै गृहस्थी ज्ञान बुध बानप्रस्थ तजि आस॥ तौ पूरण गति योग में प्राप्त होयकी नाहिं। यह समुझावो मोहिं अब सब भ्रम दूरि बिलाहिं (बुद्धिरुवाच) सो उत्तम सबते संन्यासी। ब्रह्मचर्य ते होय उदासी॥ धर्म गृहस्थी अति कठिनाई॥ जन समर्थ कोउ पारहि जाई॥ गेहाश्रम उत्तम सबतेहै। तजै न चतुरस्व-धर्म सनेहै॥ जो गृहमध्य उदासी रहई। धर्म आपनो दृढ़करि गहई॥ जीवन मुक्त ताहि पहिचानै। आनप्रकार न मन अनु-मानै॥ योगीयतीमुनी संन्यासी। तपसी ज्ञानवान गुणरासी॥ ऊंच नीच मध्यम सबप्रानी। जन्मत सकल गृहस्थी आनी॥ जे सतसंग सुष्ठु महँ परहीं। सतसंगति प्रभाव भव तरहीं॥ दो०॥ नीचसंग परि नीच मति प्राप्तभये सुनुतात। अंत समय यम चरित ह्वै यमपुर गहि लै जात॥ संगति ते बुध होत हैं संगति ते तपवान। नीच कुकर्मी संगते बरणत बेद पुरान॥ (मनउवाच) प्रथमहिं माया तुम कही अति कराल दुखरूप। निर्णय सोफिरिकैकरौ जोमंत शखोगूप (बुद्धिरुवाच)॥ चौ०॥ माया हौं अपार कहिगाई। तामें कुछ्भ्रम नाहिं गोसांई॥ मा-याब्रह्म रहतहै नेरे। सो लखि परत ज्ञान दृढ़हेरे॥ अंतर कतहुं ब्रह्ममाया में। कहि न सकत जिमि बट छायामें॥ अग्निउष्णा-ताईकिमि कहऊं। उष्माअग्नि एक सँग लहऊं॥ घाम दिवाकर दोइ न भाई। ज्ञानचक्षु निरखत भ्रमजाई॥ जहां वृक्ष छाया तहँ होई। छायाबिन न बिटपहै कोई॥ जहँशिखि तहां उष्णता जानिय। उष्मा जहां अग्नि तहँमानिय॥ जहँ तमारितहँ घाम बिशेखी। देखतघाम परत रबिदेखी॥ दो०॥ ब्रह्मतेज मायाअहै यह जानतबुधसर्व। अपरएकगत प्रकटहै बर्णत ज्ञानि अखर्व॥ चौ०॥रविवतब्रह्म घामवतमाया। यहदृष्टान्तहौं प्रथमसुनाया॥ घामअन्त नहिंरवि लगुपाइय। योजन लक्षचहौं नभजाइय॥ मिलत दिवाकर घाम नथाई। बरणत प्रज्ञ सुमति चतुराई॥

निरखत घामलखत दिननाथा। बिनदिननाथ नघामसनाथा॥ जबबहु मेघरहैं नभछाई। तबनघाम रविकोउ दिखाई॥ मेघरूप स्वइयह भ्रमभाई। ज्ञानदृष्टि रोकत तमछाई॥ भ्रमघाजलदहृदय नभमाहीं। होइन तबहरि सूरलखाहीं॥ मायापारब्रह्म अविनाशी। घामपार जिमिरवि गुणराशी॥ दो० ॥ जोकउ धावैघामसँग रविमिलाप चितधारि। घामपार बिनरविहि नहिं लहैकहतनिरधारि॥चौ०॥इमि मायाजीते बिन ताता। कोउ न ब्रह्ममण्डलहि जाता॥ मायाबिन नहिं ब्रह्म लखाई। जिमि न घाम बिन सूरज भाई॥ माया मध्य ठाढ़है हेरै। देखै ब्रह्मसुबुध निजनेरै॥ नशतहिं यहमाया गुणखानी। कहत बनतनहिं अकथ कहानी॥ घामनशत नहिंसूरदिखाई। निशाप्रवेश करत बुध भाई॥ तिमिमाया नाशतलय होई। रहै न चहूं खानि महँ कोई॥ ब्रह्मकौन निरखैको जानै। सकल ब्रह्महै ब्रह्मसमानै॥ माया धन्य जगत उपजावनि। निजमारगसों ब्रह्मलखावनि॥ दो० ॥ ब्रह्मतेज माया अहै सूरतेज जिमिघाम। माया चीन्हैसत्यसो लहै ब्रह्म विश्राम (मनउवाच) निर्णयमाया ब्रह्मकीकहो सो समुझो नीक। अक्षर क्षर निर्णय करो शोधि वेद मतठीक॥ (बुद्धिरुवाच) यह निर्णय यद्यपि कठिन तदपि मतिअनुरूप। तोहिं सुनाऊं सथिर ह्वै सुनु इन्द्रिनकेभूप॥ चौ० ॥ अक्षरसूक्ष्म रूपबतावत। क्षरसो थूल विबुधजन गावत॥ ओंकार सोई क्षर कहिये। अमित कटाह जासु कृत लहिये॥ अक्षर सोहं भणतसयाने। योगिराज जपजासु लुभाने॥ सकल भूतके पहिलेजोई। ओंकार पदजानो सोई॥ जोकउ ओंकारलव लावै॥ब्राह्मण सोई चतुर कहावै॥ सोहंमें जो रहत रत कोई। योगिराज कहियतहै सोई॥ सकल शरीर ओंते भयऊ। अरु मनसोहं पद दृढ़गहयऊ॥ कउ कउब्रह्म अक्षरहिकहई। धरि त्यहि ध्यान मुक्तिपद लहई॥ दो० ॥अक्षर क्षरते रहित जो सो श्वासा निजजान। ताहीमें सोहंबसत समुझत चतुर सुजान॥ श्वासा समुझै आपनी करिसोहं

कोध्यान। लहै मुक्ति संदेह बिन गावत चतुर प्रमान॥ चौ०॥
जे षट चक्र कहेतिनमाहीं। देखैसकल शोच मिटिजाहीं॥ यो-
गधारणा बिननहिं सोई। प्रापत होत कहत बुध लोई॥ प्राणा-
याम करै नितजोई। कालजीति डोलैजगसोई॥ जब चाहै तब
तजै शरीरा। जरा मरणकी मेटैभीरा॥ अक्षरध्यान ब्रह्मकरध्या-
ना। कहो तोहिं सिद्धांत महाना॥ यह बिरले कउजानत भाई।
क्षरमाया महँरहे भुलाई॥ जे अक्षरहिंध्याइ नेहिं सकहीं। ते
यहि पंथ न कऊबुध तकहीं॥सबतेकठिन सहज सबहीते। मन
समुझे समुझे निजहीते॥ दो०॥ब्रह्म निरूपण पुनि करत सुनौ ता-
हिचितलाइ। भ्रमणा त्यागि बिचारिले आपु आपुमेंआइ॥चौ०॥
जासों कहत अरूप अनादी। सोहै ब्रह्मसकल अविपादी॥ जा-
नब तासु कठिन ऐसोहै। चहब अन्तनभको जैसोहै॥ निराकार
स्वइ अहै अकाशा। तासुमध्यप्रभु करत प्रकाशा॥ जो कउ चहै
खोज त्यहिकेरा। सो निजतनहेरै बुधटेरा॥ त्रिकुटी उपर बास
ताकोहैं॥ रूपगेह कुछ नहिं जाकोहै॥ ध्वनि अनहद तहँ सुनिये
भाई। निकट गये नहिं परिहिलखाई॥ गुरुपद ध्यानधरै दिन
राती। मथैशरीर सदृढ़करि छाती॥ जोअष्टांग योगमत भाषो।
शनै शनै त्यहिकरि अभिलाषो॥ दो०॥ सिद्धिहोत सिद्धांत के
समुझि परैगो सोय। त्रिकुटी ऊपर जातमन भ्रमण रहै ना
कोय॥ पांच पचीसौ जेकहे दोष व्यकार अनेक। तेसब मनमो-
हितोहिसह तहां होइंगे एक॥ चौ०॥ एकहोतआपुहि पहिंचानै।
पुनिभ्रमणा नहिं निज मनआनै॥ सुनियह सीख बोधमनभय-
ऊ। शरण बुद्धिकी तब त्यहि लयऊ॥ बुद्धि प्राण मन इन्द्रिय
सेती। यकठा भे तजि बिषयी जेती॥ ब्रह्म खोजमहँ एकैरूपा।
दुबिधा नशी लहेमत गूपा॥ जब मन तजो संग विषयनको।
तब बुधिमत पकरो ऋषियनको॥ समुझोहृदय रूपनिज जोई।
कहतबनत नहिं परखोसोई॥ जेमत जगतअहैं सुनुभाई। ते
सबोंदेखे चितलाई॥ एकहि बात सबन महँपाई। नहिं दुबिधा

कछुपरी लखाई ॥ दो० ॥ ताते अब सुनुमीत मन मंगल कहै बुझाय । यहि मततेनहिं अपर कउ बड़ोपरत लखिभाय ॥ जेते मत संसार के वेद सबन शिरमौर । वेद त्यागि औरै कहत ते नहिंपावत ठौर ॥चौ०॥ निजमति सरिस ज्ञान यहकह्यऊं । जस कुछ बुध समाज महँलह्यऊं ॥ नहिं बिद्याबल बुधि अतिछोटी । रहै महीन कही सो मोटी ॥ चतुर सुजान जगतमहँ जोई । खोरिसुधारि लीजिये सोई ॥ मैं बालक मति हीन जहाना । निर्णय करौं कौनविधि ज्ञाना ॥ जैसोहै आकाश निरन्ता। तस यह ज्ञान अहै नहिं अन्ता ॥ मेरी मति जिमिमशक प्रमाना । पार नाक दुर्लभ अनुमाना ॥ पक्षिराज पण्डितजहँ हारैं । मशक अबुध तहँ कहां बिचारैं । मंगल मतिको मूढ़ महाना । अगम पन्थ किमि करैबखाना ॥ दो०॥ बिबुध सुजान महान जे परभण सुनि हरषाहिँ । तिनसों बिनती करतहौं खोरि दीजिये नाहिँ ॥ क्रोधी कुल दोषी अबुध जे यहि मतन प्रवीन । तिनहूंसों बिनती अहै दोषतज्यो लखिदीन ॥ चौ०॥ वर्ण अहै कायस्थ हमारा । बसत ग्राम सरही सुखसारा ॥ राजाराम नाम सुखखानी । तिनकेसुत गणेश बड़ज्ञानी ॥ तनय तासु भे नाम बिहारी । जेनिज धर्म धर्म दृढ़धारी ॥ बकसीराम तासु सुत भयऊ । जिन निज धर्म नीक करि गह्यऊ ॥ तिनकर सुत मैं अबुधमहाना । नाम सुमंगल मोर बखाना ॥ सतसंगति फलहै यहभाई । बरथ्यों ज्ञानसुमतिजब आई ॥ जो कउ चहै बिबुध चतुराई । सो सतसंग करै चितलाई ॥ शाहजहांपुर नगर विशाला । जहँ द्वै सरिता बहैंरसाला ॥ दो० ॥ ताके पूरब दिशि चतुर योजन एक प्रमान । सरही नाम सुग्रामतहँ मंगलको अस्थान ॥ बिबुधन सों अरुकबिनसों है बिनती बड़ि मोरि । जानि दास निज कृपाकरि सुमतिसुधारयो खोरि ॥ चौ० ॥ जे हरिरूप साधु संसारा । जिनके बचनतिहूं पुरसारा॥ तिनके शुभसमाज कहँभाई । जब यहग्रंथ कतहुं चलिजाई ॥ तब सब संत जानि निजदासा । खोरिसुधा-

स्यो तजि सब आसा ॥ संतन ते न बड़ो कउ अहई । मत अपार साधूजन गहई ॥ हौं मतिहीन गेह आरक्ता । नहिं साधू नहिं अहौंविरक्ता ॥ तीक्ष्णबुद्धि नहिं विद्या नीकी । केवल भजन भाव मति फीकी ॥ साधु समाज योगहौं नाहीं । भाव भक्ति रस कबितामाहीं ॥ आदर साधु हिं जब जाही । फलित होइ कबि कबिताताही ॥ दो० ॥ यहि कारण बिनती करौं संतनकी कर जोरि । सोचि सम्हारयो खोरिलखि सुधरि जाइ मति मोरि ॥ थोरी मति थोरो कहो बहुत अर्थ अनुमानि । चतुर साधु कउ समुझिहैं मूरख सकै न जानि ॥ चौ० ॥ मूरख निंदक बादी जोई । गुरुनिंदक द्विजनिंदक होई ॥ विवुध प्रवीण बिनय मम मानी । यह मत ताहि न दीजोजानी ॥ यह सिद्धांत योगकर भाखो । जानो सो न गुप्तकरि राखो ॥ द्वादशाब्दि लगि खोज्यो येही । प्राप्तभई सुमत्ति तबदेही ॥ पुनिबर्णन पोथीयहकीन्हीं । दुबिधा भ्रमणा सब तजि दीन्हीं ॥ जेनिज प्रीतम चतुरप्रबीना । तिनकहँ यहमत जिमिजल मीना ॥ दीजोसुमति भूलिमतिजाई । यह समुझति मन नाहिं भ्रमाई ॥ तीरथ ब्रत मख फलकी दायक । ज्ञानतरंग अहै सबलायक ॥ दो० ॥ जो कउ समुझैदुचित तजि ज्ञान तरंग प्रवीन । ज्ञानतरंगी होइसो ज्ञानतरंगअक्षीन ॥ जड़ मूरख को यों अहै मंजा जैसेमीन । तिनके आगे मतिपढ़ौ सुनिपैहैं दुखपीन ॥ अथवा नेक न समुझिहैं जड़ताबिवश अचेत । जिमिहरि कह अर्जुन गुणो खड़ेसबै कुरुखेत ॥ गुणी चतुर संसारमें निरगुण गुण खिलवार । तिनको निःसंदेह बुध यह मत सुखद बिचार ॥ कहियो जानि प्रवीण जन बिनवत मंगलदास । ग्रंथ अंत अब होतहै पूरण पदकी आस ॥

इतिश्रीअज्ञानतिमिरसूरप्रकाशज्ञानतरंगमंगलदासबिरचितेमनबुद्धिसंबादे अध्यात्मज्ञानसमाप्तम् ॥



श्रीगणेशायनमः ॥

अथ मंगलबिनोद सहस्रसाखी लिख्यते ॥



दो॰ ॥ जंगम थावर भूतमय कृत प्रकाश प्रभु जौन ॥ मंगलमन बिज्ञानके प्रथम बंदिये तौन १ पुनि बंदिय ता शक्ति को माया जाकर नाम ॥ सुखदायक ओंकार पद ताकहँ करियप्रणाम २ ॥ इति बंदना ॥ अथ साखी ॥ सकल लोक महँ ब्याप्त है जानत सब गुणतासु ॥ तदपि न ध्यावत आतमहिं परिपूरण फल जासु १ पांच तत्त्व गुण तीन जे धरे तीन सुरदेव ॥ जाकी कृपा कटाक्षते ताकी कीजिय सेव२ बिनु मारग सांचा गहे त्यागे बिनु दुबिधाय॥मुक्तिलहै नहिं कोटिबिधि वृथाजन्म शुभजाय३ तजि दुबिधा मन मूढ़ तू भजिले आतम ज्ञान ॥ मोक्ष लहै संशय नहीं बदत शास्त्र पौरान ४ बिनुध्याये निज जीवके मन लहै थिर ताहि ॥ थिरता बिनु शांतिहु नहीं बदत सुबुध अवगाहि ५ प्रथम चीन्हि निज रूपको पहिंचानै पुनि आप ॥ यहिसाधन साधक चतुर मिटै सकल संताप ६ जगत रम्यो कज्जलभवन साधु परिक्षाहेत ॥ प्रविशि कलंक बिना बहुरि निकरतहोइ सचेत ७ समुझत करणी कठिनयह बुद्धि अधिक भ्रमखाति ॥ किमि कज्जलते दोषगत निकरै सुजन स्वभांति ८ जो कलंक लागै चतुर जल तप धोवै वाहि ॥ पूरबवत पुनि होइ बुध यामहँ संशय नाहिं ९ परम ज्ञानको प्राप्तभे अनुभव करत प्रकाश ॥ अनुभव उपजत मिटत भ्रम नाशत आशापाश १० आशापाशी नशतही तृष्णामोह बिलात ॥ अंत समय तब जीव यह स्वयंब्रह्म ह्वै जात ११ मोक्ष माहिं जोहै दशा सो सुषुप्तिवत ज्ञान ॥ सुख दुख सुधि बुधि ज्ञान मन तहां सुएक प्रमान १२ अतिउत्तम सतमार्ग यह अध्यातम बिस्तार ॥ पूरण धीवर बिक्रमी करत

कर्म निरधार१३ संचित पातक नशत सब उपजत अनुभवज्ञान॥ क्रीयमान निःकाम सब होत कहत गुणवान १४ पाप पुण्य आशा रहित योगी कर्म कमात॥ स्वर्ग नरक मग परिहरत अंत सुब्रह्म समात१५ फलित कर्म प्रारब्धिवत याभव दुखसुखरूप॥ समजातन सन्तोष मति ध्यावत पुरुष अनूप १६ कोटि भार हाटक दयो मोक्ष होन हितलाह॥ अंत बासना पाप की लैगइ नरकनिमाह१७ कियेजन्म भरि कर्मखल निंदनीय संसार॥का-ल समय ध्यायोप्रभुहि पायो स्वर्गबिहार १८ स्वर्गबसै निज सु-कृत सम जन्म होइ परिणाम॥ जरा मरण नाश्यो नहीं यहिते स्वर्ग निकाम १९ निरैबास पापी लहत पाप तुल्य सुनुमीत॥ नीच योनि महँ जन्म पुनि बदत बेद यहगीत२०स्वर्ग नरकद्वउ समभये जन्म मरणके माहिं॥ गर्भ क्लेशनाश्यो नहीं मृत्यु होत जन्माहिं २१ अध ऊरध जे योनिमें जन्मतजीव अपार॥ शोक भोग समता बिषय कोयटिबढ़ि संसार २२ जाके ध्याये क्षणक यक कलिमल संचितजात॥ देहनगर मन भूप तहँपावनसुखहि दृढ़ात २३ मनइन्द्रिनको भूपहै त्वचा करण चषशाक॥ घ्राणादि-कजानत नकछु बिषयमांस मन काक २४ प्रथम जाहि निज बश करै परमातमआराधि॥ मिटैसकलचिंता तिमिर ज्ञानसूरनिरुध्या-धि२५ योगबिना अजपा जपे मनबशआवत नाहिं॥रागद्वेष त्यागे बिना मन न बसैमनमाहिं २६ दृढ़ बुधिज्ञानपसारिके मनशिक्षा देत्याणि॥गुह्यस्थल अनुभवउदय जायभ्रांतिरसपागि२७ अंधकूप पर अंधजिमि कहूं दिखायोदीप॥ पंथ न हेरो मूढ़मति जबलगि गो न समीप२८ जिमि पिपील मिष्टान में लपटी आशापास॥ मुक्तनहिं अतिबल करत तथा बिषय दृढ़बास २९ अन्नाशापक्षी यथा परयो बधिकके जाल॥ तिमि प्राणीभोगाश करि मायाबश त्रैकाल ३० निद्रा क्षुधा तृषादि जे मैथुनादिकृतवान॥ नर पक्षी पशु कीटहू जानतसो मतिमान३१ जड़तावश वृक्षादि जे रहेथिर-त्वहिपाय॥ मनुजणाय चैतन्यता तापदवीलोजाय ३२ सिद्धांतन

को अन्तमें प्रापकसोक्रियकार ॥ निज्ञवश जीवन मरणहै जन्मत किमि संसार ३३ मानामान निरादरो आदर समता भाव ॥ शुचि बासनआलन कुरुबिसुरुखिसो एकस्वभाव ३४ ईर्षा जगकीतीन तजि षटऊर्मी अपनाय ॥ दोष शोकभय सब तजै अंतब्रह्मपद पाय ३५ जन्म मरण निर्द्वंदतजि जीवईश ह्वै जाय ॥ कर्माकर्म दुवौनशैं आपुहि आपु नशाय ३६ अहंभावना परिहरै युक्तबन्ध कउनाहिं ॥ अकल अमेय अनीहअज निज उरध्यावै ताहि ३७ अंकअंक संघातकरि सिद्धि प्रथम हरुअंक ॥ शेषवस्तु अनसिद्धि जो सोईरहत निशंक ३८ ऐसो पुरुष असिद्धि जो ताजानन के हेत ॥ सतमारग ध्यावत नहीं साधत कर्म सुखेत ३९ मेघसुधा बरषै बिवुध कदलीफल न दुबार ॥ तथा मोक्षपद पायकिमि कर्म न भव संसार ४० अकर कस्यो संसार यह रचि त्रैचरभव जीव ॥ क्षीण बृद्धि प्रापकनहीं भयो धर्मकी सीव ४१ सिन्धुप्रसादहि पायजिमि होत मेघपय खानि ॥ तथा ब्रह्मते जीवसब को पूरणता हानि ४२ अरु जिमि सरिता जगतकी मिलि न बढ़त जलराशि ॥ तिमि देहीमिलि ब्रह्मनहिं बढ़त परत बुध भासि ४३ जानै बिन तारूपके रूप न पावत जानि ॥ बूझतही निरवाणपद होतगुणनकी खानि ४४ को निरगुण सरगुणकहा दुबिधा भ्रमणा भूल ॥ निगुण आप मायासगुण यहै ज्ञानको मूल ४५ आवत जानत लखिपरत जीव अकर्त्ताकार ॥ अलख यहै नहिं दूसरा लखुकरि ज्ञानबिचार ४६ ज्ञानमूल सतसंगहै समुझिपरत करतार ॥ अव्ययअज अविनाश प्रभु जासु अंश अवतार ४७ ज्ञानी जो कर्मनिकरै तजै सो फलको काम ॥ अज्ञानी फल आश करि लहत अंत फलबाम ४८ ज्ञानवान को कर्म कउ सिद्धक बंधक नाहिं ॥ जगत धर्म दृढ़ता लहै करत हेत यहि आहिं ४९ कर्म सकल धार्मिकनके करै जगतहित लागि ॥ सो ज्ञानी संसारमें रहै अमीरस पागि ५० यजत देवकरि लालसा देवतपस फलदेत ॥ याही जगमें दुःखसुख पुनिप्राणीगहि

लेत ५१ आपनपौ भूलेफिरत तिमिर अज्ञउरछाय ॥ ज्ञानदीप उदयत नहीं तजत न दुबिधा भाय ५२ जित जित जीवात्मा बिवश जन्मत त्रैचर माहिं ॥ कर्मलिंग तन सँग रहत यामहँ संशयनाहिं ५३ तृष्णा कृष्णा रातिसम ज्ञानप्रकाश विहीन॥ सत्य बस्तु बुधि चषनसों लखिकिमि सकत प्रवीन ५४ चतुर्वरण पूरणहिये बाहिर मूढ़समान ॥ डोलत मोहअनी रहत सबको लखत प्रमान ५५ ऊपरसे कछु काजनहिं अंतर प्रेमप्रकाश॥इंद्रिय निग्रह शुद्धमति करत अविद्यानाश ५६ संसारी प्यारीदशा सब हिनको जोसार ॥ सोजानब अतिकठिन बुध जानत बृद्धसिंगार ५७ आतम भेव भुलायके भये योगमें लीन ॥ सो पूरण पावत नहीं अंतस्थान मलीन ५८ गुरूवाक्य पूरणबद्यो ओंकार अनमोल ॥ खोजत तापद को न दृढ़ को ब्राह्मण को कोल५६ब्राह्मणकी पदवी अधिक चतुराश्रमके माहिं ॥ बिनाधर्म ब्राह्मण्यके ब्राह्मण पदवीनाहिं ६० हंसवर्ण ब्राह्मण्यको वेदवाक्य परमान॥ ज्ञानमुकुट बाँधेबिना सो नहिं होत सुजान ६१ राग रहित छबि शोभिजै दृष्टिप्रेम पदलीन ॥ हंस बरण नर नारिकृत सुष्टुकर्म छलक्षीन ६२ तत्त्व दरश पावत मिटत मोह क्रोध मद काम ॥ आतमहा होवत नहीं साधक बुद्धि ललाम ६३ भावशुद्ध प्रथमैं करै चिदानंद सिद्धांत ॥ साधारण दुर्बुद्धिबिनु सेवत त्रैपुर कांत ६४ आतममें जेलिप्तहैं अंतर एकहि भाव ॥ तेपूरुष जीवत मुचे धारे सत्य स्वभाव ६५ जानत आतम भावको पहिचानत निरवान ॥ तापदके संयोगते रहत न जीव प्रमान ६६ अन्नभरयोहै कोटिमन काहू मंदिर बीच ॥ एक निष्क लखि परखिगो भ्रम नहिंरहा नगीच ६७ ब्रह्मक्रांति यह आतमा बदत वेद वेदान्त ॥ चीन्हे निज आतम चतुर लहै ब्रह्म सिद्धान्त६८ सांभरिहीन सुढेरुहै अद्रिमान धीमान ॥ निज स्वारथसों आइहै बुधव्यंजनपरमान ६६ शालग्राम शिलालिये प्राण प्रतिष्ठा कीन्ह ॥ वैष्णव सांचेभावसों तापूजन मनदीन्ह७० सो पषाण सर्वांगहै निष्ठाशुद्ध

प्रताप ॥ स्वर्गवास दायक भयो अंत बिवर्जित ताप ७१ सुख-
दाता निर्जीवभो जीव मुक्तिको दानि ॥ जनक कहो शुकदेवसों
यहबुध धर्म बखानि ७२ श्रीराधापति अर्जुनै कीन्हज्ञान उपदेश॥
आतम पूजा कर्म बहु जो निःकाम निदेश ७३ तत्त्वबस्तु आतम
कहो क्षर अक्षर विस्तारि ॥ लिंग थूल बपु तत्त्व मिति बुधजन
लेहिं बिचारि ७४ चतुर्बाहु त्रैचष चतुर वदन न मायाईश ॥ ये
पूरण आयुषलहे तजत नपुष बिसबीस ७५ जन्मभयो ओंकार
ते बदत वायु पौरान ॥ जन्मजासुको मृत्युत्यहि यहबुध विदित
प्रमान ७६ पुनि वशिष्ठ पूंछ्याजबै शंकरसों यहभेव ॥ भाषो तूही
देवतहों नहिं पूरणदेव ७७ ब्रह्म अन्यहीं आनहौं देखु सामश्रु-
तिजाय। तत्त्वं असि वर्णन कस्यो त्रिविधि जीव दुबिधाय ७८
अकल निरीह निबंध बिनु निर्मलब्रह्म सुभाति ॥ जाइच्छाते देव
नर त्रिपुर बिभूति दिखाति ७९ चिदानंद पूजो चितहि बुद्धिआ-
सुरी त्यागि ॥ शुद्धभाव ध्यावो बिबुध निज आतम मतिपागि ८०
पावनपद पावत चतुर आतम ज्ञान प्रताप ॥ आनभांति युगचारि
लगि नशत न जन्म सँताप ८१ योग मार्ग अष्टांगहै साधक तीनि
प्रकार ॥ काव्यभाव खोजत फिरत कर्मन रहित पसार ८२ यक-
टक निरखै नासिका नासा ध्यान लगाय ॥ अश्रु पात परमाणबुध
रहै अमीरस पाय ८३ नित्यक्रिया साधन करै देह अनित्यविचा-
रि ॥ आतम घातीहोइ नहिं स्वयंब्रह्म उरधारि ८४ ब्रह्माविष्णु
महेशजो कर्त्ता पालकहारि ॥ तेसमाधिकरि ब्रह्मको ध्यावतकोनर
नारि ८५ युगानंत जा क्षणकनहिं जासु न आयु प्रमान ॥ ज्योति
निरंजन ब्रह्महै सदा स्वतंत्र सुजान ८६ भयो स्वतंत्र न बदिस-
कत वेद भेदको तात ॥ अलख अगोचर ब्रह्म बुध भ्रम बिनुबुद्धि
समात ८७ माया जासु अपारहै पार लहत नहिं कोइ ॥ प्रथमैं
माया भेद लखु पाछे आतम सोइ ८८ ब्रत तीरथ अर्चादि जे
ते न मुक्तिपद दानि ॥ स्वर्गादिक दायक अहैं दृढ़ता मूलबखानि
८९ ज्ञानदीप उर गृहधरै मोह तिमिर बहिजाय ॥ सार बस्तु

निज खोजिलेक्यों फिरि आवै जाय ९० निरगुण मत सरगुण सुमत आतम ज्ञान प्रधान ॥ आतम बिनु जाने बिबुध मोक्ष न तीनि समान ९१ सांख्य यजत योगहि करत मोक्ष हेतु सज्ञान ॥ मोक्षपरे सुख अपर नहिं भोग योग कल्यान ९२ मनुज योनि सब योनिमें उत्तम मोक्ष सुपान ॥ याहित्यागि पुनि कोटि विधि लहै न पद निरबान९३ आपु आपुको भूलियो पदवी पूरणरूप ॥ क्यों चीन्है माया बिवश प्रकट न ज्ञान अनूप ९४ समता दृष्टि सुचेत बुधि मन बेगता मिटाय ॥ पद आपन तापन बिना कस न चीन्हु मुदपाय ९५ शील क्षमा दाया धरै परउपकार सुकाज ॥ उचित गृहस्थी धर्म यह अतिथि तोष शुभ साज ९६ ब्रह्माचार बिचार युत निराचार निर्द्वन्द ॥ ध्यावत धर्म निरंतरै पुरुष पुराण स्वछन्द ९७ मन शिक्षा मम मानि नित तीरथ उरमें न्हाय ॥ सत्यहि ज्ञान प्रतापते आशु मुक्तह्वै जाय ९८ जो न त्यागिहै व्यं-गता तौ न पाइहै मोष ॥ मोक्षबिना उतपति मरण लगारहहि नहिं तोष ९९ मंगल मनको बोध कृत महा मोद उर आनि ॥ शिक्षा पद निर्बाणकी प्रथमहिं स्वर्गबखानि १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायां निर्बाणप्रदवर्णोनामप्रथमश्शतकः १ ॥

---o---

दो० ॥ परिपूरण धर्मज्ञता परिपूरण विज्ञान ॥ परिपूरण क-ल्याण मय पारब्रह्म शुभ ध्यान १ ब्राह्मण होवै ब्रह्मविद समद-र्शी शुचि साधु ॥ तजि त्रिदोष निज आतमा निज जीवै आराधु २ एक लोकद्वै भूपहैं सगुणसार निष्काम ॥ समता दोनों क्यों लहैं लाभ हानिदा बाम ३ अखिल लोक आशा बंध्यो सुनिले उत्तम ज्ञान ॥ याहि निवारै शुद्ध मति शांति स्वरूप सुजान ४ उत्तम मति देखतफिरैं कर्म बिकर्म समाज ॥ निज मन करतल निज किये यथा रंक तिमिराज ५ तीनि तीनिमें तीनिधरि कला अंश को आहि ॥ पूरण पुरुष अनादिको आदि अंत बुध नाहि ६ काम

बासना बाम मग जीव चलत अनचेत ॥ नरकबासना जीवको
अंतकचर बुध देत ७ क्रोध संग अदया रहत हिंसकतासों नेह ॥
हिंसादायक अधोगति मूढ़धर्म न सँदेह ८ मदमदता संग्रहकिये
नीचऊंच नहिंजान ॥ अहंभायदा निरयपद बदत गूढ़विज्ञान ६
लोभसंग बसलालसा होतसो पूरणनाहिं॥ जीवनध्यावत आत-
मा अन्तबसत अधमाहिं १० मोहमहा बर्जितकरत सतमारगते
बीर ॥ ताबश नित्यानन्द जो जीवसो होतअधीर ११ येपांचों
बटपारहैं सतमारगके तात ॥ तूप्रथमै इनतेबचै कहुभूपति सों
बात १२ रक्षकयाको आपतट सुन्दररूप विराग ॥ भट विवेक
सन्तोषअरु क्षमादया अनुराग १३ जोशरीरधारी त्रिपुर सो श-
रीर बिनुहोइ ॥ संशययामें बुधकहा ध्याउब्रह्म पदसोइ १४ जो
नभयो उतपन्नहै अरुनमरैगो अन्त॥ वाकीसुधिको कोकहै अहैनि-
रादि निरन्त १५ निकरयोनि चहुँखानिमें आपहिरहा समाय ॥
कोद्वितीय ज्ञानीबदत पैनाहीं दरशाय १६ पूबणकर संयोगघन
बिन्दुधनुष बहुरंग ॥ उपजततिमि मायीअसों भयेजीव चहुँसं-
ग १७ धनुनरंग दोझूठहैं घनमाया नशिजात ॥ भानुउदयपूरण
सदा तथा न ईशपपात १८ कालपाय नाशतनहीं जन्मतहू न
स्वतंत्र ॥ क्योंजानै निजछन्दको बांधेमायायंत्र १६ इच्छाजाके
तसकी ब्रह्मसौख्य पदमाहि ॥ सोचीन्है निज आतमा तासुअंश
सोआहि २० कमलबसत जलमध्यजिमिपातमिलित पयहोत ॥
भेदत कैसहु ताहि नहिं भीतर बाहिरपोत २१ चञ्चरीक योजन
बहुत आवत काज सुगन्धि ॥ प्रीति सत्य त्यागतनहीं जातरैनि
तहँबन्धि २२ जलचर जीव अपार जल बसत मीन अहि भेक ॥
भेद न जानत गन्धिको क्योंकर करै विवेक २३ लोकरीति ज्ञानी
करत धर्मरहे जगछाय ॥ तिनहिं न बांधत कर्मते जेनिःकर्म स-
दाय २४ ज्योतिनिरीह अमानहै देखिपरत परिपूर ॥ ज्ञानीचारों
दिशि लखत देखि सकत नहिंक्रूर २५ को स्वारथहै दीपको धारै
कज्जल शीश ॥ टेकगही जगहेतुहित तैसेकर्मकपीश २६ मारगमें

रज रजत जिमि रहत निरादरनित्त ॥ सतसंगतिपवमानकी ऊं-
ची चढ़ै अमित्त २७ को कविता जानत सुजन जो सवितान
प्रकाश ॥ निरालंब निरधार मग चलतसदा दृग्यआश२८ दुबिधा
दोहाअर्थकी ज्ञानबिना न नशाय ॥ सज्ञानी दुबिधा रहित कहत
ज्ञानगुण हाय २६ महापुरुष सोआपहै महत्तेजबहुभान ॥ महा-
शक्ति इच्छा कहत शब्दओं परमान ३० तजै शुभाशुभ बासना
रहै एककेपास ॥ द्वैतभाव बिनु जानिहै शुद्ध चितानँद भास३१
कर्मप्रधानी जगत यह कर्म न त्यागै बुद्ध ॥ जासु कर्मलखि म-
नुज जग गहैं सकल मगशुद्ध ३२ अखिल धर्मखोजै प्रथम तजि
हठमत मतिमान ॥ सत्यगहै तजिमूल भव ताहि कहत बिज्ञान
३३ निज धर्मन त्यागै नहीं जोश्रुतिवत कृतकर्म ॥ आनमनुज
ज्ञातिज सकल गहैं सत्य निज धर्म ३४ बड़ेकर्म कर्ताभयेनामी
कामीनाहिं ॥ फलकी तृष्णा चित्त नहिं ते ज्ञानी भवमाहिं ३५
सतमारग वेदांतकी ताहि निबाहै कोइ ॥ बंधनात संसारतेमो-
चिजाय नर सोइ ३६ जीवन मूल स्वश्वासहै वृथा नहीं है तौ-
न ॥ को जानै सिद्धांत नित बदत सत्यहै जौन ३७ गमनहोत
अक्षर सुभग प्रविशे पूरण बानि ॥ यहजानै जोजीव तौ पहिंसानै
अनुमानि ३८ जन्मसकल अर्चाकरी मूरतिमयी सुदेव ॥ स्वर्ग
भोग फल तासु भो रहा मुक्तिको भेव ३६ तीरथ ध्याये आयु
भरि अन्तबसे सुरलोक ॥ मोक्ष पदारथ हाथ नहिं आयो भेन
विशोक ४० विष्णु शंभुहित ब्रतकिये रबिब्रत साधि अपार ॥
दृढ़तावशफललोकदा मोक्षन भो करतार ४१ काठय बनायेदा-
म्मभरि देव पक्षबहुभांति ॥ देवलोकभो अंतमें मोक्षनहीं दरशा-
ति ४२ अतिथितोष नितप्रतिकरै दयायुक्तनिरदोष ॥ आराधै
निज आतमा अंत सुपावै मोष ४३ प्रीतिसत्यप्रतिपालिये निज-
गुणमत उरधारि ॥ वेद वाक्यसत्यांत सो जाय जन्म निरबारि
४४ चौरासी लख योनिमहँ चारिखानिके जीव ॥ तू भरमै सब
मेंसदा कहाँ मुक्तिकी सींव ४५ उद्भव भोनिज कर्मबश बदतवेद

विज्ञान ॥ स्वर्ग नरक कर्तव्यवत होत मोक्षधीमान ४६ ज्ञानबि-
ना बूझत नहीं पूरण पदको भाव ॥ बूझेबिनु सूझत नहीं मोक्ष
होनको दांव ४७ जगत प्रीतिमहँ बँधिगयो जीव ब्रह्मकोअंश ॥
कठिनमुक्ति सतसंग बिनु पढ़त नहीं हरिबंश ४८ नित प्रतिक-
रत पुकार यह हौं परमातम आपु ॥ मानत नहिं शिक्षा बिना
कृत बिपरीत अलापु ४९ राम राम ध्यावत सदा मर्म नामको
आन ॥ सोजाने बिनु स्वर्गमग जात कहत बुधिमान ५० नाम
भेद उर आनिके जपै सदा चितलाय ॥ पूरण ज्ञान प्रताप सों
आप मोक्ष ह्वै जाय ५१ जीव खोज मिटिजाय जब होइ ब्रह्म-
पद लीन ॥ जन्म मरणके दण्डते मोक्षि जायसुप्रवीन ५२ कहै
भेद नहिं काहु प्रति लीनरहै सबमाहिं ॥ आतमही को ध्यान
उर मुक्तहोइ भ्रम नाहिं ५३ निस्प्रेही जगतृण लखत सर्वासार
प्रभुत्व ॥ लीनरहत निज आतमा प्रकटत अमी मृदुत्व ५४ जि-
मिबिरक्त बाम्हन लखत दाताधनन ब्वहात ॥ तिमिज्ञानीत्रैलो-
कयको लखिनिज माहिं समात ५५ कर्म शुभाशुभबंधहै जबल-
गिफलसों हेत ॥ निरफल कीन्हे कर्म सब अंतमुक्ति लहि लेत
५६ संभव काको नामहै अनुभवकोसंसार ॥ जन्म मोक्षद्वौजा-
तिये यहसर्वांग विचार ५७ यमआसन औनियम कृतप्राणायाम
प्रवीन ॥ प्रत्याहार सुधारणा ध्यानसमाधि अक्षीन ५८ यहअ-
ष्टांगयोगहठ सिद्धियोग विज्ञान ॥ जाकेउपजत चित्तमें जात अ-
विद्यामान ५९ मायासांपिनि सर्वदा डसेजीव सबधाय ॥ बिन
गाडुरि विज्ञानगुरु कोजगसकत जिवाय ६० मालबिना मिलि
जातहै वस्तुअमोल पुरान ॥ यादेहीके भेदमें कृत निर्द्वंत महा-
न ६१ परमहंसपद पायमन बस्योहृदय महँआय ॥ अतिअच-
रजको प्रश्नयह दुविधाकथीन जाय ६२ संन्यासी मतिमानजे
त्यागेभवकी भूल ॥ लिप्तजगत नहिंहोतते गहेज्ञानतरुमूल ६३
मारगपंथी भ्रमिगयो निजमति भ्रमसे तात ॥ जबलगि मगद-
र्शनमिले तबलगि मनभरमात ६४ सत्यसिंधु सर्वज्ञशुचि पार-

ब्रह्म सदभाव ॥ दोषशोकते रहितहै पूरित त्रिपुर प्रभाव ६५
ज्ञानिनके तनत्राणको भेदतकाम प्रसून ॥ बैनघाव घातकलगत
जिमिनव कीन्हेदून ६६ लोभक्रोध आवतहृदय करत निरादर
तास ॥ सद्भावी संसारमें मनदृढ़कृत निजरास ६७ समदर्शी
विज्ञानमय परमहंस सुखरूप ॥ कीटब्रह्म समकरि लखत व्या-
वततत्त्व अनूप ६८ कियेतीनगुणमयत्रिपुर तीनदेवपरधान ॥
अहंकार में अंतते नाशमिलत विज्ञान ६९ पंचतत्त्वमय जीव
सब देहधरेतिहुँधाम ॥ नाशवान ये सकलहैं तूभजु आतम रा-
म ७० कल्याणीतिहुँकालमेंसंतप्रतिष्ठादानि ॥ सगुणअगुण सभंग
मत करतसंत अनुमानि ७१ तपसाबुनपट जन्ममलि पाप मैल
हरिलेत ॥ धोयशांति जलस्वच्छपुनि सकल भांति करिदेत ७२
संतमंडली बोधदा सतमारग सोपान ॥ सेइयज्ञानी कपटतजि
पाइयपद निर्बान ७३ इन्द्रीबिनु जीतेकबौं द्रवत न अनुभव
वस्त ॥ श्रद्धाकारण भावशुभ जायकज्ञान समस्त ७४ जीतिय
इन्द्री आपनी निजबश मनचललाय ॥ परमातम निज आतमा
भजिये चित्तलगाय ७५ अजिती ब्रह्मज्ञानरत पावतकष्टअलेख॥
तत्त्वलहत नहिंकोटि बिधि कृतबहु कर्मविशेख ७६ कर्मसाधना
करिगह्यो ब्रह्मज्ञानसुपन्थ ॥ मनबश भोनेन्द्रिय सकल धार्मिक
नानाग्रन्थ ७७ एकपरन्तु विशेषता ब्रह्मज्ञानकी आहि ॥ अन्त
नरकनिबसतनहीं अजितो स्वर्गबसाहि ७८ पुण्यवान धनवान
शुचि सुकुलसुबुधि सुबिचार ॥ ब्रह्मज्ञानी भ्रष्टतप ऊरधतप अव-
तार ७९ ब्रह्मज्ञान समानतप जपक्रिया कउनाहिं ॥ मोक्षदान
घननीरसम व्यापक सबधरमाहिं ८० विष्णुभक्तिसांचीकरै पूरु-
ष वैष्णवकोइ ॥ तीनजन्म के योगसों मुक्ति लहैगासोइ ८१
निन्दादूसरि धर्मकी करतवैष्णव जौन ॥ सोतो कोटिहु जन्मल-
गि मोक्ष होत कबौन ८२भक्तिभ्रष्ट नरकैलहै स्वर्गबासदृढ़भक्ति॥
सकलवैष्णव धर्मको सारभाव शुभशक्ति ८३ बिश्व विष्णुमय
ज्ञानिकै भक्तिसदृढ़ता साथ ॥ करतवैष्णव रैनिदिन तेबुध होत

सनाथ ८४ शैवीहूयाबिधि करै शक्ति उपासक जौन॥ सत्यभाव भवतेतरै जन्मएक द्वै तौन ८५ ब्रह्मज्ञान सुअग्नि है जराजन्म तृणरूप॥ भस्मतनिकटहि जातही यह सिद्धांत अनूप ८६ कोटिएक महँमनुज कउ उरधारत विज्ञान॥ अनुभव दर्शन ब्रह्म लव आतम तत्त्वसुजान ८७ धिषणादृढ़ करिआपनी कमठ तुल्यगोखींचि॥ निजआतमको उद्धरै लखैन गति कविनीचि ८८ पचनसंधिमें पातपरि आपहि चढ़तअकाश॥ ब्रह्मज्ञान तहँ जीव परि ऊरधकरतप्रकाश ८९ आशभरोसबिहाय जग ब्रह्मज्ञानबिचारु॥ उदासीन पथसेइकै निज जन्मांतनिवारु ९० घटघटब्रह्म अव्यक्तहै अव्ययप्रकट लखात॥ ब्रह्मज्ञानसुदृष्टिमग दुष्ट प्रकृति नहिंतात ९१ जाकेइच्छा मोक्षकी सोयहकरै उपाय॥ गृहकाननसमताधरै मानसनेह बिहाय ९२ कोटि जन्मबन बसिमरै अजिती श्रद्धाहीन॥ आवागमन नपरिहरै यह सिद्धांत अक्षीन ९३ बालकबामा बंधुयुत बसैभवन मतिधीर॥ उदासीन अन्तरभजै आतम मुक्तिनथीर ९४ जाकीमाया अति प्रबल बिरचै चौदह धाम॥ सो आतम तन ब्रह्मबिद योगगम्य परिणाम ९५ समुन्नत बनतअनेकबिधि कहतबनतनहिंसोइ॥ ब्रह्मज्ञान परसादते गुरुमुखबूझै कोइ ९६ यथा भामिनी भोग सुख कैसे सकै बताय॥ करवाये बिनु कर्म सों यों समुझै चितचाय ९७ सोवतमें जोहै दशा ताहि बतावन काज॥ कोसहाय करि सकत बुध सोयो बुद्धिसमाज ९८ मोक्षदशाकोसौख्ययह जानियप्रकटन तात॥ वहिकारण कउ कोटि महँ यामगमहँ ठहरात ९९ मंगल सांचाआतमा जग असत्य साभांति॥ सतसंगति जोनित करत सेइयताकीपांति १००॥

इतिश्रीमत्सकलप्रज्ञानहर्तायां सर्वांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायांनिर्वाणपदवर्णनो नामद्वितीयशतकः २॥

दो०॥ जोपै ब्रह्मज्ञानमें बुधि न लगैभरि पूरि॥ तौ पुनि

भक्ति सुसत्य करि गहै ज्ञानकी मूरि १ सत्य सनेह लगाइकरि ध्यावै श्रीभगवान ॥ आदिअंत यकरसरहै लहै परम बिज्ञान २ भक्तहोइ सद्भाविका छलहठ त्यागी सत्य ॥ अंत बिष्णुपुरबास लहि मेटै भव आपत्य ३ आन ओर हेरै नहीं प्रीतम सांचात्या-गि ॥ पूरणभये निबाहके रहै तासुतट लागि ४ बाणी परिहरि कपटकी दंभ भावना हीन ॥ आराधै सारंगधर होइ न यमदुख दीन ५ किंकर लौंजोभावहै सोमन राखैनित्त ॥ अहंकार ममता तजै सबदिन बित्ताबित्त ६ मित्रमानि सबनेह तजि वाही सों करु नेह ॥ अंतप्रीति वश बासना लैजैहै वा गेह ७ जाकोरूपअ-दृश्यहै दृश्यमान किमि होइ ॥ सत्य प्रीतिकी रीति यह अप-नावै त्वहिं सोइ ८ प्रीति प्रतीति स्वचित्त धरि ध्यावै सारँगपा-नि ॥ मुक्तिपदारथ करलगै योंकवि कहत बखानि ९ करै प्रीति हठ भावसों तजै न कोटि कलेश ॥ नारायणकी कृपाते बसैसो वाहीदेश १० बिघ्न भयंकर देखिमग तजै न कर असि प्रीति ॥ मारिचलै निज प्रेमपथ यहै मित्रकी रीति ११ ऊपर ते हितकी बदत अंतर आन बिचार ॥ सत्य प्रीति भासीन उर कौननिबा-हन हार १२ मंगल प्रियतम सत्य जो गहै टेक सतभाय ॥ आ-दिअंत यक भाव सों ताहि मित्र दरशाय १३ मंगल कदलीवृक्ष ज्यों हठ तजि फलन दुबार ॥ सत्यव्रतीत्यों साधु जन नाहिंधरत अवतार १४ सहस कोटिभव पंथमें मृगबन सुन्यो अलापु ॥ प्रीति बिवश आवत भयो प्रण बश नहिं संतापु १५ अहि सुनि बाणी वेणुकी निकस्यो भवन बिहाय ॥ यदपि गह्यो अहिबधिक त्यहि दशो द्वन्द समुदाय १६ दशन भंजिकिय बंध त्यहि बहुरि बजायो बेनु ॥ सुनैलग्योसानन्दही प्रीतम बाणि सुखेनु १७का-लकाल का करि सकत पूरणपुरुष अनूप ॥ तासु प्रीतिते अभय मन पावैगो निजरूप १८ तन ते पूजत देवता मनते बिषयी ध्यान ॥ प्रीतिसत्य लावत नहीं क्योंहोवै कल्यान १९ एका-दशी ब्रतेरहै नारायण ब्रतजानि ॥ उरआशा भव भोगकी क्यों

होवै फल दानि २० जगन्नाथकी जातमे मन प्रिय तनयसनेह ॥
मन बिराग आयो नहीं क्यों बसिहै सुरगेह २१ कंकर सेजब-
नाइ नित सोवत दुखित शरीर ॥ लाभ लालसा उरबसै क्यों
मिटिहै भव भीर २२ अग्निचारि दिशि ज्वलित मधि बैठितप-
तनित दण्ड ॥ भक्तिभावमन शुद्धनहिं क्योंसुखहोइ अखण्ड२३
बिनुन्हाये जल पाननहिं बिनुमिल भोगन भोग ॥ तृषा क्षुधाउर
बासिनी कहामुक्ति संयोग २४ कोमलबचन मयूरवत निर्णय
ज्ञान अनेक ॥ काम लोभ अंतर बसै कस यह भक्ति बिबेक२५
शीशकेश अज जोरिकै भूतिमर्दि निज अंग ॥ मौन गहे मगबा-
सिनित निंदहि तीरथ गंग २६ आप बड़ाई नित चहत निंदत
आन सुजान ॥ आशा बासी अजित मन कहांमोह कल्यान २७
बहुत अहारी भक्तनहिं निराहार नहिं संत ॥ सत्य प्रेमको मग
गहै सुख समाज त्यहिअंत २८ जानत आनन आपसम शुचिके
मारगमाहिं ॥ अहंभाव दुख दानि भव अंतहु संशय नाहिं २९
प्रीति रज्जु महँ बांधि मन सतसंग देहचलाय ॥ ज्यों नटवाशा-
खामृगहि जहां चलै लैजाय ३० कामी सेवत नारि ज्यों आन
प्रीतिकोत्यागि ॥ तूमंगलमन तौनविधि रहुप्रीतम रसपागि ३१
दीनबस्तु बिनशिशिरमहँ ज्योंदिनकरहि निहार ॥ त्योंमंगलमन
तूकरै पूरणप्रीति बिचार ३२ मनते तनते वचनते क्रियाकर्मधन
धाम ॥ सबबिधितेवै मीतपग जगसुख पुनिहरिधाम ३३ कोपं-
डित कविकौनहै कोज्ञानी गुणरूप ॥ प्रीतिबिना निज नाथकी
प्रतिबिन नारिअनूप ३४ भूपप्रतापी प्रीतिभव चाहत सबजग
लोग ॥ छिन्नबिभव पुनितादिसब कहत महीपन्वयोग ३५ सकल
जगत स्वारथमयी अनस्वारथहितुहोइ ॥ मंगलमन संसारमहँ ने-
हतिवाहित सोइ ३६ मृगबधि बधिकस्वहेतुशिर मृतक चलो ध-
रितात ॥ मूरख बनबासी कहैं मनुजशीश मृगजात ३७ को
कराल को सुगम को शुद्धि समारक कौन ॥ सत्यनेह शारंगधर
उरलोवैबुधतौन ३८ जो सांशामारग बदत तुमहि कहतहैं दंभ ॥

पूजत छलमय देवता कीन्हो कपटारंभ ३६ जबलगि आयाभो-
गकी तबलगि मोक्षन होत ॥ आशमिटे भवकाम की अनुभव
करत उदोत ४० मातपिता तियसुत सखा तजिकैबनेभिखारि॥
गृहगृहमान गमाइयो क्योंमोवैं अविचारि ४१ कर्माक्षरदीपत
नहीं कोटिउपाय प्रवीन ॥ आतमएक बिचारबिन जन्म जन्म
दुखपीन ४२ ज्योंस्वपने महँदीननर नरपति पदवीपाय ॥ जा-
गेरंचक सुखबिबुध तथाजगतको भाय ४३ चारिपांच गुणबीचमें
बिबिधजन्म तूलेइ ॥ विषयबासना प्रबलमन अमितदंड त्वहिं
देइ ४४ मायाब्रह्म अपारद्वौ आतमपूषणदेव ॥ आतप मित्र बि-
हीननहिं यहैद्विपदकोभेव ४५ दानदिये धनलाभहै तृष्णावृद्धक
तात ॥ ज्ञानदीप प्रचरितंनहीं ब्योपारीकी बात ४६ देशभेदको
जानिमन बणिकभार भरिबस्त ॥ बेच्योदूने दामलगि तैसेदाम
समस्त ४७ नरमेधावी कर्मकृत लाभहानि तजिदोइ ॥ पापपु-
ण्यआघातजे लहत मुक्तिपदसोइ ४८ गुरुसों पूंछ्यो सत्यवत
कहइन्द्री निजसाधु ॥ पूजनसांचे देवको आतमही आराधु ४९
मूरखजड़लौं ह्वै रहे जानतज्ञानन भक्ति ॥ नाममनुष्यनिवासि है
अंतनरकबिनुमुक्ति ५० ज्योंसूत्रक निजउदरते तंतुसमूहबनाय॥
अधऊरध आधारसों जातअंत पुनिखाय ५१ ऐसे निजवश राखि
कै गोसमस्त मनयुक्त ॥ बाहरभीतर कर्मकृत जीवत सोनरमु-
क्त ५२ कमठआप इन्द्रीसकल स्वबशपसारत वीर ॥ पुनिकर्षत
निजअंगमें तथाशांत मतिधीर ५३ खोजाचाहै ब्रह्मपद अनुभ-
वकोशुभदेश ॥ तौसतमारग चित्तधरु सुनिसतगुरु उपदेश ५४
बिनसिद्धांतक कर्मके सेयेबिनुगुणपाय ॥ मुक्तहोइ मंगल नहीं
जन्मअनंत भ्रमाय ५५ जानतआतम अगमअति जानेआप न-
शाय ॥ यथादुग्ध घटबिंदुजल मिलतनरंगलखाय ५६ तीनलोक
ब्यापकबिरज देवतसबकेकाज ॥ गुप्तप्रकट सबठाम प्रभु भजु
किनमन निर्ब्याज ५७ नारिपुरुष कहिसकत को अलख अदृश्य
अकाय ॥ ज्ञानदृष्टिबूझत यदपि को बुधसकत बताय ५८ उपमा

ताकी कौनहै जोन बिलोकोदेच ॥ अकल अभेद अद्वैतको क्यों
करिभाखै भेव ५९ ज्ञानसूर उदयत हृदय बुद्धिनयन सों देखु ॥
पर्म ज्योति अविनाश सो पूरण शब्द अलेखु ६० शब्द अनाहत
नित करत सोवत जागतएक ॥ सुनत होइ मतवार बुधजनुमधु
पिये अनेक ६१ जोजो रव संसारके सोसब तामेंजानु ॥ मंगल
मन चित देत नहिं यहधौं कौन प्रमानु ६२ सात स्वर्ग बसि
जन्म लहि पावै कर्म बिभाग ॥ सुख दुख मान अमानभव विधु
आतम अनुराग ६३ कोटि भार हाटक धर्यो रतीएकपरखाय ॥
जानो सबको मोल तिमि ब्रह्मजीवके भाय ६४ अक्षर एकै रूप
है मात्रारूप अनेक ॥ सोमाया गुण तत्त्व बुध अक्षर ब्रह्म विवेक
६५ बीरब्रती रणचढ़ि लरत पद पाछें नहिंदेत ॥ तथा प्रज्ञस-
वीग मत दृढ़ता करि गहिलेत ६६ निज पति मरण बिलोकि
तिय मोह ब्रिबंध सतिनेह ॥ समुझायो मानत नहीं जारत पति
सँग देह ६७ ज्ञानवान गहि सत्य मत तैसे त्यागत नाहिं ॥
दृढ़ करि ध्यावत आतमहिं पूरण पदहि समाहिं ६८ मेरे मत
निरगुण सगुण दोनों आतम ध्यान ॥ गुणन होत तौ निगुण
को बूझौ पूरणज्ञान ६९ अज्ञानीको ज्ञानविद बिनआतम सुवि-
चार ॥ अनुभव सिद्धि सभावहै कर्त्ता कर्म विहार ७० ज्ञानिश्रा
तमा बोधदा बहुरि भुलानेअज्ञ ॥ ताहिप्रबोध्यो ज्ञानमत ह्वौश्र-
जान अरुप्रज्ञ ७१ वृक्ष बदरिफल कीरगहि कानननयोकुडाय॥
बीजगिरे जामतभयो सूर भूमिजलपाय ७२ जोपै श्रंश न बीज
में परमातसको तात ॥ तौकस बाढ़्यो फलफल्यो यों सबजग
दरशात ७३ मीनउदकतें रहित फिरि जियत न कोटि उपाय॥
मंगल नर जड़ता बिवश हिततजि अहित भुलाय ७४ चुम्बक
देखे लोहके करत चेष्टाभाव ॥ मंगलमन लहिज्ञान हितु तज्यो
न नीच सभाव ७५ जड़लेऊ प्रीतम गुणन सुनत न देखतदेह ॥
शुचि इन्द्रीपाये मनुज मसत शत्रुकेगेह ७६ काम क्रोध लोभा-
दिको जानत सुखदा मित्र ॥ क्यों समुझाऊँ जीव कहँयहविष-

रीत चरित्र ७७ मोहपिंजरा दुःखसुख द्वैकपाट भ्रमयंत्र ॥ जीव
सिंहताबश परयो तोरत होइ स्वतंत्र ७८ स्वाद विषयको विष
सरस खात मीठ गुणकाल ॥ जानि चवत तूजीव क्यों ध्याउ
देव त्रैपाल ७९ विषयस्वाद भावत हृदय जबलगि जीवहि आ-
हि॥ ब्रह्मसुखहि निरखत चतुर तबलगि कैसेहुनाहि ८० कोटि
बानवे श्वासकी नर आयुष परमान ॥ अधिक एकश्वासा मनुज
जीवत नाहिं सुजान ८१ षट श्वासाको एकपल गुणी दिवस
निश्विश्वास ॥ षटशत सहस इकीसमें गत श्वासा विश्वास ८२
अंतआदि याविधिवहै जीवतजै जोदेह ॥ जीवै यकशत बीसही
बर्ष चतुर न सँदेह ८३ मनमधि व्यंग बिचारकृत दूषत शास्त्र
निदेश ॥ मुक्ति चहत कर्तव्य बिनु तन बिभूति शिर केश ८४
पापीपाप न परिहरै धर्म संगको हेरि ॥ तदपि दुचितई चितरहै
चिंततपापहि फेरि ८५ श्रद्धाबिन पूजननहीं जप न बिनाअनु-
राग ॥ मोक्ष न आतमध्यानबिनु माया ईशविभाग ८६ और-
नको शिक्षा करत निजकरणी परित्यागि ॥ शिक्षक अंध बिहीन
चष बाट बतावत जागि ८७ लघुता गुरुता कारणहुं एकशब्द
की रीति ॥ शब्दविचारै ज्ञानमय पूरणब्रह्म प्रतीति ८८ शब्द
तुल्य नहिं मंत्र शुभ गायत्रीदृढ़ नाहिं ॥ पर्म बुद्धिमय शब्दसो
ब्रह्मज्ञान के माहिं ८९ कलिमल तूल समान है शब्द धनंजय
सिद्धि ॥ ज्ञान बामताशब्दमें लवलाये हितबुद्धि ९० जोपैजन्म
भरि कुमगमें बिचरयो नर बपुपाय ॥ तौ पशुते जड़ मनुजसो
कहा मोक्षकोभाय ९१ जुरैं अंधदश पांचजहँ तहांजाय यकनैन॥
मानत झूठहु सत्यवत छलयुत ताके बैन ९२ तिमि दम्भीकी
बातसुनि भूलत बिषयक प्रानि ॥ जोसूझत बूझत तबै शबकृत
मुद दुखजानि ९३ शंकर मनमें क्षोभभो काम बाण को बीर ॥
को बपुरे नर नारिभव कामी कुटिल अधीर ९४ संयम इन्द्री
बशकरब यासम द्वितिमनकोइ ॥ जोसाधकगतदम्भजग मोक्ष
होइगो सोइ ९५ जीवनकी आशा न डर भय न कालकीचित्त॥

सम्यक बिधि निज आतमा कृत ऊरधमग नित्त ९६ जो योगी निज शब्दको परखि रंगगति लेइ ॥ भवावर्त्त महँ चतुरबुध सो न सत्यपग देइ ९७ ब्राह्मण क्षत्री बैश्यअरु शूद्रबरण येचारि ॥ दुइकी दुबिधा ज्ञानमत पंडितलेहिं बिचारि ९८ बिष्णुमयी जग ज्ञानिकै गहै बैष्णव पाव ॥ सत्य शब्द श्यावनकरै अंत स्वपद कोभाव ९९ योंसिद्धांतहि जानिकै मंगलमन भजु राम ॥ इत उतदोनों ओरसुख परिपूरण बिश्राम १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्तायांमंगलविनोदकायांमंगलदासविरचितायांभक्तिमार्गनिवार्यपदवर्णनोनामतृतीयश्शतकः ॥ ३ ॥

दो० ॥ कोटि जन्म तीरथ यजै लाख जन्म शिव ध्यान ॥ मंगल नहिं बिश्वास दृढ़ कहां लहै कल्यान १ बिन सतिभाव न सिद्धि कोउ पूजन जप जगहोत ॥ सत्यभाव मंगल सदा मंगल करत उदोत २ काष्ठ मृत्तिका उपलकी मूरति महँ नहिं देव ॥ शुद्धभाव बिश्वास दृढ़ फलदा सद्गुरुभेव ३ दर्पण पूषण दिशि लखत उगिलत ज्वाल समूह ॥ तिमि मन आतम ओर लखि त्याग न विषयक जूह ४ विषय बासना चंचला यथा स्वैरिणी बाम ॥ कोटि पतिब्रत धर्म सुनि परपति निरखिसकाम ५ छल प्रपञ्चकृत गुप्तही प्रकटत कालहि पाय ॥ प्रीति भंग तब होतिहै विष्णु पौंड्रकभाय ६ काकवेष करणी सुकुल पावन यथा मराल ॥ परमातम घर हंसफल पावन बायस बाल ७ जिमि किसान निजखेतमें जो बोवत सोहोत ॥ ऐसे काया खेत में करणीकरत उदोत ८ मित्रद्रोह परतिय रमण मिथ्या साखि अलाज ॥ आनपाप बड़बढ़िकरत ऊपरभक्तिसमाज ९ उरभुजादि मालाधरे गलशिल शालिग्राम ॥ मिथ्याछल निवसत हृदय शारिगये यकनाम १० अंतर बाहिर एकरस शतभावी शुचिसाध ॥ पर उपकारी ज्ञानमय तादृश मन आराध ११ ज्यों ज्वारी निज दाउँको करत चिन्तमण सत्य॥ औरनसों स्वारथ नहींतस

बुध आतम निश्य १२ घटकेअंतर बाहिरे देखिय प्रकटअकाश ॥ घटफूटे घटहीनशो नाहीं गगन विनाश १३ तथा जीव अरु देह यह ज्ञानपंथ गहिदेखु ॥ अविनाशी अजअगुणहै निज आपापद लेखु १४ जाग्रतमें ज्यों ध्याइये त्यों सप्ना करुनेह ॥ करिय सुषुप्तिहुमें वहै जो कर्तव्र निजदेह १५ बंधन काको जगतमें मोक्ष कौनको तात ॥ अविनाशी अद्वैतको यह अचरजकी बात १६ जरैअग्निसों यहनहीं जीवपर्म अविनास ॥ अस्त्रशस्त्रकरिकटत नहिं सबदिन पूरणभास १७ गङ्गाजात प्रतिबिंबनहिं जिमिकर सों गुणकोटि ॥ त्योंहीं यहशुचि आतमा क्योंकीउसकत ओ-टि १८ मस्यौ न मरिहै अमरअज भयो न होवन हार ॥ आपुहि आपु प्रकाश कृत हरिमतयहै बिचार १९ जाकेरूप न रेखहै आवत जात न दीख ॥ ताहि स्वर्ग अरु नर्कपथ यह कैसी मन सीख २० कवि पंडित कोउ सत्यमग पगधारै शुचि काम ॥ तब सर्वांग सत्यमत गहिपावै विश्राम २१ श्रीहरि अर्जुन को कियो कर्मयोगउपदेश ॥ सिद्धांतिनआतमबध्यो तबत्याग्यो भ्रमद्वेश २२ जो आतम नहिं उद्धरत पाप पुण्यकी आस ॥ तेपूरुष निज आ-अवश करत द्विपदमेंवास २३ जीवकर्मवश विषयरत आसपास फरकाल ॥ भरमाका सब योनिमें जे कलेशके जाल २४ सार वस्तु सो खोजिये तजि असार निःकाज ॥ मोल अधिक स्वादौ अधिक शुचि सुगंधि शुचिसाज २५ मूढ़ कांचकरमें गहत तजि पारस पाषाण ॥ तैसे तू विषयी गहत त्यागत पद निर्वाण २६ व्याल चालि बिकराल जग भवन सरल गतिलेत ॥ त्यों मंगल तू विषयरत हरिमगु चलुकरि चेत २७ सबयोगनको योगहैसकल मंत्रमय मूरि ॥ अचल प्रीति भगवानकी जो दायक सुख भूरि २८ करमाला जापक लिये मन विषयनके ध्यान ॥ मोक्ष लालसा वृथाकृत अंत विषय सन्मान २९ यथा गंगजल घट भस्यो पावन पाप बिनास ॥ सुराबिंदु कृत अशुचि तिमि जीव विषय संगभास ३० मायाको परपंच है नीच ऊँच कुलवान ॥

ज्यों भोजन गोमांसते विप्रगवाश समान ३१ सुरुचि कुरुचिकोऊ करै आतम तत्त्व विचार ॥ मंगलमत सिद्धांतके लहै मोक्ष करतार ३२ श्रमजबलगि करिसकत नर तबलगि हितसबकेर ॥ शिथिलभये त्यागत सकल तूतजु तिनहिं सबेर ३३ जाकीबुद्धि प्रबोध मय ब्रह्माचार सुलोक ॥ तेबहुमोल अबंधभव बसिंज्ञानके थोक ३४ जो मारग भयकार मन सिंह ऋक्ष अजगत्र ॥ जानि जात किन अपर पथ भूलिजात कसतत्र ३५ मैं स्वपनेमहँदीख यह जन्मामो गृहसून ॥ मोह लालसानंदमें जागिलखा सोकहू न ३६ यहैमोहकी नींदहै ज्ञान दिवाकर नित्य ॥ प्रकटतप्राची बुद्धिमय जागत पुरुष सत्य ३७ दशदिशि प्रकट प्रकाश है देखि लेह किन मीत ॥ अछत नयन कस अंध बन तूतौ परम पुनीत ३८ पाप पुण्य सुख दुखतुही छद्म अछद्म समान ॥ जो है सो तो आप तू क्यों मग भूल भुलान ३९ यथा रुधिर सर्वांग में व्यापत तथा सुमुक्ति ॥ मनुज देह के संग सँग डालतहै बिनुयुक्ति ४० विषय ध्यान नाशतसुमति यावत कुमति शरीर ॥ जासुप्रबलतावश बसत अधो योनि लहपीर ४१ कर्म तीनिबिध जानिये सत रज तमके भाय ॥ दोयतजै एकैगहै रहै मोक्षकोपाय ४२ जिमिअकाशमें नीलता दृष्टि सीवको लेखु ॥ त्योंअसत्य संसारके सकलपदारथ देखु ४३ भानमान अनुमान करि बदतसकलबुधिवंत ॥ जानतपूरण ज्योतिमय ब्राह्मणसेवत संत ४४ बीज नहोत गुलाबमें जामतअंग प्रताप ॥ जानु चतुर योंआतमा अंगअंगकेथाप ४५ अकरकहत दुबिधालगत है असत्य जगरूप ॥ याहिबनायो जासुने सोप्रभु सत्यअनूप४६ तीनिकाल सबदिनरहे तिमिभवंकी भ्रमभूल ॥ द्वैपद तीसर जीवभ्रम जो दायकदुखशूल ४७ बालकरुचिके ख्यालसब अंतमिटावतसर्व ॥ तिमिपरमातम चारिदश समयसमय जिमिपर्व ४८ सूरज्योति जहँ बिदितनहिं नखतमयूषन भास ॥ तत्त्ववस्तु गुणकालनहिं जहवांब्रह्म बिलास ४९ लोकालोक न कहिसकत रूप अरूप न

कोइ ॥ इतनतहा प्रकाशकृत जातएकही होइ ५० यथा श्रग्नि तृणकाष्ठसब जारिकरत निजअंग ॥ तिमि परमातम जीव कहँ निजमय करतअभंग ५१ ज्ञानवानको जगतमहँ कोमूरुख मति हीन ॥ बिषयभोगमहँ समदुवो भाषतनिकर प्रवीन ५२ जाकी बुद्धिसतोगुणी सोज्ञानी मतिधीर ॥ याजगचाहौ जसरहौ अंत न यमकीपीर ५३ सकलबस्तुको ज्ञानउर शीलवान शुचिकाम ॥ माया जानत झूंठजो सुगति लहत परिणाम ५४ लोभ सहित व्योहारसब मानबड़ाई चाह ॥ ताकीबुद्धि रजोगुणी बदतअविलकबिनाह ५५ आपनपद चीन्हतनहीं जड़लों रहत सदाहि ॥ मूढ़भावतम गुणबिवश नहींमुक्तिकी चाहि ५६ बुध मण्डली न जातखल विचरत सदाकुसंग ॥ तेप्राणीबहु जन्मलगि लखत न आपनरंग ५७ यतनकरत सुरलोकको बिषय बासनालीन ॥को पावतपद अमरबुध दुविधालगी मलीन ५८ जादिन जन्मेजीव सब तादिनते न मिलान ॥ भयोपितासँग यतनकरि अबकरुमन पहिंचान ५९ वारिधियथान बढ़तअरु घटत न काहूरीति॥ तिमि परमातम अकलअज बदनवाक्य श्रुतिनीति ६० इन्द्रवरुणयम धनपशिखि आदिकसब नशिजात ॥ इनके सेवनते चतुर कहाँ मोक्षकीयात ६१ कयोंध्यावत नरके चतुर जोशरीर तजिदेइ ॥ बहुरिजन्म भवमेंगहै लेतिजआतम सेइ ६२ बाणीपरिहरि मोह की रहुआतममें लीन ॥ ब्रह्मज्ञान प्रतापते पावैमुक्ति अखीन ६३ मायामहा अपारहै क्षरवतुसोइ प्रमान ॥ अक्षरपूरण ब्रह्महै यह सिद्धांत महान ६४ ओंकार सोहं वदत प्रणव अजप हैभाव ॥ मंगलमनके बोधते सम्यकएक प्रभाव ६५ अकलकला बिनुक्यों कहत करतलोक कर्त्तार ॥ लिप्तहोतनहिं जलजजल लखुकरि ज्ञानबिचार ६६ मांगिखात महिसेजकृत नग्नरहत तजिलाज ॥ मुक्ति होत मंगल नहीं बिनध्याये तनराज ६७ प्रीति प्रतीति सनेमनित प्रीतमको मनध्यान ॥ मोचिजाय वाको मिलै तब पावैकल्यान ६८ काशी मगमें भ्रम बड़ो मुक्तप्रेतह्वैहोय ॥ सोजाने

बिनुआतमा जानत साधूसोय ६८ जानतआतम भावजे परमा-
तमकेभाय॥ तेपावत निर्बाणपद दुबिधा देतबहाय ७० बिना
कर्मनहिं सिद्धभव कर्मफलित दुहुँओर॥ परमहंस कर्मन करत
जानत विषयकठोर ७१ जोबनिआवै सहजही सो कर्तब नित
साधु॥ सत्यभाव श्रीरामपद जलजसदा आराधु ७२ स्वर्ग रहै
निजपुण्यतम अमरपदारथ भोग॥ दुबिधामिटी न जन्मकी क्यों
करिभयो वियोग ७३ उड़तपक्षि आकाशकहँ निजबलबुधिअनु-
सार॥पावतअंतन कोटिकृत माया तथाअपार७४ जोजीतै माया
विबुध होइ ब्रह्मसोआप॥स्वर्गनरक व्यापै नहींदुबिधाजन्मसंताप
७५ मोहनिशाजोजगिउठ्यो लहिरविब्रह्मप्रकाश॥ चीन्हीआपनि
बस्तुसब निकट दूरिचहुंआश ७६ जैसेंमिहँदीपानमेंलाली लखी
न जाय॥ योग भये सतसंगके परत प्रसिद्ध लखाय ७७ अथवा
तिलमें तेल ज्यों निवसत गंधि प्रसून॥ तथा निरंजन ब्रह्म प्रभु
तन प्रति दोष बिहून ७८ याशरीर के मथन ते प्रकटततासु प्र-
ताप॥ आतम ज्ञानी योग रत मेटत भव संताप ७९ वस्त्ररँगेत-
न भूति रँगि दुबिधा बासशरीर॥ तत्पर ध्यान न आतमा क्यों
करि होइ सधीर ८० पांच प्राण वासी बपुष पांच तत्त्व निरमा-
ण॥ एक मारगमहँ सब चलैं तौ पावैं निरवाण ८१ कमलापति
की चाहनहिं कमलाकी अति चाह॥ मूरुख समुझत अमर पद
काल कौर क्षणमाह ८२ तीनि पांच षटलौं तजै भजैनिरंजनदे-
व॥ समजानै लघु ऊंच कहँ लहै मुक्तिको भेव ८३ पांचबीसको
एक करि मनको देइ भुलाइ॥ समुझै आतमतत्त्व को आशुमुक्त
ह्वै जाय ८४ गुरु वाणी प्राणी सुनै करै तासु अनुसार॥ धर्म स-
कल जगहेतु हित करै सब्रह्म विचार ८५ अपनी बुधिनिर्मलकरै
बैरागी मन होइ॥ घरबन एकै रस रहै ज्ञानी कहिये सोइ ८६
जो कुकर्म की चाहमन तौ अर्चा जपयाग॥ सिद्धि लहतनहिंको-
टि बिधि बरणत नीति बिभाग ८७ शास्त्र उपनिषद वेदलौं बर-
णत पूरण ज्ञान॥ सो मानत नहिं दंभिजन कल्पत आनपुरान८८

वृष ब्राह्मण के नाम हैं षटक्षत्री के नाम ॥ द्विविधि बैश्य पञ्च शूद्रहैं एकै पुनि परिणाम ८९ जिमि कंकण किंकिणि अपर नूपुर स्वक येनाम ॥ मिलत नाम अर्जुन भयो समुझत बुध गुणमाम ९० पाट एकही भूमिहैं खान पानसों एक ॥ द्विबिधा पितुमें कुछ नहीं कल्पे बरण बिवेक ९१ ब्रह्मा ते उपजे सकल ब्राह्मण बरणी सर्ब ॥ करणी उत्तम अधम लघु बरणोत्तम कृतगर्व ९२ नीचआतमा उद्धरै ब्राह्मण पदमें जाय ॥ ब्राह्मण पद कर्मन रहित भ्रमित नर्क भरमाय ९३ बुद्ध नाम सुनि तन कँप्यो प्रजाद्रवडदाभूप ॥ क्यों क्षत्री वासों कहत तन मन नीच स्वरूप ९४ तजि स्वधर्म रत अपरमत जिमि प्रतिब्रत रत आन ॥ मंगल तू सबीग्र तजि करु जनि आंन बखान ९५ सम्पूरण सर्बांगमत यामें नहिं सन्देह ॥ श्री शुक ब्यास वशिष्ठ भृगु मुनि यह गहे बिदेह ९६ मान बड़ाई हेतु क्यों कर्म करत जगभूरि ॥ आयुष लौं संगी नहीं तजिदे दुखकी मूरि ९७ सातपांचके योगते निर्णय त्रिपद जहान ॥ मूल गहै शाखा तजै सो साधू परमान ९८ मंगल मंगल चारि द्विधि परमातम परसाद ॥ क्षणक ध्यानते कृपानिधि मेटत बिबिध बिषाद ९९ मंगल मनहिं प्रबोधनहिं कोटि उपायन होइ॥ बिनु बिराग मारग गहे करणी पूरणसोइ॥ १००॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्बांगसुबुद्धिकर्तायांमंगलबिनोदकायांमंगलदासबिरचितायांनिर्बाणज्ञानबर्णनोनामचतुर्थशतकः॥४ ॥

दो० ॥ कर्म पात्र घटि बढ़ि नहीं कर्म प्रधान सदाहि ॥ शुभ कांजी ऊरध बसत अशुभ अधोगति जाहि १ लोभ बिबश मिश्रन अखवत करि प्रपंच बहु भांति ॥ अन्त समय पातक समहि अध गति बलि पक्षितालि २ कामबश्य परतिय रमण बेश्यारतनर जोइ ॥ दण्ड पाइहैं यमन पुर नरकनिबसिहैं सोइ ३ माक माणिक पै रत्नजिमि जानत गुण नहिं तासु ॥ पारख कर परि रत्न स्वछ निजगुण करत प्रकासु ४ तथा जीव माया बिबश जानत

सो न स्वतंत्र ॥ पारख अनुभव छुवतही प्रकट्यो पूरणमंत्र ५ बि-
नुखायेइन्द्री शिथिल यथा विदित बुधिवन्त ॥ तिमिज्ञानी सत-
संगबिनु पावत क्लेश अनन्त ६ कहाचहत निरगुण पदहि सर-
गुण जानत कोइ ॥ मंगल ज्ञानीमौनभल ज्ञानबदै भ्रमसोइ ७
पण्डितपाठ पुराणकिय मूरख मण्डलजाय ॥ कोहेतक चेतक
भनै कहैं बड़ो बकवाय ८ कुजन मण्डली सुजन बसि पंथन
पावतमीत ॥ दुखित रहत सो निकरगति यहै बात बिपरीत९
चारिखानि भवभूतसब ब्रह्मअंश निरमाण ॥ अज हरिहर तत्पद
बदै असिपदसोबिनुमाण१० जावदभ्रमउरमेंबसै मोहलालसासा
थ॥तबलगि मोक्ष न जीव कहँ जन्मै मरै अनाथ११ जानोंचाहत
ब्रह्मगति अजअनवद अनकाय ॥ चीन्हत नाहींआपुको कहाज्ञा-
नकोभाय १२ वेद नेति भाषत सदा हरिहर सकत न जानि ॥
लघु धी नर ता खोजमेंसहत अनेक गलानि १३ बालभाव धारै
सदा छल प्रपंच तजिदेइ ॥ लिप्त रहै आतम विषे अमी पदारथ
लेइ १४ योग भोगमें कठिन पद पूरणताको तात ॥ लघु मति
कटु गुण कर्म बिनु दुहूं ओर भ्रम खात १५ धृक बैषानस बिषय
रत धृक तपसी अबिचार ॥ बिनु परमातम भजनबुध धृक नर-
काय अगार १६ गर्भबासकी सुधिनहीं निज निबन्धगे भूलि ॥
अबको रक्षक होइगो का बिहंसत मन फूलि १७ समन चारके
दरश ते मल तजिहौ अकुलाय ॥ बैतरणी महँ बिबिध बिधि मन
हिलोर तूखाय १८ सीख सुधासम सुनतनहिं गुणत नसति उप-
देश ॥ सुधि आवैगी मन तबहिं जब यम देहै क्लेश १९ मित्र पुत्र
रक्तीभये जग अनित्यमहँआय ॥ ऊंचे मन्दिरकाय नर चढ़ि पुनि
गिर झहराय२० जाकी बुधि प्रज्ञा गही विषय धरत नहिंताहि॥
ज्यों महीप के मीतको प्रजा न सकत सराहि २१ कोल भील
काननबसत कबि गुण जानन योग ॥ बिद्यमान ज्ञानीनको कब
अपनावत भोग२२ यथाअगरबनमहँ जरत गंधिन जानतकोल ॥
तथा ज्ञान निरबाण मत मूरख मनको झोल २३ जे श्रैवी मत्ति

धीर हैं शुद्ध चित्त बिज्ञानि ॥ ते उत्तम भ्रमहीन जग इमि शिव लिंग बखानि २४ ब्यासदेव सब वेदमत जानि सिखायो शूक॥ सिद्धान्तन मत तिन गह्यो मतिमहँ परी न चूक २५ जनकराज गृहबासि भे बिदितबिदेह जहान ॥ यज्ञ अमित बलि भूपकिय भो नहिं मनअनुमान २६ नारद घूमत तीनि पुर करतपिशुनता काज ॥ दोषनलागत ब्रह्मपद लीलाकृत सुखसाज २७ बामन तनहरि धरिछल्यो बलि नरपतिकोजाय ॥ दोष प्रपंचनकछुभयो रहे सदा यकभाय २८ परम सनेही रामके लक्ष्मण वन सँग कीन्ह ॥ काल पाय पद प्रीतिको तुरत रामतजिदीन्ह २९ कुष्ठी चषबिन कर बिना आनौ इन्द्री हीन ॥ आतम ध्याये मोक्ष को पावै बदत प्रबीन ३० धायकिये ब्रत आसुरी पूजे तिनके पीर ॥ क्लेश सह्यो निज अंगअति ब्यथा न मिटी शरीर ३१ जो न बेद पौराणमें काव्यबतावै नाहिं ॥ तहां बैष्णव शैव क्यों शाक्तब्रह्मबिद जाहिं ३२ पूजिय बेष प्रताप सों धूर्त प्रपंचउलोग ॥ प्रकटे छल परिणाममें सब बिधि होत अयोग ३३ तन धन अर्पै मित्रहित जीव लोभ तजिदेइ । सोप्रीतम संसारमें बिपति सहायकरेइ ३४ जग नर प्रीति प्रतीति असि प्रभु पद प्रीतिअलेख ॥ जोपुरवै नर नारिसो मेटै कलुष बिशेख ३५ जन्मभयो सामान्य पद करणी कर्मद्वितीय ॥ सेवत पतिब्रत कंथभइ बिन सेवा कुधितीय ३६ कल्प कल्प कल्पित रहत ज्ञानी कर्मज माहिं ॥ बुधि बिनु नर रत बिषय महँ पुनि पुनि आवहिं जाहिं ३७ कूकुर ज्यों भूकत वृथा दर्पण बिम्ब स्वहेरि ॥ त्यों मति बिनु बिषयक मनुज दुख पावत चहुं फेरि ३८ सिंह निरखि प्रतिबिम्ब निज मर्यो कूप परिमूढ़ ॥ तथाजीवमाया बिवश लखत न तत्त्वअगूढ़ ३९ काक अस्थि लै भगि चल्यो देखिपक्षि पछितात ॥ तैसेलखि हरि भक्त को बिषयक नरपछितात ४० छर्दिरोग बशभोजनै बमन करत नर नारि ॥ श्वान स्वादसों भषतहैं निजमन महा सुखारि ४१ तिमि संसारी संतजन परिहरि हरिरस लीन ॥ मूरख भोगत

स्वाद सों पापमूल को लीन ४२ ब्यास बंश शुकदेव ज्यों दैत्य बंश प्रह्लाद ॥ पूजनीय पावन भये सुनुमन भजन प्रसाद ४३ क्षुद्रनदी पावससमय चली कु मगहितुराय ॥ तिमि मूरखलहि सम्पदा हितु अरि लखत सदाय ४४ कोहौं अरु आयों कहां अंत कहां बिश्राम ॥ निज पद खोजै बुद्धि शुचि तासु बिचारी नाम ४५ लघु दीरघ एकै लखै निज आतम में लीन ॥ ताहि कहत ससुभाव बुध करै न कर्म मलीन ४६ दान दया उर बास मन निग्रह इन्द्रिन युक्त ॥ दम साधनको सिद्धि मत को न होत जग मुक्त ४७ सो विकार व्यापै न उर जो अलोकवा लोक ॥ चीन्हैं पूरण ज्योतिकर बिम्ब जीव बिनुशोक ४८ अकल कलासों जगरच्यो महाकला अवतार ॥ निगम संत पण्डित बदत सो प्रभु महा अपार ४९ नारायण जन्म्यो जबै ब्रह्म बाक्य ते तात ॥ चंतुरानन तानाभि ते ताते सब जग जात ५० माया ब्रह्म अपार द्वै काया कर्म बिहीन ॥ माया चीन्हैं ब्रह्मको जानै मर्म प्रवीन ५१ मर्म बूझतहि जीव नशि ब्रह्म लीन ह्वै जाय ॥ को बरणै अद्वैतको भेद बुद्धि भ्रम खाय ५२ जाके जानतही मिटत जीव भाव भव भेद ॥ बिन जाने भ्रमबश फिरै यह मत अगम अखेद ५३ यथा काष्ठके अंतरहि निवसत सिखिनप्रकाश ॥ संघट ते प्रकटत तुरत तिमि तन ब्रह्म विलाश ५४ इन्द्र जाल बश पंखते होत परेवा रूप ॥ यदपि असत्य न लखि सकत तथा जगत भ्रम कूप ५५ नट सांचाझूठी कला समुझत भूमन नशात ॥ तिमि माया परमात्मा पै नहिं बुद्धि समात ५६ दीप प्रकाशित बहिगयो खोजत लोचनहीन ॥ तिमि अज्ञानी ब्रह्म को क्यों लखिपरै अधीन ५७ अपनी करणीते भयो चौर बन्दि महतात ॥ दोष लगावति विधि लिखनि यह सुनि मन पछितात ५८ सातदिवस जाने किये सप्तस्वर्ग फलवान ॥ एक रहे मर्य्याद जग सब जगयहै प्रमान ५९ आखर बिरचे गुणिन जेतिनमें मंद प्रमान ॥ तासों भव सब जीव मन पावत मोक्ष

महान ६० ओंकार पद लौ चढ़ै अक्षर मारग लेइ ॥ आगम मरण नशाय पुनि जानै आपन भेइ ६१ भेद लखेबिनु आपनो लहै न ब्रह्मज्ञान ॥ ताबिन मोक्ष न जीवको भाषत वेद प्रमान ६२ बारम्बार न मनुज बपु पावत जीव सुजान ॥ अब कीचूके युगनि लगि भ्रमैयोनि सबौन ६३ दुबिधा दोष मिटाय के सत्य प्रीति करु तात ॥ मंगल नेहप्रताप ते मित्र धाम लगि जात ६४ मित्र मिले आनन्द को तू प्रापति मनहोइ ॥ सम्यक मनकी कामना कहुप्रीतम सों सोइ ६५ कपट कतरनी कांखमें काटत प्रीति पटान ॥ अंत खुले मित्रत्वनश कहा मित्र सन्मान ६६ बहुयोजन पक्षीउड़त संध्या आवत धाम ॥ त्यों सबदेही ब्रह्ममें लिप्त होत परिणाम ६७ बिन करणी भरणी भये मित्र द्वार बिनछद्म ॥ प्रीतिमानि आपन करत बासदेत निजसद्म६८ धर्म कर्मकी सिद्धि है श्रद्धाही के साथ ॥ श्रद्धा सात्विक बिन चतुर धर्म सैन बिन नाथ ६९ बिद्यापढ़ि पंडितभये सब कोउ कृत सन्मान ॥ ईशभजन बिन सर्बथा दुखरूपी अज्ञान ७० पढ़ि पिंगल मंगलरचे छन्द कबित्त अनेक ॥ मनबश आव न बिषय रत भूकतश्वान कितेक ७१ तूमंगलमन अंतरहि पूरणराखु प्रतीति ॥ बाहिरसों कछुकाज नहिं यहै ज्ञानकीरीति ७२ न्हायेधोये वपुष के जापै होत्यउ मुक्त ॥ तौ पाठीन स्वजन्म भरि जल मधि रहत प्रयुक्त ७३ जोमाला बांधेतरत जन्ममरण भरि कोइ ॥ बसत कीटतौ काष्ठनित परमहंसहै सोइ ७४ पूजेमूरति मुक्तिको पावतकोउ संसार ॥ तौबहुनरनगबासिनी करतअमित ब्यवहार ७५ सत्यप्रीति बिनु मूढ़मन मुक्त न होवैजीव ॥ दंभ कपट भव कोटिकर भरमिहि द्विपुर सदीव ७६ अछत अक्षगे सुतनके जबलगि बिघन दिखात ॥ दूधपियावत परिहरत उपजत दुखकी बात ७७ जानिकरत दुर्कीमको मानिन मानत ज्ञान ॥ मंगल तूसवींग ते पावैशुभ निजथान७८ निंदा औरनकी करत आपु अशुचि वपुधारि ॥ खिवि बोली भोजन उरग बिषय

ते बुधनर नारि ७९ जटा लटा तन पलित अति मौन साधना कीन ॥ को उपदेश न करि सकत शिष्य समाज प्रवीन ८० भीखकाज उरमाल शिर भूति जटारचि कोपि ॥ ठगत अबूझन बूझमति संतकहावत सोपि ८१ अहंकार बश्मिग्रसन भुजगहि छल रसकीन ॥ को ज्ञानी कर्त्ता करम यमचर त्यहि दुख दीन ८२ पापी सातों स्वर्ग बसि अधोगिरत बिन चूक ॥ पाप बासना उरबसी ज्यों चातककीकूक ८३ तजत न कपटी कपट को सतसंगतिहू पाय ॥ यथा नीम तरु मलयसँग कटुता नाहिंनशाय ८४ लोष्टसंग हाटक यथा खोयेनिजपदमोल ॥ नीचसंग त्यों सुजन परि ब्राह्मण मतलहकोल ८५ आतम आपु अदृश्यहै दृश्यमान प्रतिबिंब ॥ यह सुजानजाने लहत शुचिमारग न बिलंब ८६ लोकलोक मर्य्यादहै वेदबचनकी तात ॥मूरख सो मानत नहीं कहांमोक्ष दरशात ८७ कलिकठोर बाणीसुनै नीचनको कुलवान ॥ तिमिज्ञानी पाषंडमत मन मनकृत अनुमान ८८ जिमिलोहेका ताउहै तिमिजीवन तूजानु ॥ परिहरि आन भरोसभजु प्रभुस्वरूप बिज्ञानु ८९ नभशिर हरिशशि चष उभम भुजहरिहर घनबीजु ॥ उरविधि उदर सुलोकयह देहबिराट कहीजु ९० बिश्वरूप आपुनबन्यो बिश्वंभर पुनिआपु॥मंगल दूसर कौनहै जासुजपत तूजापु ९१ ज्ञानिनसोंहौं प्रश्नकियएक दोइकीतीनि ॥ कहामिलै षटएकरस दूसर परत न चीनि ९२ तबमंगलयों फिरिकहा नामभया रसकौन ॥ कहानाम सर्बांग को बरणै मूरखतौन ९३ याजगमें बिनुनामके बस्तु न जानी जात ॥ यातेसबते अधिकम्वहिं नामप्रताप दिखात ९४ कमठ पीठि जामेंकबौं केश न भ्रममनहोइ ॥ मुक्तिपदारथ भजनबिनु पावै अचरज सोइ ९५ कोपसमय बुधिथिरनहीं रहत सत्ययह बात ॥ जैसेनिंदक बादते ब्राह्मण आपुपलात ९६ मतिदृढ़ आपनि कीजिये परमारथकोसेइ ॥ शुद्धमनीषी अंतमें शुभगति जीवहिदेइ ९७ अमितपाप कारक सदा मंगल मतचांडाल ॥

किमिलागै सतपंथमें बिकल रहत त्रैकाल ६८ बीस बिसेगति शुभलहै आतम ध्यावैकोइ ॥ पूरणकला प्रकाशमय क्योंनलीन मनहोइ ६६ मंगलबार अपारलबहिं समुझायो मननीच ॥ तदपि न मान्यो दुष्टतू फिरिगा विषय नीच १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्तायांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायांज्ञानोपदेशनिर्बाणपदबर्णनोनाम पंचमश्शतकः ५ ॥

दो० ॥ चारिओर अध ऊर्ध्वलौं नामप्रकाश दिखात ॥ सोजाने बिनु मूढ़मन क्योंदुर्भाव नशात १ नामभेद जानतनहीं काम कल्पनाकोटि ॥ तिन प्राणिनकी जगतमें मेधाउत्तमखोटि २ बिनु जाने हरिनामके कियेबिना गुणगान । सतमारग सूझत नहीं जीव भ्रमतबैथान ३ जबलगि नामप्रतापउर प्रकटत आइनतात॥ तबलगि मग विवरणकरब महाकठिन दुखगात ४ कालकराल सचेतको निजबश करत अचेत ॥ भवसागर में जीवकहँ विविध हिलोरैं देत ५ जानत नाम न जासुको वपुनिरख्यो भरिनैन ॥ जगतमांझ फिरिआनसों बरणत चतुरबनैन ६ नामअधारीकपट गत ममता रहित सधर्म ॥ बिचरत या संसारमें बधतन कर्मा-कर्म ७ जपोनाम अजपा सदृढ़ ध्रुवलह अतुलस्थान ॥ श्रीप्रह-लाद सुनामबल कियोविष्णु सन्मान ८ टेकनत्यागै ब्रह्मब्रत नाम जपै चितलाय ॥ पूरणप्रीति प्रतीतिसों हरिपुरसो चलिजाय ६ जहांगये बहुरैनहीं पुण्यक्षीण नहिंहोइ ॥ शुभकारी सर्बांगमति पावतहैं पुरसोइ १० रामनामको बलबड़ो विदितवेदविज्ञान ॥ ज्ञानदीप उज्वलितकरि कीजिय ताकोध्यान ११ रामनाम प्रहलादध्रुव जप्योसधीर सज्ञान ॥ भक्तशिरोमणि होतभे क्यों गुणकरिय बखान १२ महाबली गुणवानकविसतमारगकेदास ॥ योगक्रियाकरि नामको सबदिन उरदियबास १३ बालमीकि गति नामकी जानी ज्ञानप्रयुक्त ॥ तीनिकाल दर्शकभये आगम कीन्होउक्त १४ रामकाम तरुबारिद्विमि रमण सकल तनकीन्ह॥

पाप पुण्यके तुल्यही सबजीवन फलदीन्ह १५ रमत कीटते
ईशलगि रामपरम शुचिबस्त ॥ भावबश्य सबठामहै देतमुक्ति
जनहस्त १६ रामनामबिन कोटिबिधि बुधनगहै बिज्ञान ॥ बि-
दितज्ञानबिनमोक्षपद मिलत न कोटिउड़ान १७ रामकर्मकी
दाम है रामसुध्यान समाधि ॥ निश्चयबश मुक्तिहिगहै बुधदे-
खैआराधि १८ नाममात्र जे तीनिपुर लखिबपु जानेजात ॥
जानत कौन अनामको यद्यपिहृदय समात १६ अलख कहाजो
लख नहीं अमल कहा मल राखि ॥ सुमति कहा बिन कुमतियों
देत चतुर कबि साखि २० रूप कौन अनरूपको जो नहिं जानन
हार ॥ अकल बिचारत कला सों जिनके बिमल बिचार २१ राम
नाम उर धारिये मंगल सरलस्वभाय ॥ द्विबिधादोष बिहायनित
परम तत्त्व ले ध्याय २२ जासुनाम अज हर रटत योगसमाधि
लगाय ॥ ताहि ध्याउ तजि दुष्टमति अंत मोक्ष ह्वैजाय २३ काल
कलाबिनु लखि परत नारायणकोभाव ॥ कुत्सित दृष्टि नदीसही
बदत ऋषय शुचि ठाव २४ ऊपर रटना नामकी अंतर समता
सोह ॥ बिचरै निज इच्छा सरस नाहिंन व्यापत मोह २५ आन
नीच अरु ऊंचकी निन्दा तजै सुजान ॥ जब नींदै तबआपकोसो
नर ज्ञान निधान २६ आपनि करणी शुद्धनहिं कहादैवको दोष॥
खीझत भाँति अनेक नर क्यों पावैं संतोष २७ कोउ कहत सुर
पुर सुलभ कोउकहत सुरधाम॥ मंगलमत निरबुद्धिकेनरकसुल-
भ परिणाम २८ देव यजै भक्तिहि करै ब्रत तीरथ करिजाय ॥
स्वर्ग लोकको बुधबरत नरक बिनाश्रम भाय २६ इंड जानि
भोगी तजतनरकपंथकी बाट ॥ करतक्रिया सोंहेतु ज्यहि बिल-
सै सुरपुर हाट३० संन्यासी स्वर्गहि डरत पुनर्जन्म अनुमानि ॥
आतमध्यावत कर्मबिनु फलआशाकृतजानि ३१ जासु पुण्यपूरण
उदय भव में परत लखाय ॥ जीवत ताको स्वर्गफल मंगल मत
दरशाय ३२ पापी जनकोजीवतहि नरकजगत महँ होइ ॥ ज्ञान
वान तू देखिले पुनि लखिके तजु सोइ ३३ एक दोउ पुरकी

क्रिया निजकर लेत सम्हारि ॥ जीवत भोगत बिबिध सुख जात
अंत पुर चारि ३४ एक इहां अति दुखलहत तपमाकर मनमा-
हिं ॥ लीन होत पद आपने दुखसुख व्यापतनाहिं ३५ एक प्रथ-
म संचित बिवश भव भोगत कृतपाप ॥ अंत नरक बासै लहत
अति कलेश संताप ३६ एकन संचित कर्मकरि भोग लहत यहि
लोक ॥ अरुन सत्य मारग चलत अंतनरकलहि शोक ३७ चारि
भांति नरनारि जग मंगलमनको ख्याल ॥ आन मरत अहिके
डसे मोरहि बधतन व्याल ३८ जो परिणाम नफल मिलत कर-
णी सम हरिद्वार ॥ तौयोगी भोगी अधम क्यों जगकरै बिचार ३९
बिषय पाय तन हठि तजै अमीपान मृतुहानि ॥ ऐसे कर्माकर्म
को फल लीजै अनुमानि ४० कनक रूप हरि भजनहै चूकेउ
घटि नबिकाय ॥ पाप कांच फूटे चतुर कोउ गाहक ठहराय ४१
क्यों सांचेको त्यागि मन मग असत्यमें जाय ॥ आपनपौ पहिं-
चान किन आपामध्य समाय ४२ निर्गुण सर्गुण सुलभद्वौ दंभि-
नके मुखमाहिं ॥ मंगलके मत कठिनअति दोनोंपंथ सदाहिं ४३
प्रथमै साधै जगतमत पुनि करिसबीचार ॥ सगुणरूप ध्यावैप्रभु-
हि नानाग्रंथ बिचार ४४ श्रीराधा पति चरणरति गीताग्रंथ बिचा-
रि ॥ गहै बाट बिज्ञानकी भवभ्रम देइ निवारि ४५ पुनि बिवेक
शम दमकरै योगअंग हठरूप ॥ सिद्धियोग पुनिसाधिकै पावैबस्तु
अनूप ४६ शनै शनै मारगचलै पहुंचै मित्रस्थान ॥ कूदे एक-
हि बारमें क्यों करिजाय सुजान ४७ शनै रचत कंथा शनै पंथ
तरबजउधार ॥ शनैबित्त बिद्यालहत त्यों बिज्ञानबिचार ४८
जे भूले हठपंथमें तेनलहैंगे मोष ॥ त्यागिभूल सत्यहिगहैं तो
पावैं संतोष ४९ सतसंगति पारसमनुजहै कुधातलहि संग॥रूप
लहत गंगियवत अंत मोष गतिभंग ५० पारस सतसंगति भई
हरिगुण खानिप्रताप ॥ ताते लेइय खानिज्यहि पारसहोइअ-
ताप ५१ बैद्य बुलावत रोगहर करणीफल बिसराय॥ बिनुभोगे
निजकर्मफल मंगल रोगनजाय५२ मिथ्या साखीदेतहैं परतिय

रमत सप्रेम ॥ आनकर्म निंदककरत ते नर बने सनेम ५३
बेश्यागामी जीवहा सखाद्रोह छल कारि ॥ अपकाजीते भक्त-
भव गलमाला द्वैचारि ५४ काहिज्ञान मंगलकहत कोअज्ञान प्र-
माण ॥ जानब भूलब द्वैकहत नारायण निर्बाण ५५ नदीपंथमहँ
देखिकै भूपरचायो सेत ॥ त्यों ज्ञानीपथ धर्ममें थपेसेतबचदेत ५६
चलाजाय लघु प्रथुल कउ तामारग भ्रम हैन ॥ पहुंचै इच्छा
धाम मधि अवशरिरोंकि सकैन ५७ बिपति देखि अकुलायनहिं
संपतिमें नभुलाय ॥ कर्म वश्यजानै सबै आतमरहै समाय ५८
जीव वृत्तिदाता अहै प्रेपुर पालनहार ॥ क्यों मंगल मनतूभ्रमत
बेइ तोहिं सबिचार ५६ नृपति प्रजाकिय आपुही सबमें रह्यो
सुपूरि ॥ क्यों डरमानत आनकी भजुकिन जीवनमूरि ६० सब
के शिरपर आपुही सदाबिराजत आहि ॥ सो तेरी प्रतिपालना
करिहि भजसि किन ताहि ६१ बीतिगई तासों कहा आवन सों
काकाम ॥ जोहै सोई धन्यहै भजुहरितजि संभ्राम ६२ बालअ-
वस्था मोह मय खेलतगई सिराय ॥ कामकला कामिनि बिषय
ईश्वर भज्योनभाय ६३ जरठभये तृष्णाबढ़ीदृष्टिथकी बलथोर॥
ध्यावतनहिं परमातमै कहत अखिल जग मोर ६४ बाणी बदि
नहिंसकतहैं पहिंचानतनसखान॥ तदपि न ध्यावतब्रह्मको आइ
कालनियरान ६५ किये जन्मभर पापही धर्मरहित सबभांति॥
यमन चार हनि मुद्गरन जीवहि बाँधेजाति ६६ कीबाँधायम
पासमें मारगयो कोभूल ॥ जानिबूझि मंगल चतुर गहत भूल
तरुमूल ६७ इच्छाचारी जीवको यमचर कर्मप्रताप ॥ दंड देत
हैं अंतमें बड़ अचरज संताप ६८ या जगमें दुखहै बड़ो चिंताको
मन मीत ॥ जाकेबश दुबिधा रहत सोतन बिपति अतीत ६९
जाकी माया अति बड़ी त्यहिकिमि जानै कोइ ॥ आपन गति
जानतनहीं क्यों सुखपूरण होइ ७० खोजतजगकी बस्तु को
जन्म सिरानोसर्ब ॥भज्यो न श्रीभगवानको अंतजीवकोपर्ब७१
जाकी बुधिनिर्मलसदा ताकी मुक्तिसदाहिं ॥ मायाबश कामी

रहत भ्रम परित्यागत नाहिं ७२ अंधकारमें अंधको एक दशाद्व काल ॥ दृष्टाको भ्रम अंध सम तिमि मूरुख गुणपाल ७३ सात स्वर्ग सुखकोलहै क्षण सतसंगप्रसाद ॥ यथा त्रिबेणी न्हाइनरमेटत पापबिषाद ७४ चातकज्यों लवसों रटै निज प्रीतम को नाम ॥ सिंधुगंग जलसों बिबुध तासुनहींकछुकाम ७५ पापदृष्टि सों देखिहे क्योंतू पूरणरूप ॥ पापपुण्यको भावनहिं सोप्रभु अकल अनूप ७६ पुण्य पापसबके लखत अंतर बाहरसोइ ॥ कोटि छिपावै कपटकरि आपुबिदित जगहोइ ७७ जोकरणी नीकीकरैसो पावै सुरधाम ॥ मंगल जगकरणी बँध्यो आदिमध्य परिणाम७८ कर्मवान क्यों भूलिहै निजकरणीको काज ॥ ज्ञानवानज्यों ज्ञान को खोजत तीनि समाज ७९ मातपितात्रिय बंधुसुत स्वारथरत कब जानु ॥ बिनुस्वारथ परमातमा तासु भजनमनआनु ८० चिंतारूप भुयंगनी नरतनबिलमेंबास ॥ अमृतबिबर्द्धकचारि बिधि क्यों लखुब्रह्म प्रकास ८१ शांतिबिना श्रद्धानहीं बिनश्रद्धा नहिं मुक्ति ॥ शुभकारी आतम क्रिया यहै ज्ञानकी युक्ति ८२ समुझायो समुझैनहीं कामी रक्तितबाम ॥ ज्ञानगली बिचरत न खल क्यों आनँद परिणाम ८३ सांचेजोथा जगतमें ते प्रबीणता रक्त ॥ आतम शोधत ज्ञानमग निशिदिन त्यहि आसक्त८४ भक्ति बिना बिज्ञानकी भक्तिसिद्धि नहिंतात ॥ भक्तिबिना आतम सुखहि निरखतनहिं बिख्यात ८५ कूकुरकी जोदशाहै त्रियाप्रसंगत काल॥ सोइदशा यहिजीवकी सँग आशा चांडाल ८६ ज्ञान कतरनी मोहपट काटत बिबिधप्रकार ॥ आतम शोधत तीनि बिधि तजि दुबिधा ब्यवहार ८७ यथा अम्ब के बिटपहैं तिमि हरिजन संसार ॥ फले परारे हेतहैं सबकेसहत प्रहार ८८ ज्ञानि बतावै भेदनहिं बिन जिज्ञासिहि ज्ञान ॥ तजै आशिरा शाप द्वौ सेवैपद निरवान ८९ आपन पद आपुहि लखै आनहिं क्यों तू भाखु ॥ तजि हलुकाई जीवकी गुरुतासोंहितुराखु ९० वाको मायाका करै जाकेपुण्य न पाप॥स्वर्गनरकचाहतनहींशुद्धचित्तगत

तापद१ जावन्मोह बिलास कृत तांवद्रोग कि चाह ॥ याहित्यागि फिरिजीवयह पकरतआपनि राह९२ प्रणगहितजैनकोटिकृत को कुलीन शुचिसन्त॥ज्योंचकोरपावकभषत कौनस्वाद बुधिवंत९३ जोमत अर्जुनकोदियो श्रीयदुनाथ दयाल ॥ ताहिनिबाहै जगत कउ मोक्षलहै बशकाल ९४ बालक तोतरबातको बूझत चतुर समाज॥ त्योंमंगलकी बारता साधनके शुभसाज ९५ जाबिन रहत न क्षणकयक तागुण दोषनलेत ॥ यथामीन जलको चतुर तजि फिरिप्राणहिंदेत ९६ जोप्राणी लहसुन भषत आवत गन्धि न ताहि ॥ त्योंअपकारी अपयशी मंगल कहालखाहि ९७ वाकी समताकोकरै जो नहिंमानतवेद ॥ बुद्धि आसुरी यवनज्यों क्यों जानै हरिभेद ९८ बीजबोइयो शालिको उपजत भो गोधूम ॥ याहि निवारत बुद्धिकिमि अचरज झूलनझूम ९९ मंगलहरिके नामबल सोवतनींद अघाय॥ स्वर्गनरक हरिजोचहैं करैंको अब पछिताय १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानइतरयांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्रयांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायांज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनोनाम षष्ठमश्शतकः ६ ॥

दो० ॥ मीठीबाणी शत्रुकी दुखदायक सबभांति ॥ जिमि मीठा बिषकालकर ज्ञाननैन दरशाति १ मित्रहेतु श्रीरामजी बालिबध्यो निःपाप । मंगल तू निज मित्रहित कस न हरत सन्ताप २ परमप्रीतिकी भावना ब्यापतमित्रहिपाहि ॥ जानत पूरणधर्मसो श्रुतिवतकर्म कमाहि ३ बिद्याजाकी सत्यहै सोवैरी भलहोइ ॥ मूरुख मीत कलेशकर ज्ञानमान लखुसोइ ४ भक्ति बिनाशन दुष्टबहु कामादिक निजसंग ॥ ज्योंजल क्षीरहिअमिल कउ करति भिन्न हितुभंग ५ जोनहिं जानत सत्यपद मोहमानमें लीन॥चीन्हत नहिं शिरताजनिज यद्यपिजगत प्रवीन ६ कोटि चतुरता जगतकी भजनबिना निःकाम ॥ जिमिबिनु अन्नअनेक धनक्षुधा सकत नहिंथाम७ रूपमास्ते बिपुलबिधि सुन्दरआनन

चन्द ॥ भजनबिना टेसूयथा बिन सुगन्धि द्युतिमन्द ८ अमर पदारथ कौनभय समरकहा यहिलोक ॥ भजनभाव शुभ अशुभ द्वौ दायक सुखअरुशोक ६ ज्ञाताको दाताकहा कोविद्याधरतात॥ निजुजाने दाया हृदय ईश्गुणनकी बात १० ठगन ठगत जाने नरहि भयमानत पहिंचानि॥ तिमिमाया हरिदासकी मंगलमन अनुमानि ११ करणहीन बैनन सुनत नयनहीन नहिंदीख ॥ योंमंगल अज्ञानतू गहत न मेरीसीख १२ बामीकामी याम चहुं धामी सामीनाहिं॥हियअनुरागन मुक्तिको मंगलसन्तसदाहिं १३ ज्योंनिज गृहको नेहहै त्योंहरिपद किनलाउ ॥ मंगल भव पद प्रीतिबश अन्तमुक्ति पदपाउ १४ होनहार सो होइगी मिटै न कोटिउपाय॥ मंगल मनक्यों शोचकृत भजुआतम चितलाय१५ ज्योंकरीय पटमेंधरे बचन कलङ्क बिहीन ॥ त्योंकुसंगमें नीचम-ति होतकहत परबीन १६ बारबार सिखवत अहौं मन बहिं उत्तमज्ञान ॥ तूनतजत प्रारब्धबश यद्यपि महासुज्ञान १७ लोभ बास उरमेंकरत अपकीरति चहुंपास ॥ मंगलदेख्यो नयनयह तदपि नतजबिनयास १८ ज्ञाननयनदेखै मनुज चारिओर प्रभु रूप ॥ अज्ञानी मंगलसरस परेबिषयकेकूप १६ सातस्वर्गअपबर्ग को सुखन मोक्षसमआहिं ॥ मनुज ब्रह्मविद सोलहत यामहँसं-शयनाहिं २० यातनमेंअतिघोरहै पापिनको मनमूढ़ ॥ चुपका-वत किन तिनहिं तू दैमन ज्ञानअगूढ़२१ शत्रुमित्रद्वौअंगमेंमंगल करतबिलास॥ जानिहितू सतसंगकरु करहिनअहित प्रकास२२ वैरीके सतसंगमें कोपावत सुखदेखु ॥ तातेमंगल अरिन छिपि नेक दृष्टिजनिलेखु २३ पांचबतावत सातहैं सातधामकेवासि ॥ ज्ञानवंत जानतअहैं तूदुबिधा देनासि २४ कालपाशमें जगबँध्यो आवतजात अधीर॥ काहिज्ञान मंगलबदत सबसंसार सपीर२५ ज्ञानसुनै चितलायकैध्यान आपुकरकोइ॥बिनुभ्रम मंगलअंतमहँ पावत मुक्तिहि सोइ २६ त्रिबमल मरमल मिलिजम्यो माया कृत भैदेह ॥ ब्रह्मअंश करणी बिबश निवसत भो न संदेह २७

जठरानलकी ज्वालसों बिकल होत जब प्राण ॥ गर्भमूत्र मलगंधि
सों तब ध्यावत भगवान २८ जोपैतिया अदंडते आपुरक्षजग-
दीश ॥ जन्मपाय तुवभजनतजि करौंनकछु बिसवीश २६ हरि
रक्षा सबबिधिकरी सुनि निबंध सतिभाय ॥ जन्मकाल लगि
क्लेशहर जन्मतदयो भुलाय ३० उपजत अटके पेटमें दुबिधा
मोह प्रताप ॥ कीटादिक कबहूं डसत तबबहु करत बिलाप ३१
बालदशागइ खेलसँग आई तन तरुणाय ॥ काम कलामद उर
बस्योनहिं हरिभजन स्वहाय ३२ आभूषण पट चाहिये भोगहेत
भल नारि ॥ निजकर मंगल अधमनर देवत धर्महिं टारि ३३
जरा व्यवस्थामें भयो मोहबास उरआइ ॥ ज्ञाबश नारायण भ-
जन मंगलदयो नध्याइ ३४ कोटिभाँति गुरुपितुदई ज्ञानिन
कहा बुझाय ॥ तदपिन त्यागी दुष्टता गई आयु नियराय ३५
यमन चारकर पाछले आयेताकेपास ॥ देखिभयानकवेषकोमल
तजिजीव सत्रास ३६ मारिमुद्गरन बाँधिपग दक्षिणचले घसी-
टि ॥ व्याकुल कीन्हे बिबिध बिधि लोह मोंगरन पीटि ३७ लै
डारयो कुम्भी नरक भरयो पीबवत नीर ॥ कीटकाग अध ऊर्ध्व
में गहत लहतबड़िपीर ३८ शूकर कूकुर योनिमें नरकभोगअव-
तार ॥ ज्ञानिन ध्यावत आतमा होय जन्मनिरधार ३६ ब्रह्मचारजो
नरकरैं तजिदुबिधाको खेल ॥ सोप्राणी उत्तम महा करत मुक्ति
पदमेल ४० जोगृहस्थ हरिभजन में निरतरहै दिनराति ॥ दया
धर्म्म युत हरिभजै आशु मुक्तिहै जाति ४१ बानप्रस्थ कर्त्तब
कठिन साधिजो पावै कोइ ॥ नारायणकी कृपाते पावै मुक्तिहि
सोइ ४२ संन्यासी की मति सुगति जीवन मुक्तिसदाहिं ॥ को
जानैता जीवको जन्म मरणहै नाहिं ४३ चारौं आश्रम सूचित
श्रुतिसाधै कोउसाध ॥ पावैमोक्ष प्रयास बिनु शुद्धचित्त अनवाध
४४ या भवमें भयजालहै भागुमीत तू बेगि ॥ नातरु पावै दंड
अति औरु अपत्य अनेगि ४५ पाषाणी भाजन यथा टूटत मृति-
का तूल ॥ बुद्धि आसुरी में चतुर तैसे परत सभूल ४६ बालकलौं

जो भावहै ताहि गहै शुचि बुद्धि ॥ रहैलीन पै नहिंमिलै सोपावै मति शुद्धि ४७ बावर ज्यों कहि सकतनहिं स्वाद भाव बिधि कोटि ॥ त्यों योगी हरिगतिकहै बरणत सो बुधिछोटि ४८ ब्रह्म लखै कउ नैनसों देखत आपु नआय ॥ यथा लोनपयमें मिलै फिरिनाहीं दरशाय ४६ चारि करतहैं चारिजन शुचि त्यागत हैं चारि ॥ मंगल ज्ञान प्रताप सों जात जन्म निरधारि ५० सत्य प्रीति बश सर्वदा नारायण मनमीत ॥ आनभाव तजि नेहदृढ़ राखु सधर्म अभीत ५१ बिनुध्याये गोपालपद भ्रमिहै जन्म अ. नेक ॥ गर्भदंड अतिभयलहै होइन बरण बिबेक ५२ बसतनसो बैकुण्ठमें नहींक्षीरदधि बीच ॥ मंगलबाणी सत्यबद रहबिश्वास नगीच ५३ अर्ब खर्ब धनहै वृथा प्रिय अप्रिय मृतु काल ॥ मू मंगल तजिभूलभव भजिले मदन गोपाल ५४ अर्थन जाकेनाम को बरण मध्यनहिं आहि ॥ आदि कहतपुनि मध्यभ्रम अंतकौन दरशाहि ५५ अलख भणतलख कौनहै अकरन कर्त्ता सोइ ॥ अगुण बदत गुण कौनहै दुबिधा देमनखोइ ५६ अनुभवजाको नामहै संभव सब संसार ॥ नारिपुरुष क्यों जानिये परि पूरण करतार ५७ कोऊ दंभी यों बदत जगछलिबेके हेत ॥ नयनन निरखतब्रह्म हममानतसदाअचेत ५८ जोपैनिरखै अक्षसों तौन अगोचरनाम ॥ मूरुख सुनि पतियात यह बुधत्यागत मनभ्राम ५६ यती सती जानतनहीं सोदंभीक्योंजान ॥ मंगलतूभजुनेह करि हरिपददाकल्यान ६० तीनिकालबिनुध्यानहै लीननमाया होत ॥ यों जानै भवसरितरै चढ़ै ज्ञानकी पोत ६१ कृपण कहा जो धननहीं दाताको बिनुदान ॥ सत्य कहा जो मृषानहिं को पंडितबिनुज्ञान ६२ कुसमय में हितु शत्रु सम अंबुज नाशत भान ॥ जलबिन ग्रीषम काल में सर त्यागत कुलवान ६३ मित्रन कुसमय होत कोउ दधि अगस्त्य ते जानु ॥ मंगल तजि परमातमा तूकरु ताकर ध्यानु ६४ समय समय की मित्रता बिनुस्वारथ जगनाहिं ॥ तज्यो बिभीषण बंधुहित राम

हितहिं चितचाहि ६५ मातपिताकी प्रीतिअति निजबालक से सत्य ॥ मृगिनी सुततजि भगिगई बृकलखि जानिबिपत्य ६६ मलयुत अमलनहोतजग कौनौबस्तुप्रवीन ॥ तिमिअनुभव बि-षयीबिबश होतउदय कबहीन ६७ यथाअगरकीगंधिको जानन भीलकिरात ॥ तिमिमूरुखके संगते गुणसागर पछितात ६८हठ मतजे निजउरधरेपाखंडीछलकारि॥ तेनलखत सबागमत मंगल दीखबिचारि ६९ प्रीतिसत्य पारसबिमल हाटक कर्त्तालोह ॥ नामरूपमें भेदभोनृपणीघनसोंलोह ७० समरसाधना ब्रतकठि-नकरब सहज मतमोर ॥ प्रीति एकरस अंतलगि करबनिबाह कठोर ७१ मोलबिना बिकिजायजो मित्रहाथनरकोइ॥ऊंचनीच दूनोंतजै प्रीतिनिबाहक सोइ ७२ प्रेमनिबाहबप्रणकठिन भाषत कबितासर्ब्ब ॥ आदिअंत जोनरकरै यकरस धनिबिनुगर्ब्ब ७३ जोरजप्रीति बँधायनिज मित्रध्यानमें लीन ॥ सोनर मंगलधन्य है भाषत सकलप्रवीन ७४ राधापतिकेनेहमें लीनरहै दिनराति॥ मंगल प्रीतिप्रतापसों भक्त मुक्तह्वै जाति ७५याजगमें लखिपरत नहिं सुपुरुष खलसबआहि ॥ तूमंगल मिलुसबनको आपुआपु दरशाहि ७६ निजसमता जनिमानकउ सबहि जानुपदवान ॥ अहंकारको भावतजि भजिले हरिबिज्ञान ७७ बारनकीजै हरि भजन इंद्रीबशमें लाउ ॥ याजग मंगल बहुरितू कहांपाउ अस दाउ ७८ करणीसों दाताबिदित सुखदुखदायहिलोक॥ अधऊर-ध निजकर्मबश भ्रमत सशोकअशोक ७९ जिमिदीपकको पवन अरि तसज्ञानहिहै मोह ॥ इंद्रीनिग्रह ओटपट करुप्रकाश बिनु छोह ८० जलबैरी जिमिअग्निको यद्यपि तापितुसोइ ॥ तिमि बैरी बिज्ञानमल यद्यपितातेहोइ ८१ जिमि अकाशमें भासकृत दिनमणि देवसनेम ॥ तथा ज्ञान उरनभ उदय होत जीवकह क्षेम८२ बामनमानत बाममत योगसिद्ध करि दीन ॥ कोकबि मंगल भणिसंकत खलमति सदामलीन ८३ मूढ़कहत चलिदि-वसकछु हरिभजिहै चितलाय ॥ कोजानै मंगलचतुर कालबीच-

हीखाय ८४ सर्व गर्व बिद्यागरब उरबासीभा जासु ॥ धर्मकर्म खोवतसकल देतनरकमेंबासु ८५ निरतदिवस निशिविषय हित हरिहित घटीनएक॥ क्योंसुख मंगलपाइहैं गहेविषयकीटेक ८६ बालदशामें शुद्धिकरि मनहिं भजनमेंलाउ ॥ निबहे तीनोंकाल के पदनिर्बाणहिं पाउ ८७ जेभूले निजआतमा औरधर्मकोभाव॥ तेनहिं जन्मसहस्त्रलगि मुक्तहोत श्रुतिगाव ८८ अध्यातम बिद्या गुणै साधारणमत साधि ॥ जगमें कैसेहुबिधिरहै ताहि न यमकी ब्याधि ८९ मंगलबनतन कर्मशुभ तृष्णाके बशकीय ॥ समुझावै गुरु कोटिबिधि तदपिन मानैसोय ९० पीछेदिन खोयेघने आगे देहै खोय ॥ मंगलमनकी चालिलखि मनमें दीन्हीरोय ९१ कोटि भांतिशिक्षादई मनपापीको सांचु। तदपि दुष्ट बश लालसा नाचत बिषयीनाचु ९२ ज्योंनहिं भेदत कंजदल कौनोंबिधिकीला-ल ॥त्यों शिषमेरी दुष्टमन तूनगही किहुंकाल ९३ अबते मेरी कहीसुनि तजि बिषयनकोबाद॥गाउ सुकीरति श्यामकीउरधरि सुंदरपाद ९४ जासुनामके भेदते नर तरिजात अभेद ॥ मंगल मन निजध्यानधरु तजिदे सबजगखेद ९५ सतमारग सतसंग करु आतमको अपनाय ॥क्योंखोवत मनमूढ़तू आशुमुक्तह्वै-जाय ९६ मंगलमन नहिंमानिहै बिनुबांधेरजज्ञान॥ यहउपदेश प्रमाणिका सोकिनकरै सुजान ९७ दशद्वारेजो प्रकट हैं तिनहिं बंदकरिदेह ॥ मनमारग पावैनहीं तब सतकरै सनेह ९८ इड़ा पिंगला सुषमना याशरीर कुतवार ॥ सबहित्यागि करु प्रीति दृढ़ तिनसों ज्ञान बिचार ९९ मोक्ष दुवारो जीव को सुषमन उदयप्रधान ॥ मंगलके मतपायत्यहिभजिलेश्रीभगवान १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायां सर्वागसुबुद्धिकर्तायांमंगलबिनोदकायांमंगलदासबिरचितायांज्ञानोपदेशनिर्बाणपदबर्णनोनामसप्तमश्शतकः७ ॥

दो० ॥ गगन अनिलजल अनलमहि पंचतत्त्वकृतलोक ॥सो व्यापतयह श्वासमहँ जानतहोय बिशोक १ जानेतेंदृढ़ता लहत सुनेबोधनहिंज्ञान॥ भोजनबिन खायेमिटत क्षुधानकोटिसयानर

श्वासाको सबख्यालहै तीनिलोक तिहुंकाल ॥ ताहिलखै बुध दृष्टिसों लहैमोक्ष नरबाल ३ गुरुकर्ता सतसंगते मोक्षलहतबिन भेद ॥ यथाआप उष्णताबश तनते चलतप्रसेद ४ कर्मकिये ते कामनाकोनकरै बुधिमान ॥ इच्छावत फलकोलहै परिपूरण कल्यान ५ आसन अमित कहेअहैं शंकरमारगयोग ॥ पद्मसिद्धि उत्तमदुवो करत शरीरनिरोग ६ प्रणवमंत्रको जानिकर प्राणायाम सदाहि ॥ आयुबढ़ै अघगणनशै अंतबसै पदमाहि ७ आशारखै मोक्षकी बिषय बासनात्यागि ॥ सुखमनमारग हरिभजै रहैमोक्ष तटलागि ८ बावनतनु नभकर्योंछुवै अंधलखै सुखरूप ॥ दूनोंआतम ध्यानबश यह सिद्धांत अनूप ६ पंगुचढ़चो आकाशलौं अति अचरजकीबात ॥ जानिते कछुभ्रमनहीं मूरख मनपछितात १० बातनसे मुनिसमबने दंभगलित मनजान ॥ तेपाखण्डीकौनबिधि पावैंगे कल्यान ११ दीनबसन बिनशिशिरमें ज्योंनिरखत दिन नाथ ॥ त्योंआशाकरि ब्रह्मकी जगनरहोयँ सनाथ १२ तृषावन्त जन बिकलमन खोजतकूप तड़ाग ॥ त्योंमंगल खोजहि हरिहि उदयहोय तबभाग १३ समरभूमि जिमिनृपतिमन निजजयकी अभिलाष ॥ तैसेमंगल मनबसै हरिपद प्रीतिअमाप १४ वोहित बूड़तजीवज्यों भवावर्त बिनजान ॥ मंगल अबतो कठिन अति राखिहि श्रीभगवान १५ मधुमाखी मधुकृत अमित भखन कृपणतावश्य॥ कौलछीनि लियदुखभयो तसधन लोभियवश्य १६ यह सम्पति तुवसंगनहिं जन्मीसुनु मनमूढ़ ॥ अंतसंगिनी होत नहिं कतदुख करत अगूढ़ १७ परबश बन्दी भवननर यथारहत सकलेश ॥ तिमिइंद्री बशजीवयह भरमत देशबिदेश १८ ज्यों कुलाल भाजनरचै ऊंच न नीच बिचारि ॥ संगतिबश शुभअशुभ भोतथा जीवनिरधारि १६ साधुसंग साधैमनहिं नीचसंगभ्रमखाय ॥ शुभकारी कोउजन्मनहिं संगति मूलबताय २० संगपाय चेततनहीं ऐस्यउमहा अचेत ॥ अहिमलयज बासीकहा अमृत बुद्धितजिदेत २१ सरितासर बापीकहौं कूपादिक जलधारि॥काम

आपनो चतुरजन सबते लेतनिकारि २२ कहाकरैलै सम्पदा जो नहिंजीवनआप॥मरणसमयरावणकुरुपधनहितकीन्हबिलाप २३ जिमिनिषंगमें शरभरे यकयक करिघटिजात ॥ तथाश्वास निज जातहै चेतुआयु नियरात २४ कामीक्योंकर चेतिहैं चढ़े उडुप निर्बुद्धि ॥ चन्द्रइंद्र दुखअतिलह्यो कामबिवश नहिंशुद्धि २५ कहानबशमें आपने बिनपरमातमएक ॥ जन्ममरण निजबश सदा करुनिज चित्तविवेक २६ पापराशि यमराजपुर कोटि भांति पछिताय ॥ धर्मात्मा सुप्रयासबिन हरिपुरकोचलिजाय २७ क्षर अक्षरको एकसम ज्ञानीकरैबिचार ॥ नित्यअनित्य विवेकउर भव मगकरैबिचार २८ गंगाजल पावनपरम बदत बेदपौरान॥ पैनहिं मानत निकटबसि जाहिकहत अज्ञान२९ अक्षत चखनमेंअंधवत निकट बस्तु नहिंसूझ ॥ नानामतखोजतफिरैसतमारग नहिंबूझ ३० जाशोभा शोभित त्रिपुरजाआभाभवभूत ॥ मंगल मनबूझत नहींजगहिछलतजिमिभूत३१ आशापूरण होइसबबासआपनेधाम ॥परमातमा बिज्ञानमय जन्ममरण निःकाम ३२ जिमिअज बाधकलाइगृह ताहि चरावतघास॥कालन जानतमुग्धमतितिमि नरतृष्णापास ३३ पढ़ैबेद बेदांतको बिषयलीननरकोय ॥ ताहि महाबातुल कहिय दादुर वक्तासोइ३४खगनिज मुखबाणी बदत नित्य प्रातहरि नाम॥ नरमलीन भिनसारसे बिषय भजत मति बाम ३५मेरी बुधि अति बोधिनीमन चंचल चंडाल॥तासु मरण हितयतनबहु कह्योन नाश्योकाल३६मन जोमानै मत सुमतितौ मन चीता होय॥ सत्य प्रीतिबश ईशभव वदत सयाने लोय३७ सात सात को घातकरि गुणसोंदीजियबांदि ॥ शेषबस्तुकोखोजिलेमन मलीनको डांटि ३८जिमिअकारबिन व्यंजनहि बोलि सकतनहिं कोय॥तिमि हरितजि प्राणीनकी मुक्तिन कैस्यहुहोय ३९ नारि आपने पतिहिजिमि सेवतिनेहसमेति ॥ अंत भस्मता प्रीतिबश हीति परमगतिलेति ४० ऐसीसांची प्रीतिसँग प्रीतम के निरबाह ॥ करै साधु सों दृढ़व्रतीमिलि प्रीतम सुखलाह ४१

मोह लालला त्यागिमन ध्याउ प्रेमदृढ़लाय ॥ हर्ता कर्ता आपही त्योंमनरहा समाय ४२ मांगत लागत लाजनहिं औरनसों मन तोहिं ॥ यांचत सांचे मित्रसों क्यों लजात कहुमोहिं ४३ जन्म नभो प्रथमै रच्यो माता कुचपयजानु ॥ मंगल पालक सत्यहरि सर्बांबिधि अनुमानु ४४ खीझत तेली तेलको क्षुधावन्त वह पीन ॥ कोकाकी बाणी सुनै निजस्वारथ लवलीन ४५ यथा अन्ध द्वैचारि मिलिगज चीन्हन मनकीन्ह ॥ करपद पूछरु उदर कुंताहीसम कहिदीन्ह ४६ तथा पंथसंसार के नयनहीन अनु-मान ॥ द्रष्टामत सर्वांगहै सो हाथी पहिंचान ४७ ज्यों कबीर निज ग्रन्थमें बरण्यो पूरण ज्ञान ॥ नानकगोरख भरथरीसर्बांगी जगजान ४८ परख्यो पूरण तीनिबिधि अपर धारि यह ज्ञान ॥ यथा गोसाईं जी भये हरिप्रताप जगजान ४९ माणिकको जु-प्रकाश है त्यहि न डुलावत बात ॥ तथा बचन सर्बांगको डुलिन सकत बिख्यात ५० मंगल श्रुतिमत तीनिपुर हैपरमातमबास॥ चन्द्रसूर आदिक उडुपतासुतेज परकास ५१ लिप्त होतनहिं गगनजिमि मिला सबनमें देखु ॥ ऐसेतनतनब्रह्म बुधज्ञानचक्षु उरलेखु ५२ शाखा दलफल फूल अरु मूल बिदिततरुनाम ॥ तिमिजल थलनभचर अखिल कहिय ब्रह्म परिणाम ५३ कौन बिचारत ब्रह्मपद पै नहिं पावतजानि ॥ जिमि पक्षी नभ अन्त हित चढ़त स्वबल अनुमानि ५४ सिन्धुपिपीलन गाहिया कौनौ काल सुजान ॥ तिमिनब्रह्म के भेदकी जानत जीव प्रमान ५५ वाकी उपमा कौन जग जो अद्वैत अरूप ॥ उपमा बिन बूझब कठिन कहत कबिनकेभूप ५६ कबिपुंगव व्यासादि जे आगम भाखी आन ॥ सोपि ब्रह्मके भावको भेद न करयो बखान ५७ पांचतत्त्वकरि मूढ़मन यह शरीर रचिदीन ॥ तामेंआपनबिम्ब को बासकृपानिधिकीन ५८ तू उपज्यो सर्बाशमन पंचतत्त्वके जानु ॥ आनपंच अरु बीसगति सोपिकरी निरमानु ५९ अस्थि मांसत्वक रोमअरुनाड़ी प्रकृति ये पांच ॥ धरा तत्त्वके योग ते

तनु उपजी यह सांच ६० रेतपित्त अरुस्वेद पुनिरुधिरलार मर
भाव ॥ नीरतत्त्वकरि प्रकटभे जानत ज्ञानस्वभाव ६१ क्षुधातृपा
मुख क्रान्ति पुनि आलस निद्रा जोय ॥ मंगल अध्यातम बदत
सिखिते प्रकटी सोय ६२ धावनि कूदनि चलनि पुनि जानु प-
सार सकोच ॥ सतमारग ज्ञाता बदत पवन तत्त्वकोरोच ६३
शीमकण्ठ उर उदरकटिये नभजातबिचारि ॥ पंचबिंश येप्रकृति
हैं कह मंगल निरधारि ६४ ये सिगरी एकत्रकरि मनहिं बुद्धि
सँभारु ॥ मंगल जगसामर्थ्य तू वृथाजन्म यह हारु ६५ जाके
नयननमेंलगे प्रीतम नयनकेबान ॥ ताहि न भावत मीततजि
कहतज्ञान बिज्ञान ६६ मनमें ध्यावत इष्टप्रिय तनुते बिनवत
ताहि॥सत्यप्रीतिकी रीतियह कहतनीति अवगाहि ६७ सतमत
सों ध्यावै हरिहि परिहरि कपट समाज॥मंगल मतसिद्धान्तके
लहै स्वपदको राज६८बसतसदा बैकुण्ठमें नारायणपदध्यानि॥
दोषशोकते रहितसुगुतजत गुणागुणखानि६९ अपरभावनात्यागि
मनभजु श्रीरामकृपाल ॥ जीवतसुखपावै घने अन्तमिटै जंजाल
७०जानबिनहरि नाममत ब्रतअर्चा फलकौन॥मंगल अन्धनरूप
लखरहतसंग नितजौन७१बावरमतिको होसिजनि सुनुप्रबीणम
तिमोरि॥ अबकी फूटीहोहिनहिं जगअंजन करजोरि७२यथामो-
तियाबिन्दुजगनयननअछतलखात ॥ तिमिघेरे मायामनहिंकहां
ब्रह्म दरशात७३ मायाबिन परमातमहिं जानिसकतनहिं कोइ।
ज्योंबिन आतप भूषणहिं क्योंदरशै भवलोइ ७४ मायानाशत
नशतजग रहतन खानिअपार ॥ पांचतीनिबिन जीवको ब्रह्महिं
जाननहार ७५ मोहपाट बुधिचपदये जीवभ्रमत चहुंखानि ॥
यथा वृषभ कोल्हूचलत पूरबमग नहिंजानि ७६कूकुरको शतबा-
र जोदुरिआवै भपदानि ॥ तदपिन त्यागैद्वारत्यहि देखुचित्तअनु-
मानि ७७नारायणत्यहिपालियो आदिअन्तलगिजान ॥ तूनहिं
सेवत द्वारत्यहि यहिते उत्तमश्वान ७८ कूकुर नरते पूतहै जोन
भजै भगवान ॥ जन्मोमूत्र प्रतापसों ताकुगन्धि वशजान ७९

बानी ज्ञानी बेदकी प्रानी नरतनुपाय ॥ तदपि कुकर्महिं नित
चहत क्यों कहिये समुझाय ८० ज्ञान बतावत आन को आप
बिषयमेंलीन ॥ दीपक करसूझतनहीं पावत बाट प्रबीन ८१
तीनिकालतजि दुचितई मनधरिले ममध्यान ॥ आनकर्म सों
काजनहिं यह अति उत्तमज्ञान ८२ मालव में अतिअन्नहै मरु में
रेत महान ॥ एकबातमें द्वौ बड़े त्यों सुजान अज्ञान ८३ नींब
कीटतरु इक्षु कटु भाषतप्रकृति प्रताप ॥ तिमिपापी शुभकर्मको
कहत कुटिल सहदाप ८४ जल बिनसर गुण बिन चतुर साधु
बिनासंतोष ॥ ज्ञानीबिन आतम भजन जनुरीतोनृपकोष ८५
जोनबिचारत सुकृत अघलीन आतमानित्त ॥ परमातमकोकर्म
निज अर्पतनेम निमित्त ८६ मानी मानन परिहरतज्ञानीज्ञानन
त्याग ॥ दुर्योधन सुतधर्मलो नीके दुवौ विभाग ८७ नीलबरण
धोये कुटै कैस्यहुनहिं बिधिकोटि ॥ तथाप्रकृतियहजीवकी गहे
छोटि मतिमोटि८८यथाश्वेत मणि रंगबिन सोहत रंगहिपाय॥
तथा जीवकीहै दशासोहत संगप्रभाय ८९ भावित नृपभूषण
नहीं दीननरन संसार ॥ तिमिअज्ञानीके हृदय ज्ञानन शोभा
कार ९० व्यापिरहा भरिपूरहै चौदह लोकन आप ॥ मंगलमन
चेततनहीं चहुंदिशि प्रकट प्रताप ९१ डरमानत जगमरनकोजे
नहिं जीवनदानि॥ अभयईशते भजनबिन करत मूलकी हानि
९२ बादि गमावत आपनिज चिंताविषयशरीर ॥ कै आतमभजु
मोहतजि कैभजिले यदुबीर ९३ सगुण सुलभ निर्गुणसुगम सत्य
प्रीतितेजान ॥ दुबिधामें दूनौ कठिन यहमन ज्ञान प्रमान ९४
सैं आपनि दिशिबीसबिधि समुझायोंमनज्ञान ॥ तूभोच्यो फिरि
पापमग अतिमूरख अज्ञान ९५ जोतूमम कहनीकरै तजिदेआन
बिचार ॥ भजिले निजआतम सदासोहं पदहिपुकार ९६ ओं-
काररव लायकरि प्राणायामसनेम ॥ क्यों भरमै भवकी गली
छायरहै पुरप्रेम ९७ पूरक कुंभक रेचकै नितकिनसाधततात ॥
अजपाजप निजमनगुणै मुक्तिद्वारविख्यात ९८ योगी.संन्यासी

गुणी मुनि सुजान कृतएह ॥ जीवत पावत मोदभल हरिपुर त्यागतदेह ९९ अनहदध्वनि बाजाबजत गगन गुफामें हेरु ॥ मंगलजाके सुनतही मिटै जन्मकोफेरु १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्तायांसर्बांगसुबुद्धिकर्तायां मंगलबिनोदकायांमंगलदासबिरचितायांज्ञानोपदेशनिर्बाणपदबर्णोनोनामअष्टमशतकः ८ ॥

दो० जोपैमंगल बिमलमति तौ जनुज्ञानप्रकाश ॥ अनुभवबुधिथिरसों उदितप्रभु सूझैचहुंआश १ जो सेवन निर्बाणपदबनि नपरै मनमोर ॥ तौतूभजु यदुनाथ पद होइ परम गति तोर२ कश्यप अदिति सुप्रथमही तप कीन्ह्यो प्रभु जानि ॥ बरमांग्यों तपसिद्धिभे होहुपुत्र मम आनि ३ निजनिबंधके हेत अरुसुनि सुर बिनय कृपाल॥जन्म्यो मथुरामें स्वबश भजुतापदत्रैकाल४ जासुकृपाबंधनमुच्योसबपहरे गेसोय ॥ तूमंगलताकमलपदभजु सब दुबिधाखोय५यमुनाबाहपयात्रभो हूंकसुनततत्काल॥गयेपारवसुदेवलैनंदाळयउत्ताल ६ जानभेदनरनारिनिहिं प्रभुमाया बश तात ॥ मंगलबिनध्यायेहरिहियमपुर जड़पछितात७जन्मकालते अल्पदिनबीतपूतनाताशि॥ जानिभूमतमंगलकहा तायश रहाप्रकाशि८शकटासुर कागासुरहि बध्योजानिखलआप ॥ मंगलभजि श्रीकृष्णपदमेटुतीनिबिधितापद दधिमाखन भक्षणकियोकौतुक निधि परधाम॥ तासुचरण ध्यावतमिटत जराजन्मपरिणाम१० यमलार्जुनमोचनकियो नारदशापबिचारि ॥ मंगल ध्यावततासु पद जातयमपुरहिहारि ११ नंदग्राम बसिअघासुर बध्योबकादि कराल ॥ निजदासन हितबिदितभवमंगल भजुनँदलाल १२गोबरधन पूजनकियो सुरपति मान निहान ॥ कौतुकनिधि राधारमण अति उत्तमताध्यान१३ कालीमद मर्दनकरयो रमणकद्वीप पठाव ॥ मंगलकहु ताचरणभजि क्यहिन ऊंच पदपाव १४ रास कियो नारिनसहित अकथ कृपानिधि श्याम ॥ रसिकनाथके भजनते मुक्तिलहै परिणाम १५ केशीव्योमादिकबधे निजजनके दुखदानि ॥ लाभमहाहरि पदभजे मंगलभूलेहानि १६ मथुरागे

अक्रूरसँगरजक दुष्टबधकीन्ह ॥ मंगल हरिअतिसरलगतिनीचहि निजपुरदीन्ह १७ लूली कुबरी नेहकरि चंदन अर्प्यो आनि ॥ कीन्ह्योशुद्ध स्वरूपप्रभु प्रीतिसत्यपहिंचानि १८ धनुभंज्यो गज बलमथ्यो मार्‍यो प्रबलचणूर ॥ परमातम श्रीश्यामजू जासुअंश शशिशूर १९ कंसदुष्ट दुखदानिजग मर्‍योस्वकर कृपाल॥ मंगल मोहनदासहितु परिपूरणत्रैकाल २० सत्रहबार जरानिधिहि कीन्ह पराजयश्याम ॥ भारउतार्‍यो भूमिको यशपूर्‍योत्रैधाम २१ कालयवनको मारियो सोवत भूपजगाय ॥ मुक्तिदई मुचुकुंदको भजसिनत्यहिचितलाय २२ मधुरातजि द्वारावती बसिकीन्हे बहुख्याल ॥ सोबरणत पोथीबढ़ै भजुमन मदन गुपाल २३ जिमिबिधवा करि कुकृतपुनि गर्भरहे पछिताय ॥ तिमिमंगल तू बिषयरत अंततोहिं दुखदाय २४ बाम प्रकृतितजि श्यामभजु कामकला बिनुसत्य॥मुक्तिहोइ संशयनहीं नाशैजगतबिपत्य२५ राधाबरको मनुजसम जानत नरचंडाल ॥ तेपछितैहैं शमनपुर यथा नीचशिशुपाल २६ निष्ठाशुद्ध लगायकरि मनविशिष्ट करि ध्याउ ॥ मंगल हरिपद प्रीतिसों अंतमुक्ति पदपाउ २७ श्याम श्याम हरिरामकहु भाय कुभाय बिहाय ॥ कोटियज्ञ फलकोलहै मंगल कहत बुझाय २८ श्रीहरिनाम प्रतापते मिटत पापकीखानि ॥ यथाकाष्ठ तृणव्यूहकी रंचकसिखिकृतहानि २९ आनआश तजि मीतमन आतम श्यामहिंध्याउ ॥ क्योंयहिझूठे स्वांगमेंआयु अमोल गवाउ३० कोटिजन्म जपतपकियेछलप्रपंचयुतदंभ। ।सिद्धिलहै नहिंमोक्षकी बारुभीति कृतथंभ ३१ मानि प्रतीतिसप्रीतिमन बासुदेव गुणगाउ॥ प्रीतिविवश हरि सर्बदा भणतबिबुध कबिराउ ३२दुखसुख काल अकालमें नेहएक रसराखु ॥भक्ति बिबश श्रीश्यामजू तादाया भवनाखु ३३ कपटछुरीकरमेंलिये छेदत अजबिज्ञान ॥ मंगलऊपर साधुवत क्योंपावै कल्यान ३४ प्रातसमय निर्ब्याजमन ध्याउरमाकोकंत ॥ जीवत सुखसंपति अमित लहैमोक्ष पदअंत३५ अनख आलसहु खोजिअरु रीझिभजै

घनश्याम ॥ मंगल प्रापक मुक्तिको जापक संयुतबाम ३६
आनओरहुँरैनहीं तजिनिज मीत सुजान ॥ जिमिचकोर शशिकी
लखत सोपावन गुणवान ३७ रटैनिरंतर श्यामपद ध्यानसनेमुर
राखि ॥ भुक्तिमुक्ति दोनोंलहै देतउपनिपदसाखि ३८ कालसुचक्र
कुलालको घटसम जीवअपार ॥ भरमावतबिधिकोटिपुनिउपजा-
वतसंसार ३९ जानरकी सेवाकरतबेतनसोदैदेत॥नारायणपदध्या-
नसों कोय अखिणकिनलेत ४० जिमि पषाणकी यानचढ़ि पार
सरितकोजाय ॥ तिमि नरकीसेवा निफल मंगलकहत बुझाय ४१
जोन सम्हारत आपकहँ भारसोथांभकिआन ॥ मंगलकरणीनरक
की तूकुन आनहिंज्ञान ४२ प्रथम आपको सिद्धकरु तब औरन
सिखदेह ॥ जगतबड़ाई मुक्तिदा नहिं हरिपदभजि लेह ४३ काल
कूट करणीअमृत क्यों करिहै अज्ञान ॥ तिमिपापी किमि सुकृत
को निजउर लावैध्यान ४४ तेलसनेही तिलनको तेलीपेरि नि-
कार ॥ देखुमित्रता कठिनप्रण जीवत संगनहार ४५ लाली नेही
मिहदिदल काहुइपरी नदेखि ॥ बांटिनिकारी कोटिविधि तदपि
परी नहिंपेखि ४६ मित्रमृतकके संगही नरतनुलीन्ह्यो लेखि ॥
मित्रद्रोह उरधारि त्यहि तनुमें गई प्रबेसि ४७ प्रीति यथा शशि
सिंधुकी पूरणलखि उमड़ात॥ मंगल ऐसीप्रीतिदृढ़ करुक्यों मन
पछितात ४८ जानि श्यामपदनहिंभजत वृथा दादुरीबाद ॥ मं-
गलयमपुर त्रिबिध बिधि जीवहिहोय बिषाद४९कहा सुदामाने
कियोपायो हाटकधाम ॥ प्रीतिप्रतापहिविदितभव हरिभजु मन
वसुयाम ५० अर्जुनको स्वारथकियो कास्वारथ यदुनाथ ॥ प्रीति
वश्य त्रैकालप्रभु यहै ज्ञानकी गाथ ५१ द्रुपदीको कर्तबकरयोबा-
ढ़्योबसन अनंत ॥मंगल महिमा प्रीतिकी जानतकोबिदसंत ५२
कोपौरुष किय भारही गिरयोघंट हहराय ॥बचे तनयदल अमि-
ततें सत्यप्रीतिके भाय ५३ दंभीपापी अपकृती अज्ञानी चंडाल॥
नामलेत बिन भावदृढ़ नहिंरीझत गोपाल ५४ को पांडवके बल
रहै लक्षनिकेत कुठाम ॥ प्रीतिबिबश उबरेसकल सिखि भपिगे

घनश्याम ५५ बिकल रुक्मिणी ब्याहदिन लैआये जगजान ॥ प्रीतिसत्य अनुमानिहरि खलदल बधि मनमान ५६ बाणासुर को मानमथि लीन्ह्यो अनिरुध ब्याहि ॥ मानहरत संसारको तू मन मानहिंचाहि ५७ दुर्योधन आज्ञातजी दीन्ह्यो बंधनधाय ॥ मूरुख हरिआयसु तजत पूजत प्रेतनजाय ५८ श्याम श्याम पुनि श्यामकहु राम राम कहुराम ॥ भटकत क्यों भवमें फिरत बिन मांगे लहुदाम ५९ पेटखलाये जगफिरत मतिहीनो नहिंबूझ ॥ राधाबल्लभ भजनसों मिटैबिपति श्वहिंसूझ ६० काल कर्मको नाशकर दाता जनआनंद ॥ कोदूसर मतधर्मके त्यागिनखत यदु चंद ६१ कोटिआपदा नामसुनि मंगल जातपराय ॥ यथाकेहरी नामसुनि बनचरब्यूहलुकाय ६२ सहसभांतिके बिघ्नअघ हरियश सुनि नशिजात॥ जिमिदिनमणिके उदयते नभद्युतिमान छिपात ६३ श्यामशब्द सुनिकँपिउठै मृत्युकालयमदूत ॥ पुंडरीकसुनि करिबिपुल जिमिशंकत बिपुपूत ६४ श्रीराधाबर नामको जपत जो हितचितलाय ॥ शिव आदिक सुर जयबदत तानरकी मुद पाय ६५ अमर सराहत मनुजबपु श्यामभक्ति दृढ़ज्ञान ॥ मंगल तू नरतन लहो भजुहरि धरिशुभध्यान ६६ उड़तश्याम कहतहिअमित दोषकुकर्म सशंक॥ शब्दभुशुंडी सुनियथा भाजतकाकअशंक ६७ गेहतजत पाखंडभ्रम श्यामशब्द सुनिताल॥ चंडपवन तृण उड़तजिमि निजथल पुनि न लखात ६८ बारबार शिक्षा करत ज्ञानीध्यानी साधु ॥ अपरमूलतजि सर्बथा श्रीहरिपदआराधु ६९ बढ़त सकल आनंदसुख भजतश्याम भवमाहिं ॥ जिमि राका शशि सिंधुलखि कृतप्रबाह भ्रमनाहिं ७० संपति तरुजल भक्तिजग नारायणकी मीत ॥शाखाबाढ़त नित्तनित भजुहरिसदा अभीत ७१ सकल सिद्धिता ढिगबसै जोध्यावै नँदलाल ॥ जिमि सबु पावसकालको मिलत सिंधुकीलाल ७२ आदरबड़पदमानता ताचेरीह्वै जात ॥ कूकुर ज्यों निज स्वामि सँग जोध्यावै यदु जात ७३ सबके उरमें प्रीति तेहि बसत जो ध्यावत श्याम ॥

पूषण जैसे शरद ऋतु सब चाहत निजधाम ७४ बालक की
बाणी यथा मीठी कटुवति लागि ॥ श्यामभक्तकी बारता सुनत
बिबुध अनुरागि ७५ जापै मानैतो कहौ जो भंजक तुवमान ॥ जा-
निदुष्ट पुनि मीत मम जाहन तेहि अस्थान ७६ मेरी भाई होत
नहिं नत त्यागतमनमोह ॥ श्यामश्याम श्यामा कहत त्यागि अ-
खिल छलछोह ७७ को तजि श्यामा श्यामपद पूजै भूतनजाय ॥
नरकबासको भ्रमहृदय अंतकपुर पछिताय ७८ मेरेमत श्रीश्याम
पद पारसके पितुआहिं ॥ अंत आपु समहीकरत बदतबेद भ्रम
नाहिं ७६ हांक सुनत हनुमानकी कम्पत ज्यों खलजाल ॥ राधा
मोहन नामसुनि तिमिकँप पापकराल ८० बामाबाम बिचारिये
धामाधाम सराहि ॥ नामानाम प्रबीणकी यहशोचिय जियमां-
हि ८१ पाठक मूरुख मौनको कष्टानंदप्रमान ॥ काठबृक्षको भेद
है जानत पर सुजान ८२ ज्ञाताज्ञाता जानिये दातादातासोइ ॥
आमिकमत क्यों बूझिये परिपूरणहरि होइ ८३ प्रभुआज्ञा शिर
मानिकै अर्जुनमंड्यो युद्ध ॥ जयपाई आनँदभयो सुन्यो सुमारग
शुद्ध ८४ आनओरते भूलतजि शत्रुसंगदे त्यागि ॥ मित्र आतमा
आपनी ताहीसों रहुलागि ८५ बिष्णुलोकमें ध्वंतभो जन्मत श्री
यदुराय ॥ परिपूरण अवतारशुचि बद्योब्यासमुनिराय ८६ सगु-
णरूप सुंदरबपुष सुखदायक तिहुंकाल ॥ श्याम कृपानिधि दास
हित नाशक जगजंजाल ८७ मारुमारु लावतभगत दलबिबेक
बिनुत्रान ॥ धर्मश्यामको नामकरु कामप्रबलता भान ८८ गज
बाहन रथ द्रव्यगृह संपतिलखि मनभूल ॥ ध्यावतनहिं यदुनाथ
पद अंतशमनकर शूल ८९ मातपिता त्रियबंधुसुत सखासुसेवक
कोटि ॥ अन्तसंगनहिं देहहू समुझतनहिं बुधिछोटि ९० नीचन
त्यागत नीचता कोटिभांति सिखदीन्ह ॥ यथानकटुता नीमतजि
चंदनको संगकीन्ह ९१ जाकीप्रकृति प्रदोषमय सो नचहत हरि
ज्ञान ॥ जिमि उलूक भागतबिकल उदयहोतही भान ९२ मन
प्रबोध आवतनहीं बिनुजाने गुणश्याम ॥ मंगल सांची मनकही

ध्याउश्याम पुनि राम ९३ कौड़ीके ज्ञानीनहीं निंदत बलिकर-
णाहि ॥ मंगलतू सुनि सीखमम भजुहरि निज चित चाहि ९४
जयजय ध्वनि चहुंओरहै सतमारगकी मीत ॥ ताहित्यागि क्यों
दुष्टमन तूभरमत बिपरीत ९५ पारावारन चारिदिशि आतम
अकल प्रकाश ॥ प्रफुल्लित मनभा ताहिलखि पायो शुद्धबिला-
श ९६ दिवसनिशा कछुहैनहीं महि अकाश के बीच ॥ आदिअंत
यकराशिमय को भ्रमरहा नगीच ९७ अबतो पूरण मतिभई
पूरणपदको जानि ॥ क्योंभूलै मंगलचतुर करणी तरणीमानि ९८
कोटिजन्मको फलमिल्यो राधाबल्लभनेह ॥ अबनचाहकोउ मन
रही मुक्तिलहौं तजिदेह ९९ मुक्तिपदारथ करलगै युक्तिध्यान
निर्व्याज ॥ मंगलकी शिक्षासुधा सुनिभजु मनब्रजराज १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायांसर्वांगसुबुद्धिकर्त्तायां मंगलबिनोदकायांमंग
लदासबिरचितायांसगुणपद्धनिर्वाणबर्णनोनामनवमशतकः ॥ ९ ॥

दो० ॥ सर्बसिद्धिमय सिद्धियह मंगलदीख बिचारि ॥ भग-
वद्भजन बिहूनमन अमितजन्मकी हारि १ सबधर्मनको धर्मयह
अखिल तत्त्वको सार ॥ आराधन भगवद्भजन दया सहितब्यो-
हार २ मदिरापान अजानज्यों त्यों कुलीन धनवान ॥ महामूढ़
चेततनहीं करतन भगवतध्यान ३ ओंकारक्षररूपहै बिरचेत्रिपु-
र स्वअंग ॥ कोकुलीन कुलहीन कहि यकरस बदत अभंग ४ जो
बिभूति चौदहभुवन सबते परक्षररूप ॥ जापक नीचसो ब्रह्मघर
ब्राह्मण भयोस्वरूप ५ प्रणवमंत्रको पाठकृत नासामग सबिबेक॥
पूरण प्राणायामकृत जनु कृतयज्ञ अनेक ६ ध्यावत जाके मन
तजत चंचलता सबभांति ॥ सोपद प्रणवभयेजगतबेदमातदिख-
राति ७ अजपाको कारणकठिन गेहिनको दुखनित्त ॥ पाठकजाप-
क प्रणवकेपावतसदा सुकित्त ८ जासुअर्थते जानिहैं परमतत्त्वको
भेद ॥ आपबूझिहैं आपमें बदतवेद बिदवेद ९ चारिओरहैं सिद्धि
मन जबलगि रामदयाल ॥ बिघ्नबिष्टि दिगशूलखग दहिनहोत

तत्काल १० मूलवहै शाखासकल बीजईशसंसार ॥ उपजावक नाशकवहै एक आपुकरतार ११ तूही मंगल भीरुभट समरकाल बिकराल ॥ ज्ञानमान अज्ञान तू दूसर नहिं त्रैकाल १२ दया आपुहिंसा तुहीनिराचार आचार ॥ ज्ञान श्रवण सुनि बाक्यमम लखु आपन व्यवहार १३ धर्माधर्म तुही चतुर मूरुख पण्डित मूढ़ ॥ ब्राह्मण क्षत्री बैश्य तू शूद्रतरुण सुतबूढ़ १४ गजबाहन को भेदहै जन्मशरीरप्रसाद ॥ तूही पूरण एकहै नहिं द्वितीयम-र्य्याद १५ जीवईशतूहीअहै मायाछाया तूल ॥ अपनावतभागी फिरत ज्यों सरिताके कूल १६ मायाब्रह्म अदृश्यहौ एकन आन प्रकार ॥ जलबीची छाया बिटप भूषणस्वर्ण बिचार १७ माया शक्ति सुहावनी कीन्हे जीवबनाय ॥ बहुरिआपनेपंथकरि ब्रह्महिं दियो लखाय १८ माया के नाशेचतुर कथा कथीनहिंजाय ॥ छायाजस मध्याह्नकी इतउतनहिं दरशाय १९ जब मायाको अन्तहै तब दुबिधाकोजान ॥ छाया नाशत वृक्षकी कोधौं चतुर प्रमान २० ब्रह्मज्ञान गुड़जानिये सेवक गुंगसमान ॥ कहिनस-कततास्वादको त्योंबर्णन निर्बान २१ ज्योंरहटामें शब्दहै पैनाहीं लखिजात ॥ जीवभाव भासत हृदय कहत बनतनहिं बात २२ कारण सूक्ष्मस्थूल त्रै बपुधारीप्रभुसोइ ॥ जानत अध्यातमचतुर त्रैपदलेत बिलोइ २३ तीनिबपुष ज्योंईशके सोहतहै बिज्ञान ॥ तिमित्रैतन याजीवके सततमभेद सुजान २४ ईशसतोगुणपूरहै जीवतमोगुणलीन ॥ उत्पतिकाया कर्ममें समतायहै प्रबीन २५ ब्रह्मजीवएकै दुवौनयन दृष्टिनहिं दोय॥दृष्टिहोतहै नेत्रते ताबिन लखतन कोय२६सूरदेवभाषितजगतअन्धनिरन्ध प्रमान॥व्याप-कअव्यय अजप्रभूईशजीव द्वै थान २७ जीवअहैपरमातमा जा-नत वेद बिचार ॥ बुन्द सिन्धुमें भ्रम कहा जलएकै निरधार २८ खोजत भूली बस्तुको दीपक तमहिं प्रकाशि ॥ जोपै दृष्टिहिहोइ नहिं को रथ दीपकराशि २९ माया बश भरमत फिरत ऊरध अधबिनज्ञान ॥ जोपैचीन्है आपपद फिरिन भ्रमै बुधिवान ३०

प्रीति एकरस श्वासमधि शखैज्ञानीकोयं ॥ तत्त्वदरश पावैसही ब्रह्मलीन पुनिहोइ ३१ भेदन जानो आपनो मूरुखकर्त्तबलाख ॥ जाना चाहत ईश्वरहि अन्धदृष्टि अभिलाख ३२ पूजतआपन देवता सुधि आई जगकाज ॥ बिकल शीघ्रपूजनकरत कबरीझैं सुरराज ३३ जब लगि पूजनकरिचुकैं तबलगि पाननीर ॥ तृषा लालसा उरलगी पूजन बृथा अधीर ३४ तुलसी तरुमाला गले बांधे शालग्राम ॥ कपटहृदय परतिय रमत भक्त कहावत नाम ३५ नीचपायकलिआपुको कहतकुलीनसनेम ॥ मंगलतू चुप साधु किन करिघर हरिपदनेम ३६ जिनहिं नहीं अधिकार है यज्ञसूत्रधर कन्ध ॥ मंगल अब मर्य्यादको अन्यायीकुप्रबंध ३७ चंदन तिलकदिये फिरत कोलभीलंकलवार ॥ तेलीधोबी मीनहा पछितैहैं यमद्वार ३८ गेहधर्ममहँकीजियेत्यागिधर्मछल त्यागि ॥ कुलकरणी छोड़त चतुर चलत भलाई भागि ३९ बूझि जाइजो आतमा तौ ब्रह्मण ह्वै जाय ॥ पुनिनहिं पूछैज्ञातिको संत समाज सुहाय ४० ब्रह्म ज्ञानको प्राप्तभे नीचन ऊंच लखाय ॥ समताको उरबास शुचि मन भावितभष खाइ ४१ दंभकपटयुत गेह रत तबलगिकर कुलकानि ॥ जब बिबेक समता मिलै तब न बर्ण कुलवानि४२ब्यास वेदयहि हेतही कीन्हे बरणबिभाग संतवरण दूसर रहा परमहंस अनुराग ४३ बिद्या चौदहजानि के रतभो बिषय बिलास ॥ ताते मूरुखही भलो जोन धर्ममग पास ४४ जानि जौहरी परिहरै हीरा काननबीच ॥ ताहिकहिय तृणको बणिक परखनतासु नगीच ४५ जेसपूत सांचे जगतगहे बेद मर्याद ॥ ते आदर कृतगुणिनके मूरुखसंग बिषाद ४६ काग श्वानको पालियो सुंदरभोज्य भषाय ॥ तदपिलालसा मांसकी तिमि नरनीच सदाय ४७ शिक्षाकीन्ही ज्ञानकी दिक्षाप्रणवसुध्यान ॥ तदपि नीच निजबरणसम भोन ऊंचपदमान ४८ अहंकारधारेकरत मंगलनरकुलहीन ॥ प्रावृटके नारेयथा बाटनदेतप्रवीन४९ ज्ञानवान लहिब्रह्ममत आपुहिदेत दुराय ॥ चलतचालि

पूरुबसरस ज्यों समुद्रके भाय ५० आनन आपन मगवदत शिष्य समाज अपार ॥ तेचाहत निज मान्यता सोनहिं हरिदरबार ५१ ब्रह्मधामको ऊंधलख भजनाभजन प्रधान ॥ करणीहीं कुलवान है करणीवत प्रस्थान ५२ यापुरमें ब्राह्मणबने क्षत्री पायेराज ॥ भजेउ न पूरण ब्रह्मपद वापुर नीचसमाज ५३ पढ़िबिद्या पंडित भये लिखिपोथी बहुजोरि ॥ रामभजनबिनु नीचमन कहां मुक्ति हैतोरि ५४ अबते मेरी मानिशिष लखुतू नैनपसारि ॥ पूरण ज्योतिप्रकाशहै अध ऊरध दिशिचारि ५५ जानिन मानत नीचमन बिषयबासना ध्यान ॥ आतमको नित ध्याउजपि सोहंहंसःप्रान ५६ ज्योंअहिजानत चरण निज लखतन कोऊ नैन ॥ त्योंजानत यहआतमा आतमभाव सचैन ५७ बिपुलबिहंग बनमेंबसत डरत श्येनको देखि ॥ तिमिलखि ब्रह्मज्ञान को इंद्रीव्यूह बिशेखि ५८ ब्रह्मवेत्ता चतुरसो जोरत ब्रह्मज्ञान ॥ कोजानत ताबिन हरिहि जिमि रबिबिन नबिहान ५९ काल व्यालके मुख पर्यो जीव भेकके तूल ॥ बिषयभोग माखीचहत यह याकी बड़िभूल ६० वृश्चिकसुत ज्यों मातनिज भक्षिउदर बहिराति ॥ तथा जीववधि बासना ब्रह्मलीन ह्वै जाति ६१ करीयथा लखि सिंह को तजत जीवकी आश ॥ तिमि देखतही ज्ञानके मोहह्रदय महंत्राश ६२ तीनि भांतिकी कामना सबदेहिनके गात ॥ दुबिधत्यागि यक पंथलगु यहै ज्ञानकी बात ६३ गायत्री ज्यों छंदमें सुरमधि यथा महेश ॥ सर्बज्ञानमें आतमा शोधबतथा बिशेश ६४ ज्यों भारत पौराणमें गंग नदिनके माहिं ॥ ब्रह्मज्ञान सबपंथ में त्योंशिरताज सदाहिं ६५ पातपात सींचत फिरत मूलन डारतनीर ॥ डार पात यकबारही प्रफुलित होहि शरीर ६६ सुकृत पाप दोनोंतजै सो ज्ञानी परमान ॥ बिननाशे सुरपुर नरक लहैन पदनिर्बान ६७ अपनीप्रीति प्रतीतिकरु साथमित्रके सांचु ॥ ध्याउ शुद्धमति आतमहिं आनरंग जनिरांचु ६८ ऐसीप्रीति सराहिये ज्यों पय पानीकेरि ॥ मिलत एकही होतद्वौ दुबरण परतन हेरि ६९ शब्द

होत आकाशमें ब्रह्मवाक्य शुभकारि॥ ज्ञानश्रवण मंगलसुनत जातदोष सबहारि ७० जेतेबाजा जगतके बजतएक सुरसंग॥ सुनत बनत बरणत नहीं अद्भुत सुभग प्रसंग ७१ हदहोत सब वस्तुकी अनहद सोन नशात॥ मंगल यहजानेबिना यमपुर नर पछितात ७२ मारगके सरिता सरन नृपकृतसेत सुकाम॥ तिमि ज्ञानीशिक्षाबदत अघरहेत निजठाम ७३ उदय अस्त नहिँ ज्योतिको आदिमध्य अवसान॥ देखत ज्ञानी नैनबुधि दशदिशि एक समान ७४ मंगल अबकी कपट तजि करुहरि ध्यान सचेत॥ मुक्तिलहै नत जन्मबहु उपजिहिकायाखेत ७५ क्षेत्रदेह यह जानिये आतमलो क्षेत्रज्ञ॥ द्वितिय नबूझत सूढ़मति कोअबूझको प्रज्ञ ७६ हरिमाया में जीवको नाधिकार कछु आहि॥ जिमिन भूपके काम में कछु अधिकार प्रजाहि ७७ बल बिन उद्यम होतनहिँ पूछत कोउनबात॥ वृद्धापनकी यह दशा मंगलमन पछितात ७८ सत्यसिंधु अव्यक्त अज अव्यय अकलअमान॥ ज्योतिनिरीह निरंजनहिंकसन करत मनध्यान ७९ समुद बढ़त राकातिथिहिसोन बढ़त क्यहुंकाल॥ घटतन कौनौभांतिप्रभु दाससुखदगोपाल ८० अबकी निबहै एकरस ममप्रणकीजिय सोइ॥ बारंबार न भव भवँर ममभरमब प्रभु होइ ८१ परमहंस मंडल जुरेबहुज्ञानी चहुंखानि॥ पैमंगलपूंछतभयो पूरणपद अनुमानि ८२ समुझायोनव भजनबदि नवम गह्यो मनमोर॥ अबतो आशा सबतजी हैभरोस प्रभुतोर ८३ जिमिचढ़ियानपपीलको सूझतआननथान॥ तिमितुवशरणागत पस्यो मंगल जय भगवान ८४ सोहत कुलटा कर्म नहिँ पतिव्रताको जैस॥ जगमंगलको श्यामतजि सबकोउ दीसततैस८५ जय मायापति श्यामकी जयजय पालन हार॥ दुखहरियेजन जानि प्रभु जयजयजग कर्त्तार ८६ जय सतबादी पापहा जय सुखदायक दास॥ जयअनीह अजकाल बिनु देखहिं निजथल बास ८७ जयनिरगुण जयसगुणकी जयअजहर हरिरूप॥ जय

बिश्वंभर बिश्व बपु जय जनपाल अनूप ८८ जय अरूप जयरूपधर जय अनेक जयएक ॥ जय नरतिय जयपशु बिहँग जयजय प्रभु सबिबेक ८९ जय अनाथपतिनाथप्रभु जयप्रवीण त्रैकाल ॥ जय गायत्रीमंत्रशुचि जयबैश्यक जयबाल९० जय अहिमहि जयपवनशिखिनभ जयजय अहँकार ॥ मंगलके दुखशोकसब हरौस्वकरकरतार ९१ जय अदेव जय देवव्रत जयसबांग बिराज॥ थावर चरप्रभु एकतू जयजयजय ब्रजराज ९२ गुरुप्रताप निर्बाणपद बरण्यो मंगलमूढ़ ॥ यथाबुद्धि बिनुबकत कोउ तिमि यह बक्र अगूढ़ ९३ धीरजधरि मनमेंसदा जोध्यावैसबांग ॥ ताकेकुशलहि क्षेमनित होइन प्रणको भंग ९४ साधारण कबिता करीमतबिवरन निर्बान ॥ कबिपंडित हरिजन क्षम्यो खोरिजानि अज्ञान ९५ दासनकोहौं दासहौं अतिपापी छलकारि ॥ मंगल मनको मूढ़ अति कहौं सत्य निरधारि ९६ संतजानि निजसेवकरदीजै आशिर्बाद ॥ जीवत पावौं सौख्यरस अंतमुक्ति मरयाद ९७ मांगत मंगल जोरिकर नारायण सों दान ॥ भक्तिमुक्ति आनन्द पद परिपूरण बिज्ञान ९८ दासजानि राधारमण हरौ बिपतिको जाल ॥ मंगल को निज भक्तिदे कृपासिंधु गोपाल ९९ उनइस सौ तेइस गये संबत पौष सुमास ॥ कृष्ण चतुर्दशि शनौकिय पूरण पुस्तक आस १०० ॥

इतिश्रीमत्सकलअज्ञानहर्त्तायांसबांगसुबुद्धिकर्त्तायांमंगलबिनोदकायां मंगलदासबिरचितायांसगुणपञ्चनिर्बाणशिक्षामार्गबर्णनोनाम दशमश्शतकः ॥ १० ॥

दोहा ॥

पाठक श्रोता ग्रंथ के गुण बिज्ञान सुजान ॥
दोनोंदिशि आनँद लहैं मिटै भूल परिमान १
रामराम पुनि रामकहि रामराम कहि राम ॥
मंगल तीनोंकालयह राखु ध्यान सुख धाम २

इति

श्रीगणेशायनमः ॥

सर्वसिद्धांतसप्तशतिका ॥

॥ षटपद ॥ एक दसन बरबसन बिघ्न नाशन लम्बोदर । मदन कदन सुतबदन नाग सेनापति सोदर ॥ चन्द्रभाल गुणपाल यूथनायक शुभकारी । सिद्धिधाम शुभग्राम महामंगल अधिकारी ॥भणि द्वै मातुर हेरम्ब पुनिबन्दि बिनायक कँजचरण । मंगल समोद तनमन बचन ज्ञान कथा चाहत करण १ आसन कुबलय लसत भारती सुमति प्रचारिनि । हंसबाहिनी सुभग शारदा कुमति निवारिनि ॥ बाग्देवतासोय बिधाताबाम बिलासिनि । सरस्वती शुचिशक्ति बाणि कबि बाणि प्रकासिनि ॥पुनि बन्दिबाक शुचिबाक बुधध्याय गिराअघहरचरण । मंगल समोद तनमनबचन ज्ञानकथा चाहत करण २ ॥ कबित्त ॥ गातको बिलोकि महि जात नाक बासकीन्ह बाल रबिलीलिकैमिटायो अभिमानहै । सिन्दुर लुकान नारि भाल तियत्याग जानिबिद्रुम समुद्र मांझ अधिक लजानहै ॥ आकर कुपान लालजाकरप्रकाश देखिहूजिय दयाल तु प्रसिद्ध खलभानहै । मंगल भरोसे कपिराज हीके हरियश गावत सहायकर एक हनुमानहै ३ ॥ सवैया ॥ आदि अनादिकहै श्रुति सज्जन पूरणरूप अरूप अग्रामा । धाम अधाम बिराजत आपु स्वतंत्र अकथ्य अनीह अनामा ॥ चौदह लोक प्रकाशित जो बहुभांति गुणी अगुणी अभिरामा । मंगल दीनदयाल वहै करजोरि करै पदकंजप्रणामा ४ दीन दयानिधितू परमातम वेद पुराण बदैसतिसाखी । पालत दास दशौ दिशिमें अति क्लेशनते शरणागतराखी ॥ व्यापत ताहि न मोह उपाधि जो तू पदपंकजको अभिलाखी । मंगलहूपर होहु कृपालुमनोरथ पायरहै मुदचाखी ५ लोग भनै प्रणठानि कृपानिधि है निजदास

मनोरथदानी। वेद पुराण कबीश महामुनितेऊ बदैं यहउत्तम बानी॥ सोयबिचारि प्रतीतिभई उर मोरि सुनौ टुकशारँगपानी। मंगलकी मनकामना पूरिय हौ सब लायक मोमनमानी ६ देहु मनोरथ बेगि कृपानिधि सत्यमनोरथ दानि कहावौ। काहु के काजकी बार न लावत क्यों ममहेतु अबार लगावौ॥ हौंदिन राति रटौं तुव नामहिं जानतहौ पुनिकाहे भुलावौ। मंगलदीन पुकारत आरत आशु मनोरथ मोर करावौ ७ जानतहौं नहिं सगुण निर्गुणनाम प्रताप लखौं दिशिचारी। ता हित नाम बखान करौं नितजापकरौं शुचिनाम बिहारी॥ ध्यानकरौं भलनामहिं को अरु ज्ञान गुनौं तुवनाम बिचारी। मंगलनाम गहोतुव मोहन देहु मनोरथ श्याम मुरारी ८ जौन मनोरथ लाग जबै जबतौन तबैतुवनामते पायो। कौनहु काल निराश रहौं नहिं सत्यकहौं नहिं जात छपायो॥ कीट मनोरथ दारुशरीर लग्यो पुनिआइ घनोभ्रमछायो। मंगल सो पुरवै करुणाकर त्यागिसबै शरणागत आयो९ को असभूति बिभूति तिहूं पुर जो न मिलै तुम्हरोयश गाये। तीनिहुंलोक बनावत पालत नाशतहौ अपनो मतपाये॥ देहधरे न अदेहकहावतहौ सबठाम न ज्ञानगुनाये। मंगलकेर मनोरथ दीजियेहौतौ बड़ेसबभांतिकहाये१० सातहु नाक पतालहु सातमें छाइ रही हरिनाम बड़ाई। गावत कोउ सुनावत मोद सों पावत पूरण बस्तु दृढ़ाई॥ ताबिन भूललगै सिगरी मनहीं मनकीजिये प्रेम लगाई। मंगल मुक्ति कहावत कौनहै नाम कि चेरिरहीसतिभाई ११ याजगमें सबनामप्रकाशहै नामबिनाकछु जात न जानो। खोजिये जो कछु नामहिं केवल नाम बिना कछुमूढ़नस्यानो॥ नामबिहायभ्रमायदशोदिशि धामनपावत ज्ञानहिरानो। मंगलनामबड़ोतिहुँलोकननामलखावत आपबिरानो १२ ब्रह्मअकारणनामबतावत ज्योतिनिरीह जोरामहिं माया। ईशअनीश कहावत नामहिं आतमभूत मुरारि अमाया॥ शंकर शेषसुरेश गणेशहु है सबके तननामसमाया। मंगल

कारण सूक्षम थूलहु नामते तीनिप्रकार कहायो १३ सांचुबखा-
नत निन्दकभाजत झूंठबखान कियोनहिं जाई । तत्त्वमसीश्रु-
तिसामबतावतको तत्त्वं असितीनिस्वभाई ॥ सन्तमहन्त कबी-
श्वहु कोविद त्वंपद औतत ईश लखाई । मंगलब्रह्मबदैं असितौ
पुनिद्वैतरहा न अद्वैत गनाई १४ सांख्यबिचार कह्यो मुनिआदि
पचीसप्रकार बिधानहिंगायो ।कर्मप्रधानप्रमाणबद्यो भवजीवअ-
पार अनादि जनायो ॥ईश्वरमय जगभासिरहा बिनुईश चराचर
नाहिंलखायो । मंगलयोगसमाधि बिहाय कहांलखि कारणतार-
णपायो १५ आदिनहीं भवकी अरु अंत न नाहिं बनावनहारबता-
इय । पूरुष औ प्रकृतीहिसँयोगते होतसमस्त निरस्थिरगाइय॥
भूतलनाक पतालनिवासहि देतनहीं यककर्मप्रभाइय । मंगल
कर्मअकारण होत न कारणतेकिमि मुक्तिदृढ़ाइय १६ पूजतदेवन
कारणपाइकै ध्यावत देवन कारणलागी । तीरथ औब्रत कारण
हीन न पन्थ अपन्थ जुतापतआगी॥ देहरँगै नरकारणलागि चढ़ा-
वतनीर सुकारणपागी । मंगलसंश्रितकारण देखत मोक्षन कारण
को अनुरागी १७कोउबनो सुखियाइत डोलत कोउमहाबिपदा
अधिकारी । भूपतिकोउ प्रधान चमूपति रंकअनाथबनोपदचारी॥
पण्डित कोउ बिमूढ़कुलीनमलीन कहाव प्रबीनअनारी । मंगल
मोहग्रस्यो निज आतम जानतनाहिं महा अबिचारी १८ आतप
को तपब्यापत काहुको शीत सतावतहै दुखभारी । भीजतपा-
वसमें बिनुकारण प्रारब्धसुनावत लोग पुकारी ॥ आनँदसों नित
काल बितावत एककहावत दीनभिखारी । मंगल मोहग्रस्यो
निजआतम जानत नाहिं महाअबिचारी १९ बांझनके यकसूनु
बनावत एकमुये तन देतजिवाई । एक करामत आप दिखावत
भूत पुजावत देवब्रिहाई ॥ एक प्रबोध करावत ब्रह्मको आपनहीं
मतिकीदुचिताई । मंगल संत समर्थसदा जोकरैंसो सहीमनक्यों
भ्रमखाई २० बस्तु अनादि सबैजन खोजत चिन्तन सूझत आपुअ-
नादी । शुद्धस्वरूप अनूप अकाय सो तो यक तूनहिंदूसरबादी ॥

भूलमिटाय गहैगरपायसों देय लखाय नहोहि बिषादी । मंगल द्वैतबिहायन दूसर भाषतहैं मुनिहूसनकादी २१ तीरथके बशमूरतिकेबशहैं ब्रतकेबशमें अतिभूखे । पूजनकेबश पाठनकेबश जापनकेबश बोलतरूखे ॥ ज्ञानहिंकेबश ध्यानहिंकेबश स्यानहिंके बश बेदहिदूखे । मंगल सम्पतिकेबशमें नित आतमकेधनतेअति खूखे २२ ऊरधबाहु करैतपएक खड़ेपदएकरहै दिनराती । एक अधोमुख झूलन झूलत क्षीरपियै तजिअन्नअभाती॥ कंकरसेजरहै नितएक जुकाटतआयु बिछावत पाती । मंगलआतमज्ञान बिना अपनेमनते यह स्वांगदिखाती २३ चामकुरंग बिछायरहै यकझारि मही पगदेत सदाहै । प्रातउठै निजदेवलजाय चढ़ावतचावल ज्ञानकदाहै ॥ मौनरहै यकसैनबुझावत औघड़बास सुराहि यदा है । मंगलजानतआतमा जो नहिंतोषहु सांचहुस्वांगबदाहै २४ जागतमेंजस चेतन चेतन सोवतमें तसजागिरहाहै । इन्द्रिनके व्यवहार अनेकनसो नलखै शुचिरूप महाहै ॥ आपहिजानत आपबखानत दूसरकौन विवेकलहाहै । मंगल जानेबिना भ्रम लागत जानतज्ञानअज्ञान कहाहै २५ जीवहिछूतिनपाकहुलागत पूरणब्रह्म प्रभापसरीहै । नीचकुलीन नहीं यह जीव कहावतमें अहि ज्यों रसरीहै ॥ भूल बड़ी तनमान अमान कि छोड़त सो नन पोढ़सरी है । मंगल संतसमाजबिना कउकाटिसकै न गले फसरीहै २६ शक्ति पिपीलके अंगबहै गजते तनमें भरिपूरिरही है । देव अदेवनमें पुनिसोय मनुष्य पतंगकी शक्तिवहीहै ॥नाग बनस्पतिमें फिरि देखियपै दुबिधायक चित्त सहीहै । मंगलडाबरताल नदीयक नीर न रूपहै भेदयही है २७ या तनमें इक नित्य निरंजन सत्यअहै मुनिसंत बखानैं । बोलत डोलत सोवत रोवत जेंवतहू निजध्यान प्रमानैं ॥ बुद्धिनहीं जुबड़ो गुणखानि नहीं मन चंचलकी गतिसानैं । मंगल आपुहि आपुबिराजत तू दशहू दिशिमें भ्रमठानैं २८ कौन बतावत काहि बतावत कान लगाय सुनै पुनि कोरे । काहि चितावत कौन भ्रमावत ज्ञान न

आवत ज्ञानबटोरे ॥ जोप्रभु आपुप्रकाशिरहा न द्वितीय कहाबकि वेसन तोरे । मंगल मौनगही अपने घर जो अपने सबके घरसोरे २६ कामबशीभव भूतकिते अरुकेतन के मनक्रोध प्रजारे । लोभ लियेमन काहुको डोलत मोहकि रज्जु बँधो न सम्हारे ॥ मान प्रमान हियेबश काहुको कोउ महामदको मतवारे । मंगल क्यों निबहैयह बुद्धिबिबेक बिनानितही दुखभारे ३० मंत्रनकेबशतन्त्रन केबशयन्त्रनके बशमें यकफूले । भूतनकेबश मूढ़ पिशाचनके बश मेंभ्रम पेलन झूले॥पौरुषकेबश जालन के बश लालनके बशबैठ अलूले । मंगल भांड़सो स्वांगनकेबश आतम आपन आपुहि भूले ३१ ग्रंथनके बश पन्थनके बश संथनकेबश पाठकडूले । योगन केबश भोगनकेबश रोगनके बशमेंसह शूले ॥ योधनकेबश शोधनकेबश बोधनकेबश ज्ञानअमूले । मंगल पण्डित बेदन के बश आतम आपन आपुहिभूले ३२ बाहिरमें मनसंतसों लागत अन्तर आनबिचार बिचारे । ज्ञानकथै निशिबासर तू खल काम कला कुपिके अनुसारे ॥ बातबिबेक कि गावतहै नितमोहमयी मदिरा चितधारे । मंगल स्वांगनसोंन सरैहरिकर्म कुकर्म समस्त निहारे ३३ क्योंनभजै हरित्यागि बिषयरस नीरसलोकिनतूबनिजावै । जन्मअमोल गवांवत क्यों समुझायकहै समुझो न बतावै ॥ जानतहै पुनिमानतनाहिं महा खलधौं अपनी मतिभावै । मंगल ध्याउ मनोहर मूरतिअन्तरबाहिरजोश्रुतिगावै ३४ कानअघात नहीं सुनिनादते नैनजुड़ात न रूप बिलोकी। ज्योंरसना न थकै शुचिस्वादते नाकसुवासते नाहिं सशोकी ॥औ न त्वचापरसेसन थाकत अद्भुतशक्ति सुपांचहुगोकी । मंगल पांचथके मनथाकत नातरु कौनसकै मनरोकी ३५ को असभूतभयो जगमें जेहिके मनमें न लगी बिषयाशा । कामकि लोभकि क्रोधकि मोहकि द्रोहकि छोहकिमोद बिलाशा॥ खानकि पानकि आवन जानकि स्वर्ग अबाणकि मुक्तिप्रकाशा । मंगल इन्द्रिय स्योमन जोलखुसो बिषयी अटकयो भ्रमपाशा ३६ ॥ दंडक ॥ अलखकि बातसमु-

झावै न गुनावै भ्रम वृथहि लखावैजाहि लखतन कोईहै । अगम बतावै जो चलायमान बुद्धिबढ़ै दुविधा दुराशावश सुमतिबिगोई है ॥ अगुणा सुनावै जोगुणानिकरि भांतिभांति दंभकृतबात कैसे सुधि बुधि होईहै । मंगल जो अक्षर बताय कहै कीन्हे लोक तौ तौ द्वैत भाववश आपुरहा सोईहै ३७॥झूलना ॥ माला गलेडारे फिरैं रँग नालतनछालेंधरैं बैठैंतहां बानी ररैं जानैंनहीं निजुघात को । आचारके बादी बड़े प्रतिद्वारकाधनको खड़े ले भागवत पोथीअड़े भाषैं सोहावन बातको॥ एकादशम अर्थावहीं बिज्ञान योग लखावहीं औरोंकोसो समुझावहीं झूठेपिताहितु तातको । मंगल भुलाने लोभमें माया महामद क्षोभमें आकाश साधैं थोभ में कहु मुक्तिको दरशातको ३८ उठिप्रात झाड़ैंगेहको पुनिधोय बैठैं देहको पूजैं बिद्योता नेहको दुविधाको हीमेंबासहै । पावैं मनोरथ नाहिने धावैंजो बायें दाहिने तीरथ शिवालय माहि ने परब्रह्मको न प्रकास है ॥ बिद्या बिधान बखानहीं बिज्ञान मारग जानहीं दृढ़ता नहीं उर आनहीं पंडितकहा अनयासहैं । मंगल बिचारैं योगको आशा लगीउर भोगको चाहैं नहीं भवरोग को बंधन महा भ्रमपास है ३८ गुणज्ञान को उरलेशना बिज्ञान को उपदेशना बैरागको तनभेसना धारण किये संन्यास हैं । जानैंननेती धोतिको अष्टांग साधनहोतिको भाषैं निरंजन ज्योति को कारणलिये अभ्यास हैं ॥ श्वासानरोकी एक है योगीबनो अविवेकहै शब्दै अनाहद टेकहै वंचकहिये जपन्यासहै । मंगल न ध्यावै रामको पावै न सोमनकामको ठगताफिरै नरबामको परिणाम यमकीत्रासहै ४० जबतत्त्वकोउपचारना तिहुंलोक को बिस्तारना करणी करमकरतारना सबिता न तारानाथहो । अहंकार पूरुषप्रकृतिना शितकंठपूरण शक्तिना कछुयोग भगता भगतिना आनन्द दुखलहि साथहो ॥ मनबुद्धिको निरधारना अधिआतमा व्यवहारना बैकुंठनर्क बिचारना पूरणकलाशुचि गाथहो । मंगल कहां तबतू रहै अब सत्य क्यों नाहींकहै सन्देह

किन मेरोदहै भूपति किनावत माथही ४१॥सवैया॥जी वश्रनन्त रचेतिहुंलोकमें एकसों दूसरनाहिँबनोहै । एकसिबुद्धि न एकसि शुद्धिनएकसों ज्ञाननचित्तसनोहै ॥ एकसोंशब्दन एकसों तेजन एकसिशक्तिन भक्तिमनोहै । मंगल धन्यबनावनहार जहांतहँएक हिरूपगनो है ४२ एकस्वरूपतिहूं पुरडोलत रूपअनेक धरेचहुं खानी । ज्योंबहुरूपिय रूपबनावत आनहिं आन प्रकारप्रमानी॥ आपनमें कछुभेदनलागत स्वाँगदिखाय प्रसन्नतप्रानी । मंगलत्यों प्रभुरूपकिये बहु एकप्रभा सबअंगसमानी ४३ ऊपरकोसब स्वाँग बिलोकत अंतरकी न कथाअनुमानैं । साधुनही बकरूप प्रपंचित भूति निचोलरंगेतन आनैं ॥ एकनछाप बिभूति बिमर्दित जानत पै मनमें शुचिज्ञानैं । मंगल अंत द्विभांति बतावत साधन की गतिको पहिंचानैं ४४ शीशजटा तनक्षार बिमर्दित हस्तकमंडलु सेजकुठामा । भालत्रिपुंड गलेबहुमाल भुजानदियेभलछाप सुपामा ॥चाम कुरंग बिछायरहैं नितज्ञान कथैं सुकथाअभिरामा। मंगल जोनिजभाव नहीं दृढ़तौ यह साधु किधौं छलसामा ४५ ज्ञान जड़ाउ बिराजतशीशहि भालबिचारकी सोहतरोरी । तोष निचोलरँगेदृढ़ता निशि धीरजकेसँग प्रीतिन थोरी ॥ दीठिविवेक बिलोकतमारग राग बिहून कि घूमतिखोरी । मंगल आतमबोध गुरूअससाधु महीतल मुक्तिकीधोरी ४६ पैंठहुमेंन खरीदततूमन कौनु अनेठकी बातचलावै । दामलिये कर काम नआवत बातन के मनमोद करावै ॥ जानिलियो पहिँचानि भलीबिधि क्योंअब झूँठ हमैं भटकावै । मंगल ज्ञान विवेक बिचारसों आपुतुही कस आनबतावै ४७॥कबित्त॥ काहूथलपंडित स्वरूपधारिबेदपढ़ै काहू थल कबितनकृत कबिताईहै । काहूथलसाधुतन साधनाअनेक कृत काहूथलमौनीबनि बैठोमौनलाईहै॥काहूथलचातुरीसिखावै कहूंसीखैआप काहूथलबिपुलकरत निपुणाईहै । काहूथलमंगलदुचित्तो कहूंएकचित्त ऐसोप्रभु अलख अलख प्रभुताईहै ४८ सवैया ॥जोदुख औसुख याभवजीवहि एकअदिष्टहिसोकहिदी-

जिय । ताबिनआननहोतमहीतल जोनिर्बाणको मारगलीजिय ॥ तौदुखको सुख एकसमानहिं मानिस्वआतमके रसभीजिय । मंगल ज्ञान गलीसकरी प्रबिशै मतिथूल न कोटिककीजिय४९ ऊसरमेंन उगैतृणकैसहु बारिद जोबरषैसुरपाना ।थूहरवृक्षनपात बिलोकिय कोटिउपायनसों गुणदाना ॥ब्रह्मबिचार निरूपणज्ञान को त्योंकृतजोनिजसत्यसमाना । मंगलजन्म जरापुनि ताहिन आसतहैबदसाधुसुजाना ५० जो यह जीव निराकृतनाहिन है तनलिंगहिको अधिकारी । क्रांतिनहीं शुचिआतमदेवकी है प्रगटोकछुपिंडबिकारी ॥ तौहूबिचारत आतमज्ञान सम्हारत आतमध्यानअकारी । मंगलनर्कन स्वर्गहिधावत जाइनिवासत धाममुरारी ५१ सूरजते प्रगटैजिमि आतपपाय प्रदोषमिलै रबिजाई । कोटि उपाय बिधानकरै बिनुभानु न आतप देतदि- खाई ॥ त्यों सचराचर प्राण बिलोकिय ज्योति अपूरब ब्रह्म लखाई । मंगल अंतमिलै निज नाथहि कौन अधोरधकी गति पाई ५२ तीनिहुंकाल युगान सुचारिहु बेद पुराणकथा सरसाई। जेतिकजाहि समर्थकथै तसदेव अदेवनकी प्रभुताई ॥ धर्मअधर्म क्रिया पुनि कर्मभने सब भांतिननेक दुराई । मंगल संतमहातम भाषत बैठिरहे सब लाजि चुपाई ५३ संतकहे हरि मानुष भो अरु संतकहे लवणोद सुखानो । संतकहे पदमूलभयो अरु संत कहे नभगेश सकानो ॥ संतकहे शशि क्षीण पर्‌यो पुनिसंतकहे बिधिपूजन हानो । मंगल संतकहे नरके हरि पाहन ते प्रगटो जगजानो ५४ ज्यों रबिपाय दिवान्ध न देखत दोष प्रभाकरको कि विहायस । न्हातहि गंगयने मल छूटतहोतन उज्ज्वल धोवत वायस ॥ शुद्ध मनोगति होतनहीं तिमिधर्म सुनेरत इन्द्रिय आयस । मंगल को उपदेश मनोहर मूढ़न चेतत कोटि उपायस ५५ब्रह्म सनातन बेद बखानत कोबिद औ कबिता सब गावैं । आदि अनादि अकारण कारण सत्य असत्य न सोउ लखावैं ॥ बुद्धि समान प्रमान बिधान करै निरधारि निगूढ़ गुनावैं । मंगल

तू भिषणा बिनुक्यों कहहै जु सँदिग्ध नहीं बिधिभावैं ५६ जोपै सुपूर्व स्वरूप कृपानिधि तौसुर तेरहभाँतिनचीन्हे । जोप्रभुमानुष आकृति गाइय तौ फिरि कोमत धारण कीन्हे ॥ क्यों पशुकीट कहौं मनमूरुख है खगसोन अकाशहि लीन्हे । मंगल भूतपिशाचन आसर दृष्टिपरै नहिं दृष्टिहिदीन्हे ५७ तत्त्वकहे स्मृतिकाजल पावक वायु सनातनहै प्रभुसोई । जो गुणतौ सतराजस तामस पूरुष औ प्रकृती नहिं होई ॥ त्रैसुरतौबिधिबिष्णु महेशनआयु बितीतत कालक होई । मंगलशक्ति अशक्तिन भास्वर दृष्टिदिये नहिं सूझि परोई ५८ वृक्ष खजूरि लगेफल दूरिकिये बलभूरिन पाथरजाई। मूलबिनाकिमिधायचढ़ैमहिटूटिपरैनहिँ देतदिखाई॥ तातरु पात समीर कि संधिमें घूमतहै नहिँ होत गहाई । मंगल सोजड़ चेतनहै फल संतलहैं बिन पक्ष उड़ाई ५९ साधु कहा मन हाथ न जाकरध्यानकहा चितचेत न हीनो । ज्ञानकहा मति गोथिर नाहिंन भक्तकहा शुचि त्यागनलीनो ॥ कौन बिबेक जो इंद्रियकेबश क्षेमकहावधमोह न कीनो । मंगल ब्रह्म बिचारकहा जोपै आतम आपुन आपुहि चीनो ६० स्वर्ग निवास कहा मन तोपित नर्ककहा बहुआधि सताये । भोगकहा सुरवामनके सँग सुन्दरबुद्धि समाधिलगाये ॥ नर्ककलेश महा कृमिचाटत धामिक लौं बहुपंथनधाये । मंगल भूल दुयौदिवि नर्क जोआतम ध्यान गहै सुदपाये ६१ आतम ब्रह्म निरंजन भाषत आतम देव अदेव भुलानो । आतम लोक अलोक अधीरज जंगम थावर रूप समानो ॥ तत्त्व अहंकृत है गुण आतम बुद्धि बिधान समान बखानो । मंगल ध्यानसदा कृत आतम संतसमागम सोपहिंचानो ६२ बिष्णुभजै नरजन्म दुतीनिकु मुक्तिलहै जब मोहन जागै । शक्ति अनादि निरूपण जोकृतसोउनजन्म अदृष्टहित्यागै॥ शंकर ध्यायलहै शिवलोकहि अंतहु जन्म पदारथलागै । मंगल ब्रह्मबिचारि कहै उरआवत मोक्षहि सों अनुरागै ६३ एक भषैंफल वृक्ष न जानत कौनदिशा कथहि देशहिलागो । एकलिये फल

खोजत पादप खातनहीं गुण औगुण पागो॥ एकते जानत पेड़
भलीबिधि खात महाफलजी अनुरागी। मंगल एकन खातन
जानत कोतरु कोफलमूलको लागो ६४ बालक रूप महाशुचि
सुन्दर देखनहारके चित्तहि भावत। अंधप्रशंसित रूपन देखत
टोवनको निजहाथबढ़ावत॥ सूक्ष्म स्थूलन लंबन चाकल ऊंचन
नीच जो हाथहि आवत। मंगल क्यों समुझै पुनिमूरुख पाखँड
के कर ज्ञान गहावत ६५ दृष्टि न आवत रूप मनोहर शब्द
अनूपनदेतसुनाई। भाषि न आवत अद्भुत ग्रन्थहै शुद्ध सुगंधिन
बासहुआई॥ सुष्टुपदारथहै मनभावन कोटिहु भांति न होतग-
हाई। मंगलहै नटवाकसमोहर देखेबनै नहिँजातचलाई ६६
मेघचले अभिमूढ़ बखानत नावचले तरुजातलखाई। बालक
ज्यों बहुबारन घूमत बैठिलखैनिजदृष्टि उठाई॥ देशभ्रमैगृह
बाहर भीतर भूनभघूमत देखतभाई। मंगलत्यों मनकीभ्रमणा
बिपरीत लखे भ्रमजातनआई ६७ बालकता तरुणाईगई बिर-
धापनकेअहु श्वेतबिराजै। आनन दन्तबिहीन सुनैनहिँ दृष्टिपरै
जगधुंधसमाजै॥कम्पतहैं करइंद्रिय आनहु कोटिकिये नहिं आवत
काजै। मंगल मृत्युसमीपडरैनहिं रामकहै नकुकर्महिं लाजै ६८
क्योंमन ढूंढ़तहै दिशिचारिहु स्वर्गचढ़ै अपबर्गहिधावै। तीरथमूर-
ति जाप न पाठ न पूजनभोजनमें दुचितावै॥ संतनपूछिमहंतन
बूझि सबैउपदेश मुनीश्वरगावै। मंगल सत्यगुरू निजआतमआप-
नभेदजो आपुबतावै ६९ आठहुयाम प्रसिद्धपुकारत शब्दमनोहर
हंसकि बानी। मूरुखलौं दशहूदिशि धामिकअक्षरखोजत आखर
दानी॥ चेति अजौं अपने घरबैठिय भूलिगयेधन मूलकिहानी।
मंगल जोतिहुलोकमेंपाइय सोअपनेघरहैन भुलानी ७० पांचहि
तत्त्वनतेपुरतीनहुं हैंबिरचे करतारसुजाना। आपनअंश प्रवेशितके
सचराचरजीव कियेबिधिनाना॥ तौरशरीरसोपंचप्रभूततेहैं लघु
दीरघकेरि प्रमाना। जोगुणसिंधुमें सोगुणबिंदुमें मंगलभावद्विती-
यनजाना ७१॥कवित्त॥अलखकहत लख औरकछुजानोजात बदत

अरूपरूपवाल फिरिकौनहै ।अगुणबखान कृतगुणहीकोलोपहोत अजरबताये जराग्रसिततनतौनहै ॥ कहतअनादि आदिद्वितियबिचारहोत भणतअखण्डखण्डदूसरनजौनहै । पुरुषपुराणसबठाममनमेंएकभाव मंगलनजानिपरै द्वितियकोगौनहै ७२ पुरुषबखान कृतनारिकोबिभेद होत अबलाबतायेनररूपी कोऊआनहै। क्लीवतनगाये बुधकबिसाधुमानै नाहिं प्रतितनबासभाषे मायाकोमिलानहै ॥ ऊरधनिवासकहौं प्रभुअधराजैकौनु श्वेतदीपसोहै आन द्वीपकाकोथानहै । मंगलअपार किमि वरणिबतावै ताहि अधिक नहीनहरि सदहिसमानहै७३ कीट औ पतंग पशु खगनर नाग मुनि देवता अदेव जेते त्रिपुरबिचारिये । सबमें बिराजै एकभाव सबठामप्रभु सबनते न्यारोकरि ज्ञाननिरधारिये ॥ जैसेघटमठ धामसबनमेंनाकमिलो बुद्धिचषदेखेन्यारो चतुरसम्हारिये। बुद्धि मेंनआवै नबिवेकज्ञानगावै कैसे मंगलबतावै तातेचुप्पचित्तधारिये ७४ सवैया ॥ ज्ञानगलीचलि सूझिपरै कछु सोऊ बनैकहतेन अनूपा । बुद्धिअचंभित मोहितहै मन शुद्धिअशुद्धि परैभ्रमकूपा॥ लोकमेंनाहिं अलोकमेंनाहिंन थोकमेंनाहिंन रैयतभूपा । मंगल है तुवरूपवहै बिनज्ञानगुरूलखि जातनगूपा ७५ दास अदासन दासकुदास बिचारतहैंप्रभु ब्रह्मसनातन । पालतएकहिभावचराचरमोहनरूप बसै सबगातन ॥ नीचकुलीन गुणीअगुणीमहिदेव गवाग्यको भेदनजातन । मंगलतासुप्रभालखि नैनन त्यागत संत विषयबिषपातन ७६ आपनको सबज्ञानियजानत आपनकोसब ध्यानियलेखैं । आपनकोसब भक्तप्रमाणत आपनकोशुचिहीअवरेखैं ॥ आपनकोसबसंतबखानत आपनको तपसीलमपेखैं । मंगलमानयहैकहिये भवआपनिमूरति आपुनदेखैं ७७जोबिधिहैकरताभवको घतबर्ष व्यतीततकालनघावै । शंकरदेवसुरेशहुको मृतु नाशकरै यहवेदबतावै ॥स्वर्गनिवास सुपर्वतजे तनकालबिलोकि नधीरजआवै। मंगलभूल महाजगजालमें क्योंनकृपानिधिकेपद ध्यावै ७८ कश्यपगे कहि धामअरे मन तेरहनारिनते जगपूरो।

औ मनुराज कहां अबतात रचेबहुग्रन्थ प्रबंध अपूरो॥ मच्छकहां पुनि कच्छकहांमुनि दक्षकहां कियबास समूरो। मंगलतू मन में नहिं शोचत मृत्यु प्रताप सुने मुख झूरो ७९ त्यागत देहअघी सुकृती सब औसर पायभयो मृतुहाको। जानि न जातकहां चलि जात न घूमिकहै सुबुधी निजशाको॥ कौनदिशा क्यहि देशबसै तुर कौनके रूपअरूप प्रभाको। मंगल मानिलयो मनतेनत काहँ मोक्ष अधोगति काको ८० केतिककाल व्यतीतभये मनजौनु गयो रथलौटिनहाको। आनि बखान कस्यो न दशानिज नर्क गिस्यो किधौं स्वर्गहिताको॥ भोगकस्यो कि मस्योनिज भूखहि रोगग्रस्यो कि अरोगहिछाको। मंगल लोगकहैं सो सही क्यहि मोक्षकहैं औ अधोगतिकाको ८१ आव कहांतेन आपुहि जानत लोगनके मुखसों सुनिमानी। ब्रह्मतेकर्मतेखानि निगोधतेआदम के तनरूह समानी॥ पुत्रपिताते पवित्र सुजीवहै पूरुष औ प्रकृतीहि प्रमानी। मंगलपै न पताकछुलागत खोजतआंधरबस्तु हिरानी ८२॥ यथाकबित्त॥ कोरीकोजमाई एकमूढ़ चल्यो सासुघर चीन्हत न सासु न ससुर निजसारेको। गांवके निकट जात नामहूंको भूलिगयो चकित भ्रमात पुर सकल दुवारेको॥ कोऊ याहि जानैनाहिं यहै पहिंचानै नाहिं बिकल महान मन कीधौं मतवारेको। मंगल सकोचिमन लोगनसोंपूछैलाग जानत सजान कोऊ ससुरहमारेको ८३॥ सवैया॥ मातुकहै सुतमोर अहै अरु तातकहै सुतसों निजपूता। नारि बदै पति पुत्र पिता प्रपिता कहि नाति मचाव अकूता॥ मित्रकहै हितुशत्रुकहै अरि शिष्यकहै गुरु आदिप्रभूता। मंगलपैन पिछानतहै कोउ साहिब होइ कि किङ्कर दूता ८४ जीवचराचर जे पुरतीनि प्रकाशित है सबमें पुनि आपू। ज्यों सब बस्तु प्रकाशक भानुहिं ज्ञान बिना भ्रमपूजनजापू॥ शुद्धसतोगुण पूरिरहा निजअज्ञतमोगुण राजस दापू। मंगल मोहन मूरतिध्यावत लागतहै बरदान न शापू ८५ ज्ञानबिना सिगरोभ्रमहै नहिंबूझत मूरुखसार असारा। दूरिबदै

भरिपूरि रहा अतिपास भनै प्रभुतत्त्व अकारा ॥ अन्तर बाहिर आवत जावत आपनभेदसो आपु पुकारा । मंगलपै नहिं मानत तू गुणत्यागत औगुणहोत पसारा ८६ कश्यपकी दशतीनित्रिया तिनके सुत तीनिहुं लोकभरेहैं । स्वेदज अंडज योनिज उद्भिज चारिहु खानिनमें पसरेहैं ॥ एकतेरूपअनेकभये बिनु कश्यपक्यों कहिये बगरेहैं । मंगल कश्यपको जोपै ढूढ़िय तौ नहिं काहूके धामपरेहैं ८७ जाग्रतमें दुखही दुख देखियहै स्वपने महँ दण्ड कराला । इन्द्रिय थूलसो जाग्रतमें अरु सूक्षम सो स्वपने कृत माला ॥ कारणरूप सुषुप्तिहुमें चकिचौंकि उठै पहिरे भ्रममाला । मंगल क्यों निरधारलहै दुबिधा तनतीनिहुं में बिकराला ८८ कारण देहमिटै सुनुरेमनका कहिये बुंधिमें न समाई । वृक्षकहां फलफूल सुगन्धिजो बीजहि हानिपरै भ्रमताई ॥ पांचहि तत्त्वन ते तिहुंलोक जो तत्त्व बिनाश तो लोकनभाई । मंगलकारण आदि बखानिय बादि समस्त अहै निपुणाई ८६ श्रीपरमातम पूरण रूपजो अंतर बाहिर आपुबिराजै । ज्ञान अजानप्रवीण समूढ़न पावत जाकरशुद्ध समाजै ॥ सो जगदीश बतावत पासहि सन्त महन्त कवीश अकाजै । मंगल अन्ध अज्ञान बिना गुरुपंथ न हेरत धावतलाजै ६० बालक तामहँ मोहनहीं बढ़िभूल कि शूललगी मनमेंहै । प्रौढ़भये कछुमोहसकाम इतैउतहेरत भूजन मेंहै ॥ वृद्ध दशामहँमोहबढ़ो उर ज्ञानकहा प्रभुताधनमेंहै । मंगल अंतक अंतग्रस्यो सब छोड़िगयो भवही क्षणमेंहै ६१ तीरथको पगदेतमिटै अघदों कविपंडित लोगबखानै । स्वर्ग बसै ब्रतको फलपाय बिलासकरै मखसों सुरथानै ॥ जो अघभोग दुवौपरि त्यागत सोकत तीरथ औ ब्रतठानै । मंगलमोद समेत भजैहरि मुक्ति पदारथ करतल आनै ६२ काम सतावतक्रोध जरावतलोभ भ्रमावतहै चहुंघाई । गर्व गिरावत दम्भरिझावत संतन भावत है जड़ताई ॥ मोहनशावत ज्ञाननआवत चित्तचितावत आन उपाई । मंगल भक्त कहावत ऐसेहु एकहु भावनभक्तिलखा-

ई ६३ सत्य न जानत झूंठ बखानत मानहि मानतहै दुचि-
ताई। मूरति पूजत भोजन भूजत हैं बहु कूजत खाइअघाई॥
धर्म दुरावत कर्म करावत चित्त न भावत आन बड़ाई। मंगल
भक्त कहावतऐसहु एकहुअंक न भक्तिलखाई ६४ जानत आ-
पनको शुचिआतम आननको अपवित्रबिचारैं। आपनधर्ममनो-
हरहै यहिनाहिंभलो दृढ़ज्ञानप्रचारैं॥काठगढ़ाय गलेगहिबांधिकै
मूरतिपूजि गुमानहिंधारैं। मंगल नेकदयाउरमें नहिंभक्तकहावत
ज्ञानबिसारैं ६५ आतमबास शरीरबतावत लोगनको मन भक्ति
तेटारैं। देवननींदिकरैंबकबादु न स्वादुलगैमुखजीभचचारैं॥बात
नमानत संतनकी नकबीरकिबाणि हियेकछुधारैं। मंगलजोहठि
आतमपूछिय तौफिर बत्तिसदांतनिकारैं ६६ ब्रह्म निरंजनज्योति
बतावत कोउकहै निरबाणबिलासी। श्वेतसुद्वीपबखानतकौनहुं
शेषकेशीश कहैमनभासी॥ कोउबदे हरिधामसुआनहिं जानतहैं
मुनिज्ञानप्रकासी। मंगलकेउरमेंदुबिधा फिरिहै समठामहिंकौनु
बिलासी ६७ ब्रह्मजोहै नरकायबिराजत तौपशुकीट बिहायस-
कोहै। देवनमेंनित संतनमें प्रभुबास करै गुणपंडितसोहै॥ दैत्य
असंतनमेंपुनिकौनु बिराजिरहा गुणऔगुणजोहै। मंगल भूलकि
बातकहोन द्वितीयकहींइकआपुहिदोहै ६८ एकबखानतहैंद्विबि-
धाकयहिभाषिकहै बकतापुनिकोरे। वाहिपुमानभनै यहिनारिन
नारिपुमान गुमानकेभोरे॥ एकअपार द्वितीय अनादि बखानत
केतिकहैंमतिथोरे। मंगल सूरजधूप द्विभांतिन ज्ञानबिना सबके
करजोरे ६६ कबित्त॥ब्रह्महीतेमाया ताते तीनिगुण पांचतत्त्व
सूक्ष्मसथूलकबि दुबिधलखावैहै।तत्त्वनतेसातनाकदेवबासदेखि-
यत सकलपताउत्पति तत्त्वकरिगावैहै॥ आदिऔ अनादिजगद्वि-
बिधिबखानैंलोग मंगलकेचित्तएक सांचीबातआवैहै। मेरीज्ञान
बिश्वनाथ बालकस्वभाव जैसे रचिकैघेरौंदा पुनि आपुहिमिटावै
है १०० क्षमामिटिगंधिहोत गंधिनीरयोगलेत आपरसरूपपाय
रहतनलेशहै। पुनिरस पावकशरीरमिलि जातपुनि पावकहूरूप

होतकहतसुदेशहै ॥ रूपपवमानहोत कहतसमीर पुनि परसमें लीनसोतौ नभहिप्रवेशहै। नाकमुनिशब्दसोतौहोत अहँकारपुनि प्रकृतिपुरुष हरि मंगल हमेशहै १०१ सवैया॥ केतिकपण्डितश्री कबिचातुर देवअदेव मुनीशसुजाना। गावतजाकरि कीरतिरेमन पावतपारनवेदबखाना ॥तासुकथाकिमि जानिसकै बकबादु करै किचुपायअयाना। मंगलगूढ़ कहाकहिये करिये मनहींमनताकर ध्याना १०२ शेषमहेश बिरंचिसुरेशहु जाहिभजैंकछुभेदनपावैं। देवअदेव कबीशमुनीश क्षमाधरकोबिदआननगावैं ॥जाकरभेदन भाषतसंतन पीरगुरूकथिअंतबतावैं। मंगलसो परमात्मअव्यय धूर्त्तप्रत्यक्षबदैं औलखावैं १०३ काकरध्यान कहैबुधितू अबहीं तुवरूपहिसोंमनमाना। रूपनरेख अनीहअनाकृति श्वेतनपीतन श्यामप्रमाना॥ आदिन मध्यनअंतनतत्त्वन मातपितागुरुबंधुन शाना। मंगलआपुहिआपुबिचारत जानतआपुन जानतआना १०४ एकहिपाट बिछायमहीरचि ब्राह्मणशूद्र कुलीनरुनीचा। तापर बैठिबनावत जेंवत खोवतज्ञान बिनीतनगीचा॥ जोसमुझैमनमें गुणधारि तौदूसरमानतहीं मनहीचा। मंगलतूमन शूकरलौंजल पान करै प्रथमैं करिकीचा १०५ एक ऋचानि सुनो कबहूं कहैं वेदनकीहमजानतबानी। आगमकोनहिं अक्षरजानत नींदत हैं अयरूपअज्ञानी ॥ पाठकरयो न श्लोककबौं कहैं भाषि पुराणन तुच्छकहानी। मंगलक्यों समुझैंजड़मूरुख आपनहीं मतमानत मानी १०६ सूर कही सब श्याम कथा तुलसी रघुनायक गाथबखानी। दासकबीर बयो सतिरामहिं नानकनाम भण्यो रुचिमानी॥ दादू मलूक धना सदना अरु गोरख बाणि भली पहिंचानी। मंगलमूढ़कहैं इनते हमहैं अधिके जोभयैं निजबानी १०७ जेखल खोजतहैं धनको तनको रँगिके करबेत लगाये। लोगन सों जगनाथ पुरीकर पंथबताइचहैं भटकाये॥ ज्ञानकथैं बदिबाद बड़ो सुनिसाधुलखैं जनुआनँदपाये। मंगलते ठगिजात सही न कही न कहीअपनी अनखाये १०८ वामनसों नितप्रेम

बढ़ायतवामनलोंअनवाय न वामी। दामगुलाम जोसेवकपेटके मांगतद्वारनवामनधामो॥ राम रहीम करीम न केशव बाद बिवादकरैं मतिखामी। मंगल तू चुप क्यों न गहै असंगकिये जगमें बदनामी १०६ शब्द अनाहद होतसही जब मूंदि सुनै दशहू तनद्वारा। वायुनिरोधत शब्दउठै यह ज्ञान अखंड प्रवीण बिचारा॥ जोसमुझो मनजानि परै तसझालरि शंखमृदंग उचारा। मंगलप्राण अयामकिये अठपायुनधै सुखलोंकरतारा ११० जो शून्य समाधि लगाय बिलोकत धूमिल धूसर रंगपसारा। जो त्रिकुटीतटलौं चढ़िजाय लखै सुत्रिवेणि कि पावन धारा॥ अथ बढ़ेकछु होत प्रकाशहै भासत योग प्रचारन हारा। मंगलखोजत ब्रह्मतहां नहिंआनस्वरूप जोआनप्रकारा १११ ढूंढ़िफिर्‌योंबहु तीरथमूरति बूझिफिर्‌यों बहुपंथअथाई। खोजिफिर्‌यों बहुशेष मशायख शोधिफिर्‌यों कितनीगुरुवाई॥ बादबिवाद अनेककिये कहुंलाजिगयो कहुंआनलजाई। मंगल सांचु कहावतहैयहछूंछपछोरत जातउड़ाई ११२ काहुकह्योउठिप्रातहिंन्हाइयपूजिय देव सुध्यानलगाई। काहुकह्यो कलिमाबिन मोक्षन काहुबह्यो निरबाणगुणाई॥ काहुभन्यो गुरुबिप्रप्रतारत काहुबखान स्वग्रंथ कथाई। मंगलकोनहिं बोधभयो जसछूंछपछोरत जातउड़ाई ११३ योगवशिष्ठ पढ्योकछुसादर दासकबीरके ग्रंथ मँगाई। जीवनके कछुपंचकभाषि सुनीकछु सुन्दरकी कबिताई॥ बादकरैं कबिपण्डितसों अरु नींदतहैं मुनिदेव अथाई। मंगलसांचुकहावतहै कुम्हड़ा सुखमें न अजाकेसमाई ११४ देवनकोनित हैपरिदेवन सेवनकी किमिबात चलाई। आतमभूत कुलालसमानहै पालकविष्णु नठीकलगाई॥ शंकरकोपिसँहारतहैं यकब्रह्मनहीं बहुठाम दिखाई। मंगल सांचु कहावतहै कुम्हड़ामुखमें न अजा केसमाई ११५ आपुन कर्म कियोनकबौं कहैं कर्मकिये कछुहोत न भाई। दास कबीर मलूक धना तुलसी गुरुनानक बांधि सुनाई॥ यों शुकदेव भन्यो गुरुगोरख कर्मबशीजन मुक्तिनपाई।

मंगल युद्ध पठान बिजय बेहना निज अंगन फूलिसमाई ११६ श्रीगुरुनानक दासकबीरके आनहुं पंथमें लीन्ह मुड़ाई । मानत हैं फिरि वेद पुराणन तीरथ औ ब्रत देत उड़ाई ॥ वाद विवाद विशेष करैं अरु भाषि कहैं गुरुग्रंथ गुढ़ाई । मंगल पै निज भेद न जानत खांड़ बँधावत ऊख पराई ११७ वेदको अक्षर कान सुन्यो नहिं बादि कहै श्रुतिसार असारा । आगमको कहुं रूप न देख भनैं झगड़ा बड़ शास्त्र बिचारा ॥ बादि कहैं हम ब्रह्म बखानत देत लखाय अखंड अपारा । मंगल आपन भेद न जानत भीति उठावत ईंट न गारा ११८ ज्यों पवमान प्रसून के बागते आवत शुद्धसुगन्धि लखाई । सोई समीर कुगन्धि निकेत ते बाहिर होत कुबास बसाई ॥ थोरकुंजाइ सुगन्धि कुगन्धिनि शुद्ध स्वरूप सदा सुखदाई । मंगल त्यों यह जीव अदोषित पापरु पुण्य असो नहिं जाई ११६ लोचन हीन न अंध बखानिय नैनसमेत न देखनहारा । पंगु नहीं पगहीन चलै नितपंगु अहै पग नाहिं बिकारा ॥ गुङ्ग रहै रसना शुचि सोहर बोलत है नहिं जीभ सहारा । मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहिको करि देखु बिचारा १२० दण्डचहूं दिशिते नहिं रोवत रोवतहैं सुखके अधिकारा । सोवतहू महँ जागत देखिय जागत सोवत के अनुसारा ॥ गावतहै न बिवाहमें गीत अस्वारथ ताल मृदंग पसारा । मंगलहै यहअद्भुत कारण जीवहिको करिदेखु बिचारा १२१ मूढ़नके सतसंग बिहारत साधन संगतिते कहुं न्यारा । ज्ञानिन में नितबासकरै कहुं ध्यान लगावत पार अपारा ॥ न्हात जन्हात खवावत खातन पाठक पाठित शुद्धप्रचारा । मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहि को करि देखुबिचारा १२२ चेतन बस्तु सही तनुमें बिन चेतन चेतन दृष्टि न आवै । अंधहि दीप दिखावत सूझत खोजन को निज हाथ बढ़ावै ॥ लोग सबै हठिबाद बदैं परमातमहै तनुमें न लखावै । मंगल भूलकि बातयहै ज्यहिरूप नहीं त्यहि देखनधावै १२३ औघड़ मंत्रलिये यक डोलतअ-

मिष भोजि सुराकृतपाना । बालन मानत आननकी यकबाम कि सेवतही बधठाना ॥ एक तजे मदिरा अरु आमिष दक्षिण भागलिये अभिमाना । मंगलहै रुचि आपनि आपनि जोपैकरै परमातम ध्याना १२४ काकर पापग्रसै क्यहि कारण काकर पाप सुपुण्य प्रकासै । काकर पाप निवासत नरकन काकर पाप जो स्वर्गबिलासै ॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन काकर पापसु-मुक्तिप्रभासै । मंगल काकरपाप मिलावत ब्रह्म निरंजनमें अन-यासै १२५ यातनुमें यक चेतनहै ज्यहिशक्ति सबै तनु इन्द्रिय डोलै । चित्त अहंकृतहै मन बुद्धि न सूक्षम थूल न कारण खोलै ॥ सोवत जागत जागत सोवत आपबखानकरै अनमोलै । मंगल शक्ति अनंतवहै बिन जानते पारस पाथरतोलै १२६ जाहिनहीं दुख औ सुख व्यापत नेह न नात न पास न दूरी । जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीयरहै यक भावन अल्पनभूरी ॥ जीवतहै न ग्रसै मृतु अंतक रूप अरूप रहातनुपूरी । मंगल सो यह जीव कहावत आदि अनादि कि जीवनमूरी १२७ छूति औ पाक कछूनहिं मानतनीच कुलीनदुवौ यकसारा । खात अघाइ ठठावत पेटहि रामभजै नहिंतत्त्व बिचारा ॥ ऊपर हंसस्वरूप बनेसति भीतर बायस रूप अपारा । मंगल नावत वेषहिमाथ भलो रजतेकरि सांप पसारा १२८ श्रीगुरुकी कथनी निज भावत बापकिगावत दादे कि लावत । पंथकि आवत ग्रंथसुनावत ज्ञानि कहावत बेद मिटावत ॥ कर्मनभावत धर्म भ्रमावत आन बतावत आन करावत । मंगल जो अपनी कछु पूंछिय तौ जमुहात वृथा मुख बावत १२९ ऊरध बाहुबने तनु पीड़त पांवबँधेनर झूलझुलावै । भूतिबने अवधूति बने बिन जूतिचले पग कंटकधावै ॥ भूमि गड़े तनु आगि जरेबिन अन्नमरे निज जीवसतावै । मंगल कर्म अस्वारथहै नहिँ खोजनहारके हाथन आवै १३० ब्रह्मकि बाणि भरी सब बेद कलाम खुदाजो कुरान कहावै । आगम बाणि मुनीअनकी जुहदीस रसूलकि बाखिबतावै ॥ बाणि पुराणमहा

मुनि व्यास कि ब्रह्म निरूपण ज्ञान लखावै। पुस्तक जैनसो पारसबाणि चहूंदिशि मंगलबाणि जनावै १३१ जेतिक पंथ महीतलहैं सबमें यकबाणि नबीन भरीहै। एकबिलोकिद्वितीय बनावत सो उपमा ममचित्तअरीहै॥ ज्यों यकराग अलापकियों सुनि आनहुं तासुकि कूक करीहै। मंगल बाणि विवाद चहूं दिशि ब्रह्मबखानत बाणिडरीहै १३२ बाणिकहै यक सगुणनि-र्गुण बाणिकहै यकब्रह्म अमाया। बाणिबदै सबठाम कृपानिधि बाणिभनै प्रभुहैयहि काया॥ बाणिकथै यकसिर्जनहारहै बाणि कहै यक पालकपाया। मंगल बाणिगुणै यकहंतक आदिअनादि बतावत माया १३३ एक कि बाणि द्वितीय न जानत एककि बाणि अनेक लरैजू। कूकुर भूँकि उठोभ्रम खाय सुनेत्यहि आ-नहु भूँकिपरैजू॥ वाजिमि बोलिश्रृगालउठो सुनतेबहुतासँगही फिकरैजू। मंगल बाणि अजीत महाकछु नीककहौ तौ बिमूढ़ जरैजू १३४ सूरज अस्त समय दिनहै किधौं रातिकहौ कबि पण्डित ज्ञानी। छांह औधूपके मध्यकहा किधौं धूपकि छांहबदौ गुणखानी॥ पूंछत मंगलसों बहुलोग बतावन में अतिहोतग-लानी। ईश्वरजीवके मध्यतथा बड़िसंधिपड़ी नहिं जातबखानी १३५ चिन्ततचित्तगहै अहँकारगुणानिकरै मनबुद्धिदृढ़ावै। पाप अपापअसैयहिजीवहि क्योंदुबिधा अपनेमन आवै॥ मोहनखाय अ-घायसुभोजन सुंदरआपनपेटठठावै। मंगलभूलि बड़ीभवमेंतजि साहिबसेवकराजबतावै १३६ चित्तकहाभवआशकहौ अहँकारकहा दुबिधा तनुतापै। कौनअहै मनहैभ्रमणाबुधिरूपकहा थिरतातनु आपै॥ चितनहीं अहँकारनहीं मनबुद्धिनहींयदिज्ञानप्रलापै। मंग-लहै यकतू बिधिचारि बिचारिहिये किनदोषनढांपै १३७ कारणदेह रहै जबतोरिनहीं तबज्ञान अज्ञानबखाना। इंद्रिय ज्ञानन कर्मरहै मनबुद्धिनहीं शुचिब्रह्मसयाना॥ सूक्षमतत्त्व नदेखिपरै नहिंमातु पितागुरु नामहिंजाना। मंगलसोकि अचेतकिचेतनब्रह्मकि जीव कहैबुधिमाना १३८ लिंगशरीर लियेनवतत्त्व कहौंकिमिसप्तहथूल

प्रमाना। इन्द्रियकर्मसज्ञानअहैं दशबुद्धिहिस्योमनपंचकप्राना॥
कर्मप्रताप बिलासभयोलहि थूलशरीरभर्यो अभिमाना। मंगल
कौनकहै मनकीगति सत्यअसत्य बिबेकअयाना १३६ थूलशरी-
रसो जाग्रतहै ज्यहिके कृतमानतदेव अदेवा। लिंगबिभेदजोस्वप्न
कथाजहँ सत्यअसत्य लखेबहुभेवा॥ कारणरूपसुषुप्ति बिचारिय
सत्यअसत्य दुवौनिटितेवा। मंगलकारणके परकीगतिसोइतुरी-
यबिलक्षण एवा १४० बालकतामें सतोगुणव्यापत शुद्धअशुद्ध
कछूनहिंजामें। प्रौढ़भये तरुणाईगहे उरव्यापतमोगुण क्रोधसकामें
मैं॥ वृद्धवही क्रमहोतरजोगुण ज्ञानअज्ञान दुवौभ्रमतामैं। मंगल
अंतत्रिदोषमिले यहजीव प्रबुद्धलहै परधामैं १४१ जोअजसा कि-
मिजन्मधरै अरुजोअनयोनि सोयोनिनधावै। जोबिभुसो किमि
ह्वोतप्रजा अरुजौनु अनीहसोदेहनआवै॥ अद्भुतशक्ति भयोकविप-
खिइत ताकरकीरति क्योंकरिगावै। मंगल शोचिरहौ मनहींमन
नामप्रभावहि बाखिरतावै १४२ कवित्त॥ आशावश तीरथफिरत
दिशिचारिहु में आशावशकरतसुव्रतमनमूढ़है। आशावशक्षीरपान
आशावश नीरन्हान आशावश देतदानढूंढ़तअढूंढ़है॥ आशावश
ठाढ़रहै आशावश देहदहै आशावश बालकबिलोकै ज्वानबूढ़है।
आशावशमंगलकबित्तछन्ददोहाकहै आशापरे जीवपावै बड़ोज्ञान
गूढ़है १४३आशावश पाठजापआशावश ज्ञानध्यान आशावशबि-
पुल करतरणधावैहै। आशावशमोहद्रोह आशावशकामकोह आशा
बशरामराम रटतस्वभावैहै॥आशावशनातगोतआशावशबामहोत
आशावशदेवजन कीरतिसुगावैहै। आशावशमंगलदुचित्तोनित
भूमितल आशापरे जीवबड़ो गूढ़ज्ञानपावैहै१४४ आशावश बिक-
लनरकबास पावैआप आशावशसुरपुरलहत निबासहै।आशावश
उपजि मरत बारबारदेखु आशावश मोचिजात प्रभुपदपासहै॥
आशावश पापलागै आशावशपुण्यजागै आशावशसम्पदाको अधि-
कविलासहै। आशावशमंगलसुजानता दिखावैनिज आशापरेगूढ़
गतिज्ञानको बिभासहै१४५आशावश भूतनकोदेत बलिभागदेखु

आशाबशदेवलमें देवपूजैधाइहै। आशाबशकबिगुण आदरबिचारै चित्त आशाबश कुबचबदत भ्रमपाइहै॥ आशाबश यागदान होम संयमादिकृत आशाबश ऊरधपवन ठहराइहै। मंगलनिराशहोत पूजै मनकामनान भटकति आशाबश दुबिधाकोभाइहै १४६ अटवीनिबासजोत्रिलोकैराम सत्यभाव तौतौकेतेबनबासि बनहीमें बासैहैं। जोपैजलशायीभगवान भेटैसत्यताततौतौ जलमानुषको जलमें बिलासैहैं॥ जोपै निरबासना मिलतप्रभु धायआय तौतौ बालकोटिन नगनअनत्रासैहैं। मंगल बिबेकीसाधु मुनिजनज्ञानवान तिन्हैंन सुहाइदम्भप्रकट निरासैहैं १४७सवैया॥बन्दनभाल दिये यकचन्दन एकत्रिपुंड्र चढ़ावत माटी। कण्ठबँधी बहुमाल सुकाठकि गोलरची तुलसी तरुकाटी॥ रंगिभुजाउरडारिसुलोचनकोउरहैंलपसी मुखचाटी। मंगलज्ञान उदोत भये यह दम्भ लखाय महा खटपाटी १४८ पावक पूजत ईश्वर जानि कोई कृतसागर पूजनधाई। पूजत भूमि समीर महीधर सूरज चांदहिजानि भलाई॥ मूरति ताबुतसाहिब मानत पूजन में रुचि होत सदाई। मंगल ज्ञान उदोतभये उर भ्रामिकहै यह दम्भ लखाई १४९ जानि सकै हरिकी गतितौ भ्रमजाने बिना ते महाभ्रमलागै। गाय कहै जु अकत्थ बड़ो भ्रमगाये बिनाउर प्रेम नजागै॥ ज्योति निरंजन नैन लखैभ्रम देखे बिनाकस तारस पागै। मंगल तू इतही उतही भ्रमहै इतही उतहीकिन खागै १५० देखत नैनन आपन रूप अनेक द्वितीय स्वरूपनिहारै। कान सुनैनिज नादनहीं जगबाद सुनैउर प्रेम प्रचारै॥ आपनि गंधि न सूंघत घ्राण अनेकन गंधिकुगंधि बिचारै। मंगल ज्योंतु बिलोवत नीरचहै घृत आपुनआपु उचारै १५१ आदि कहोतौ अनादि कहा अरु मध्यकहा पुनिअंत कहाहै। जोपै अनादि कहौ परमातम तौ फिर कौन प्रकाशि रहाहै॥ जोअनुमान कहौं तो बड़ाभ्रम आन प्रत्यक्षन रूप महाहै। मंगल क्यों निरधार लहै भ्रमज्ञान गुरू गुरुज्ञान लहाहै १५२ बेदबदैं उप-

बेद बंदैं सब आगम औरु पुराण बतावैं । सन्तबंदैं जुमहंत बंदैं मुनिराज बंदैं कविपण्डित गावैं ॥ धूत बंदैं अवधूत बंदैं बुधजैन बंदैं अनुमान लखावैं । मंगल क्रूरबंदैं बिपरीतहि पूरपरै नमनैं पछितावैं १५३ ॥ कबित्त ॥ कहत ज़बूरहै किताबभगवानही किलाइकेदाऊद सबलोगन सुनाईहै । अपर भणत तौरेत भगवान भाषी सोई लाइ मूसा केतीकीन्ही चतुराईहै ॥ ईसा कि इंजीलसुनी कहत महम्मद कि बड़ी फ़ुरकान जो खुदाई कि बनाईहै । मंगल किताबचारि एकही को हालकहैं एकमतनाहीं यातेबड़ी भ्रमताई है १५४ ज्ञानसमुझावै कोई बेदन किगाथ भाषि आगम पुराण आदिसकल दृढ़ाइकै । चातुरी बतावै बिषयानकी अनेक भांति आतुरी लखावै रणकाज भलिभाइकै ॥ राजकाज बातनमें भेदभाव भाषिकहै यवनादि विज्ञता सुनावै मोद पाइकै । मंगल सुजान होत दुबिधा लखात चित्त सुमति बिहीन मूढ़रहत चुपाइकै १५५ कोऊ कहै मक्के औमदीने में निजातहै । कोऊकहै निजात होत कोऊकहै काशी किधौं गयामें निजातहै । कोऊकहै रोजा औ नमाज़ बिन पारकहां कोऊकहै पूजापाठ सुमति दृढ़ातहै ॥ कोऊकहै दाढ़ी मेरी नूरहै खुदाई यार कोऊ कहै शिखाकीधौं धरम बिभातहै । मंगल कहत कोऊ सुन्नति ईमानदारी कहत जनेऊ कोऊ भ्रमही कि बातहै १५६ कोऊपट ओटकरि भोजन बनाइ खात कोऊखाइ अचवत चौकहीमें तातहै । कोऊ तनु भूतिलाइ बसन बिहीन डोलै कोऊ माला तिलक रँगत निजगातहै ॥ कोऊ मारि पक्षी पशु कहत बिहिश्त जात कोऊ बड़ो जैनी माँस मदिरा न खातहै । हिन्दू औ मुसल्मान आप आपन्काजानै मंगल कहत सब भ्रमही कि बातहै १५७ बेद बेद अंग इतिहास के बिवाद सुनै गुनै चित्त आपने कथान के बिधानको॥ सारासार बूझिमन बोधै बहुभांति नित्य सत्य ज्ञान ग्रामबास रहत सुजानको ॥ बेदको बनायो औ चलायो कासुद्वार तात चलत को ताकी चालि मानत प्रमान को । मंगल महान

भूल कौनी भांति दूरि होइ गुरू सत्यबादी कौनशिष्य ज्ञान मानको १५८ परम प्रधान बेद गावत कितेब जाहि कहैं शिर ताज सब लोगन में एकहै। रबिबिंबित भानु जहां करत प्रकाश नाहीं रोशन सों आपकीधौं सूरज अनेक है॥ अज शिव आदि काल होतजाके क्षणहिं में ऐसा करतार सदा अनव्यतिरेक है। सींक ओट मंगल पहाड़ जैसे भाषियत तैसे जीव पारब्रह्म बिबुध बिबेकहै १५६ सात सुरबास सात नागलोक आदि धाम काल बश सकल नशात श्रुति साखीहैं। नभपवमान शिखि नीर भूमि लोप होत माया अलगाय कीधौं कौनेथल राखी है॥ जोवन के पाप कृत दंड दानि कहां रहे ज्ञानिन के ज्ञान जानै कौनी गली नाखी है। मंगलत्रिदेव गुणतीनि एक भावहोवैं दुबिधा दुराशाको विवेक अभिलाखी है १६० पुनि उपजावै चारिखानिजीव देवासुर जहां तहां बासदेत ऊँचनीच धामहै। काने पापकीन्हो कानेसुकृत कमायो तबजाके फल भोगरोग योग अप काम है॥ असुर बराकद्विज श्वपचकहायो काहे करमप्रताप जोपै जाना अभिराम हैं। मेरे मन मंगल न भूलैतू बिबेक पाय कोधौं नाशिजात होत काकोधौं बिराम है १६१ तारागण द्वीपकहैं नभके प्रबीणकोऊ कोऊक है लोकन को होवतप्रकासहै। कोऊकहै अचल चलायमान सूरचाँद कोऊ बदैदेवता प्रतापी तेजभासहै॥ जाहिचषदेखै ताकी बातनाहींलेखै फिरि कैसेअवरेखै हरिअतनु अबासहै। मंगल विवेकसों बिचारि देखुआपुमांझ इतउत चारिओर मायाको बिलासहै १६२ मात पितुसोदर कलत्र सूरमोहरूप डारतसमुद्र बिषयान नेहनातेहैं। आगे त्यागिजातकोऊ पाछेको बिचारुचित्त सकलसमाज हितकारीनदिखातेहैं॥ कायाआप प्यारीजाहि पालत सुभोजभोजि संगतासुअंतकाल कौनजीव जातेहैं। मंगल समस्त झूठ कारोबार तीनलोक चापलाथ नेहजोरु नातेसबजाते हैं १६३ येरेमनमूढ़ तोहिं अधिक डरातिरहौं जानिके प्रधानदेह यामको सदाहीहौं।

सीतौभाव तेरेनेकपायो नपरीक्षाकाल चेटकी चटोरनीच जानो सबमाहीहौं ॥ अबन भ्रमावैबात अलिक अबूझभाषि शंकमानु मेरीभूप तेरोदास नाहीहौं। नातो पछितायमन मंगल अपार भांति जबैशुद्ध भावकहौ श्यामाश्याम पाहीहौं १६४ मनुजशरी-रदीन्ह्यो सुखभोग हेतुनाथ सकलविभूति ताके संगउपजाईहै। जगदुखरूपी सबभांतिन बिचारिचित्त परमसुजानप्रभुकीन्हीनि पुणाईहै ॥ भोगभाग योगयाग लोगनके शोगलाग भूलीमूलबा तदूत प्रेरणा प्रभाईहै। मंगल सुजान जन मायामद ज्ञानहीन इतउत काया मनधाया दुहूंघाईहै १६५ सवैया ॥शैविकहैं शिव बौधकहैं बुध जैनिकहैं प्रभु पारसनाथै। बिष्णुकहैं कोउशक्ति बदै गणनाथ पुरातन भाषतगाथै॥ ईसाकहैं कोउ मूसाभनैकोउ फौहरसूल मुहम्मदसाथै। मंगल सांचु सबैजन गावत खोजन हारके लागनहाथै १६६ तीरथन्हान करैब्रतसंयम दान अनेक न दैजोअनाथै। औघड़ ध्यान पियोमदिरा शुचिदूरिकरै रुचिपाथ अपाथै॥ मूरतिपूजि बजावत घंटन दीप दिखाय सुनावतगाथै। मंगलकर्म अस्वारथ है नहिं खोजनहार के लागनहाथै १६७ ठाढ़रहैं तनुदण्ड सहैं मुख मौनरहैं पशुलौं बनिजावैं। दूधपियै तजिअन्नभखै तृणधूमघुटै जलबास लु भावै॥ नग्नरहै बहुज्ञान कथै नित ध्यानधरै नसुनै नसुनावै। मंगल कर्म अस्वारथहैनहिं खोजनहारकेहाथन आवै १६८ कीजिय बेगिदया जनपै हरि-ये दुखरोग सबै यदुनायक। औषधमूल प्रतापतुम्हार धन्वंतरि रूपधरे गदघायक॥ शूलसमूल नशायकृपानिधि राखियदास कहौसब लायक। मंगलटेक तुम्हारिगहे नितआनके द्वारसुहात न पायक १६९ शूरगभस्ति नशावत नीरन जो बृषकी तपता तनतापै। ज्वालप्रकाश बुझाय समीरन जोप्रकटावत झंझप्रता-पै॥ कादरयुद्ध डरावतबीरन जो बहुसंगरके गुणथापै। मंगल धर्म मिटावत धीरज जोपृथुदण्ड प्रसिद्धप्रदापै १७० दारिदनि-न्दतहैं धनवानको जानतये अदया जगमाहीं। दीननकोधनवान

कहैं लघुतुच्छ कुबर्ण सदा भ्रम नाहीं॥ एक भुलान महामद लोभमें दूसरके दिन धावत जाहीं। मंगलसोइबड़ो बहुभांतिन जासुहिये हरिभक्ति लखाहीं १७१॥ दंडक॥ मनबश कीन्हे भोग चाहत न चित्त नेक कटुरस अरस कि नाहीं पहिंचानहै। भोगन किबात सुनि जिय अकुलात तात धाता सुरत्राता स्वाद काग बीटमानहै॥ शीतकाल ग्रीषम समान भाव धारे रहै अमित उदास रूप हरिरस सानहै। मंगल सुजान बदै सोई भूमि भागवान सुरुचि बिराग जाके ऐसो ज्ञान गानहै १७२ बिषयी समाज बिषरूपी जानि भागै दूरि हाटकादि सम्पतिबिचारैमोह हानीहै। नारी जग अखिल समान मातुज्ञाके चित्त अरिता हिताई दुरि भाई द्रोह सानीहै॥ देखत तमाशेसो धरातल अमोह रूप हँसत ठठाइ कहुँ रोवत अमानीहै। मंगल बिरागी सोई बेदभाव भाषियत रहत उदासी ज्ञान धाम अनुमानीहै १७३ बासना न ब्यापै जाके जीव काहूभांति और कामना सतावैनाहिं काजनमें जाहीहै। बसन बिहीन जैसे बासित जहानतैसे सेज अनसेज सोवै शोकताप दाहीहै॥ दीन हितकारी धनवान कौन नेह चित्त जोईभाव मानै ताकी सुमति सराहीहै। मंगल महीप कौनु दीन भूमिहीन रावबाके एकभाव रागत्यागी त्रिबिधाहीहै १७४ कामज्वाल दाहतन शुद्धचित्त शीतलको क्रोध नाग काटत न बेकामन जाकोहै। मदकी मदाई तट जात न सजान जानि लोभसिन्धु बोहित बिचारो ज्ञान वाकोहै॥ मोह तम बुद्धिमखि रूपीदेखि नाबिजात माया दाया हेरि जासु द्वारहून झाकोहै। मंगल बिरागी ऐसो बिदित त्रिलोक सत्य गावत प्रमाणसाधुबेदजाकोयाकोहै १७५ गुफाको निवासी बनबासीकहै पर्णकुटी नातो नेह सांचो जाके नामकोअधारहै। काहूसों न नेह बैर जात काहूद्वार नाहिं राति दिन भासकिधौं एकही प्रकारहै॥ देवता सिहात रागहीन देहधारि देखि यम अकुलात वाकेनामकी पुकारहै। मंगल बिरागरूप गावत सुजान ऐसो नातो दम्भ

मायामोह प्रेरेरागकारहै १७६॥सवैया॥ वा प्रभुके कछु जाति न
पांति न आश्रम बर्ण बिचार न कोई। देव अदेव न मानुष नाग
बिहायस औ पशु कीट न सोई॥ पांचहुतत्त्व परेगुण तीनिते
चौदहलोक निवास करोई। मंगल बुद्धिबितर्कनते परसोपरमा-
तमबेद बदोई १७७ जीवनमेंनित आपु बिराजत जीव सबैतन
तासु समाहीं। भाषतयों मुनि पण्डित आगम है अनकाय अ-
लिप्त सदाहीं॥ दूरिमहा सबतेअति पासहि है प्रतिठामन औ
पुनि नाहीं। मंगलके दुबिधा सुनिलागत द्वैत अद्वैत दुवौ यक-
ठाहीं १७८ बासरमें निशि देखिपरै नहिं औ रजनीमहँ घोस
न भाई। आगम एक निरागम दूसर बर्ण अबर्ण अकथ्य कथा-
ई॥ चेतन औजड़ एकस्वरूप नहै थिर अस्थिर की निपुणाई।
मंगलके न सँदेह रहा गहिएक द्वितीय कथाबिसराई १७९ जो
गुणखानि तोहै कबि कोबिद जो गुणहीन तो मूढ़ महाना। औ
तनहीनतौ शून्य बताइय जो तनधारि तो थूल समाना॥ जो
बिधि और निषेध बतावत तौ बपु सत्य धरे असज्ञाना। मंगल
देखु बिचारि सबै बिधि सत्य असत्य न जात बखाना १८०
छन्द॥ सातद्वीप नवखण्ड धरातल भर्योजीव बहु काया है।
सात पताल जीव बहुबासी अस्मृतिबेद लखायाहै॥ सातहुस्वर्ग
बसत सबजीवहि आगम ज्ञानिन गायाहै। मंगल पांच तत्त्वहू
जीवहि जीवबिना भ्रममायाहै १८१बाण और निरबाण बखा-
नैशमधाम दरशायाहै। उत्तम पुरुष प्रकृतिकृत तिहुंपुर प्रकट
जीवपद पायाहै॥जीवबिहाय मृतक जड़रूपी कोधौं काहिबना-
याहै। मंगल जीव अमर अबिनाशी जल थल आपु समाया
है १८२ जीव ईशयुत ब्रह्म बखानै सामबेद शुचिबानीहै।
आनहुँबेद भणैयह जीवहि पूरण पुरुष अमानी है॥ जोकोइ
जीवभावको जानै सो परिपूरण ज्ञानीहै। मंगल जिन आतम
निज खोज्यो माया तिनहिं डेरानीहै १८३ दातामुक्ति बसत
को काथल मुक्तिदेत पुनि काकोहै। फूटो पणव शब्दपर बंधन

जीवअलख जग थाकोहै ॥ दुखीसुखी नहिं अंध बाधिरो चलै न अचला थाकोहै। मंगलस्वयंसिद्धि नितआतम बंधनमोक्ष न वाकोहै १८४ जितै देखिये तितभरि पूरो कोईदिशा न खालीहै। लीलाआपु लखैया आपुहि कतहुँपुरुष कहुँआलीहै ॥ जड़चैतन्य भाव भवभारी मालाको कृत मालीहै। मंगल मालधारिहूमाली कर्त्ताकर्मसख्यालीहै १८५ ॥ सवैया ॥ सम्पतिके हित दम्भ दिखावत सम्पतिकेहित जीवसतावै। सम्पतिकारण वेषबनावत सम्पति कारण देह जरावै ॥ सम्पति कारण सेवक साहिब सम्पति कारण मौन लखावै। मंगल सम्पतिके बशडोलत बोलत शब्द मनोहर भावै १८६ आपनहीं मगशुद्ध प्रचारत आपनहीं मगबक्र सिधारै। आपनहीं उपदेश बतावत आपनहीं उपदेश बिचारै ॥ आपनहीं अधिआतम ध्यावत आपनहीं मतिहीन पुकारै। मंगल आपनहीं बड़ज्ञानन आपतो दूसर कौनपसारै १८७ आपन जानत ब्रह्मबखानत आगमबेद पुराण बिचारी। भूलबड़ीभवजाल भ्रमैनित दम्भकि पद्धति दीन्हप्रचारी ॥ सत्य असत्य नमानत तूमन अब न आव न जातपछारी। मंगलशुद्ध स्वरूपन ध्यावत बंधनमुक्त कि बाणि नियारी १८८ बंधनहैसुख इन्द्रिनको भवमोक्षहै नीरस गोकुल जोई। भावस्वभाव प्रभाव नजानत सेवत देवन स्वारथहोई ॥ जो दुबिधा अपनी बिभयी त्यहि त्यागत जीव कृतारथ कोई। मंगल ब्रह्मबिचारन भाषिय भाषत दूसर रूप कथोई १८९ जोप्रभु ज्योतिस्वरूप अरे मन तौनहिं तत्त्वशिखीकरि मानिय। शक्तिअनंत न जानिसकै बुधि ज्ञान त्रिबेक विधान प्रमानिय ॥ संतकहैं प्रभु दृष्टिनआवत मूढ़नकेसँग रक्षकगानिय। मंगल भूलमिटै न बिनागुरु कोटिक ग्रंथ सुनोजो बखानिय १९० देहधरे मनुजाद बिषय रस देह धरे मनमोह दुरावै। देहधरे दुबिधा बश भ्रामिक देहधरे शुचि आतम पावै॥देहधरे खलरूप कहावत देहधरे मुनि पद्धतिभावै। मंगल देहबिना सिगरोभ्रम बंधन मोक्ष न मोमन आवै १९१

सार असार बिचारन आवत त्यागत देह किधौं अनुमानी। जानत कोउन मानतहै मन यातनं हीन दुबुद्धि सुजानी॥ काल कलेवर लोक दृढ़ावत हीन शरीर न जानतप्रानी। मंगलजीवन धन्य धरातल बंधन मुक्ति बतावत बानी १६२ आपन बोध भयो न अरेमन औरन को कसज्ञान सिखावै। गाठरिया तककी उर मंदिर बाहिर उज्ज्वलवस्त्र दिखावै॥ ज्ञान बिबेक के रंग रँगोनहिं कातन में रज चन्दनलावै। मंगल सत्यबदै न सुनैमन ऐसे नहीं अपनो पद पावै १६३ आयुघटै प्रतिश्वासन शोचत मोहमयी मतवारु लगाहै। कोटिन मारग या भव में मनक्यों तिनको मत तू अवगाहै॥ अन्धकि दीपक राखि बिलोकत नैनन धारहिये उमगाहै। मंगल त्योंभव आतम ज्ञानहै जानतसंत असंत खगाहै १६४ पूरबके कृतदंड सभोग बतावतहैं सबलोग सुजाना। ब्रह्म प्रभाकिधौं ब्रह्म बिभागको जन्मतमै कृतनाहिं बखाना॥ जो प्रभु चाहत सोकृत जीवहि लागत है यह अद्भुत ज्ञाना। मंगल पूरब पश्चिम को तजि कीजिय ध्यानसदा भगवाना १६५ राम कथा सुनि नींद सतावत बामकथा श्रुतिदेत अभागा। पारसको तजि पाथरमानि गहेकर कांच सचिक्कन लागा॥ ज्ञानिन के ढिग भूल बतावत है व्यसनी सँगजी अनुरागा। मंगलजाति कुजाति सुमानिय ऊपरहंस जो अंतरकागा १६६ मान महाधन रूप गुमान सुबर्ण महामद जीव समानो। पौरुष मोह जो आश्रमगर्व स्वपंथको पक्ष अहंकृतभानो॥ फूलो फिरै खल लोभव बीथिन ज्ञानिनके तट जात लजानो। मंगल राम न ध्यावत जोनर सोइ महाजड़ जी अनुमानो १६७॥

झूलना॥ क्षर रूपकी बिस्तारहै सो पुरुषप्रकृति बिचार है नव तत्त्वको पुनि सारहै जानिजो सज्जन काय है। माया जो अगम अपारहै बहुभांति त्रिपुर बिहार है करनी करम करतार है सोई जो पूरण भाय है। दश तीनि सुर अधिकार है नर नाग पशुनभ चारहै कृमि अमित रूप बिकार है भवसकल तनसोनगाय है।

मंगल बखानत सारहै अक्षर सबन के धार है सो आतमा नरि-
धार है एकभाव जोन द्विभाव है १६८ जो जान अक्षर भाय
को रसना बिना गुण गाय सो आतम प्रकट दरशाय जो
दृढ़ सुमति के आधीनहै । भूलै न माया जालसो देखैसबी
जग ख्याल सो करि योग बिधिकछु काल सो निज आतमा में
लीनहै॥ सबकोनयह उपदेशिये उरज्ञानदीपक लेसिये चीन्हिय
बिदेशी देशिये तपजाप रत कि मलीनहै । मंगल चुपकि घर
बैठिये शुचिज्ञान मंदिर पैठिये मति शुद्धबिनुनहिं होतयह कृत
परमहंस प्रबीनहै १६६॥सवैया॥ श्रीमुनि व्यास पुराण किये
सब द्वापरमें कबिकोबिदगावैं। सत्ययुगादिकमें न पुराण कथा
इतिहास मनुष्य बतावैं ॥ तौ द्विजराज पुराण बिना मृतकर्म
कहौ किमि लोग करावैं। मंगल अद्भुत दंतकथा नहिं बूझनहार
के बैनन भावैं २०० देखिय दृष्टि पसारि दशौ दिशि नश्वरही
सबु देतदिखाई। जो अविनाश स्वरूप न ताकर है सबमें गति
शब्द सुनाई ॥ मौन रहौ सब औ कहौ जनिठौर न ठौरबड़ी
प्रभुताई । मंगल आपन आपुनं जानत खोजत ईश्वरहै अधमाई
२०१ ब्रह्मबिहाय न देखिय कारण कारण रूप बिचारिय माया।
माया बिहीन न ब्रह्म बिचारक जानत ज्ञानधनी शुचिकाया॥
दोउन में नहिं अन्तर भाषत कोबिद ज्यों तरु औ तरुछाया ।
मंगल बूझिपरै न बिना गुरु सोउ मिलै न दुराय दुराया २०२
केतिक कल्पगये भवभ्रामिक आपन धाम न पाव सुवासन ।
योनि कुयोनि सुयोनि फिरयो अबऊरधकी पकरेमन आसन ॥
जानि न जात गली निज ग्राम कि सत्य असत्य कि बाणि दुरा-
सन। मंगल राम कथा कछु जानत मानतहैं नहिं पूरण बासन
२०३ पाखँडको तन बेष बनावत बातन में निजबोध करावै।
आपनि बुद्धिभरयो न कबौं गुरु आननको नितसीख सिखावै॥
मोह भयी मतिहै अपनी बहु लोगनको निरमोह जनावै। मं-
गल ढोल समान कहौ तेहि शब्द बड़ो उर खोखलखावै २०४

जाकहँ नेकहुज्ञानप्रबोधहै सो न मिलै हितसों हितकारी। द्वैत
कि बुद्धि लगी मनमूरुख को निरबाण बिलास बिचारी ॥ सं-
भ्रम बोध दुवौ उरमें अपने चित कौन कहै बिधिचारी। मंगल
चोरन साधुबखानिय जो नहिं जीवनलेत उबारी २०५ राम
नहीं तबरामजपैं सबहै प्रह्लाद कथा परमाना। जानियराम
अनादि कृपानिधि बेदपुराण बिबेक बखाना ॥ राममुये नितराम
रहे मग लोगनके शुचि आवतध्याना। मंगल बूझबड़ी लघुना-
हिन आगिल पाछिल होत समाना २०६ बिष्णु सतोगुण रूप
बखानत होय त्रिबिक्रम यज्ञ नशायो। नाहिं सतोगुण में छल
चाहिय नारदको कपिरूप बनायो ॥ बाम जलंधरको ब्रतघालि
वधो सुर भानु सुधा जब पायो। मंगल का कहिये रचिये चुप
सत्य असत्य न जात गनायो २०७ शंकर रूप तमोगुण गावत
योग समाधि बसैं बहुकाला। जानत ज्ञानसुधीं समता अरु
बेषबिबेक धरे गतजाला ॥ देत अभिप्रियदान सबै भवदान
दया बिनुको प्रतिपाला। मंगल मौनरहौ दुबिधा यह स-
त्यक तामस में कृतख्याला २०८ जो पुरुषोत्तम सो जनु
भानु है घाम समान गुणौ त्यहि माया। घाम बिपेरबि देखि
परै बिनु घाम न पूषण को लखिपाया ॥ सूरज हीन न घाम
बिलोकिय जो घन मध्यतौ दोउ छपाया। मंगल सो भ्रममोह
कहौं ज्यहिजीव सदृष्टि निरक्ष बनाया २०९ ज्योंजलमें चिक-
नाहट देखिय कोटि मथे नहिं आवत हाथै। त्यों यहजीव बि-
हाय शरीरन नैनबिलोकिय ज्ञान कि गाथै ॥ ब्रह्म अपूरबबस्तु
न भाषियमानिय सांच न झूंठ न साथै। मंगलतूकिबिसूढ़बड़ो
क्यहिनाथ बखानत जाहि अनाथै २१० ज्ञान कहै सबमें हरि
मानत ज्ञान कहै सबही बिधिन्यारा। शून्य समान दई उपमा
अबबोध भयो कि अबोध बिचारा ॥ नाक अहै जड़ चेतन ना-
हिन ह्यांजड़ ते तन चेतन धारा। मंगल ज्ञान गुणे उरमें भ्रम
ज्ञान बिहीनमहा अंधियारा २११ ॥ कवित्त ॥ मुसल्मान बेचून

बतावैं हिन्दूकहैं अनूपाहै। दोनौंथके खोजते भाई किया किसो न निरूपाहै॥ चित्र बिचित्र कहैं गूनागूं मध्य में छांह कि धूपा है। मंगल है कहने की नाहीं रूप बिना बहुरूपाहै २१२ बदैं कबीर कमलमें संपुटसत्य पुरुष अनमायाहै। सो विज्ञानरूपधौं तत्पद चतुरमहामति गायाहै॥ सत्यलोक में शुद्ध सतोगुण असि पदसोन कहायाहै। जहँलगु रूपहोयनहिं असिपद मंगल रूप न आयाहै २१३ त्यहिथल बसत हंसबहुतेरे दरशि परशि सुख पातेहैं। अमृतभषै पुरुष अरु नारी उर अनुराग बढ़ातेहैं॥ सत्य नाम पाटक तहँसोहैं पापरूप नहिं जातेहैं। मंगल तौन होय बहु असिपद पक्षापक्ष लखातेहैं २१४ हंसहंसिनी द्विविधि बतावैं निज निज मुख आनन्देहैं। भिन्नभिन्न गृहसकल बिलासी पुरुष चरण नितबन्देहैं॥ क्षुधाविवश अमृत आहारी माया मोह निकन्देहैं। मंगल अभय बपुष जीवनको क्योंकरिकहत स्वछन्दे हैं २१५ कहत कबीर पायअनुशासन हम जगजीव चितातेहैं। पलटिजाय भवकथा मनोहर ताकहँ सुरुचि सुनातेहैं॥ बिधि निषेधको दाता ठहरा सुखसागर सब मातेहैं। मंगल तत्पदही यह कहिये असिपद कहां लखाते हैं २१६ जहँलगि सुख दुख रूप अनूपा ज्ञान बिबेकबतावैजू। लोकअलोक हंस औ हंसिनि अमृत बिषदरशावैजू॥ तहँलगुमाया मोह बखानिय क्यों अपनेमन भावैजू। मंगल समुझिबूझि गहु सांची द्विबिधा ध्यान न आवैजू २१७ सत्य असत्य लोक कोउ कहिये दुबिधा भ्रम बिज्ञानीहै। सत्य लोकमें बसत हंस सब काग असत्य प्रमानी है॥ जीवहि खात काल यमरूपी जो पुरुषोत्तम ज्ञानीहै। मंगल महा दुचित की कथनी अपनी अपनी मानीहै २१८ शब्द मृदंग बांधि यमराजा तुरत नरक में डाराहै। रोवत शब्द नर्क में बहुबिधि पुरुष हुकुम शिरधाराहै॥ तबकबीर करि महा परिश्रम शब्दहि जाय उबाराहै। मंगल सुजन बिबेकीदेखैं सत्य असत्य बिचाराहै २१९ एक नशत रजतमके आगे शुद्धसतो-

गुण जानाहै। एकन ज्योति आदिकरिगाई एकन प्रणवबखाना
है॥ एकन बयो पुरुष अबिनाशी दियाजीव परवानाहै। मंग-
ल एकशून्यपद अटकेसत्य असत्य गुमानाहै २२०॥ सवैया॥
एक बिराट स्वरूपबदैं यक अक्षरमें लवलाय रहेहैं। एकनिरं-
क्षर रूप बखानत एक समाधि समान गहेहैं॥ शक्तिहि एक
बदैं शिवरूपहि बिष्णुमयी यक योग दहेहैं। मंगल एकबदैंदश
रूपहि सत्य असत्य दुवौ निबहेहैं २२१ एककहैं जगदादिश्र-
नादि महाभ्रममें यकचौबिस गावैं। एकलगे सबौंग बिचारहि
एक सुरोदय ज्ञान बतावैं॥ ज्योतिषको यकसारबतावत एक
ते जीवनि रूप लखावैं। मंगल एक कहैं सब ठामन आपुन
आपनमें चितलावैं २२२ एकभनैं हरिरूप मनोहर एकअरूप
गुणैंचितमाहीं। एक अकथ्य बताय कथैं फिर एक कहैं अज
जन्मतश्राहीं॥ एक बदैं हमहीं परमातम एकते आपहि जा-
नत नाहीं। मंगलजाहि न जानिसकैं बुध ताकहँ खोजनमूरुख
जाहीं २२३ जाकर रूप अरूप बदैं मुनिधाम अधामकहैं कबि
ज्ञानी। हैनअहै सब ठामन ठामहिं देवअदेवकिये रुचिमानी॥
पण्डित नाहि न मूरुखनिर्गुण औ नहिं सगुणमानअमानी।
मंगलदेखु बिचारिहृदय निज ताकहँलोगकथैं अनुमानी २२४
जाथल बासकरै परमातम वाथलभानु निशाकर नाहीं। बाणि
बिधान न बेदकितेब न ज्ञान बिबेकन हंस लखाहीं॥ चेतन
बुद्धिनहै मन चित्त अहंकृत औ अनुमान न ताहीं। मंगल वा-
थल जाइ न आवत बुन्दसमुद्रहि जाइ समाहीं २२५ देवन
कोन स्वभावलिये प्रभु दैत्यनकी नहिं पद्धति लेखी। नागमनु-
ष्यन कीट पतंगनहीं खग खेचर चालि बिशेखी॥ तत्त्वबिबेक
नहीं गुण तीनिहुं ना अजपा सजपामतिदेखी। मंगल केवल
आप न दूसर सो किमि गावत भूतलरेखी २२६ योगकियेसु-
बियोगहि आवत रागबिहीन सुरागहि सोहै। कर्म प्रचारक कर्म
न बंधित धर्मनते अनुप्रास बिमोहै॥ ज्ञानिनके अनुमान लगै

अरु ध्यानिनके उर मूरतिजो है। मंगलयज्ञ शिखीमुख सोहत सत्य असत्य दुवौयककोहै २२७ज्यों बलयाकृतमें नहिंआदि न अन्त बखानिसकै कबिकोई। उत्तर दक्षिणता मधि नाहिंन क्यों ध्रुवधाम कहेदृढ़ होई॥ कोटिन बार भ्रमै चहुँ ओरनि सीमन पायसकै दुख जोई। मंगल बैठिरहौ अपने घर आदि अनादिन ज्ञात कथोई २२८ रामनहैं बिनु राम रमैनहिं कामनसो बिनु काम न जावै। रूपनहीं बिनु रूपको गावत भूपनहै तो प्रजाको कहावै॥ सिद्धिनहै बिनु सिद्धि कि सांख्यक वृद्धि न है तन क्यों बढ़ि जावै। मंगल ज्ञानगहै दृढ़कै फिरि पूंछि बताइ चुपाइ चुपावै २२९ ज्यों यक नाक कटाय बनैंमुनि ब्रह्म कि मूरतिनैन लखावैं। आनहुंमूढ़नकै गुरुता कह मोहमयी मनमें पछितावैं॥ सत्य असत्य न भाषि सकैं नभकी दिशि तर्जनि आपु उठावैं। मंगल त्यों अबआपन हाल जो लोगकहैं सोकथैं ओकथावैं२३० मच्छ कहेभ्रम कच्छ कहे दुख शूकर औ नरसिंह न भावैं। बामनमेंछल क्यों भृगुनन्दन क्रोधतुराम अगम्य गनावैं॥ श्याम बदेरल बोध भगे त्रस कल्किकथ दुबिधा न दुरावैं। मंगल सत्य दशौ अवतार सुशून्यतेहैं किन बांक भ्रमावैं २३१ देखि पिपीलनिकेत नृपालका आपन चित्तकरै अनुमाना। कोअन जीव जो याहि बनावत आपुहि आपुभयो निरमाना॥ भूमि अकाश बिलोकि तथा बुधजैनबदैं कि अनादि अजाना। मंगलक्यों उनको समुझावत अंत सुरंगति क्यों पहिंचाना२३२ कर्मनको फलदायक नाहिंन तो फिरि कर्म वृथाजगमाहीं। जापै कहौफलकर्मको कर्महिं देवतजीवहिहैं सबठाहीं॥ तौ नहिंज्ञान अज्ञानबदैं ब्यभिचारिन आपनि नाक कटाहीं। मंगल जोन महीपति तौकिमि हंतक फांसिचढ़े मरि जाहीं २३३ आपन धर्मजो त्यागिगहै पर ताकर बात न मानिय भाई। ज्यों तजि आपनआन गहो तिमि सो परित्यागिकै आन गहाई॥ नारि पतिव्रत त्यागि यथारत आनहिं तो फिरि सत्य गमाई। मंगल आपन धर्म सुअन्य अपार

बिधानगहे भ्रमताई २३४ सारअसार बिचार भलीबिधि कीजिय कर्म सुकर्म बिकर्मैं। सज्जन सम्पति ज्ञान विवेकगहै शुचि धर्म स्वधर्म बिधर्मैं॥ मूढ़मता न सुनैंकबहूंन कुपंथ कुघातमेंमानिय मर्मैं। मंगलसंत समाज बिना बुधि उत्तम होत न कोटिकुभ-मैं २३५ मूरुख को नहिं बीज गहाइय पात दिखायके फूल लखाइय। शाखचिन्हाय बतावैफलै त्यहिको पुनि स्वाद अस्वाद चखाइय॥ मूल सुझाइके बीज कथा कहि ऊपरकेसब अंगदुरा-इय। केवल बीज दृढ़ाइय मंगल तौ जनु उत्तम ज्ञान गुनाइय २३६ तीरथ औ ब्रतनेम अचार सबै करिकै जब थाक गुमानी। ढूँढ़तहै तब सार असारहि ध्यावत राम सदा रुचिमानी॥ मोह दुराय गलीगहि ज्ञान कि मुक्ति पदारथ यांचतज्ञानी। मंगलमुक्ति अमुक्ति दुवौ तजि आपनको तब बूझत प्रानी २३७ जासन इं-द्रिनको सुखहोवत तासन प्रीतिभली मनजोरै। जानत यासम आनन दूसर प्रेम गलीमिलि ज्ञानहिं तोरै॥ जा प्रभुने तन औ मन बुद्धि दिये त्यहिके सँग लावत खोरै। मंगल ताहिते अन्त समय दुख मध्य महाअघमें चितचोरै २३८ काम बिहारमें भो मन लज्जित केतिकबार अजौं न तजैरे। मादकता मदकी उतरे पछिताय बहोरि सुराहि सजैरे। चन्द्रकुबेर सुरर्षि सकौशिकऔ न कबीर कथाते लजैरे॥ मंगल का कहिये मन तोसन भोगकि चाह न राम भजैरे २३९ क्रोध कि आगि जऱ्यो बहुधा पुनि ताहितमें अनहेत न ठानै। राम महेश धनुर्द्धरकी गति जानि नतू उर ज्ञानहिं आनै॥ या खलके सँगहोत अधोगति लांछनतेनबचै अनुमानै। मंगलशोचि अजौं तजि क्रोधहि श्यामस्वरूपहिकोकरु ध्यानै २४० त्यागिके लोभ दुराश दुधा भजिले निजआतम आ-नँदखानी। बालिसुयोधनऔनलकीगति बूझिचलै नलहैकछुहानी॥ पंडितज्ञान निधान तपेश्वर लोभहि हेरिडरैं सबप्रानी। मंगल क्योंसमुझै अपनीमति अस्थिकि सूखचचोरतश्वानी २४१ आपनि मोहमहा रिपुयातनमें निबसै न बिलोकतमोमनकूरा।

आपनि भाषतहैं सुतनारिसबै भवधाम अधूरा ॥ अन्तन आपनि देह बिचारिय संगिनि तौ यह झूंठ गरूरा । मंगल चेति अजौं भजु आतम राम प्रतापसदा भरिपूरा २४२ एकहि ईश्वरमय जग देखिय एकहि शक्ति बनावन हारी । एकहि सूरप्रकाशकरैं दिन एकनिशाकर रैनि उज्यारी ॥ एकहि कालभरा सब ठामन एकहि नाम कि पद्धति प्यारी । एकहि रूप अरूपसो एकहि मंगल दूसर कौन प्रचारी २४३ ॥ कुण्डलिया ॥ मायाब्रह्म बिचारिये ईश्वर जीव प्रमान । चन्द्र सूर दिन रैनि बुध अबुध अचेत न ज्ञान ॥ अबुध अचेतन ज्ञानपाप अरु पुण्य कहावै । आवागमन बिबेक मोह जीवन मृतु भावै ॥ मंगल सेवक साह निधन धनवन्त बनाया । देव दैत्य गुरु शिष्य दुबिधि रचिराखे माया २४४ कीन्हें त्रैगुण देव श्रुति तीनि काल गदमान । त्रैसन्ध्या त्रैलोक पुनि तत्त्वमसी त्रैज्ञान ॥ तत्त्वमसी त्रैज्ञान राम त्रैरूप लखावा । तीनिचरण ओंकार तीनि तापन तन तावा ॥ मंगल त्रैसिद्धान्त तीनिरुबि काव्यहिलीन्हें । तीनि देहभ्रमि जीवबिना कृत आतम कीन्हें २४५ ॥ षटपद ॥ चारि बर्ण बिस्तार चारि आश्रम श्रुतिचारी । चारिकिये उपवेद तत्त्व चारिय निरधारी ॥ चारि चरण शुभधर्म चारियुग मुक्तिबखानी । साधन चारि बिचारिअवस्था दिशिहरि पानी ॥ अरु बिरंचिके चारि मुखमुनिसनकादिक चारि गनु । शुचि मंगल मनगति चारि कहि चारि चतुर श्रममध्य भनु २४६ पांच तत्त्वनिरधार कोष पुनि पांचगनाये । ज्ञानेन्द्रिय बदु पांच प्राण कर्मेन्द्रिययाये ॥ मोहादिक पुनिपांच अवस्था पांचबखानी । बर्णबर्गलखु पांचध्याय सरशरसुमानी ॥ पुनि पंच बदन शिवरूप कहि जोशैवी ध्यावत सहित । मंगल बिचारु सबपंच मति मायामोहसमान चित २४७ शिव सुत मुखषटलोक राग षटजानु बिकारा । बेद अंग षट होत सुरस षट आगम धारा ॥ षटपद शब्द अभंगयथा षटउर्मी जानिय । बिप्र करहिं षटकर्म दिशाषट सुमति बखानिय ॥ बदु प्रीति

भांति षट सुकुल षट षट समाधि भूलाजगत । पुनिषट चक्रनके माहिं परिऊरधकी अधकोखगत २४८ सप्तद्वीप बिस्तार स्वर्ग लखु सप्तसुहाये । सप्तसिन्धु आवर्त्त सप्त पाताल बनाये ॥ सप्त ऋषय परिवार सप्त दिन भूमि कहैं सब । सप्तपुरीबिख्यात सप्त रामायणहैं अब ॥ अरु राज्य अंगसुर युद्ध भणि सप्त बायुसुरपुर कहिय । सबईति भीति अरु अप्सरासप्तावर्णन सुखलहिय २४६ अष्टकुरी पवनारि अष्टबसु कहिय सुजाना । अष्टदिशा गृहहोत अष्टभैरव अनुमाना ॥ अष्टप्रहर दिनरैनि धातपुनि अष्टबतावैं । कृतप्रमाण अष्टांग अष्टसिधि करतललावैं ॥ अरुसाधि योग अष्टांगबुध बैठि रहत समधीय ह्वै । कब सथिर होत मनमोद ते ब्रह्मभक्ति गात्रत नह्वै २५० देहद्वार नवजानु भूमिनवखण्ड बिचारिय । नव नाड़ी बिख्यात रत्न नवग्रह नव धारिय॥ नवरस बिदित जहान काव्य कबि जाहिं भुलाने । निधि नवबश्य कुबेर सन्त जन त्यहि न लुभाने ॥ करिभक्ति भांतिनव भजनबुधनिज आतमको उद्धरत । बिनु बोधभये मंगल सुमति अध ऊरध डग मग फिरत २५१ दशम शून्य बिस्तार अङ्कयुत दशगुण होई । अङ्क रहित भ्रमरूप बरणिसक बिबुधनकोई ॥ तहांपुरुषसिद्धान्त कहत अबिचल विज्ञा..ी । क्यों बोधैं मम बुद्धि एक नहिं शून्य प्रमानी॥अरु तजि नवाङ्क भ्रमजाल सब शून्य स्वपद ह्वैचतुर । ह्वै जाय शून्य मंगल कहौ पलटि कहैको झूंठफुर २५२ एकादश पुनि किये एकधरि शून्य सुधामा । द्वादशादि अधिकारयथा क्रम रचि अभिरामा ॥ शत सहस्र लक्षादिकिये बिस्तृत संसारी । है सबको सिद्धान्त एक इत शून्य सम्हारी ॥ सो जानि चतुर तजि भूल भ्रम प्रथम शून्य पुनि एक गहि । ह्वै तीनि चारि शरषट दिवस गज नवमंगल सुगम लहि२५३॥ सवैया ॥ कोउ कहै नवभांति भजौ अरु योग करौ गज अंग सुहावा। सातहुस्वर्गकेपारबदैं षटरागबदैं शरतत्त्व लखावा॥ चारि सुमुक्ति दृढ़ावत एकभखै गुणतीनि दुपक्षसुनावा । एकसनातनब्रह्मबता-

वत मंगल शून्यकथा कब गावा २५४ शून्य बिना दशगुणन अङ्कन अङ्कबिना कछु शून्य प्रमाना । दोउनमें निरधारन देखिय क्यों अब भाखिय ज्ञान अजाना ॥ शून्य बिचारत नास्तिकहोवत एक सुनावत द्वैतमहाना । मंगल काहि बुझायकहै अपने मन की मनमें अनुमाना २५५ पांचहु तत्त्व नहीं गुणतीनिहुं शब्दस्वरूप मिलैसो मकारा । नाशि मकार उकारमिलै नशिअर्द्ध उकार अकार बिहारा ॥ अर्द्ध अकार भई पुनि शून्यसो पूरुषके तन बास बिचारा । मंगलसोप्रभु आदि अनादिहै दूसरताहिन जाननहारा २५६ संतसबै अनुमानि बदैं अरुबेद कितेव थके गुण गाई । सोकिमि जानिसकै खल तूमन भाखि अनेकन पंथकथाई ॥ सत्य सबै नअसत्य बखानिय आपन आपहिते गति पाई । मंगल दूसरनेह अस्वारथ अद्भुत ज्ञानकथा सरसाई २५७ ज्ञान गुणे निरधारनहीं अरु ध्यानधरे नहिं देत दिखाई । पूजनमें नहिं रूप बिलोकिय तीरथमें जलही जलभाई ॥ पाठनमें कबिबाणि भरी ब्रतमाहिं सताव क्षुधा दुखदाई । मंगल मौनरहौ अपनेघर नामकहौ जोचहौ दृढ़ताई २५८ जापिथके अजपाकितनेबहुपूरककुंभक रेचक थाके । शून्य बताइ थकेखल केतिक एकबखानि थके श्रुतिगाके ॥ जोति बिचारिथके यकहै बिधि शंभु गिरापति कंत रमाके । मंगल थाकि कथा कथिकेतिक अयन पाछे गह्योपद काके २५९ अग्रवहै जो बिलोकु पछारिय आपुवहैनत भूल कहा है । देखतजोन स्वरूपनआंधर ज्ञानगुणी अगुणीहुमहाहै ॥ है अरु नाहिंकहै बड़िचूकसो हैअरुनाहिंके मध्य रहाहै । मंगलरूपअनूप स्वजीवहि हैअरु नाहिं दुर्बोम गहाहै २६० सिद्ध समाधि लगाइ रहे चुपयोग यती करियोग चुराने । देवअदेव बिचारिथके मुनि कोबिद बेदबिधानबखाने ॥ गाइचुपेकितनेकबिउत्तमजंगमसेबड़बौध थकाने । मंगल जाहिन भाखि सके सिव ताहि लखावत पाखँडसाने २६१ दृष्टि उठाय बिलोकिय जादिशि तादिशि में भर पूरिरह्यहै । रूपअनेक अपारस्वभावन आनहिं आन बिचारगहाहै ॥

नाम चराचर भेदनभावत द्वेष अद्वेष विहाय कहाहै । मंगल द्वेष अद्वेष किआपु करावतहै निजतंत्र लहाहै २६२ आपुवहै कमलासन औशिव बिष्णुवहै नद्वितीय बिचारिय। सर्ग सहस्थिति नाश करै गुणतीनि बनाइ त्रिदेव स्वकारिय ॥ आपुगुणेतर सत्यप्रकाशक दूसरकोन बिलास निहारिय । मंगल सोपुरुषोत्तम अद्भुत आपन चित्त स्वरूप सम्हारिय २६३ आपुबनावत पालत मारत दोषनहै जिमि होत किसाना । खेतहिजोति बिया शुचिओवत जामत सींचि निकावत स्याना ॥ पाकत काटत पीसत खावत दोषनहीं कछुबेदबखाना । मंगल जोनर काट द्वितीय सु चोरमहाजन मारिय प्राना २६४ एककहैं जलपै महिज्यों बुधक्षीरके ऊपर होत मलाई । कोउभणै भुवअंड समानहै घूमतहै क्षणना ठहराई ॥ एकवदैं जनु पाटबिछी यकबादतहैं अचला दृढ़ताई । मंगल गोअहि शीशधरे यक बायुगहेदुबिधानमिटाई २६५ एकनके मत भानु निशाकर देवबड़े नित पूजनठानैं । एकनकेचित लोक प्रकाशित खेचर पूरणज्ञान बखानैं ॥ दीपवदैं यकहैं नभके यक अद्भुत कारणको अनुमानैं । मंगल नैन बिलोकिन जानत ईश्वरकी गति क्योंपहिंचानैं २६६ जायछपैं अस्ताचल सूर उदय उदयागिरि होत प्रभातैं । एकगुणैं महिउत्तर जाइके प्राचि प्रकाशत आइ सोप्रातैं ॥ घूमतहैमहिसूरनडोलत होतदिवानिशि एककहातैं।मंगलभूल लखेउर आवत जानतको परमातम बातैं २६७ एकगुणो शशि राहुग्रसै जबदेव सहायकरैं तबआई । एक कहैं महिमध्यदिनेशनिशापतिके त्यहिकी परछाई॥एक चुपाइरहे अपनेघर भाषिकहैं हरिकी प्रभुताई । मंगलदेखत सोनहिं जानत क्योंपरमातम देतलखाई २६८ सत्य दयानिधिदृष्टिसमानबिलोकत पालत साधु असाधू । कर्मबशी भवजीवन चेतत ऊषरभूमि असस्य विषाधू॥मेघदियो जलऊषरमें उपजाउमहीयकको अपराधू । मंगलकर्मस्वभावनको फलदुःखअदुःख तरीनअगाधू २६९ रामवहै सब ठामवहै गुणग्रामवहै अगुणी पुनिसोई । लोकवहै

जुअलोकवहै निरबाणवहै मुनिबाणकथोई ॥ तत्त्ववहै सतसत्य वहै जुगुरुत्ववहै लघुतान बड़ोई। मंगलजोकछु भाषिकहौ यक आपुरम्यो नहिं दूसरकोई २७० कोटिन आकृति भांडधरै रबि सन्मुख धूपपरै तिनमाहीं। जोजसि आकृति तामधि सोतिमि भिन्नअभिन्न मिलै अरुनाहीं ॥ त्योंजस मूरतिहै तसजीवहु टेढ़ कुडौल सुडौल लखाहीं। मंगल अंतटरै भड़वायक रूपन दूसर की परछाहीं २७१ जेतिक भांडधरै भरिनीर बिभाकर सन्मुख जायनिहारै। गोल त्रिकोण चतुर्भुज टेढ़में बिम्बप्रभानिधि एक प्रकारै ॥ त्योंचहुंखानि बिराजत जीवसो एकहिभावकबोध पुकारै। मंगल अंतन द्वैतकछू इतविप्र चंडारक्रिया गुणधारै २७२ ब्राह्मण शूद्रइतै निजभाव उतैकछु जातिन पांति अहैरे। वर्णगुमान वृथाउरमें लघुता गुरुता शुभकर्म दहैरे ॥ दोष कलेवरको नहिंजीवहि क्योंभ्रमरूप अपार सहैरे। मंगल नीच कुलीनतुहीं बड़मूरुखसो जोद्वितीय कहैरे२७३ सूनुविरंचिके चारिभये यक ब्राह्मण क्षत्रिय दूसरगावैं। तीसरवैश्यजुशूद्र चतुर्थ महा अनुमान सुनेमनआवैं ॥ ज्ञान विवेकके चक्षु बिलोकत चारिहुएकहि पिंडदृढ़ावैं। मंगल लोगन मानिलियो नतवर्ण सुएकहि अन्त कहावैं२७४ कर्म महीसुर कर्महिं क्षत्रिय वैश्यहु शूद्रजो कर्मप्रभाऊ। कर्म परित्यजि ज्ञान विवर्द्धत चारिहुमें यकदुष्ट स्वभाऊ॥ बूझत शुद्ध स्वभावहिये बसवर्ण विवेकन जानतकाऊ। मंगलआपनिभूल भ्रमावत नातरुब्राह्मण शूद्रअभाऊ २७५ योगिबने यक जङ्गम दूसर सेउड़ तीसर चौथ सन्यासी। पंचमहैं दुरवेश कहावत षष्ठम ब्राह्मण शुद्ध उदासी ॥ आपन मारगकी मति भावत आपनहीं रसमें चितभासी। मंगल जोषटहू यकठा रसहोइ अनूप अकथ्य प्रवासी २७६ कामकिखानि समुद्रकि लोभके मोह के धामबसैं मनसोई। क्रोधकि मूरति सूरतिद्रोहकि चौममता मद पूरणजोई ॥ अंगविभूति जटाशिरपै मृगछाल कमंडलहस्त धरोई। मंगल साधुकि भीषम जानिय नामपितामह पूतन को-

ई २७७ शिष्यकरैं धनआशलगी मन मानकि पद्धतिचित नि-
वासै । पंथ चलावत वेद विवर्जित ज्ञान गुनावतहै अनयासै ॥
ब्रह्म लखावत नैनसदा ज्यहिहेरि फिरे मुनिसंत उदासै । मंगल
लाखलखेरनके घर झूंठनके मुखमें किधौंभासै २७८ वोहितपंथ
भवार्णवमें बहुशिष्य चढ़ायलिये सुखमानी । आपुनहीं कनि-
हारमहा भ्रमपंच प्रभूतभ्रम्यो अभिमानी ॥ पारलहै किमिमध्य-
हि बूड़त मोहबयारि उछालत पानी । मंगलभूल जहाज चढ़ौ
जनि बैठिरहौ अपने घरआनी २७६ जौ कनिहारमिलै युतबो-
हित तौनतजौ करिकै चतुराई । धाइनजाइ चढ़ौ बिनबूझ जो
पारते आवत लाग लुगाई ॥ पूंछितिन्हैं पुनि खेवट यांचिकैहेरि
सबैतन वोहितभाई । मङ्गलशुद्ध समाजचढ़ौ गुरुदेव प्रतापलगौ
उहिधाई २८० शुद्ध अशुद्ध न मानत नेकहु अंतरमें अपनेभ्रम
भारी । आननहूं उपदेशतहैं जनुधर्म बिनाश कि मूरति धारी ॥
एक सनातन ईश्वर मानत सो न मिलै अपने मतचारी । मङ्ग-
लका कहिये हरिदासन दण्डप्रणाम करौ सुखकारी २८१ वेद
सुचारिकहैं ऋगओ यजु साम अथर्वण धर्मपुराना । चारिकिताब
ज़बूर इँजीलकहौ तब रेतजु है फुरकाना ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय
वैश्य जु शूद्रहु चारिहुवर्ण किये निरमाना । सैयद शेखजु मुग्ल
पठानसा एकते चारि कि भूलकि ज्ञाना २८२ जाति न पांतिन
वेद कितेबन पीर गुरू न मुरीद न चेला । होत भये मनुयौं किधौं
आदम तादिनको मन अद्भुत खेला ॥ जाबिधि बाढ़िगये नर भू-
तल सा बिधि बन्धन मोक्ष प्रहेला । मंगलजाति किताबभयेतब
युत्य अनेक कि ठेलमठेला २८३ ज्योति दिखायके मोक्ष
दृढ़ावत पावकतत्त्व न ब्रह्म अनादी । रेत बियाय बदैं गतिएक
सो बारिकोतत्त्वकि मोक्ष प्रमादी ॥ मंत्रजपाय के मुक्तिबता-
वत अक्षर रूपनसो अविवादी । मंगल मौन भली नवकौ अव
वस्तु अकथ्य न दूसर बादी २८४ जो श्रुतिके विपरीत भयो
कछु बोध स्वरूप गया अवतारी । बिप्रन निंदक कीन्ह अपूजित

को पुरुषोत्तम बाणिनिहारी ॥ श्रीजगनाथ सबैयक ठामहिं भोज जिमावत बेद बिसारी । मंगल निंदक कोउन भाषत एकादशी जहँठाढ़ि पछारी २८५ छंद ॥ सेतुबंध शिवदर्शन कीन्हे देहद्वारिका जारीहै । बद्री उदर कुंडजल पीकर सकल व्याधि निरवारी है । पुरुषोत्तम पुर भात खाइके काशी करवा धारी है । मंगल मुण्डप्रयाग मुड़ाया तदपिन आशा हारी है २८६ मक्केजायकरी हज अकबर सबगुनाह बखशाये हैं । करी जियारत जाइमदीने कर्वला फिरि आयेहैं ॥ दबी क़ुरान बगलमें भैया हाफ़िज़बड़े कहाये हैं । मंगल कवनि जात जो दिलमें हिरसौ हवा छुपायेहैं २८७ ॥ सवैया ॥ श्रीजगदीश्वर तोहिं कोजानत आपनहीगति जानिनपाई । आवकहां कयहिग्राम निकेत को जाबकहां तजि काय स्वभाई ॥ क्यों ठहरे इतको ठहराइसि ज्ञान अज्ञान कि बाणि सुनाई । मंगल जानिसकै अपनी गतितौजनआपन धामहिं जाई २८८ मारग भूलिगयो मतिमें भ्रम पंथिभ्रमाय महा बिकलाई । क्यों अपनो शुचि मारग पावत जाननहार मिलेबिनु भाई ॥ त्यों यह जीव बिषयरसलंपट जात जितैतितही भ्रमताई । मंगलसंत सुजान सुमारग जानतहैं अरु देतबताई २८९ ॥ बिष्णुपद ॥ हरि गतिजानि सकत कोभारी । मायापति अज अकर अनामय अलख देव असुरारी । नरतनु धरै स्वबश करुणा करलखत न बिधि त्रिपुरारी ॥ मन भाषित कृत करत जगत प्रभु श्रुति मर्याद बिचारी । धर्म सेतु जनहेतु चारि फल दैनित करत सुखारी ॥ सुर मणि सुवन काक कायाधरि सिय पगचोंच प्रहारी । कीन्ह महा अगमहा शत्रुवत वाधि तज्यो भौमारी ॥ बालि बध्यो परनारि निरत लखिभख्यो इंद्र अकवारी । मंगल कोजानत प्रभुकी गति तू भजु श्याम मुरारी २९० मन भूल्यो त्वहिं कौन चितावै । प्रथम तोहिं इंद्रीपति कहियत सेवकसम तू धावै । बिषयभोगबिष तुल्य बदत श्रुति सोअमृत करिपावै ॥ कूकुरलौं इत उत धावत है लाजनहीं उरआवै । मम कहनी

सुख खानि सकल बिधि सोखहिं नेकन भावै ॥ कामादिकसुत तोर प्रकट यह तिनके संगमजावै । लखि अनीति पथतजत समतिमति अबुध किधौं मुदछावै ॥ लोकरीति परलोकमनोरथ दूनों स्वकर नशावै । मंगल अबते मानि सीखमम हरि आतम किन ध्यावै २६१ मन अपने मनदेखु बिचारी । तजिबेगता व्यंगता गतिकी बैठीसथिर गुणधारी । जेखल महा शत्रुसम बर्तत तिनहिं कहत हितकारी ॥ प्रीतम सुमति सुगति शुचि दायक त्यागत बिषय प्रचारी । सूरज जातधाम अंतकबश जाइ-हि देखु निहारी ॥ तहँतुवहितूशत्रु गति दातासाखीहोइंअगारी। महा मोह मयजानिधर्मछिनुयमचरगहि करवारी ॥ नरकमेलि बाधिहिदैताड़न कोउनतहं रखवारी । मंगल शोचि यहै भजिले किन श्रीराधिका बिहारी २६२ यह संसार लखात असारा । केतिक धनी निधन समबिचरत अधन धनिक व्यवहारा । वा संपति यहिकर दुख दारिद कितगा करिय बिचारा ॥ महाराज गहि राउ बंदिकिय दीनराजबैठारा।तासु बिभव दीनतायासुकी केहि दिशि करत बिहारा ॥पंडित शिर पिशाचिका लागी मूढ़प-ढ्यो गुणसारा । वापांडित्य मूढ़ता याकी मिटैन लेशप्रचारा ॥ सतन अतन बिनुधाम गेहयुत होत सहजचहुंदारा । मंगल भजु श्रीश्याम रामपद पावै सबसुख न्यारा २६३ आपु आपनीभूल भुलाना । ज्यों शाखामृग अन्नगहेकर बंदिपर्‍यो अनुमाना । तज त ताहि शोचैसो बाँदिते नहिं आवत अलज्ञाना ॥ अरुजिमि श्वा-न दर्पणी मंदिर निज प्रतिबिंब भ्रमाना । भूंकि मर्‍यो हरिगि र्‍यो कूपजिमि गजरद बिनु पछिताना ॥ तिमि यहजीव बिष-यमायाबश मृषासत्यनहिं जाना । सर्बस खोइदयोबैरिनकरअंत समय दुखसाना ॥ अबहि सबेर चेतलखु आपुहिं मिटै सकल बिषठाना । मंगल सुमति संतोगुण प्रकटै जेहि मगलहु भगवाना २६४ लोगकहत मनतू बड़ज्ञानी । मेरीजान महामूरुखतू बि षयफवल अभिमानी । बेदपुराण बिबर्जितजोपथ ताहिचलत

रुचिमानी॥ गुरुपंडित कवि संतबखानत काम क्रोधदुखदानी। तू तिनको संसर्ग समोदित करत सुखद चितआनी॥ क्षणक्षण भ्रमत फिरत भववीथिन जिमिभृङ्गी अज्ञानी। थिरनहोत पलएक नीवतू बिषय बिवश छलसानी॥ करत बिचार नीचवत इत उत लखितुहि लाज लजानी। मङ्गल बारबार कहतोलन भजुकिन ब्रह्म अमानी २६५ मनसुनु सीखमनोहरमेरी। भ्रमतकिमर्थ अनित्य जगतमहँ तजिदुबिधा मतिकेरी। भजिले रामचरण सुखदायक होइ सुगति सुनुतेरी॥ अंतसमय नातरु पछितैहै पायत्रास यमकेरी। मात पिता प्रियतात मीतहितु सकै न कोउ निबेरी॥ ज्ञानीगुणी मूढ़ पशुपक्षी देवदनुज चहुंफेरी। कालबली सबहीको भखि है बदतबेद बुधटेरी॥ काम क्रोध मदलोभ मोहअरि रहेचहूंदिशिघेरी। मंगल ज्ञानखड्गसों बधुकिन करत कामुहितदेरी२६६ सुनुमन तोहिंकहीं समुझाई। जो पूरणपदकी अभिलाषा तोभजिले सुरराई। मुक्तिलहै अनयास बेद बुध बदत नआन उपाई॥ चारिखानि थावर चर प्राणीरचि बिधि सृष्टि बनाई। तिनमहँ अतिउत्तम नरदेही सो लहि कस कदराई॥ बैभवसुख समाज जग जेतेअन्त संगनहिं जाई। कपटकि प्रीति प्रतीति करतहै यहतेरी जड़ताई॥ ताते तजिदुबिधा भ्रमसिगरे अनभव शुभ उरलाई। मंगल ध्याउ युगलपद हरिके जो तिहुंकाल सहाई २६७ हरितजि फिरि पाछे पछितैहै। कामक्रोध मद लोभ मोहबश तू कुपंथ चलिजैहै। अन्तसमय रबिपूत दूतसुनु अतिही त्रासदिखैहै॥ सुतदाराआदिक सम्पति सब कोऊ कामन ऐहै। तजि सुरधाम कर्मबश अपने बास नरकमेंपैहै॥ ताते मानुसीखशुभ मेरी जोहरिपद चितलैहै। सुयश ससौख्य रहैजीवनभरि यमको दण्ड नसैहै॥ मोते हितू अपरको तेरो जोतबहिं सुमग चलैहै। मंगल सुधा सीखपीलेतू पीवतमृत्यु बिलैहै २६८ यकदिन मरण अहैतनजिनको। हिरण्याकुश हिरण्याक्ष प्रबल जगहै प्रसिद्धकृततिनको। शूकरनरकेहरि

शरीरधरि कीन्हनाश पापिनको ॥ रावण कुम्भकरण कंसादिक आनअसुर कोटिनको। राम कृष्णतन बिरचिकृपानिधिहरयोभार शापिनको ॥ रामलषण बलराम श्यामजू सुयश ख्यातभव इनकौ। तेतनु त्यागिगये निजधामहिं गनैको नर नारिनको ॥ भीषम पाण्डव प्रबल धनुर्द्धर अपरो अत्यबलिनको। रहा न तन मङ्गल भजिले हरिजीवन केतिकदिनको २९८ अलखगतिलखिनपरै भाई। अजजन्म्यो अनभव सम्भवभो अतन शरीरस्वहाई ॥ अमरमर्यो कर्तार अकर्त्ता दायाकृतरवताई ॥ एकअनेक रूपतों देखा जलपय मांझ समाई। करणहीन जगबिनय सुनतहै अक्षर हित दरशाई ॥ चरणहीन तीनोंपुर नापै करबिनु सृष्टि उपाई। लिंग रहितलबलिंग बनायेकालबिना बयपाई ॥ सकलभांति बिपरीत देखियत पैबरणी नहिंजाई। मङ्गल नरकस्वर्ग देहीको दुबिधादूनोंठाई ३०० तजुमन विषय प्रसंग असारा। दुबियाको मारग यहि जगमें छल प्रपंच व्यवहारा। कोसुख तोहिंमिलै इनकेसँग मूरुख बुधि न बिचारा ॥ अबकी चूकहूक उर उठिहै पहुँचतयमदरबारा। करणीफल तोहिंनरक मिलैगो बिनु आतम निरधारा॥जेसांचे मगके पगधारी करत ज्ञान व्यापारा। तिनसोंप्रीति रीतिकरु सांची करै सुमति बिस्तारा। नीचछली सतसंगबिवर्जित परिहरु तिनको द्वारा। मंगल भजु आतम पर मायाभुक्तिमुक्ति द्वोबारा ३०१ सुनुमनतू बिपरीत बिचारी। जो बिरताहि कहत जीवनदा अरि हितु देखु निहारी। काक बुद्धिचह बिरय बिरनित मति बिनुहोत दुखारी ॥ ज्ञान पंथ जग जन्म नश्रावत तुहींनिरय अधिकारी। दिनमणि उदय लखतजगरथ्या ज्ञान उलूक अँध्यारी ॥ गौरी सकल भूत सुख सोवत चकइहि पतिदुखभारी। चारिप्रकार चारिविधिजानै चतुराश्रम नरनारी॥ प्रकट प्रताप दिखात ब्रह्मकी चहुँदिशि ज्योति पसारी। मंगल मनतजि चालि विषय लखु ज्योतिहुँ होइ सुखारी ३०२ कहत बनत नहिं काल कहानी। यकसँग जन्म मरणमें दुबिधाबदतवेद

बुधबानी। जासु प्रबलताबश पुरतीनों बुधब्रज गिरा भवानी॥ शोक सौख्य संयोग वियोगहि देत सबहि अनुमानी। कोनरमूढ़ रामबन सेयो कृष्ण तजी रजधानी॥ बायुअग्नि यम इंद्रमरुत शशि बन्दिपरे जगजानी। जगजित शुम्भ निशुम्भ बधेरण श्रीदुर्गा महरानी॥ मंगल दुखसुख काल विवशह्वौ पावत भव सब प्रानी। तूमनत्यागि भूलभजिले हरि जोकृतकालकिहानी३०३ कैसीरे मतिहै मनतेरी। बिनु स्वारथ भरमतभवबीथिन कुपथ चलत मगहेरो। कोसुख अन्तवन्त जगमेंमन तजिदुबिधा बुधि केरी॥ मात तात प्रिय बन्धु तनययुत काल न सकत निबेरी। यमपुर कष्टपाय पछितैहै मानुसीख शुचिमेरी॥ रामश्यामपद नलिन होहु अलिदिन निशि भूल गहेरीं। मुक्ति पदारथ शुभपरागलहु कुमति कुगन्धिमिटेरो॥ आन उपाय जन्मकोटिहु लगि करु जगफेरा फेरी। मंगल मोक्षहोइ नहिं कैसेहु बदत वेद बुध टेरी३०४ ऐसोइ बद्धजीव भ्रमभाई। ज्योंशशिबिम्ब परयोजल भीतर जलहल हलत लखाई। सूरज्योति जहँतहँ शिखरनमहँ पैबगहीकरजाई॥ घटवहि अन्तरगगन बिराजत कुम्भनशे न नशाई। जलतरंग बिबरण किमिकीजिय अद्भुतकथा सुनाई॥ परिपूरण पुराण पुरुशोतम तनप्रति रहा समाई। दरपण यथाबिम्ब परिपूरितहूरतहूर हेराई॥ तजिशरीर तिमि जीवन देखिय को दूसरदोउठाई। मंगल भजुआतमं सुखदायक तजिसुरध्यानलगाई ३०५ राम नाम तजिकाम न कोई। भूपरङ्कोहरिपुर सुनुमन कर्तास्वर्ग बसोई। जेनद द्रव्य करत परपीड़ादया शीलता खोई॥ तेयहिलोक सुखी बुधकहिये नरकआस ह्वै होई। पछितैहैं पापीअन्यायी तजेंवेद मग जोई॥ कवि कोविद मुनिवर यहभाषत वेद पुराण लिखोई। राम भजे बिनपूत नहै है बुध मूरुखश्रिय लोई॥ बिमिबिनजल नजीव जीवनजल यहसंक्षिप्त कहोई। मंगल तजिभ्रम भूलध्याय हरिलेहु मुक्ति मग टोई ३०६ तजि छल राम नाम भजिलेमन। रामभजे पूरणसुख पावै नाश लहे

सब पापनको गन। बिनु ध्याये हरिनाम मूढ़मनुका कहिहैयम
के दूतनसन॥ कामी कुटिल दुष्ट दुर्जनजे धर्मरहित कृत कुकृत
अपारन। तिनकर संग त्यागि गहि सुमतिहि करुकिनरामभज-
न साधारन॥ सकल प्रसार असार न भूलिय को रथविकल फि-
रत जिमि चारन। कर्ता अरु दाता पालकहर सो प्रभु एक मोह
निरवारन॥ जिमि कारज परिहरत मिटतजग सकल सदोष अदो-
ष अकारन। मंगल त्यों ध्यावत जन पालक मिटत कलुषदुख
सह बिस्तारन ३०७ क्योंमन रामभजन तू त्यागत विषयवास-
नाजोवतहैरे। बेस्वारथ परमारथहीतो दोनोंकीगतिखोवतहैरे॥
तोते अधम अपरको जगमें मोहनींद सुख सोवतहैरे॥ निजपद
निजकर कुमति खड्गहिंनि काटत पुनिकत रोवतहैरे। जानिबू-
झि मूरुख अन्यायी क्योंविष सुधा मिलोवतहैरे॥ मम उपदेश
मानुहितकारक आनपंथ कसटोवतहैरे। जनपालक पालकखल
परिहरि विषयनिरत जड़होवतहैरे॥ दुबिधा दम्भत्यागि पांचो
जड़ क्योंनशरीर बिलोवत हैरे। मंगल मुक्ति पावनहिं करतव
नरकबीजक्यों बोवतहैरे ३०८ मनतू करसि न कहनिहमारी।
जेहिभेषजशरीर रुजबाढ़त पुनित्यहिभषकुबिचारी। पण्डितच-
तुर साधुकबि सात्विक तजतजानि दुखकारी॥ चषनाशत जो
अंजन लावत फिरि अंजत मतिहारी। जाकरदण्ड अमितनित
पावत ताहिबदत हितकारी॥ परिहरि कुटिल कुमगचलु शुभ
मग पांचपचीस निहारी। गुरुज्ञानी उपदेश अवधधरु सुनु यह
सीख हमारी॥ बिनशैं पाप चोष यक क्षण महँ लहै प्रतिष्ठा
भारी। मंगल अंत पावनिज पदको करिश्वासा रखवारी ३०९
तुमप्रभुसदा दीनसुखदाई। को दूसर ध्याइय बिपदामें जोप्रभु
होइसहाई। प्रतिपालक दासनके श्रीहरि श्रुतिपुराणयहगाई॥
मैंअतिदीन मीन जलबिनु जिमि करिय कृपा सुरसाई। चिन्ता
मोह क्षोहसब नाशै गहैबुद्धि थिरताई॥ तुव यश बिशद रैनि
दिन गावों सबभ्रमतर्क बहाई। मिटै क्षोभ अघपुंजनशै ज्यहि

पुनिन लहौंतन आई ॥प्रतिक्षण तव पदध्यानकरत प्रभु मनमहँ
प्रीति दृढ़ाई। मंगलपै दयालु हूजैहरि गही सत्यशरणाई ३१०
बिनु हरिभजन न मिटै बिकारा। कोटि उपाय करै बिषयक
नर नानाग्रन्थ बिचारा। ब्रत तीरथ संयमबहुकीन्हे होइनहीं
निरुवारा॥ स्रक त्रिपुंड्र शिरजटा बढ़ाये बपुष लगायेछारा।
बिषयबासना नाशलहत नहिं अधिक अधिक बिस्तारा॥ तू
तजिकेमन निज चतुराई ध्याउ सृष्टि करतारा। आपु बिकार
नशैं भवकेसब पावैसुख मुदसारा॥ को जानत मनमानतमूरु-
ख करत बिबुध निरधारा। मंगल तजि आपनि जड़ताई करु
नितज्ञानपसारा ३११ वृथाजन्म खोवत कयहिकाजै। मिथ्या
बकत फिरत बहुबीथिन बैठत दुष्टसमाजै। दोष लहत संसर्ग
बिषयहँ कसन मूढ़ तजिभाजै॥ सत्यसिन्धु करुणानिधि भजि
किन ज्ञानगली नितगाजै। कपिपति तातपुत्र चर जेहितै तोहिं
बिलोकत लाजै॥ कर्मपाश बंधन भय सुखदुख दोनोंभांति अ-
साजै। मम उपदेश चलत मनमूरुख सुख तुवसंग बिराजै॥
उत्तम धामलहै परिपूरण मुक्ति निशान सुबाजै। मंगल के मन
सत्य ज्ञान गहि पुनि न लोक यहिराजै ३१२ कर्मप्रधान जगत
सब कर्मा। कर्म प्रताप सुकृत अघकृत नर कर्म रहित को
शर्मा। कोटि उपाय गहै दृढ़तानहिं बदतधीरमति पर्मा॥ चतुर
सुजान कर्म बश जग लखि त्यागत धर्म अधर्मा। परमातम
पूरण अबिनाशी त्यहि ध्यावत तजि भर्मा॥ जब बिपरीत
होत करणी तब होत न उद्यम बर्मा। राम बसे बन समर
तज्योहरि जानत बुधयह मर्मा॥ काल कर्मबश असिबर घातत
ज्ञानबिनाको चर्मा। मंगल तजि दुबिधा भजिले हरिजाकृतक-
र्म कुकर्मा ३१३ ऐसा जबलगिजाय सनेहा। जिमि कामिहि
न नारितजि भावत भवन स्वन निज देहा। अरुजिमि दुखि-
तचहत सम्पति नित खोजत गेह कुगेहा॥ चातक यथा चहत
जल स्वातिहि पियतनबहुजल मेहा॥ अबिजपक्षिरैनिजिमिहेरत

मित्रमानि मतयेहा ॥ इमि हरि भजन करिय निशिवासर भ-
वभूल्यो हितकेहा। निबहत परिपूरण हित प्रणमत सुयशदा-
सभवतेहा ॥ छल प्रपंच तजि प्रीति लगावै पावैपद न सँदेहा।
मंगल मोह निशाकिन जगिभजु अज अव्यक्तनिरेहा ३१४ सत
संगतिसेइय चितलाई। संकठकाटिपरैं नहिँत्यागियहबुधयुक्ति
बताई। मति कीरतिपावै याजगमें अंतदेवपुरजाई। कृपणमूढ़
कुलहीन क्रोधमय कुबुधि होयनरभाई ॥ सतसंगतिपरशत सत
मगगहि तजतसकल कुरताई ॥ बिदित प्रसंग सदनवत याजग
शुचि अरुअशुचिलखाई। तिमिप्राणी शुभसंगकुसंगतिपावत मति
कुटिलाई॥ चतुरसुजानत्यागि खलसंगति मननिजकरतललाई।
मंगल भजत आदि अविनाशी दुविधा दोष बहाई ३१५ क्यों
भूल्यो जगखेलुपसारा। जोदेखत कल्पत जोमन महँ जहँ लगि
विश्व पसारा। सोसब नाशवान सुनु सिखममकरु किनज्ञानबि-
चारा ॥ कूकुर लौं धावत दिशि चारौ भूंकत वृथा अगारा। राम
भजनतजि सुगतिन जड़तुव खोजतपंथ अपारा ॥ मुनिवरकवि
कोविद जोवत सबहरिपद रज त्रयबारा। ताहित्यागि भवसुख
किमि लहुरे यह मत मूढ़ हमारा ॥ आठ याम आतम निज
हेरत तजि द्वितीय आधारा। मंगल मुक्ति युक्ति यह सहजै पा-
य होइ निरुवारा ३१६ कालगति अगमअपारलखाय। जबत्रि-
य लोक उपजेनहिँ सन्तौनहिँ त्रिदेव सुखदाय। तबहूं काल शून्य
थल बर्तत देखौज्ञान दृढ़ाय ॥ महाप्रलयके पीछे बुधजनं काल
रूप रहिजाय। सुरनर नाग चराचर जेते कोउन सकत बताय॥
कालकलेवा सबतनधारी बदतबेद समुदाय। जानिन जातका-
लको ईश्वर जानिसकत बुधराय ॥ त्यागि भूल दुविधा दुराय
सब भजु हरिनाम स्वभाय। मंगल कालरूपते उबरै रहै अमा
रसपाय ३१७ जीवहि अलख अनादिकहावै। जहँदेखौ तहँ
जीवनिवासो नहिँ द्वितीय चितभावै। पैनहिं दृष्टिपरत कौनहु
कृत गयोन जाय न आवै ॥ अधऊरध दिशि विदिशिबिराजै एक

रूप छबि छावै । चारिखानि मधि आपु बसतहै कोउनहीं लखि पावै ॥ मरै न जरै कटैनहिँ सूखै वृद्धिहानि को गावै । पूरणरूप कालगति नाहिंन नरक स्वर्गकोजावै ॥ जो कदाचि बुधिनिर्मल साधू रंचकनिजहि दृढ़ावै । मंगल तौसच्चिदानन्द सुख निजघर पाय लुभावै ३१८ ॥ सवैयाछंद ॥ या भवकी प्रभुता दुखदा बढ़िजातकबौं घटिजात सदाहै । दारुण क्रोधप्रबोध न मीतको संपतिको मद मोह यदाहै ॥ ज्ञान सुधर्म सुमारग आदर कोबिद औ कबि कौन तदाहै । मंगल देखुबिचारिहिये सब देखतजानत वेदबदाहै ३१९ आयु अमोल गमावत तू जड़ ध्यावतहै नहिं राम कृपाला । कोटिहुद्रव्यदिये क्षणएकरहै नहिँजीव न आवत काला ॥ योंदिन रैनवृथा बकबादमें खोवतहै बिषयी मतवाला । मंगल चेतु बितीतत आयुष को हितु संगचलै भ्रमजाला ३२० त्यागि सबै पितुमातु सहोदर पुत्र कलत्र सुखासनबासा । मुण्ड मुड़ाय बिरागलियो चलिसंत समाजहु कीन्ह निवासा ॥ तीरथ औबत आसन साधन आतपशीत सहो गत त्रासा । मंगल लोभ न जीतसको जन धाम नशायसही परिहासा ३२१ पुत्रकलत्र सबै परिवार जो देखतहैं जिमि लोग बजारू । आपन आपन कामलगे सबकोहितुता रिपुता निरधारू ॥ फूटिचलै निजस्वारथ पायन संगकरैं फिरिको दुखभारू । मंगलधाम उदासबसै शुचि साधुअहै न द्वितीयबिचारू ३२२ ॥ गोपाल ० ॥ साधुदरशरुज भेक भुजंग । साधु दरश अघमल कहगंग ॥ दर्शन साधु मुक्ति जनदानि । बंदिय साधु चरण रुचिमानि ३२३ तन मनबचन तजे बिषयान । मौनित कतहुं कथा हरि गान ॥ उदासीन मति तीनिहुं काल । साधुन ते तनधरे गोपाल ३२४ माया ब्रह्मकरै निरधार । सतरजतमगुणतीनिप्रकार ॥ जीवोद्धारण ग्रन्थबनाव । साधु धन्यअस श्रुतिमतगाव३२५ जीवन मरण उभयरुचि एक । शीत उष्णकर चितनबिबेक ॥ उद्यम एक निरूपणज्ञान । धन्यसाधुभव बेदबखान३२६ दंभछियेजोधर्म प्रसिद्ध । ताहि न

साधत जानि निषिद्ध ॥ सेज भूमिसोवै यकभाय । सोजन धन्य रूपदरभाय ३२७ मूढ़जानिउपदेशेज्ञान । ज्ञानीकोसिखवैविज्ञान ॥ बिज्ञानिहिआतमा दृढ़ाव । धन्यसाधु जाकेअसभाव ३२८ पण्डित मूरुख जानैएक । जाकेचितनहिँ ब्रह्म बिबेक ॥ सारासार बिचारीजोय । साधुधन्य भाषियजगसोय ३२९ एकअनादि पुरुष अबिनाश । गहेसदाताहीकीआश ॥ बिषयकनरन न सारबुझाव । साधुचतुर भवधन्यस्वभाव ३३० बाणचोरनिर्बाणनिरूप । युक्ति मुक्तिकी कथै अनूप ॥ आगम निगम धर्म बिस्तार । धन्य पुरुष बिरचे करतार ३३१ निन्दाअस्तुतिमानामान । समजानतआनंद निधान ॥ भोजन बारि मिलै सोखाय । मंगल धन्य पुरुष यहि भाय ३३२ आवत संत न गेहिनके ढिगकानन भूधर खोह बिलाशी । पंचप्रभूत व्यथातन नाहिंन प्यास क्षुधादिककी गति नाशी ॥ शुद्ध समाधि बिलोकत ईश्वर सात्विक दृष्टि लखैचतुराशी । मंगल दर्शन पावत सो जनजाहि सुदृष्टिकरैं अबिनाशी ३३३ तीरथ में नित न्हानकरैं अरु देवल में नितपूजत देवा । ज्ञानकथैं परिणाम अकारथ उत्तम बस्तु बतावत सेवा ॥ कोटि बटोहि जहाज चढ़ेबिनु खेवक पारकि लागतखेवा । मंगलभूलि न जाउउते जहँ दम्भसमाज न बेदकितेवा ३३४ तूमनभूलि बिषय रस भोगहि मृत्युकथा चितते बिसराई । आकस्मातमसै न बनै तब जाइवृथा जड़तोर उपाई ॥ न्याय समय पछिताय भलीबिधि मात पिता हितहू न सहाई । मंगलतोहिँ जोग्लानि गहै त्यहिते भजि ले हरि हेतु बढ़ाई ३३५ संतन के मन शुद्ध सतोगुण व्यापतहै न तमोरज आवै । जानत पूरण ब्रह्म बिभासहि आनप्रकार न युक्ति दृढ़ावै ॥ त्यागिसबै मतदण्ड अकारण आपन दोष समस्त मिटावै । मंगल चित्तनद्वैषबिमोह सदासत संगति में हरषावै ३३६ ॥ दण्डक ॥ सत्ययुगयोगसाधि सुमति समाधिआधि बिबिध बिज्ञान आदि व्याधि नाशिमोचही । त्रेता मख अमित बिधान युत दानमान करत सज्ञान मोष पायमन

रोचही ॥ पूजन अपार ठानि प्रभुपद द्वापरहुतरत अमानिनदु-
भाँति चित्त मोचही। धन्य कलिभाव औ अभावनाम लेतहरि
मंगल मुमुक्षु होत पाप तुखै नोचही ३३७ माया मोह व्यापै
मन साधु ताको बेष तन बोलत न काहूसन मौन बाणिधारेहैं।
क्षुधाऔपियास लागै चित्त क्रोधमोह जागै लोभ मानप्राण खागै
बोलत इशारेहैं ॥ पद्धतिलखावैं आपुज्ञान ध्यान पाठजाप पक्षी
पशुबोलिनमें करतबिचारेहैं। काहूको बुझावैं न चितावैं शुद्धज्ञान
तात जात क्यों मुमुक्षुतहां हाथको पसारेहैं ३३८ ॥ सवैया ॥
तोहिं दई रसनाकरतार बिबेककि बाणि सदाज्यहि गावै। मूढ़-
नको उपदेशकरै सुकिधौं पशुलौं अपनेबनिजावै ॥ सैनबुझावत
आंखिन हाथनबूझत कोउनजी अनखावै। मंगल भूलकि ज्ञान
अहै मुनि संत बिबेक हमैं समुझावै ३३९ ज्ञानभये भ्रमणानशि
जात बिबेक बिचार स्वरूप सोहावै। आपु न बूझि बुझावतआ-
नन भूल मिटाय भलेपथलावै ॥ दंभअहंकृत स्वांग दुराय सुमं-
गल मूरतिध्यान बतावै। नातरु ज्ञानि बिमूढ़ कहा छलिखाल
जगैन जगैन जगावै ३४० ॥ कवित्त ॥ कोऊकहै मृतक जलाय
आगि पिंडपारिकीजै दशगाततिल जलदान मोषहै। गाड़िभूमि
तीजाकरै दशमाचलीसीकहै न्याय दिन उठैजाते सहित सँतोष
है ॥ कोऊ कहै जारै न मृतक भूमि गाड़ै बुध पेट फारि खड़ाकरै
भवन अदोषहै। मंगल बदत एक मृतक बहावै दूरिचारि मांझ
कौन मूढ़ कौन ज्ञान कोषहै ३४१ ॥ सवैया ॥ एकहि ग्रामके
पंथ अनेकन हैंदशहू दिशिते चलिआये। अंतसबै यकठाममिले
मन सत्य असत्य न जात बनाये। ज्ञान दिशाबिदिशा अधऊरध
नीर सबैजल राशिसमाये। मंगल कल्पत बुद्धिसदा निरबुद्धि
किधौं शुचि मारगधाये ३४२॥दंडक॥ अंतजीव बाँधियम धाम
जात न्याय होत लहत स्वकर्म फल एकनको ज्ञान है। एकमत
जीवनको न्यायएककाल होय उम्मतिरसूल बकसावै अनुमान
है ॥ एककहैं ब्रह्म जो अनादि तहां जीवजात एक भयें कर्मबश

कौन भगवानहै । मंगल बिवादैं एकजीव आपु ब्रह्मरूप काको न्याय कौनकरै बैठो कौने थानहै ३४३ ॥ सवैया ॥ जीवभयो न अहै मन मूरुख औनहिंहोय सुजान अगारी । कर्मनके बश शब्दनहोवत नित्यअनित्यसकारअकारी ॥ ताहिअधोरध बासन भाषिय है अधऊरध ज्योति पसारी। मंगलपाप ग्रसैनहिं आतप दोषकि सूरजकेतन भारी ३४४ तूपरमातमहै सबठामनकोटिननाम न लोगपुकारै । सोसुनि देत मनोरथहै नित शुद्ध अशुद्ध नचित्तबिचारै॥कोउ न रूप न धर्म्म सुकर्म्म न जातिमतामनतो अनुसारै ।मंगल यांचत तोहिं कृपानिधि सत्य मनोरथदे अबिकारै ३४५ कासन जायकहौं अपनो दुख याभवमेंप्रभु तोहिं बिहाई । दूसरकी न समर्थबिलोकतमोमनमेंजड़ताहढ़ताई ॥ पालत लोक चतुर्दश आपुन क्योंममकाज धरी निठुराई । मंगलमांगत जोरि दुवोकर देहु मनोरथ भेद नशाई ३४६ जौलगि चित्तमनोरथ चाहत तौलगि शुद्ध सतोगुण दूरी । जो भवआश बिबश्यरहै सुरलोक अलीक दुवोसुख भूरी ॥बंधनमोक्ष दुवो मनभूलमनोरथहै न सजीवनमूरी ।मंगल जोबिषयी बिषनाशत सोप्रभुसत्य रहाभरिपूरी ३४७ जानतहै सबके मनकी प्रभु सत्यअहै मनअंतरयामी । तासन कौन मनोरथ भाषिय भाषतही नर जानत कामी ॥ देइगोआपु क्षमानिधि तोकहँ क्यों बकबादकरै नितवामी।मंगल ध्याउसदा निजआतम जोसबमें सबते परधामी३४८ सुंदर मारगहू डरमानत तूमन क्यों भवपंथ चलैरे । देखिदशा दुबिधा उरलावत क्यों मृगनायक धाइदलैरे ॥ काम सक्रोधन जीतिमकै फिरि मोह किधौं निजहाथ मलैरे । मंगलसंतसमाज नभावत ज्ञानकहा किधौं कौन थलैरे ३४९ ज्ञान दिवाकर शुद्ध प्रकाश तहां न सकै निजबस्तु बिलोकी । तौफिरि भक्तिकि चंद द्वितीयको नेक बिकाशत होत अलोकी ॥ मोहनिशा अँधियारकि सूझत नैनपसारत दृष्टि सशोकी । मंगल खोजिले सत्य पदारथ दृष्टि सकै खलमोहन रोकी ३५० जीव चराचर आकर चारिहु

भूमिधरे अपनेशिरभासै । भूमिहि शेषधरेशिर सोहतकच्छप पृष्ठ
किशेष बिलासै ॥कच्छप बायु बिमंडलमें नभ में पुनिबायु प्रबी-
णनिवासै । मंगल हैनभ शब्दकि शक्ति सुशक्ति सनातन ब्रह्मप्र-
कासै ३५१ शक्तिबिना कछुहोतनहीं व्यवसाय उपाय न कारण
काजू । जौन अशक्ति सो कोकृत साधत मृत्यु किधौं जड़लौतन
साजू ॥शक्तिअनंत अपार भणेश्रुति शक्तितेदेव त्रिलोक समाजू ।
मंगल शक्तिहि चीन्हिलहै हरि कौन अशक्ति करैभवराजू ३५२
सिद्धनकेतन सिद्धि न लागतवृद्धनकेमनवृद्धि न आवै। शूरशरीर
न आतप व्यापत ना हिमते हिमवान जड़ावै ॥ पावक तेज न
पावकदाहत सर्पमुखै बिष ना मरिजावै । मंगलत्योंमनबुद्धिअहं
चितजीवहि क्योंहु न लावहुधावै ३५३ जाकरवृद्धि न हानि न
ताकरजाकरहानि न वृद्धि न ताके ॥ मावस औपुणिमाकि कथा
शशिक्षीण औबृद्धि न कंतप्रभाके । वृद्धिऔ हानिदुवोदुखदायक
आवत जावत को समता के ॥ मंगल त्यों अध ऊरधमें भ्रमजो
रस एक तोको दुखवाके ३५४ देखिसि काजो कहै सबमेंप्रभुखो-
जिसि का जोकहै इतनाहीं । ध्याइसिका जोपै दृष्टिनआवबता-
इसिका जो अकाय सदाहीं ॥ पाइसिका जोपै हाथ नलागतगा-
इसिका जो अकथ्य कथाहीं । मंगल पूरणज्ञान उदय अपनेघर
में न इतैउतजाहीं ३५५ पण्डितका नहिं आतम चीन्हत कोक
बिता मन ज्ञानन जाके ।संतकहा उर तोष क्षमा नहिं भूपकहा
भवसिद्ध नथाके ॥ योगकहा न समाधिहि धारत भोग कहा धन
नारिबिनाके ॥मंगल ज्ञानकहा भवमें तिमि जोनरमैं मगमेंसम-
ताके ३५६ औरनको मनतुच्छ बिलोकत आपुहि तुच्छ न शोच
तहेरे । आनन के गुण ग्रामबदैं नित औगुणको अपनेगृह ढेरे ॥
चाहति पद्धति आपनिहीं खल निंदतहै सबकोअघ तेरे । मंगल
दीन कहैं हम साहन साह भयो धन बातन केरे ३५७ कर्म
प्रताप बिलासकरै सुरधाम अधो दुबिधा दुखदाई । स्वर्ग अधोरु
अधोपुनि स्वर्गते आवत जात बड़ी भ्रमताई ॥ त्यागि शुभाशुभ

कर्मसबै मुनि संतरहे निज अंग समाई । मंगल स्वर्ग न नर्कप्रसैं तिनको अपने पदमें ठहराई ३५८ बाणबिलासन है निरबाणहु बाप्रभुको मन क्यों भ्रमभूला । सृष्टिबनाय न पालत मारत है बिपरीत कथा तरुमूला ॥ आदिकि शून्य किईश्वर आदि बताइ सकै कथनी प्रतिकूला । मंगलको भव जाननहार अभाव किबात बकै लघु थूला ३५६ बारिजपत्र रहै जलमेंनित बारि न ब्यापत त्यों जगसाधू । औ जलजीव रहैं जलराशिहि बूड़तहैं नहिं नीर अगाधू ॥ सर्प समाज रहैं तरुचंदन शीतलहीन प्रसैं बिष बाधू । मंगल ज्ञानितथा भवबीथिन डोलतनीर सहीकृत नाधू ३६० गौरवमें गुरु लागिरहे अरु पीरनकेदिल लाग पिराई । ईश्वर खोजलगे मुनिसाधु रसूल रसालतिकी चतुराई ॥ एकदु तीनि बिचारकरै बनिसंत महंतरचै कबिताई । मंगल ब्रह्मबखानकरैनहिं पूछत क्रोधि कहै चुपभाई ३६१ बेद कितेब बखान बिचारिय आगम औोर हदीशकि बानी ॥ आपुहि न्यायकरै सब को नित शासित कारक जीव प्रमानी ॥ हैसुनता सबकी निज कानन तौ तनुधारि परै अनुमानी । मंगल बुद्धिथकै न बकैप्रब जोककुहै सो सही न कहानी ३६२ दीरघमें लघुजानिपरै अरु हैलघुमें परिनाहशरीरी । थावरमें चरदेखिय औचरमें पुनिथावर सोगति धीरी ॥ थूलनमें अति सूक्षम आवत लिंगनमें जनु थूलकिथीरी । मंगल क्यों कहिये प्रभुकी गति ह्यां भवकी गति में मतिसीरी ३६३ ज्यों शिर औश्रुति मस्तक नाक सुलोचन औमुख दंत गनावै । जीभ कहै पुनि कंठभुजा उर पेटसनाभि गुणी समुझावै ॥ लिंग गुदा पगत्यों नखते शिखलौं जिमिहैतन नाम कहावै । मंगल त्यों तिहुंलोक अलोकहु नाम सनातनब्रह्म बतावै ३६४ जाहि कहै सबके शिरपै पुनि ताहिकहै सबकेतन घासी। भाषि अजन्म अनादि बदै पुनिगावतहै रघुबंश प्रकासी॥ रूप न रेख न रंगभणै फिरिभाषत शेषकेशीश बिलासी। मंगल द्वैत किधौं यकभावन फूलत गालजो आवत हासी ३६५ सीख

कछू इमहीसन ज्ञानविचार बिबेक लहौ सुख जातें। तेहमको
पुनि ज्ञानमवें गुणि छंदअनेक कथी कवितातें॥ आपनमें नहि-
भाव बिलोकत नित्यसिखावत योगकि घातें। मंगल सांचकहा-
वतहै यह नानिकेआगे ननौरेकि बातें ३६६ जोप्रथमय पितु तो
पुनि काकर पुत्रकहौ पितुहीन न सोई। वृक्ष बदे जिमि बीज
बिना किमि बीजभयोबिनु वृक्ष न होई॥ कारणतौ बिनुकारज
नाहिन कारज कारण हीनकिकोई। मंगल शून्य न एकबिना
तिमि एकनशून्य बिहाय बदोई ३६७ राम निकाम भयेसुत
दोइ अक्रोध कहावत ब्राह्मणघाते। मोहबिना बहुरोवत भ्रातहि
लोभबिना मुचिराज सुहाते॥ मानबिना निजनारि तजीहित-
कारक क्यों निज बंधुडुबाते। मंगलमित्रतजे सबबीचहि सेवक
आप स्वधामन जाते ३६८ जासन भाषिय सत्यकथा अनखाय
कहै घड़निंदक तूहै। ज्योतिपके मतमेंअटको नभकीकरणी नहिं
ज्ञानतभूहै॥ बीजकि बाणि न बूझिसकैलपिटायअजानगहैमहि
रूहै। मंगलक्यों समुझैखगहोरिल पांवदबीलकड़ीगतकूहै ३६९
गोमलते जिमिकीटभयो नहिंमातपितानिजजानत सोहै। त्यों
प्रथमैमनुभे किधौं आतम बुद्धिसमान पितानिज जोहै॥ जान-
तनाहिंबनावनहारहि कोटिकबेद किते बनिटोहै। मंगलपंखकबू
तरहेरत कोकबितादुबिधा न बिमोहै३७० जादिनभेमनु नारि
समेत लिखा न पढ़ा तब अक्षरकोई। बाढ़ीजबैअतिसंततिताक-
र कीन तबै गुणि आगम सोई॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य नहीं
तबनीचकुलीन दुधामति खोई। मंगल एकहिबर्ण तहांसब सों
अब भांतिअपार कथोई ३७१ ठाकुर औ तुलसी यक भावहि
ताहि धरे शिर कामिनिराते। बाद वृथा कृत साखि मृषा कहि
जूप छलै निज धर्म कहाते॥ माप तुला कृतकूटिसदा परनारि
औ पातुरि के सँगमाते। मंगल निंदक सोकिधौं सज्जन भक्त
कहावत मूढ़महाते ३७२ ॥ कबित्त ॥ तीरथते आइकहै हाथन
लगतुमोष दुःख अति मारगमेंकहांलौ गनाइये। अमुक कुथान

सुखपाइये ॥
जहां भोजन न लेशमिलै अमुक सुथानतहां बड़ो सुखपाइये ॥
शीतकी कहानी धूपमेह बादु भाषिकहै मंदिरादि महिमाबतावै
शुचिताइये । मंगलनहानप्रात धकाधकी चोरठग मीतकोमिलन
गावै मुक्तिको न भाइये ३७३ माघमें सवार गंग डुबकीलगाइ
खोजै जलमधिमोक्षन कृपालु निजपाइये । ठगनके मेलेमेंझमेले
परि भाँति भाँति बसनादिखोइ खाय घूमिघर आइये ॥ पांच
ओर आगिबारि ग्रीषम में देहजारि मुक्तिनदिखानि रामरामरट
लाइये । मंगल भ्रमातजीव आपुआपु भूलबश सथिर न होत
जाते दुबिधा नशाइये ३७४ मूढ़ताको बासतन पंडित प्रसिद्ध
भूमि गूढ़ता न जानैज्ञान भक्तिकाको नामहै । गणक कहावै न
गणित बात बूझै कछु नृपति न भूमिरंच सैनधन धामहै ॥ साध
करि ख्यातजानै साधना न एकजौन बाधक न मारैजीव सुमति
सबामहै । मंगल तथाहि ज्ञानि बिदित कुधाम देखु दृढ़तानज्ञान
की न खतन बिरामहै ३७५ एकजलबिन्दु बूड़िमरत पिपीलि
जौन मनमत करत पयोधिअवगाहिहैं । क्षणक उड़ात थकैम-
सक बिचारै चित्त गगन निरंत ताके अंतलौ समाहिहैं ॥ आतप
बिलोकि जातपारद बिलाइ सोऊ करत मनोरथ दिनेश धाम
गाहिहैं । मंगलबिमूढ़ तैसे खोजत अगूढ़ बस्तु गूढ़ देखिभ्रमित
कहत पूछौं काहिहैं ३७६॥सवैया॥ ब्यास पुराणकिये कितने
इक भावनसों बहुभांति पुकारैं । दायक मुक्ति बदैंयक ब्रह्मकहैं
यक शंकर जीवहि तारैं ॥ बिष्णुकहैं यकशक्तिभणैं यकरामकथा
किधौं श्याम बिचारैं । मंगल भूलपरी मन पंडित आतमत्यागि
फिरैं बहुद्वारैं ३७७ योगिनके मत योग समाधिरु जंगमके मत
चेतन बानी । जैन अनादि कहैं भवकर्म सन्यास स्वआतम धी
निरबानी ॥ बादि निराश भणैं दुरबेश पुजावत ब्राह्मण पावक
पानी ।मंगल येषटराग किधौं कहराइत राग न आन कहानी
३७८तीरथ बासि बदैं शुचि मंजन मूरति पूजक पूतरिध्याना ।
जापक मंत्र बिधान सिखावत पाठक पाठ षशांग प्रमाना ॥

ध्यानि स्वआतम ध्यान कहै निजज्ञानि गुणावत उत्तमज्ञाना । मंगलशालि मुमुक्षु सबैघन पोषत ह्यांकहु क्षेत्रविधाना ३७८ ईश्वर अंशतही यहजीवहै बेदपुराण कुरानबतावै । पै अबजाइ सकैढिग तासुन अंगमें क्यों ०र जाइ समावै ॥ कोटिउपाय बिधानकरै जपपाठ सुतीरथलौं फिरिआवै । मंगल शोच तजौ सिगरे अपने घरमें निजबस्तु लखावै ३८० ॥ यथा ॥ ज्यों तरुते महिपातपरो फिरि ताहिलगैनहिं कोटिउपाई । ऊरध औ अध आवत जावत संधिसमीर भ्रमै बहुताई ॥ रोवतहै बिललात दशौदिशि क्यों निजखानि लहैदुचिताई । मंगल ब्रह्म नपावत जीव तथा उपचार वृथाहि लखाई ३८१ यातनकी पतिबाढ़ि घटैमन भूषणवस्त्र अवस्त्र अभूषण । जीवसदा परमानँद पूरण ताकहँ नाहिंबिदूष बिदूषण ॥ ग्रीषम शीतयथा गतिआतप छीजत वृद्धतनेकन पूषण । मंगल ज्ञानगुणी उरलागत क्योंहुन मूरुखके मनतूषण ३८२ एकदिशा बिदिशा भरमैं यकऊरधऔ अध खोजतडोलैं । एकउपायन में अटके यककर्म प्रताप सदा गति बोलैं ॥ एकभणैं हरिकी महिमा यक आपन में अपनी गढ़िछोलैं । मंगल एकसबै भ्रमत्यागत हैथिरभावस्वभाव निचोलैं ३८३ क्योंभटकै मनज्ञान बिहाय बिभासित रूपअरूप नदोहै । ब्रह्मअनादि सहीबदसज्जन ठामकुठाम दुधा किमिसोहै ॥ स्वर्गवहै पुनिनर्क वहै गुरुशिष्यबहै सुनिपंडित मोहै । मंगल क्योंन तजैदुविधा उतसोइ बिराजि रहाइत जोहै ३८४ आवत काल जबैजग जाकहं होततबै तसकाल बटाऊ । काल स्वभाव दुभांतिरचौ प्रभुजानत सन्तसुभाव कुभाऊ ॥ कर्म कहावत धर्म बिहाय न व्यापक रूप बिहीन दुठाऊ । मंगलको समुझावत बालक अक्षर पाठकबेद प्रभाऊ ३८५ कालमें केतिक बीति गये युग आतम भूत मुरारि पुरारी । केते अकाश मही बिनशे सुरभानु दिनेश निशाचरधारी ॥ बेदपुराणबिलान अनेकन चागम कारक ज्ञानबिचारी । मंगल चादि चनादि नहीं ज्यहि

गायसके न प्रवीण अनारी ३८६ शब्द स्वरूप बदैं यकजीवहि नाहिँ परै सुनि कान लगाये । एक भगौं परिपूरण ज्योतिनहाथ जरै भ्रमभूलगमाये ॥ आदि अनादि न जीवन गावत दूसरओर चलैं मुदछाये । मंगल जन्म अपारन खोजत बीतिगये न घरै फिरिआये ३८७ कोटि बिचारि बिचारि मरै कवितापढ़िकोटि बनाय मरैरे । कोटिन तीरथ धाइफिरै ब्रतनेम अचार अपार करैरे ॥ पावक तापि तपाइ मरै पगएक दुपाद खड़ो बिचरैरे । मंगल बूझिपरैनबिनागुरु बातन साधनसों न सरैरे ३८८ बेद ऋचा बहु बूझि भ्रमै बहु आयत बूझिकुरान पढ़ैरे । ब्राह्मण होइ कि शेखबनै बहु पण्डित-आलिम नाम बढ़ैरे ॥ आनगढ़ी नित भाषि रहे बहु चातुरिकै बहु आपु गढ़ैरे । मंगल जानेबिना निज आतम या भवतेकबहूं न कढ़ैरे ३८६ साधनसाधिअनेक मही-तल बैठिरहे उरज्ञान बिचारी । छंद कबित्त अपारबनाइ चुपाइ रहे बिभुतान निहारी ॥ योगसमाधि तजेजलअन्नहिं पै न लगा कछुहाथ अगारी । मंगलहै परमातम सत्य न देखिसकै बिषयी तनधारी ३६० जीवहि क्यों भरमावत तू जड़ आन किआन कथाकथि भारी । पारसको खलपाथर गावतकांच गहावत बुद्धि बिसारी ॥ शांतन होत बिना दृढ़ता मति तर्क अनेककिये अबि-चारी । मंगल पूरिरहा सबही थल एकतुही न द्वितीय ब्यकारी ३६१ जन्मजरा न तजै अपनी मति ज्ञानबिवेक अपारनगाये । तीरथ न्हाय किये ब्रत संयम साधन साधि दशोदिशिधाये ॥ जौलगि आतम भाव गहै नहिं पंथकुपंथ सुपंथ चलाये । मंगल सन्त सबै निज गावत पै न बचै मृतु पाशहि आये ३६२ अन्त समयजस आवलहै तसयों मुनि आगम बेद बतावै । भाषिवहै बहुसाधन गावत क्यों दुबिधा अपनी मिटिजावै ॥ कर्म किये बिनु कर्म किये यक भाव पयान मनैनहिंआवै । मंगल सिद्धि उपाय इतैजिमि पारस लोहछुये हरिभावै ३६३त्यागि शुभाशुभ आयसमै भव भाव उदासरहै चितधारे । काहुको बैर सनेहन

मानत मोहन मूरति चित्तपधारे ॥ ऊपरके तजि स्वांगसबै शुचि अन्तर पूरण ज्ञान बिचारे। मंगल साधु सही महिते जनसादर अन्त स्वछन्द बिहारे ३९४ आनँद रूप रहै निशि बासर त्यागि सबै सुखदुःख अकारण। मौन रहैकि भणै हरिकीरति अस्तुति सस्तुति जीवन मारण ॥ शापबिबर्जित आशिर्बादनहीन समस्त बिषय बिधिधारण। मंगल सन्त स्वतंत्र बिहारत सुंदर भाव किधौं भवतारण ३९५ एक नदीतट सेतु रचावत बूझतएक कहां जलथाहा। पैरत एक न पावत पारहिकूलहि एकखड़ेदुखदाहा ॥ बांधि घड़ा श्रुतिपारचलै यक घूमि कहैं कि निरन्त प्रवाहा। मंगल श्रीगुरु वोहित पायबिनाश्रम एकतरैं सरिथाहा ३९६ ऊमरि के फल बासि यथा नहिँ जानत दूसर देशबसैरे। त्योंयह जीव धरातल डोलत लोक अलोकन चित्त भसैरे ॥ लोकअपार किये करतार तहां बहु भांति गुणी बिलसैरे। मंगल पै नलखै यहि लोकहि जीअनुमानन एकलसैरे ३९७ केतिक ग्रन्थपुराण सुनेपढ़िकेतिक पुस्तकभौनथपीरे। केतिक तीरथन्हायथक्योबहु मंत्रगयत्री सुभाय जपीरे॥केतिक पूजनपाठकियोव्रत नेमअचार कुचालि छपीरे। मंगल आसन साधन तापनहाथन मूठीखुलीन ढपीरे३९८ आपनसे करिये बहुतै परदोषबिवाद बढ़ै उर वाके। मौन भलीयहि कारण रेमन जीवनमृत्यु बृथानितताके॥ अक्षर पाठक ग्रन्थपढ़ै किमि दीख उलूकन कंत प्रभाके। मंगल क्यों उपदेशतअद्भुत बाहिर हेरतअंतर काके ३९९ ज्यों जग लोग बदैं तसभाषिय अंतर आपनि वृत्ति बिराजै।कर्मसुधर्मअकर्म बिमोह कहावत लोकहिये सुख साजै ॥ निंदक मूढ़न बादि कथै ज्यहि कारण सो शुचि शुद्ध समाजै। मंगलसत्य छिपाय धरौ उरझूठ बदौ भव आदर काजै ४०० क्यों मन झूठ कहों भवबीथिन आदरकौन निरादर कोरे। तू बिषयी रसलंपट रेमन संमत देत बिषयरस भोरे ॥ अंत बिभोग बिलोकिय संसृति दुष्टमहाभ्रमणा मनतोरे। मंगल सोनलगी सपने जलहाथ लगै न भिलाहि

निचोरे ४०१ लोक लिये परलोकन भावत मोह विबर्द्धि लहै मनमाहीं । जो परलोक गहै तोरहै कित लोकहिमें सबलोग सोहाहीं ॥ जीवनमें सबभांति सदासुख जीवनमें दुखकी परिछाहीं । मंगल ज्ञान बखानत टूटत है गुण बेद कितेव कहाहीं ४०२ संमत साधु सदा सुखदामति नीच अधोगति दानिकहावै । जोजन संत असंतन चीन्हत सोदुखभोग कबौं नहिं पावै ॥ आपनिवृत्ति समाधि रहीन द्वितीय बिलोकनि जीवहि आवै । मंगल सोजग जीवनमुक्त न जात अधोरध ब्रह्म समावै ४०३ त्यागि सबै भ्रम ध्याउ सदाहरि आन भरोस बिहाय अरेमन । ज्ञानसमेति सुकीरति ताकर गायकरै शुभकाज लहेतन ॥ मुक्तिपदारथ हाथलगै फल आनहु पाय गुणै सुखकोगन । मंगलसत्यबिबेक लियेनहिं स्वारथ संतनको द्वितियेसन ४०४ मोहकुमारगमें भटकै सबिबेकन तूहरिको पदध्यावै । दानि अभिप्रिय दूसर नाहिन क्योंनहिँ तूदृढ़ता मनलावै ॥नाम प्रताप दयो दिषि मंडित पंडित दान अज्ञाकरवावै । मंगलभूल न जानत ईश्वरतू कस आयु अमोल गमावै ४०५ संगते पंडित होत महीतल संगते दुष्टशरीर बनैरे । संगतेमूढ़ कुकर्मबिमोहित संगतेनीचकुलीन गनैरे ॥ संगते बेद विधान गुणेब्रत योग समाधि सुध्यानसनैरे । मंगल संग प्रकाशक ज्ञान कुसंगते उत्तम भ्रष्ट पनैरे ४०६ स्वांगनमें इत आयु गमावत रोगनको मनभोग बिचारै । संगति भावति मूढ़नकी सतसंगति में न घटीकुबिहारै ॥ स्वाद बिषय रस वित्त बस्यो अबक्यों शुचिज्ञान हियेमें प्रचारै । मंगल चेति अजौं भजिले हरिजन्मद्वितीय ध्यकारहि टारै४०७जीवनहैधृग याभवमें हरि त्यागि विषयरस जे लपटाने । कीट पतंगपशूखग भूचर तेपि भलेरस इंद्रिय साने ॥ जेनर कायहिपाय नध्यावत आतम शुद्ध स्वभावप्रमाने । मंगलतेजड़तेजड़ जानिय क्योंकरतार तिन्हैं निरमाने ४०८ तोहिं महाधिक है मनमूढ़न त्यागत आपनि चंचलताको । झूठबिषयमेंप्रयुक्तरहै सतमारगपैन स्वजा-

नहिं हाको ॥ कामकला मदकी मदता तजि लोभभजै किनकंत रमाको। मंगल सीख अपारदई नहिँ तूजड़ शुद्धभयो दुखकाको ४०६ आतमहीं परमातमहै तठही नहिँ दूरिफिरै दिग्विचारी। बस्तुधरी अपने घरमें प्रतिद्वारकि खोजत ज्ञान भिसारी ॥पूछत आन बतावत दूसर जोपिबदै परधाम बिहारी। मंगल आपनि नाकनटोवत मूरुख धावत काक पछारी४१०आतमबास शरीर सहीकबि संतन भाषि बताय सकैरे। वाथल बुद्धिनहीं मन कीगति कोटि कुयोजन धाइथकैरे ॥ ज्योंत्रियभोगकराय बिना न बखानिसकै चहुंकोटि बकैरे। मंगल आपुहि जानत आपुहि ज्ञान द्वितीय न बुद्धिचकैरे४११ याजग फागुन फागलगै अपने ग्रह फागुकि बारहमासी। लोग निलज्जरहैं यकमास इतै नित काम करावत हासी ॥नारि इतै फगुवागहि मांगत ह्यां नितलोभ बयारि बिलासी। मंगल यातनते भवही भल जोमर्याद गहेन बिनासी ४१२ जेतिकलागुरु गाउ रहेन बहू रसको अब छूटि गयोरे। शुद्ध सतोगुण चित्तबसो तम मोहनश्यो रबिज्ञान उयोरे ॥ खोजत जाहि सोआपुमिलो भ्रम भूलकिपद्धतिको बितयोरे। मंगल मौनकि शमजपैं रसनीरस नाम बिवेकभयोरे ४१३ जो भ्रम आगिल पाछिलको अरु सर्गुण निर्गुण को व्यवहारू। सो अब एक प्रमाण लखो दुबिधा निज अंग बिकल्प बिचारू ॥ निर्गुण नाहिंन सर्गुण कोपि वहै सब ठाम स्वछंद बिहारू। मंगल नागर ग्राम्यबनी त्रिबु पूरुष एक विवेक निहारू ४१४ सौंपि स्वराज्यसबै निजमंत्रिन भूपगयोबन ज्योंमृगयाको। ज्यों हरि चाव इतै तनुधारि सुमोहन रूप ब्रजै शुचिश्याको ॥ कानन राजहि जानत तेजन हैं जिन दीख कबौं नृपताको। मंगल संत तथा पहिंचानत ब्रह्म स्वरूपहि श्याम प्रभाको ४१५ चाहिय आपन शुद्धस्वभावकहाच्युत अच्युतसों निजकाजू। ब्रह्महिंश्यामजु श्यामहिंब्रह्म स्वभांति दुभांतिन ज्ञानसमाजू ॥ दोबिधितौ भल एकहितौ भलतू अपनीकहु त्यागिकुसाजू। मंगलहोइमही-

पतिकौनहुं दासकहाय न पाउब राजू४१६ जाकरराज प्रजाहम ताकर जोहमहींतौ प्रजान नृपालू। कोअवतार धरैभवमें पुनि त्यागि कलेवरं जात सख्यालू॥ जानबहै अतिदुर्लभ चीन्हबदुस्तरभाव फँसा भवजालू। मंगल आपुहिभूलिकहा फलदूसरको सबबूझि हवालू४१७ ढूँढ़तकाहिफिरै मनमूरुखदेशबिदेश सकष्टबटाऊ। सिंहपर्‌यो पिँजराजिमि दौड़त तोड़तताहि न भूलप्रभाऊ॥ त्योंभ्रमपाश परीगलमें नहिंत्यागत चंचलता व्यवसाऊ। मंगलहैतो तुहींनहिं दूसर अंतर बाहिर एकस्वभाऊ ४१८ मुण्ड मुड़ायगहे करवा दुखभोजनके घरग्रेहिकेआवै। जौन गृहस्थसो बंधनमें सुतनारि प्रयोजन चित्तसतावै। जोनहिंसंत गृहस्थनहीं तिनकी कुदशा न कथेकछिजावै। मंगल कौनहुं भांतिनहै सुख संसृतमें दुखहू दुखपावै४१९ संतनटेक तजैं अपनी भव व्याधि अपार सतायमरैंरे। कोटिउपायकरे पितुज्यों प्रहलादसदा हरि नामररैंरे॥ जानिदुखी निजसेवक साहिब धाइसहाय प्रसिद्धकरैंरे। मंगलक्यों खलदेखिडरैं नितआपनि वृत्तिहिमेंसचरैंरे ४२० दृष्टिदिये जगराग बिलोकत कर्मबशी निरबाण बिवादो। रामरहीमबदैं बुधपारस तारसको कुछजाननस्वादो॥ मोहमयी मति बासुन आवत ज्योंपशुपै शुचिचन्दन लादो। मंगलज्ञान वृथाहि बदै जड़बानर जानत स्वादकि आदो४२१ तालबजै न बजावन हारहै राग अलाप नगायककोई। देखनहार बिनाचषमूरति नृत्यकपाद बिहीन लखोई॥ शून्यगली तहँ आपुबिराजत ग्राम तहां जनएकनहोई। मंगलसत्यन दन्तकथा गुरुगम्यलखै दुबिधासब खोई ४२२ मारगमें सबदेवबसैं गणनाथ महेश रमापति देखे। शूरनिशाकर गंगतरंगिनि सूरसुता सगिरा त्रिपुलेखे॥ दंड दुतीनि कुसाधनमें सब अद्भुत बातकि नैन निमेखे। मंगलयोग बदैसिधिसाधक अंधनबूझत चक्षुनपेखे४२३॥कवित्त॥कोटिसमुझावैगुरुमूरुखन बूझैबातयथाकाकश्वेतहोय धोवतनगंगमें।जोपै नस्वभावी गुणबाहिरको रंगकाच कञ्चुकसोहाथ जौलौंरहत सु-

संगमें ॥ कूटिजात कालपाय किधौं मदजातहोत सुबुधि कुसंग तजि नाफाज्योंकुरंगमें । मंगल न भूलैज्ञान सम्पति अपारपाय सत्यधाम पुरुष बिलोकै निजअंगमें ४२४ ॥ सवैया ॥ को अब ज्ञानगुणैमनमें मतिशुद्ध प्रकाश बिचारि चुपानी । मारणहारन पालनहार न सिर्जनहार त्रिधावकठानी ॥ एकस्वरूप अखंड बिराजत तोनिप्रकार कथै भवज्ञानी । मंगलसिंधु कथान पिपील बतायसकै भ्रमपंथ भुलानी ४२५ बासरभानु उदोतकरै निशिमें शशिखेचरहोत प्रकाशी । आदिअनादि दुऔबिधि आवत शुद्ध स्वभावलिये स्वविलाशी ॥ ईश्वरमय सबभासिपरै बिनु ईश्वर अंध प्रभाकितनाशी । मंगल धन्यअहै.करतारररचोफिरि ताहिरचोन दुभाशी ४२६ सत्यदयानिधि तूसबठामन रक्षतदास सदा हितुमानी । को तुव कीरति गायसकै अति बिस्तर रूप नजात बखानी ॥ ज्ञानप्रकाश प्रभाकर मूरति मोह निशा भ्रम रूप सिरानी । मंगल जैति बदै करुणाकर देहुस्वभाविक वस्तु अमानी ४२७ शीशजटा न जड़ाउ बँध्यो नहिंमस्तकभूति न चन्दनरोरी । बासित अंग अबासित नाहिंन तीरथ औ ब्रतते मति भोरी ॥ मूढ़नमें गणना अपनी कबिपंडित कीन कथा कछु मोरी । मंगलदीख दशौदिशिमें प्रभु आइपरो शरणागतितोरी ४२८ मोहन सूरतिहौ परमानँद सत्य चिदानँद वेद बखाना । याभवभूल सबै बिधिदेखिय काहि कहौंमनको अनुमाना ॥ एक महीतल एकबसै सुरधाम दुऔकिमि एकसमाना । मंगल दीख जहांतहँ मायहि हौंशरणागति तू भगवाना ४२६ कोटिन भाव कुभाव बिचारिय कोटिन तीरथ धावतडोलैं । कोटिन जाप जपैं अजपापुनि पाठक कोटिन बाणिसुबोलैं ॥ कोटिनपंडित आलिमहैंअरु कोटिन वैयरसौषधि खोलैं । मंगल ईश्वरकोकछुखोजन पावतहैं कितनी गढ़ि छोलैं ४३० जेगुरु के पदकी रज सेवत तेपि सुजान कहैं कबिताई । जे न गुरूगति जानत मूरुख तेन सुजान भयें भ्रमताई ॥ को गुरु सेवक नामद्वते शुचि भाव भये

दुबिधा मिटिजाई। मंगल मौन रहौ न कहौ कछु सत्य समाज करौ सेवकाई ४३१ जो दृढ़ता अपनी मतिमें नहिंतौ ब्रत नेम वृथा तनपीड़ा। सिद्धि उपाय स्वभाव वहै नतसंत समाज उठावत बीड़ा॥ भोग बिलास बिषय भ्रमरूपक सोलहिजीव प्रकाशक क्रीड़ा। मंगल ब्रह्म बिधानको बूझत धर्मप्रवृत्ति किधौं गहिमीड़ा४३२ गावत होव प्रयोग अहै ऋग् औ यजु अध्वर जाहि बतावै। सामभणै उदगात प्रयोगहि वेद अथर्वण शांतिलखावै॥ पुष्टि समोहन बश्य उचाटन मारण थंभन आदि गुणावै। मंगल बेदके धर्म सवाक्य बखानत सो उपनीषद भावै४३३जाग्रतको यकसार बिचारत स्वप्नबिज्ञानगुणौं यकसारा। एक सुषुप्ति विवाद लगे पुनि एकतुरीय प्रमाण बिचारा॥ पैनहिं जानतकौनु विमोदतबादविवाद अखंड पसारा। मंगल बूझभलीनहिंआवत मूरुख खोजतसिंधुकरारा४३४जंगमरूप कहैं यकसाधुबतावत थावरहैं यकसंता। भेदनजानत बादिबखानत हैदुहुंभाव प्रमाणनिरंता॥ आपनि भूल विवादत आन कि बोध न होत पुराणभतंता। मंगलआतम शुद्धसतोगुण ताहि बिसारिभ्रमैं मतिवंता ४३५ सूधचपानन देखिसकै दृग मूँदि लखै बरुनैन पसारी। ऊलटि दृष्टि बिलोकत रूपहि सत्यकथा मुनिराज बिचारी॥ देखतही निज रूप मनोहर मोहमयी भ्रमदेत बिसारी। मंगल सानँद मुक्तमहीतल दम्भ बिलास कि बात नियारी ४३६ ॥ छन्द ॥ सातौ आसमानके ऊपर अर्शमुअल्ला कुर्सीहै। आपी तहां बिराजतमालिक हरसायत गति उर्सी है॥ जाननहारा दूजा नाहीं यों कह बाणी फुर्सीहै। मंगल हद्दरही नहिं बेहद खाम खयाली पुर्सी है ४३७ ऊपर को सबसैन बुझावैं नीचेकी सुधि नाहीं है। भटकत फिरै भूलिमायामें पूजा पाठन माहींहै॥ कहता सुनता तर्कअनेकन गूढ़ अगूढ़ कथाही है। मंगल पै न बूझमें आवत है जैसा तैसाहीहै४३८ यकनासूत बतावैं सच्चा यकजब रूत लखातेहैं। एककहैं मलकूत देखिये यकलाहूत सुझातेहैं॥ यकचारोंसेन्यारे

डोलैं घरहाहूत बताते हैं। मंगल भूली भटकी गावैं इतकी उत दरशातेहैं ४३८ जाग्रतसो ना सूतबताइय ख्वाबकथा जबरूती हैं। है मलकूत ख्वाब ग़फ़लतमें निज ज्ञाता लाहूतीहै ॥ जहांते आया तहांसमाया सोआलम हाहूतीहै। मंगलपंचदशा येअपनी आनकहे मति सूतीहै ४४० सूरजका प्रकाश ज़रीसानूर इलाही ऐसाहै। सर्दी गर्मी कुछनहिं उसमें मणि प्रकाशधौं जैसाहै ॥ बेनज़ीर बेचून नामहै भया न होइ न वैसाहै। मंगल समुझिलीजियेदिलमें है वह जैसा तैसाहै४४१ अद्भुतमूरति क्यों कहिजावै हियभावै जिय आवैजू। जिह्वाकहत बनतनहिंकैसेहु फिरि क्यों करिसमुझावैजू ॥ सैनबुझावै बूझ न आवै कर्मकिये नहिंपावैजू। मंगल सत्य भणत मुनिसाधू ज्योंगूँगागुड़खावैजू४४२॥सवैया॥ जेनहिंजानितकैंगुणकी मनतेकिमिनिर्गुणभेदबिचारैं। बेचतनित्य बराटिकजे नहिंते मणि माणिकमोल उचारैं ॥ कर्मबशी भवभूत जितेनहिं तेशुचि आतमज्ञान निहारैं।मंगल खेल खिलारिनकेसँग मूरुखके सँग जीतत हारैं ४४३ कंदखनैं इक मूलभखैं फल खायतपैं इकक्षीरअहारी।ग्रीषम पावक मध्यदहैं तनशीत रहैं जलमें दुखभारी ॥पावसमें तजि छाहँ रहैं जप पाठकरैं भव याग पसारी। मंगल चीन्हत आतम जोनहिं तौभ्रम मेटिसकैं न अनारी४४४ ज्ञानगली न चले कबहूं तिनको कस सिद्धि सतो गुण होई। बाणिसुने निर्बाण बिभासकि चकितचौंधि रहैं बुधि खोई ॥ चित्त गुनैं यहदंतकथा जपपाठ बिधान न पूजनकोई। मंगल दंत निकारत मूढ़त मूढ़कि दर्पणको कपि जोई ४४५ ब्राह्मण पूज्य गृहस्थनके घर धायसबै जन पाइँपरैंरे। वे अपने मदमें अटके कछु ब्रह्मबिधान नचित्तधरैंरे॥ जानत बेदन भेदन भाव न भक्तिन ज्ञानन याग बरैंरे। मंगल भेंड़िधसान गहौपग पंचकरैं जस तैस करैंरे ४४६ बासव तापसनारि रमी नरदेवन ताकहँ दोष लगावैं ॥ कौशिक पातुरिके सँग मिश्रित क्षत्रियते शुचिबिप्र कहावैं। बिष्णु जलंधर नारिठगी सब बंदत कोउन

जीव लजावैं ॥ मंगल पंचकरैं सोकरो नत सत्यकहै जगनिन्दक गावैं ४४७दीख अनेकगुणी कबि कोबिद जेकबिता सबितासम गावैं । आलिम फ़ाज़िल शेवरु आरिफ़ आयत जौन कुरानबतावैं ॥ बातनके निर्बाण लियेबहु ऊपर केर बिचार लखावैं।मंगल अंतरकी गति गावत आपुहि बूझत आपु लजावैं ४४८ जासन पूंछिय मुक्तिगली सो बदै जप तीरथ पाठ अचारा । जोकरि कोटिन थाकिरहे फिरि क्यों भटकै मन ज्ञान प्रचारा ॥ हैतनमें सोमरै नतुरै जोमरै औतरै सोशरीर ब्यकारा । मंगलसिद्धसमाधिन साधत बूझत आतम ब्रह्म बिचारा ४४९ जोसबके शिर ऊपर सोहत तासुकथा किमिजात बखानी । जो नबहै तसहोत तबै इत बंधनमोक्षकथा न कहानी ॥ जायपरै शरणागतताकर जाकरनाम जपैं मुनिज्ञानी । मंगलभूलमिटै सिगरी अपनीपदवी लहि होइ अमानी ४५० आपन बूझ बुझावत आनहिं सो किमि बूझिसकै मतिथूला । सूरज की द्युति होत नहीं सिकता चमकावतहै प्रतिकूला ॥ दंभ किमानत ज्ञान बिधानहिं जो सब भांति नशावत मूला ।मङ्गलभेंड़ि चरावनहार चुकावत क्योंगज मोल अभूला४५१ ईश्वरकी रचना लखिकै बुधि होतठगीसिन बूझतभेदै । कोटिप्रपंच करै ब्यवसाउ यथा जल छेदत होतन छेदै ॥ बीज बिलोकि निहारत पादप चौंकिउठै लहिकै उरखेदै । मङ्गल क्यों करतागति जानत पंडित बैठि रहै तजिवेदै ४५२ जोकहनेति कृपानिधिकी गति जानत सोमति ताहिन बूझै । अंध कि संबल आपन देखत तापग पांवदिये मगसूझै ॥नौमन सूत इतै अरुझो सुलझावतहौं नितनित्य अरुझै ।मंगल सोकिमि तोहिं उबारिहि जोपहिले अपनैरण जूझै ४५३ पाहननाव न नीरतरै किमि पंथिचढ़ाय लगावत पारा । क्योंभ्रमि सूरुखसों भटकै निशिबासर ध्याउसदा करतारा ॥पंथअनेक प्रपंच बखानतहैं कृत आनहिं आनबिचारा । मंगल सत्यकहे नबनै इत भाषिय लोगनके अनुसारा ४५४ क्योंसुख देखिलहै मुदको

मन औदुख हेरिलिहै अघभारो। देवनको शुचि आतम मानत दैत्यनके जड़ता व्यभिचारो॥ एकस्वभाव सुधीसमधीनहिं ज्ञान किते केहिधाम बिहारो। मङ्गल सत्यबिबेक लिये निशिबासर नीरस एकप्रचारो ४५५ शुद्धसतोगुण ज्ञान प्रकाशत बूझतही निरबाणकि बानी।पंडित शंखन घंट बजावत गावतहैं अपनी मतिमानी॥बाग बिहाय मुश्रजिन डोलहि लोगकहैं जड़ताबश प्रानी। मंगल जौलगि बूझन आवत तौलगि नेम अचार प्रमानी ४५६ निर्गुणबस्तु बिचार भयेउर दंभ सबै तजिदेत सुजाना। को निरखै दिशि पूरब पश्चिम आगम वेद पुराण कुराना॥ तीरथ मूरतिमन्दिर मस्जिद धायमज़ारफिरै भ्रमसाना। मंगल जौलगि बूझ न आवत तौलगि जौनकरै सोप्रमाना ४५७ काग कि बाणि अशुद्ध बिचारत शुद्ध बखानत बोलत तोता। यावत चित्त द्विभाव लग्यो मनतावत शुद्ध अशुद्ध समोता॥ बोधभये दुबिधा मिटिजाय बिषय दधिमें पुनिखायनगोता। मंगलदेखुतु ज्ञान कि आंखिन जो इत सो उत क्योंहु न होता ४५८ सत्य असत्य अपार न भाषत लोगनको ठगिके धनजोरै। बाहिर हंस स्वरूपकिये अरु अंतर लोभ सुकर्मनितोरै॥ नीरस बाद बदैनित निर्गुण मोहमयी मतिधर्म न चोरै। मंगलयाजगरूपप्रपंचकजाने बिना दुबिधा किमिछोरै ४५९ सिंधुकि थाह पिपील न पावत थाहत आपनजीवगमावै। ज्योंनभ अंत न मक्षिक जोवतकोटि उड़ान उड़ै फिरिआवै॥ लक्षप्रकाशकरै सिकताकण नाहिंदिनेश प्रकाशहि पावै। मंगल त्यों यह जीवन जानत ब्रह्म सनातन मूरति भावै ४६० क्यों मनबुद्धि गुणानिगुणै सुनि बेद पुराण कथा अनुमाना। मोहनिशा तजिदेखु दिवाकर आतमरूप अरूप प्रमाना॥हैसबमाहिंपरंतु न दीसत या भूमकी न कथा न पुराना। मंगल बूझत आपनरूपहि बैठिरहै तजिमान अमाना ४६१ देह बिहाय न जीव बिलोकिय जीव बिहून रहै न शरीरा। जीवहि देहअहै तनजीवहि सूक्षमथूल दुधाकृतपीरा॥ बंधन मोक्षदुवौ

इतही तन बंधित जीव अबंध समीरा । मंगल ताहि न ज्ञानप्रले सहु जोनहिंजानत जीव अधीरा ४६२ संपुट पाठकरैं यकपंडित एक मृत्युंजय जापकरैंरे ॥ गोमत दान दिवावत वाथल पर्वत अन्न लुटाव धरैं रे ॥ दान अजा शनि एक करावत गाय पुजावत द्रव्य हरैंरे । मंगल हंस चले परधामहि काहुके कर्म कळूनसरैंरे ४६३ एकहि लग्न नक्षत्र घरी तिथिबार ससंबतजाति बिचारिय । द्वैजनजन्मलियो यकठामहिं एकहि योगकरन्न सम्हारिय ॥ पंडित भोगक मूढ़द्वितीय धनीयक दूसर दीनभिखारिय।मङ्गल ज्योतिष बादसुआनहिं ईश्वरकी करणीकछु न्यारिय ४६४ दूरि ते देखत थूलठलगै लघु ऊंचचढ़ेलघुनीचबसेरी । नैनदियेचश्मा लघुदीरघ हेरतहैदुबिधा मंतिघेरी ॥ भेदनहीं कछुअक्षबिलोकिय जीवहि दोषनहै बुधिमेरी । मंगल आपन बूझहिमेंभ्रम पंडितके ढिगबुद्धिकिढेरी ४६५ ॥ छंद ॥ पंडितवेद ऋचादरशावै विविध अर्थकरि गावैजू । आलिम फ़ाज़िल बड़ामौलवी आयत बांचि सुनावैजू ॥ जिनवह वेदकितेब बनाई तिनकीगति नहिंपावैजू। मङ्गलसमुझि लीजिये दिलमें क्यों अबज्ञान सिखावैजू ४६६ पूजापाठ जापतीरथबत बर्णाश्रम मदभुल्लूहै । मंथबिवाद दंभ वानाकी पियेवचन गतिझुल्लूहैं ॥ बियाधन नृपताकीआफूसुंदत चषकहुं खुल्लूहै । मंगलहै निर्गुणमत बिजया यकचुल्लूमेंउल्लू है४६७ बूझतही निर्गुण मतबानी सिगरीकथाभुलानीहै । प्रश्न आन उत्तरकुछ आनैदेत सुमति बौरानीहै ॥ जिसको पहिलेदुष्ट बखानै अबकह पूरण ज्ञानीहै । मङ्गल बूझ बिना पारस शिल बूझत कीमति जानीहै ४६८ जो कुछ बेद कितेब न जाना सो अब कौनुबतावैरे। बूझभये अपनेउर अंतर बाहिर क्योंकरि आवैरे ॥ जो कहने सुननेकी नाहींकोअब ताकहँ गावैरे ॥ मंगल है परदेकी बीबीपरदा खुलैन पावैरे४६९ ॥ सवैया ॥ सत्यकि प्राबिट धीरज आवण ज्ञान जलोददया दिशि प्राची । बायु बिमोह क्षमामहि बर्षत बुन्द बिचारसुधी खगनाची॥ शालिबिबेक

संतोष लहा सुख पाखँड अर्कअपर्ण कुराची। मंगलसंत किसान समोदित भाषतहै बरषायहसांची ४७० आँखिनसों सबको निरखैनहिं नैनन देखिसकै तेहिकोई। सूंघत बासु सबैनितनाकन वाकहँ बासित जातकहोई॥ शब्द अपारसुनै श्रुतिद्वार न ताहि सुनोश्रुति कोटि धरोई। मङ्गल आतममोहबिवर्जितमोहन रूप बसैतन सोई ४७१ गावत ज्ञान कथाइतिहासहिबाणिसदा नहिं वाहिकथोई। स्वादसबै रसना बिलसै नहिंनीरसस्वाद लखैकृत कोई॥ हाथनवस्तु अनेकगहैकबहूं नहिंवाहि प्रवीणगहोई। मंगल आतममोह विवर्जित मोहनरूपबसै तनसोई ४७२ जोमन औचितको भरमावत शुद्धअशुद्धगली मतिखोई। बुद्धिहिमोहित नित्यकरै यदिबोधतहै तदिबोध न होई॥ सर्वव्यकार शरीर लगावत आपुसकष्ट न देखिपरोई। मंगल आतम मोहविवर्जित मोहनरूपबसै तनसोई ४७३ जाहि विचारि थकी मनकी गति चित्तचवाउते आपुचुपोई। ज्ञानकि मौन बिवेकरहो उतजातन दूसर मारग कोई। बुद्धिमहा जड़ता चितधारत जाहि नबूझ सुकोटिबदोई। मंगल आतम मोह विवर्जित मोहन रूप बसै तन सोई ४७४ दंभविवादकिये कितने पढ़िवेद किताब चुपाइरहोई। बूझिफिरो बहुज्ञानिनसों जेहियोग समाधि अपार भनोई॥ जासु कथासुनि बाहिर देखत भीतर खोजत बाहिरजोई। मंगलआतम मोहबिवर्जित मोहनरूप बसैतनसोई ४७५ आतमजोनिबसैतनमें तेहिनाहिं क्षुधा न तृषा कछु व्यापै। दुःखनताप जरा न ज्वरा नित आनँद रूप बिराजत आपै॥ मोहनहीं सुत वित्त तिया धन आपुस्वछंद स्वमंत्र सुजापै। मंगल बूझत आतमभावहि ब्रह्म सनातन कौनुप्रलापै ४७६ दृष्टिविलोकत रूपसबैनहिं दृष्टिहि रूप विलोकत प्रानी। बाणि बखानत वेद पुराणन बाणिहिं गायसकै अनुमानी॥ श्रोत्र सुनैबहुशब्द यथा नहिं श्रोत्र सुनै द्वितिये गुणखानी। मंगल त्योंनिज आतम है मन बुद्धिसकै नहिं ताहि बखानी ४७७ दृष्टिहि ब्रह्मजो देखतहै सबब्रह्मकिधौं

बरबानि बताइय। कैश्रुतता जोसुनै सबबाद कि है मनब्रह्मसदा गति गाइय॥ बुद्धिहि ब्रह्म जोचीन्हत ज्ञानहिंपै भ्रम एक नहीं दृढ़ताइय। मङ्गलसर्व सुषुप्ति मिलैं यहिते जड़ भासत ब्रह्म न पाइय ४७८ ज्यों कविता कविते उपजै कविता कृतही कविना-महि पावै। मेघहिते जल नीरते मेघ धनी धनते औ धनी धन भावै॥ बृक्षतेबीज बियाहिते पादपको निरधार सुजान बतावै। मंगलत्यों तनजीवकथा कहतेनबनै यदिचित्तहि आवै ४७९ जो महिनीर शिखीपवमान स्वभानुनिशेश नक्षत्रकहावै। लोकदि-शा बिदिशा चपलाघन वेदसयज्ञ औप्राण बतावै॥ बाणिसदृष्टि त्वचा श्रुततामन भास अभास जोशुक्र गनावै। मंगलजीव बि-लोकजिते सबमें यक आतम आपुलखावै ४८० आतमवासबि-हूतन जीवन औदृढ़तानहिं देखिपरैरे। जातन आतमकोन निवा ससोमृत्युग्रस्यो क्षणनाठहरैरे। कोटि उपायकरै ब्यवसावहिबो-ल न डोल न सोनकरै रे। मङ्गलसन्तसदाशुचिभूतलजोनिजआ-तममें बिचरैरे ४८१ लोक अलोक सबै नभमें नभहू अहँकारमें वासकियेहै। शक्तिमेंहै अहँकार जोशक्तिसो चेतनब्रह्मको बिम्ब लियेहै॥ चेतनब्रह्म अनादि अपार बखानत वेदसदा अबियेहै। मङ्गल तासुप्रभा निज जोव सोआनँदरूप विलास हियेहै ४८२ तत्त्वनहीं महतत्त्वनहीं अहँकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी। नि-त्य प्रकाशित पै नहिं भानुबसै सबठामन पौन प्रभासी॥ नैनन देखत बाणि न बोलत काननहीं सुनता सुखरासी। मङ्गलताहि न दूसर जानत एक स्वछंद सदा अविनासी ४८३ जाहि बिचा-रि न भावत दूसर कोटिकथै कवि कोविद बानी। देखनहार वि-लोकत रूपहि अंधस्वरूप भनै अनुमानी॥ दोउनमें यक भाव न आवत यद्यपि पूरण वस्तु बखानी। मंगल बूझब आन बताउब आनहिहै समुझै शुचि ज्ञानी ४८४ जासन आपन ज्ञान बखानिय सो अनखाय रिसाय परैरे। मौनभली यहिकारण याजगसत्य कहे दुबिधा पसरैरे॥ ज्यों बक हंस कहै लघु धीनहिं हंस कहै बुध

लोगुलरैरे। मङ्गल दम्भलिये उरज्ञानन ऊपर स्वांग अनेककरैरे
४८५ आवतहै मन उत्तम पूरुष एक अनादि त्रिलोक सजैरे ।
हर्षअपार तरंगउठै उरपैसर बाहिर कौन भजैरे ॥ लोग कहैंहम
को समुझाउरे मङ्गल तू कस देव जजैरे । सोनहिं बाणिमें आवत
कैसहु संत बिचारि विवादु तजैरे ४८६ कासमुझाइय रूपन रंग
न धाम न नाम न मातपिता है । ज्योति न तत्त्वअमेय अमान
अलिप्त अकथ्थपरे कविताहै ॥ ऊंच न नीच नथूलनसूक्षम आदि
न अंत सदारमिताहै । मंगल बुद्धिनबूझिसकै तिहुलोक प्रकाश
नहीं सविताहै ४८७॥दण्डक॥सकल समाज चारिखानि जल
कृत देखु जलपवमान कृतसोतौ भूताकासहै । भूताकाश अंतरिक्ष
चन्द्रलोकसूर्यलोक सोऊतौनक्षत्र लोकपावत बिलासहै ॥ भपुर
बनावदेवलोकहीते देवलोक लोकगन्धरबसोतौप्रजापतिबासहै।
प्रजापति लोकसो बनायोब्रह्मलोकपाय मङ्गल अलोकआगेब्रह्म
चिदाभासहै४८८देवकरि जानैताको देवसों बिवेकहोत भूतकरि
जानैताके भूतरूप बासीहै । बायुसोंबिचारैताहि भासत समीर
समनाकरूपबाढे ताको नभसों बिभासीहै॥भानु अनुमाने ताहि
भावत दिनेशतुल्य सगुणप्रमाणै वाकेसतनबिलासीहै । एकरूप
सोई न द्वितीयतात तीनिलोक मङ्गल बिचारि देखा सत्यअवि
नासीहै ४८९ जड़वत रहत न जानत बिधानवेद हंसरूपकाग
होत अचरजबानीहै । जानिबूझि त्यागिभूल सत्यपंथ लेतजौन
तासुबात सबबिधि सुजन प्रमानीहै ॥ रतनको भावकोई जान-
त जवाहिरी नजानत बणिक जौन बेचत भवानीहै । मंगलसम-
स्तबस्तु प्रथम बिचारिदेखै फिरि परित्यागै सत्यभाव चित्तआनी
है ४९०जानेविनु भाषत लजात जीवआपमूढ़ पूछत निकारेदांत
अनहद बानीहै । ज्ञान औबिबेक किधौं बसत सुठामजाहिबदत
प्रमाणभाषि कथाकि कहानीहै॥अलख बताय समुझावैसत्यभाव
कहांअंधनमें राजाजाके एकआंखि कानीहै। मङ्गल स्वरूपआपदू-
सरो कुरूपदेखै मूढ़ता किचातुरीबखानैकोई ज्ञानीहै ४९१ एक

ग्रंथ काहूबिधि पाठकीन्ह अर्थ हीन ज्ञानिनसे बादकरै बोलि बोलि बानीहै । ज्ञान औबिचारकौन बूझतन शुद्धचित्त चारिओर मोह मायातन लपिटानीहै ॥ आपुसम दूसरन मानत बिमूढ़ संत साधुताकि बातदूरि बड़ो अभिमानी है । मंगलनमानै राउ सांचीतो कहावतहै चिड़ियाके धामधरी जैसेकौड़ी कानीहै ४६२ सबैया ॥ तूमन जानतहै अपनीगति तापर मारग बामसिधावै जो बिभुताहि प्रजासम जानत कोअब तोकहं ज्ञानसिखावै ॥ पावकनीर बुझावतहै जोपैनीर जरैफिरिकौन बुझावै । मंगलमूरुखसंत सिखावतसंत भ्रमाय कहा बनिआवै ४६३ वेद विधान बतावत पंडित आपुदुचित्त बिषय लपिटानो । बाहिर उज्ज्वल अंतर श्यामरंगे पगचोच हंसप्रमानो ॥ औरनको भ्रमकूपगिरावत आपुन मूरुख ज्ञानभुलानो । मंगलका कहिये छलबादिहि सत्यमिटाय असत्यहिसानो ४६४ एकनके प्रणपाठबिना जल पानकरै नहिंबासरकाहू । रोगग्रस्यो प्रणत्यागि पियोजल आनि परो उरअंतरदाहू॥ बक्रितपाठ तृषाअति व्यापितजो जलमें नहिं पाठउछाहू । मंगलदंभ परित्यजि जोकृतसो सतकर्म बदैबिबुधाहू ४६५ अंतरश्रीहरि ध्यानबिराजत बाहिरकाज बिषयरत जोई । ताकहँसंत बखानत कोबिद पापअपाप ग्रसै नहिंकोई॥ जाबिधि भावरहै जगताबिधि कर्मसुकर्म नजातबदोई । मंगल संतसमान सुधीनहिं भावद्वितोयधरे हियसोई ४६६ चीन्हत सूरज पायसबै दिनमें निशिचन्द्र प्रकाशहिपाई । अस्तभयेदुहुं अग्नि प्रकाशसों पावक नाशत शब्दप्रभाई ॥ शब्दबिहून नचीन्हिसकैतब आतमकी बुधिचेतनताई । ताबल लोकतिहूं पहिंचानत मंगल आपनिबस्तु पराई ४६७ शक्तिदशौतन इंद्रिय खोंचिके पांचहु प्राणसमेटि चलैरे । चित्त अहंकृतलैमन बुद्धिहि स्वप्नप्रदेश रचै स्वबलैरे ॥ जाग्रतकी सबबस्तु दिखावत देखि प्रसन्नत सत्यछलैरे । मंगलथाकि सुषुप्तिगहै इनहूं सबको तजि तोन धलैरे ४६८ कोटिकरौनहिं नैनबिलोकहि कान सुनैनहिं

जीभबखानै। नाकनसूंय त्वचापरसैनहिं आनहुं इन्द्रिय कर्मन ठानै॥ चिन्तहि चित्तनहीं अहँकारित औमनधावन बुद्धिप्रमानै। मंगल चेतन आतमहीन नथैंसिगरे नहिं आपुहिजानै ४९९ जागि खिलारिचलो पुनि खेलहि तासुप्रताप सबैजन जागे। शब्द सुनै परसै अरु देखत चाखत सूंघतही अनुरागे॥ कर्म कि इंद्रिय कामकरैं निजबुद्धि मनादि स्वमारग लागे। मंगल चेतनआतम आपुहि ताबिनहैं जड़ता सबपागे ५०० आपन तेपुर तीनि पसारत ज्योंमकरी निजजाल पसारै। नेकघटै नसमेटिबढ़ै तिमि अंतसबै हरिअंग बिहारै॥ संत असंत गुणीअगुणी सुरदैत्य कथा उतकौन बिचारै। मंगल एकहिभाव कृपानिधि जाननहार किआपुहिहारै ५०१ ब्रह्मसनातन ज्योति निराकृति पावकभानु निशाकर नाहीं। रत्ननक्षत्र न बस्तु प्रकाशित प्राणप्रभासन भासि सकाहीं॥ देखत जीवलहै पदआपन ज्यों परमातमकी परछाहीं। मंगलकीउपमा जोअनूपम बैठिचुपाइरहौं घरमाहीं ५०२ छन्द॥ पहिला चक्र गुदाकेऊपर द्वितिय शिश्नके आगेहै। नाभिस्थल तीजा चौथाहियं पंचम कंठलभागेहै॥ षष्ठम त्रिकुटीधाम अनाहद ध्वनि जहँसुनि सुखजागेहै। मंगल भंगहोत नहिंकतहूं एकरसदश बिधिलागेहै ५०३ यहध्वनि सुनतपरम पदपावै निजआतम अनुरागेहै। पुनि त्यहिनाहिं अविद्याव्यापै बिधवा लहत सुहागेहै॥ एकभाव चहुंखानि बिलोकै चीन्हत हंस न कागेहै। मंगल चिदानन्द महि बिचरै नहिंदाता नहिं मागेहै ५०४ जेहिंध्वनि सुनी अनाहदनाहीं हृदय कमलमेंडोलैहै। विविध भांति दुखसुख संसृतमें खोवत आयुअमोलैहै॥ मायामोह ग्रसै मनवाको दुबिधगिरा गतिबोलैहै। मंगल जौलगि आपुन जानत तौलगि नरपशुतोलैहै ५०५॥ दंडक॥ अमित बिधानश्रुति आगम बखानदेखि बुधिथिर होतनाहीं दुबिधाके थानमें। जानत प्रकाशरूप मानत बिभासजाहि मोहतबिमोह आपुमनबुधि प्रानमें। तीनिदेह पंचकोष पांचप्राण भूलभाव एकआपु द्वितिय

न आवत सुज्ञानमें। मंगल प्रबीनसोई एकभाव जाकेचित्तनातो भ्रमबाट फिरै मायारूपी थानमें ५०६ ज्ञानिन में ज्ञाननाहीं ध्यानिनमें ध्यान नाहीं बादिनमें बादनाहीं सत्यबूझ आनेते। जापिनमें जापनाहीं पाठिनमें पाठनाहीं योगिनमें योगनाहीं आतमा समानेते॥ त्यागिनमें त्यागनाहीं भोगिनमें भोगनाहीं दुःखिनमें दुःखनाहीं अंतज्ञान जानेते। देहिनमें देहनाहीं गेहिनमें गेहनाहीं नेहिनमें नेहनाहीं शुद्धभाव मानेते ५०७ जाके नामहोत ताकेरूपहू बिशेषहोत रूपवान जौन वाकी नामसे चिन्हारहै॥नाम रूपहीन ताहि जानत न बुद्धिभाव कोटिभांति भाषिबदै मनको बिचारहै॥ जहांलग रूपनाम तहाँलग मायाभास मायाहीन पारब्रह्म अकथ अपारहै। मंगल भ्रमावै मोह पाखंड कि आशपाय गुरुतादिखावै शिष्यबोधै करतारहै ५०८ आतम न बूझैआन दंभमें अरूझैचक्षु आपनी न सूझै कहै आरसीको दोष है। धायजाय चारिओर तीरथानि भूमिछोर घूमिआवैं बुद्धिभोर नाहीं उरतोषहै॥ आनउपदेशैजीव ईशब्रह्म तत्त्वमसि आपुभ्रम भेषैरहैं जीवमोहरोषहै। मंगलबखानै जैसेज्ञानको न चित्तभास ज्ञानत अनित्यनित्य पायोकहां मोषहै५०९ ऊरधते ऊरधबिराजै अधअधहूते आगेहूते आगेपाछे पाछेहूतेगाइये॥थूलहूते थूलसोहै लिंगहूते लिंगरूप आतमाको आतमा प्रसिद्धचित्त लाइये। देवन को देवसुरतीनिहूंको जन्मदान गुणतत्त्व वेदगनि अकरगुणाइये। मंगल बिराजै सबठामनमें न्यारोसोई मनकीगुनानिसोंन ताको भेद पाइये५१०एकते अनेकरूप चारिखानि देखियत अंत एक रूपहोय साखीवेद गावैहै॥ जालाज्यों पसारैकीटमकरी अपार तात खाततताहि क्षणहीमें सुरुचि स्वभावैहै। मूढ़ताको भावजाके मानत न पारब्रह्म जगत अनादिबादि ग्रन्थको चलावैहै॥ मंगल नभूलै ज्ञानमानसंत शुद्धभाव एकमानि सत्यसिंधु दृढ़ता दृढ़ावै है ५११॥ सवैया॥ जौलगिजीवन याभव तौलगि बंधुप्रियासुत मातपिता है। संमति मित्र अवास महीधर वाजि सुवाहनस्यो

रमिताहै ॥ आपनआन बतावत बूझतमूढ़ प्रबोधसुधोम मिताहै। मंगलअंत शरीरछुटे गतिजीवकी कौनकहै कविताहै ५१२ स्वर्ग गयोयदि नर्कपस्यो परतंत्रभयो नहिं आतममानिय। जोपैस्वव-श्यप्रमुक्त कहौ बुधतौ नहिं जीव स्वतंत्र बखानिय ॥ है परतंत्र स्वतंत्रनहीं यकभाव बखानत जो अनुमानिय। मंगल लोगकहैं कविकोबिद कर्म बिवश्य भ्रमोशुचि बानिय ५१३ आनँद रूप निरानँदनाहिंन बंधनमोष दुवोके परेहै। जीवत है न मरै कतहूं बश्यकर्मन ऊपर जात तरेहै ॥ जोभूप आपुहि सेवकजानत सो भृतकर्म स्वधीमधरे है। मंगल बूझभये नहिं सेवक साहिबराज स्वतंत्रकरेहै ५१४ सिद्धस्वरूप न साधित होवत ब्रह्म न मानव रूपबनावै। मोहबिलास शरीरलहै यह सत्य प्रमाण महामुनि गावै ॥ सोइकहै प्रति शक्तिबिमंडित जौनुकरै सब सोबनिआवै। निर्गुणसर्गुण दोउनमें भ्रम मंगलके चितचेतन भावै ५१५ जो गुणतीनि लिये सुरतीनि बिरंचि सविष्णु महेश कहावै। तेतिहुं रूपभये यकठाम बिराटशरीर दशौदिशिगावै ॥ मृत्युबिरंचिसरी स्वर्गधामपताल सदाशिव अंगसुहावै। मंगलत्यागि त्रिभुवन भाषत कोअज अव्यय ब्रह्मलखावै ५१६ पांचपचीन असे उरमी पट चित्तअहं मनबुद्धि लुटेरी। एकद्वितीय मतोनहिं मानत जीवहि घेरिरहे चहुँफेरी ॥ ज्योंखग नित्यनभै भरमै नहिं आवत अंत न आपुबसेरी। मंगलजीव अवश्य स्वतंत्रित थाकतइन्द्रिय मूरति हेरी ५१७ क्योंमन बोधलहै अपनो दुबिधा कि कथाकबि पंडित गावै। ब्रह्मनिरीह निरंजन भाषि बहोरिबदै नरकाय बनावै ॥ मोहबिबर्जित पूरणरूप बतायकहै बननारि ढुंढ़ावै। मंगलमौन भलीनहिंतर्क चुपानेबनै न कहे बनिआवै ५१८ जौन चहै सो करै करुणानिधि हैसबशक्ति मयीजगजानै। रूप अतर्क अकथ्य सकथ्य बिमूढ़न पण्डितजो अनुमानै ॥ जन्मधरै न अजन्म रहै प्रतिधाम निवास अवासबिधानै। मंगलज्यों समुझौतस आवत ताकहँ क्योंकरि बाणिबखानै ५१९ बाणिनमेंन अबाणिनमेंमुनि

ज्ञानिनमें न बिलोकि परैरे। तर्कनमें न अतर्कनमें शुचिबक्रनमेंन अबक्रचरैरे॥ मूढ़नमें न अमूढ़न में गतिगूढ़नमें न निगूढ़ धरैरे। मंगलयत्र बिचारियतत्र न औ सबठामनमें बिहरैरे ५२० जो मनतोहिं सिखावतज्ञान अनादि अनन्त बिधान बतावै। ताकहँ तूनहिं चीन्हत मूरुख कोटिन योजनलौं फिरिआवै॥ तीरथ मूरतिमें हरिखोजत दोषअदोषनमें भ्रमखावै। मंगल लोग कहैं यहिकारण मूरखहै मनसत्यनभावै ५२१ पांचहितत्त्वनते उपजैं सबजीव चराचर देखबिचारी। वृद्धिलहैंसुख दुःखलहैं बहुज्ञान बिधानकरैं व्यभिचारी॥ अन्तसमय मिलि जातसबै शरतत्त्वहि में मुनिबाणि पसारी। मंगलबाण अबाण बिकल्पन भूलकि पद्धति भूतलन्यारी ५२२ यद्यपिजीव बनस्पतिहूमहँ पैमनहैतिन केउरनाहीं। पक्षिपतंग चतुष्पद नागमें जीवसही बुधिमा तिनमाहीं॥ उत्तमकाय मनुष्य धरातल जामधिबुद्धि मनादिलखाहीं। मंगलताकहँ पायनध्यावत आतमहै जड़ता परछाहीं ५२३ तत्त्वरचे गुणदेवअदेव बनस्पति कीटपतंगबनाये। पक्षिसरीसृप औ पशुखेचर आदिबिनाश्रम सर्बउपाये॥ पैन प्रमादित भोकरतातब बुद्धिस्वरूप किधौं मनुजाये। मंगल तादिन ते करतार चराचर जीवनहीं निरमाये ५२४ स्वेद प्रसादते स्वेदज होवत चीलड़लीख जुआँ जगजानै। अण्डतेअण्डज कीटखगामि पिपील सरीसृप आदिप्रमानै॥ भू जल भानु प्रयोग वनस्पति उद्भिज होतसदा निरमानै। योनिज मानवऔ पशुसम्भव सो नरनारि प्रसंग न आनै ५२५ जाग्रतमें मनआन बिचारत स्वप्न समय कछु आनकरैरे। सो तजिदेत सुषुप्तिप्रचारत आपनहूं सुधिते बिसरैरे॥ तद्यपि ज्ञान न आवत है चित क्यों भरमाय भुलाय मरैरे। मंगल सूरज तापनके बश क्यों कहिये कथनी बिगरैरे५२६ आपनि बुद्धि अदोषित चाहिय ब्रह्मसबै थलभाषि परैरे। जोदृढ़ता बुधिमें नहिं तो जनुचित्रित पूतरि रंगभरैरे॥ मूढ़ बिलोकि प्रणामकरै बुध देखिगुणी गुणकोपकरैरे। मंगल कांकहिये भिषणा

निज बूझत भाव न आन धरैरे ५२७ दायक वृत्ति समर्थ्य कृपानिधि पण्डित सज्जन वेद बतावै। देतसबै अनयास सदानर जानि न तोष स्वचित्तहि लावै ॥ नित्यभ्रमै प्रतिठाम बिमोहित पालक भूलि त जीव लजावै। मंगल ध्याउ सदा परमातम जो सब ठामनमें छबिछावै ५२८ ॥ दण्डक ॥ शैवी शिव ब्रह्मबादैं जैनी अरिहन्तकहैं बौधकहैं बुद्धआदिब्रह्म अवतारहै। कर्महीप्रधानभनै जगबद्धमीमांसा ज्ञानी न्यायीकहैं त्रिपुरको एककरतारहै॥ बदत वेदान्ती सत्यब्रह्म अजयोनि योनि सगुण उपासी गावैंराम राम सारहै। शक्ति शुचिवादी भाषैं प्रणव प्रधानरूप मंगलअसत्य नाहीं दुबिधा अपारहै ५२९ वेदकी न आनैं न कितेवकी बखानैं कछुआन अनुमानैं धन्य सन्तनकी बानीहै। सत्यन दृढ़ावैं न असत्य मानलावैं गुणिआनहीं सुझावैं सूधीउलटी कहानीहै॥ जाहि बूझआवै ताहिमोहन सतावै आपुरंग रूपपावै नाहिंरंगति रँगानी है। मंगलप्रबोध होतचीन्है सत्यनात गोतचढ़ै धायज्ञान पोतपार बाट जानीहै ५३० ॥ गोपालछन्द ॥ यक उपदेशै लखैनआप। प्रणवमंत्र अजपाको जाप ॥ योग बतावैकरै न सोय। मंगलबुध अविवेक न होय ५३१ पण्डित आगमकरै बिचार। ज्ञानी क्षरअक्षर बिस्तार ॥ पढ़ै मोलवी सुरुचि कुरान। मंगल आपु नपावै जान ५३२ कायरबाना बीरबनाय। समरभूमिसो किमिठहराय॥ त्यों पाखण्डी भवदरशाय। मंगलसन्त छलोनहिं जाय ५३३ अग्निबिनाशै जल बहुताय। बड़वानल नहिंसकै बुझाय ॥ मूरख कोदम्भी छलिखाय। मंगलज्ञानी ठगो न जाय ५३४ ऊपरहंस अंतरितकाग। मेउ मेउ बाणी भषनाग ॥ माला तिलकबिभूति निचोल। उदर निमित्त बचन चंडोल ५३५ वेदकिताब न जानै जाहि। पाखण्डी दरशावै ताहि ॥ अलख बताय लखावै रूप। मंगलज्ञानी मूढ़ अनूप ५३६ बाणीमेंनहिंब्रह्मसमाय। कोटिपुराण कुरान कथाय ॥ जोहैसो न कथा इतिहास। मिथ्या मायारूप बिलास ५३७ काष्ठान्तर पावकको बास। पवननीर करिसकै न

नास॥ त्यों शरीरबिच जीवप्रवीण। कालगहे कछुपरै न क्षीण५३८ वेद उपनिषद आगमजैान। श्रवणकियो कबहूं नहिंतौान॥पढ़ाएक द्वैभाषा ग्रन्थ। मंगलबादी बिचरत पन्थ ५३६ ब्रह्म लखावैंमोह मलीन। शुद्ध सतोगुणगहे गलीन॥ निजविस्तार भेदनहिंपाव। उपजत मरत स्वभाव अभाव५४० त्यागी भयो न त्यागे दम्भ। रचि पचि मूढ़ बालुकृत थम्भ॥ गेहिनमें नितहोतशृ हीत। पवन उड़ावत बालूभीत ५४१ गुदड़ी अलफी जटा लँगोट। नग्न अभूषण तरुवर ओट॥ आयुबिताई तनु दुखपाव। मंगलहाथ कछूनहिंआव ५४२जेते गुणगण ज्ञानबिलाश। जिह्वाग्रहितूकरत प्रकाश॥ लोकित धरेरहैं तनुमाहि। जोसमुझावै बूझौंताहि५४३ ब्रह्मज्ञानी जोजगआहि। बन्धन मुक्ति न व्यापत वाहि॥ जीवोद्धारण बोलै बैन। बैर प्रीति दुबिधा मनहैन ५४४निर्बाणीनिर्गुण कृतबाद। जीभ चबाये लगत न स्वाद॥ जोपुरुषोत्तमध्यावतसत्य। मंगलमेटत जन्मबिपत्य५४५इष्टदेवफल देतसमोद। फल आशा बन्धन चहुंकोद॥ निष्फल बृक्षन सेवतकोइ। सेवत जौन निराशा होइ ५४६ जादिन गुरु न शिष्यव्यवहार। क्रिया कर्म जबनहिं कर्त्तार॥ तबधौं द्वैतकिब्रह्मअकेल। शून्यकिधौंयह अद्भुतखेल ५४७निराकार कोउभणै अकार। सबठांकोउ बैकुंठ बिहार॥शिवनारायणज्ञानबिचार। मंगलहोतनहीं निरधार५४८ प्रथमैं ब्रह्मकि मायाहोय। बुधजन हमैं बतावैं सोय॥ जोपैबदै ब्रह्महैआदि। मायाबिषय रूपिणीबादि ५४६ तोबिज्ञान कहां दुरशाय। समुझत दुबिधाकथी न जाय॥मायानश्वर बदैप्रबीन। चेतन पुरुष अलित अधीन५५०मायानाशि पुरुष मिलिजाय। चौदहभुवन बिभूतिनशाय। कौनबखानै जानैताहि। मंगलयह मन मता न आहि ५५१ मारग एकचलै संसार। नहिं द्वितीय कारणबिस्तार॥वहैपन्थ मुनि धारणकीन। चीन्ह्यो आतम परम प्रबीन५५२कथै विपर्यय बाणीएक। मूरख क्योंकरिसकै बिबेक॥ एकअवाहत वचनप्रकाश। मंगलबाणी बुद्धिबिलाश ५५३

क्षुधापिपास बिवर्षदिनरैन। प्रतिथल फिरतप्रचारतबैन॥ आप-
निमति थिरता गतिहीन। मंगल परमहंसपदलीन ५५४ जोन
पुरुष पदजानैआप। बृथाप्रणव अजपाकोजाप॥ अबिबेकी सबके
घरखाय। श्वपचअहै तेहिते अधिकाय ५५५ यत्र तत्रकरि बृथा
बखान।प्रतिकूलित बाणीनिबीन॥आपुबिषय रसभोग प्रयुक्त।
मंगलसोजगजीवन मुक्त५५६पयघृत मिलित भोज्य मिष्टान।
पावैं सदाप्रकाशैं ज्ञान॥ व्यापैकाम बैलकिनहोय। निजकर रेत
गिरावत कोय ५५७करै बड़ाई आपनि आप। प्रतिथल मिथ्या
वचनप्रलाप॥ जोसुगन्धिसो आपुबसाय। गन्धीमुख चीन्होनहिं
जाय ५५८॥सवैया॥ यातनवृक्ष सबैपरमातम जीव खगामि
सदा सुखदाई। भोगबिलास किधौंफलरूपक जीवगहै मनबुद्धि
स्वभाई॥ तावश जीवनमुक्ति लहै भवभूतलयों श्रुतिबाणि सु-
नाई। मंगलहै परमातमशुद्ध भषैफल नाहिंन जन्मतआई५५९
जोमतिदेखिय दृष्टिपसारि कै तामहँ पाखँड देत दिखाई। शुद्ध
सतोगुण कोउगहैनहिं आपनि आपनि चाहबड़ाई॥ एकद्वितीय
को तुच्छबतावत कोबड़छोट कहै भ्रमताई। मंगल ठीकन आ-
वत चित्तहि ब्रह्मसनातन देतलखाई ५६० बेदबदे सबकेशिरपै
पुरुषोत्तमहै अबिनाश अकेला। वाथल दीनमता नरनारिन पं-
डित आलिम औ गुरुचेला॥ जानत वाकहँ दूसरनाहिंनहै अनु-
मान महान अपेला। मंगलबुद्धि भसैनहिं सूरति होतप्रकाश न
भानुनवेला ५६१॥छन्द॥ जिनप्रकाश परछाहींदेखी तिनकी
मति बौरानीहै। कोटिज्ञान पण्डित समुझावै कौनसुनै बिषबा-
नीहै॥ गृहबाहिर अलमस्तबिराजै आनँदमय बिज्ञानीहै। मंग
लकहा बुझावै औरहि अद्भुतकथा कहानीहै ५६२॥सवैया॥
नामनहीं फिरिकाकहि गाइय धामनहीं कितबास कहौंरे। देह
नहीं केहि ध्यानबखानिय द्वैतनहींजप एकलहौंरे॥ चेष्टितनाहिं
जोनेह बताइय बस्तुनहीं करकाहि गहौंरे। मंगल अद्भुतबाद
बड़ो इतहौं मनबैठि चुपाइरहौंरे ५६३ तूमन जौनकहीसोकरी

हमयोजन केतिकधाय चलेहैं । शासन वेदकिताब लियेब्रतती रथमूरतिपूजि भलेहैं॥ छंदकवित्त रचे नवभांति विषयरसभोगसु मंत्रछलेहैं । मंगल बूझभये तजिपाखँड जानिवृथा निजहाथ मले हैं ५६४ मुक्तिकहूंनहिं बन्धनहै मनतू अबहीं भ्रम पद्धतिधारे । बंधनमोक्ष कहावत नामहि नरकरुस्वर्ग वृथाहि बिचारे ॥ जीवन मुक्त स्वरूपतुहीं लखुज्ञानके अक्षसुदृष्टि पसारे । मंगल बूझ भये दुबिधागतहै अरुनाहिं दुवौभ्रमटारे ५६५ क्यों निरदोषरमै भव बीथिन पापकुदृष्टि दुराश्रबसेरा । कोटिव्यकार बिथातनव्यापत मानतहै नहिंकाम कोचेरा । जाहिबुझाइय ज्ञानसुमारग सोसुनि जानत दुःखयनेरा । मंगलआतम कौनबिचारत दंभ बिवाद किये भटभेरा ५६६ मोह बिलास बिषय परिहास समोदित तूमन चित्तपधारे । आवइतै खलखांड़ खरीदन खारिखरीदत ज्ञान बिसारे ॥ संतस्वभाव न भाषतहैउर दुष्टक्रिया हितसौं कृत न्यारे । मंगलऊपर छापलिये स्त्रकमुक्तिन होइवृथा उपचारे ५६७ कौन गृहस्थ जो इंद्रिनकेबश कौन प्रवीण जोबूझत बानी । कौन गुरू जो बुझावत आतम शिष्य कोहै जो स्वभाव अमानी ॥ ब्राह्मण कौन जो हैसमधी पुनिकौन महंत स्वआसनथानी । मंगल संत को है जोअमान नहीं दुबिधा ज्यहिकी मतिभानी ५६८ जेतिक लोगअहैं मन भूतल ज्ञानबिना नहिं देखि परैरे । जासन मूढ़ कहौ सो लड़ै उठिसाधुकहे हित सों बिचरैरे ॥ त्यागत है नहिं मानकिपद्धति ज्ञानिनको सँगकौन करैरे । मंगलतूबड़ मूरखया जगमान कुमारग पांवधरैरे ५६९ मानगहे भवबीथिन श्रामिक आनहिये मुखआन कहैरे । वेदकिताबन अक्षरजानत आतमभाव हि धाय गहैरे ॥ आलसकेबश होतपरिश्रम नाहिंन भिक्षुकभाव लहैरे । मंगलशिष्य कियेधनके हितदंभ ग्रस्यो नहिं सत्य अहैरे ५७० शीतलसंत स्वभाव सदानहिं क्रोधकिपावक चित्तप्रजारै । भोगबिषय किन आश हृदयनहिं कामबतास शरीर प्रचारै ॥ बैर बिमोहन व्यापत जीवहि बुद्धि मनोहर बाणि उचारै । मंगल

डोलततोष बिमण्डित खण्डित दंभबिवाद प्रकारै ५७१ बाद बिषयनहिं भावतहै नितज्ञान बिवेककथै शुचिबानी। मौन्य रहै नत०यान हृदयहरि शुद्ध सतोगुणश्री निरबानी॥ हंस दशा जड़ चेतनद्वैबिधिपण्डित बालक चालिनजानी। मंगल आतम ध्यान सदारति दूलरिबुद्धि न चित्तसमानी ५७२ सोहतनित्य स्वआसन तोषित शुद्धसमाधि लियेषटभांती। जो बिचरै भवतो मुदसंयुत बूझत सुंदरजाति कुजाती॥ तीनि निशान बसैगृह काहु के वेद कि सीख सिखावत जाती। मंगल द्वै तन एकगहे नहिं निन्दक और प्रशंसक खाती ५७३ जायमिलै सतसंगति संतन धायगहैं जनसाधु बिचारी। आपनको सबते लघुजानत आनन को शुचि ज्ञानबिहारी॥ मातप्रिया गयतात सबै नर ऐसहु एक गुणीन अनारी। मंगलसंत महीतलहैं अलकोनु कथै महिमा बड़ि भारी ५७४ संतनको नितमोर प्रमाणहै संतनको नित नौमि सनेहा। संतनको जनसंततहौं मनसंतत के पदमो उरगेहा॥ संतन की महिमा चितभावत संतनके हित आपनिदेहा। मंगलदंभिन ते गुरुदूरिहि राखियमोहिं अहैप्रणएहा ५७५ कारणब्रह्म अहैभव को उपजै तेहितेपुनि ताहिसमावै। कोउभनै जगकारण कालहै आपु रचै पुनिपालि मिटावै॥ होत स्वतंत्र बदैंयक कोबिद अन्त सछन्दनथै मनआवै। मंगलभूल मिटायसकै नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७६ एककहै जगकारण कर्महि एकजु पांचहि तत्त्वबतावै। हैकरतार सहीयक भाषत पैनबनावनहार गुणावै॥ गावतएक कियों प्रकृती जगअंत समेटि स्वअंग मिलावै। मंगल भूलमिटायसकै नहिं कोटिपुरान कुरान सुनावै ५७७ कंचनगर्भ तेहै उपजो सबओ परिणामतही मिलिजावै। योग सबैकर एक कहै भवकारण मिश्रितबस्तु दृढ़ावै॥ आपनिवाणि भली सबही यदिगुंगहुहै तद्विदंडन पावै। मंगलभूल मिटायसकै नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७८ योगियती तपसी बुधमौनि उदासि कवीश्वर ज्ञानप्रबीनो। देवअदेव मुनीश्वर मूरुख भूपति रंकधनी

बलहीनो ॥ संतगृहस्थ अधार्मिक धार्मिक आतमज्ञानि समाधि हिभीनो । मंगल कोउ रहा न महीतल कालबली सबको तन छीनो ५७६ बिष्णुभजै चहुध्यावशिवै चहुशक्ति सनातन ब्रह्म बिचारै । जैन बनै चहुबौद्ध गुणै अपपंथचलै कित पंथ बिहारै ॥ न्याय पढ़ैचहु सांख्यगढ़ै चहुदीन मुहम्मद को चितधारै । मंगल कोउ बचै न महीतल कालबली सबको भषिडारै ५८० यातन प्राण स्व ब्रह्म स्वरूप चितानंद मंगल राषिकहावै । ताकर दूत बसै मनमोहन बाणिसुभोजन रूपलखावै ॥ दृष्टि सुमंत्रदै नित्य बिचारिय पायक इंद्रिय कर्णगुणावै । मंगलजो अस जानि भजै निज आतम सोपरमानँद पावै ५८१ आपन भाव न जानतने- कहु कर्म अपारपसारकरैरे । हैतिनको फलबंधन मोष न जन्म अनेकन बार धरैरे ॥ ज्योंकृतकीट कुआलि स्वमंदिर आप हि मूरुख बंदिपरैरे । मंगलकर्म अकामकरै जगधर्मबढ़ै तबजीव तरैरे ५८२ दृष्टिबिहून शरीरछुटैनहिं बाणिबिना न कलेवर नाशै । हीनित श्राणतजै तनकयों कर्णेन्द्रियहीन नकाय बिनाशै॥हस्तपदा दिनिहायरहै बपु नेकनहीं जो मलीन प्रकाशै । मंगल प्राणचले तन नाशत याहिते प्राण स्वतंत्रित भाशै ५८३ जाय सुषुप्ति बसै जबप्राण तबै सब इन्द्रिनकी गति नाशै । ज्ञानकि कर्मकि जेदश भांतिहैं जानैनहीं तन कोटि कुत्राशै । बुद्धि मतादि न भासिपरैं कित जायकियो दृढ़ चित्त निवाशै । मंगल चेतत प्राण जगैसब याहिते प्राण स्वतंत्रित भाशै ५८४ बिष्णु विरंचि महेश खगेश दिनेश निशेश फणेश सुरेशा । रामसश्याम बृहस्पति शुक्रपराश- रव्यास हली मिथिलेशा ॥ देतबशिष्ठ सुधी प्रहलाद महामुनि ध्यानहुजे शुचिभेशा । मंगल सर्व गृहस्थ सबाम भजैंनिजआतम भाव सुदेशा ५८५ कौनु गृहस्थदिगंबरको जोपै ध्यातमध्यानर- है चितएका । बंधन मोषकि चाहन जीवहि आनँदमूरति शुद्ध बि- वेका ॥ याथल वाथल भाव द्वितीय न शुद्धसतोगुण पूरणटेका । मंगल जीवनमुक्त वहै मन दंभिनकेतट बाद अनेका ५८६ मुक्ति

कोदानि वहैपरमातम बंधनदानि वहै करतारा। जन्मकोदानि अजन्मको दानि अधोरधदानि नश्चानबिचारा॥ आपनि भूलमिटायभजै करुणाकर नामजो सांझ सबारा। मंगल जीवनमुक्त वहै शुचिज्ञान अभेद गहे श्रुतिद्वारा ५८७तू परमातम सत्यसदा परिपूरण और त्रिलोक असारा। तूसतता सतिभासत नश्वरबिकृतसर्व तुहै अबिकारा॥ कारण कारज एकन होवत यद्यपिवेद बदैयकतारा। मंगल धन्य अहै परमानँद जाकृत अद्भुत लोक पसारा ५८८ जाग्रतमें भवकाजकरै निज शक्तिसबै तनइन्द्रिय पेरी। स्वप्न बिलोकत हैमनद्वारअलिप्तरहै सत्रठामअहेरी। जाय सुषुप्तिमें साखिरहै जब इंद्रियसर्ब अचेतन हेरी॥ मंगलसोतन आतम जानिय जाकहँ वेदबदै हरिटेरी ५८९ जेतिकव्याधिबिषयरस होवत सोनहिं ताहिलगै भवमाहीं। संसृतकेदुख औसुख बंधन कोटिबिधान सतावत नाहीं॥ मिश्रित इंद्रिनके सँग देखिय पैनहिं लिप्त अलिप्त सदाहीं। मंगल सोतन आतमभाखिय बूझतजाहि सबै भ्रमजाहीं ५९० जानत तीनिहुंलोक बिभूतिहि आपनथान रहैन चलैजू। चित्त अहंकृत धीमन का भरमावत है त्रिप्रयी कुथलैजू॥ काहुसमय शुभज्ञान सिखावत सार असार कलै सकलैजू। मंगल सोतन आतम जानिय जौनगहै अफलै सफलैजू ५९१ सूक्षम है मृतिकागतिते जल नीरतेसूक्षम पावकगाइय। अग्नितेसूक्षमवायु बिलोकिय मारुततेनभ सूक्षमपाइय॥ व्योमते सूक्षम शब्दसदा पुनिशब्दते सोअहंकार लखाइय। मंगल सूक्षमहै अहंकारते सोकिमि बुद्धिप्रत्यक्ष बताइय५९२ देश बिदेश दिशा बिदिशा अध ऊरध में भरिपूरि निहारिय॥ है सबमें नबिचारत पंडित मूरुखको दुबिधा चित धारिय। पैनमिलै थलकाहु यथानभ कोटिउपायनसों निरधारिय॥ मंगलक्यों करिगाइसके श्रुतिनेतिबदै यहिहेतु बिचारिय ५९३जाहिबिलोकिय याभवमें त्यहिके सुखचाह उरस्थल व्यापै। याजगको सुख भोग बिषयकर जाहिलहे अधजात सदापै॥ जानत गूढ़न बूझत

मूढ़ फिरे मतिहीन न पाठ न जापे । मंगल संत सदानँद मंडित आननहीं सुखमूरति थापे ५९४ केतिक मारगमें भरम्यो मन बोधभयो न बिना गुरुपाये । आपनि आपनिबाट भलावत दूसर पंथ निहारि लजाये ॥ क्यों फिरि आवत तोष हिये जित दंभ तहां न विवेक सुहाये । मंगल मिश्रितकीगति बूझत भूलमिटै हरिकेगुण गाये ५९५ जोमन औतनमें नहिं लागत सो उपदेशत पंडितमोही । आपनभूमि अनेक भ्रम्योभ्रम दूरिभयो नरहो मतद्रोही ॥ क्योंहम मानत जानत जाहिन चेतनको जड़रूप बटोही । मंगल जानेबिना शुचिआतम बोध न होत कथा न कथोही ५९६॥छंद ॥ माया जगत अपार देखियत जो सबको भरमातीहै । काहुइ सुथल सुचित नहिं हेरो दुविधा ज्ञाननशातीहै ॥ सतसंगतिते न्यारे डोलैं विषयक बानि सुहातीहै । मंगल ज्ञान ठगिनि ठग नाहिन अपना मदन चुरातीहै ५९७ सेवा करै अर्थकीपावै श्रद्धाधर्म बढ़ावैजू॥ तपफल सकल कामनापूजै भक्ति मोक्ष दरशावैजू । चारोक्रिया ज्ञानगत बुधजनशोभा सुथलनपावैजू ॥ ज्यों मंगल सुन्दरी नाकबिनु सदा निरादर भावैजू ५९८ ज्ञानी जिज्ञासू अर्थार्थी आरतनाम कहावैजू ।सुजनचारि ये प्रभुपद सेवक त्रिधावेद भरमावैजू ॥ ज्ञान कर्म औहै उपासना जिततित जेहितेहिभावैजू । मंगलआतमज्ञान विवर्जित निजपद कोक्यों पावैजू ५९९ श्रुति विशिष्ट अद्वैत द्वैतबदि पुनि अद्वैत लखावैजू। मुक्त मुमुक्षु विषयरत त्रैबिधि श्रोता सुनि हर्षावैजू ॥ तीनोंकी यकभाव बिलोकनि सो जेहिकेमन आवैजू। मंगलजीव न मुक्त भवस्थल सोई स्वथल सिधावैजू ६००॥सवैया ॥ आपनि भूल मिटाय सकैनहिं औरनकी कस बुद्धि सुधारै । आपुहिमूरुख तूमन देखिय रैनि दिवाकर कौनु निहारै ॥मामहि त्यागिमिटाय अहंपद क्यों निजआतम कोन बिचारै। मंगल योंबहुलोगभ्रमे बिनु ज्ञानन श्री हरिधाम बिहारै ६०१ आपनिबूझ भली मन भावत आनकिबूझ गुनै सउपाधी । ज्ञान कथै न सुनै हितियेकि

रहे विपरीत कुसाधन साधी॥ बाणिगहे निर्वाणकि मारग धाइ चलै जो पतालकि काधी। मंगल साँचु कहावत एकहै आपनि औरं जहांनकि आधी ६०२ मैं सतमारगमें बिचरों सब मेरेचलैं सतमारग धाई। तू अभिमान भरो जनि तोरहु जात कुवादलखे बहु धाई॥ मैंअरु मोर जोतैं अरुतोर गुखै भु तिरूप सोहै भ्रम ताई। मंगल याहि निवारत जो जन जीवनमुक्त सो भूतल भाई ६०३ गंगऔ कर्म बिनाग्नि को भ्रम औमरु मालव की शुचिताई। ब्राह्मण अंत्यज उत्तम धाकर जीवन मृत्यु अमी विष पाई॥ देव अदेव गुणी अगुणी पुनि शौच अशौच विभूल मिटाई।मंगल एकहिभाव बिलोकत जीवनमुक्त महीतल भाई ६०४ उत्तमज्ञानगहे प्रभुसेवत बंचकता न लगावल वेढ़ो। आतममें लवलीन सदातप साधन घोर कुकर्म नवेढ़ो॥ काहुके बैर सनेहन बंधित दंभिकहै तिनको ठग डेढ़ो। मंगल साँचु कहावत हैयह नाचि नआवत आँगन टेढ़ो६०५एकबिमूढ़ कहैं हम पंडित धर्म निरेश्वरको दरशावै। एक अपार बखानत कालहि उत्पति इस्थिति नाश स्वभावै। दोउनमें नसुज्ञान बिलोकियजोनिरधारितुवस्तु बतावै।मंगल सत्य सदा परमातम जो सबठामनदृष्टि हि आवै ६०६ जानि परै न बिना गुरु अद्भुत देखि सुनीन्ह कबी निज आखी। क्यों दृढ़ता मतिमें निबसै दुबिधा बहुलोगनग्रंथ न भाखी॥ सारगहे तजिभूल असारहि जाकरहै निगमागम साखी।मंगल शुद्ध सतोगुण आवत बुद्धि रहै परमानँद चाखी६०७ सिंधुकहेते अगाध लगै अरु बिंदुबदे अतिही लघुताई। सिंधुन बिंदु अहे जलसो प्रभु दोउनमें इमि बाणि सुनाई॥ताहिबिचारि सुजानरहेचुपि ईश्वर जीव दुभाव मिटाई। मंगलको लघुदीरघ बूझत आनको आन बिलोकि लजाई ६०८ सिंधुरज्यों अतिथूल कलेवर पैबहु जानत हौं लघुदेही। तुच्छ पिपील गहेसुख अन्नहि बूझतहीं सबतेबढ़ि केही॥ज्यों गजहेरि पिपील भड़ै बड़औ करि सो लघुते लघु तेही। मंगल जीव दुवोयक भावहि द्वैतलगोसुधि

आपुन एही ६०६ ॥बिष्णपद॥ प्रभुगति कहते नाहिं बनै। जो
कहिये तो हृदय नहिं भासै ज्ञानी मूढ़ गनै। है सबमें अरु काहु
मेंनाहिन ऐसी बेद भनै १ जड़वत कहे लगत चैतनता चैतनजड़
सनै। रूप बखान अरूपहु आवत दुबिधा रहत मनै २ कहिय
अकर्त्ता है पुनि कर्त्ता चौदह पुर अपनै। पालक लिखौं सँहारक
सोई क्यों यकता न ठनै ३ यह निरधार करनहित संतौ मुनि
जनथके घनै। मंगलसो किमि बरणि बतावै माया तोरि तिनै
६१० यहुमन बूझभये भ्रम त्यागै। तजि बिंगता बिषय माया
की स्वबश ध्यानमें लागै॥ जोपै जाय कतहुं बिषयनढिग तौन
करै अनुरागै।दुष्टनके सँग बसै रैनिदिन पैन दुष्टता पागै॥मंगल
निज आतम नित ध्यावै चीन्है हंस न कागै ६११ जनमनशुद्ध
सतोगुण आया। जोभ्रम रहै ब्रह्म मायाको जीवईश त्रिबिरूपा॥
सोअब एक भावसों देखत सकल एकही काया १ त्रिगुणनाम
बिधि हरि हर भाषत सर्गस्थिति लय कर्मा॥ सो त्रिभांतिनहिँ
एकब्रह्म है तीनि नामसों गाया२ स्वर्ग नर्क अपबर्ग बासकी आश
सबै जग बाधा॥ बूझत जीव शुद्धचित आतम कौनु त्रिधामति
धाया ३ आगम बेद उपनिषद देखौ अयाकहि जीवहि गावै॥
मंगल बोधभया गुरुपाये भ्रममत दूरि बहाया ६१२॥सवैया॥
केतिक ज्ञान सिखाय थके भणि केतिक न्याय गुणी समुझावैं॥
केतिकवस्तु प्रत्यक्ष बताय पदारथ ज्ञानकि सिद्धि लखावैं॥केति
कतीरथको चलिजाय न्हवायके मुक्ति सुपंथ बतावैं॥मंगल ध्याये
बिना निज आतम कोटिकरै मन हाथन आवै ६१३ याभवके
सबकाम तजै प्रियबंधु सुता सुतनारि दुरावै।नग्नरहै तजिलाज
सबै जित भोजन हाथलगै तित खावैं॥नित्य बिवेक अचारलिये
रहै औब्रतमेंनिज जीव दुखावै। मंगल ध्यायेबिना निजआतम
कोटिकरै मनहाथ न आवैं ६१४ जाय सुपंथमें मुण्ड मुड़ायभ्र-
माय दयोदिग्नि बायुअसोसो। बौधकि जैनकि शैवकि न्यासकि
सांख्यक बिष्णु बिचारक जोसो॥ मुक्ति पदारथ खोजिमरै नतरै

चकई भवडोरि फसोलो। मंगल आतम बोधबिना अध ऊरधके मगमेंनिबसोलो ६१५ बौधनजानत न्यायकथा अरुजैननमानत शैवकि बानी। सांख्यक आदिलगे अपनेमत दूसरमें नहिँबुद्धि समानी॥जोहठवादि किपद्धति गावत सोन महामुनिउत्तमज्ञानी।मंगल सार गहै सबको तब बूझत आतमकी गतिप्रानी ६१६ एकरसूल बहत्तरि मिल्लत चारिकिताब कहैं मतचारी। आपसमें बकवादु करैंयक दूसरको बदि काफिर भारी। मानकि बाणि बसै दिलमें निज पाकन पाक द्वयीमति धारी। मंगलएक खुदाय सहीकृतबादु इतैजु अबोध अनारी ६१७ दूसरको परमातमहै तजि पावकतेज स्वरूप त्रिलोका।जासु प्रताप तपैनभमें रबिजीव प्रभाज्यहि अंश बिलोका॥तेजप्रकाश जहांलगुहैसबु येदुज गास वदैक अशोका। मंगल भूलयसेन सुनैहठ पंथगहेजड़ ज्यों शशि कोका ६१८व्योमहि ब्रह्म बिचारत कौनहु तर्कअपार न सिद्धि दिखाई। चौदहलोक हरौ हरिजू शशिभानु सुरासुर बास लखाई॥ दृष्टिन आव अनादि अनंत अनीह अरूप अजन्म गनाई। मंगल ब्रह्म द्वितीयन बूझत ऊमरिकेफल कीटकिनाई ६१९कोउ प्रभंजनकी गतिहेरि भुलाय रहे त्यहिकी शरणाई। आनहि ईश्वर जानत नाहिन खेचर ज्यों नभ त्यागि न जाई॥ ध्यावत गावत मोह विमंडित कूजत पूजत प्रेम बढ़ाई। मंगल कौनु बुझायसकै बिष औ बढ़ै अहि दूध पिलाई ६२० संभव सर्ब चराचरको जलयोग बिना नहिँ दृष्टिहि आवै। नीर अपार अखंड अमंडित सिद्ध स्वतंत्र सुजीव दृढ़ावै॥ पूजतहै जलराशि समोदित आतम सत्यनहीं लखिपावै। मंगल श्वान यथास्थित चबोरत डाटि दिये त्यहि त्यागिन धावै ६२१सेवतभानु बिचारि स्वतंत्रित आनँदमें नित साँझ प्रभाता। ब्रह्म द्वितीय न मानत कोटिहु ज्ञान बखानि बुझाइय बाता॥जानत तीनिहुलोकप्रकाशित हैं रवितेनहिं आन बिभाता। मंगल सूर प्रकाशित जोप्रभु ताहिन बूझत क्यों भ्रमजाता ६२२ जीवन द्वैधिक शाश्वमंगल

जीन स्वत्र्यातमकी गति जानी । भोग किये पशुलौं विपयीरस भूप धनी पदवीमति सानी ॥ अंत अनेक बिचार बिमोहितदेखि जमै कृत बेद बखानी । स्वर्ग अधो निजकर्म समानहि भोगवहो-रि धरातन आनी ६२३ कोटिन धायमरे मतरे नर कोटिनभूख पियासहि त्यागी । कोटिन मूरति पूजिथके पुनि कोटिन तापि थके जग आगी ॥ कोटिन ज्ञान बखानि चुपे अरु कोटिन छन्द कवित्तहि पागी । मंगल ब्रह्मविचार बिना चित चेतभयो नकबी बुधि जागी ६२४ ज्ञानवहै जेहि ब्रह्म बिचारिय । ध्यान वहैजेहि बुद्धि सुधारिय । पूजन सोइ चिदानँद राखिहि पूजि सदा परमा नंद धारिय ॥ इन्द्रिय निग्रह है तप साधन पाठ किधौं अजपा निरधारिय । मंगल शुद्ध सतोगुण सोइहै जाबल मूरति आपुनि हारिय ६२५ मिश्रितकीन्ह सबैमत सन्तन सिद्धि पदारथ एक भयोहै । द्वैतअद्वैत बिचारिलियो दृढ़ मारगमें पगु सत्य दयोहै ॥ भूलमिटे भ्रम दूरि भयो प्रभुकेपद नेह समोद छयोहै । मंगलहै पुरुषोत्तम सत्य असत्यकि आँखि कहाँ चितयोहै ६२६ जोअब बूझभई मनमें सोकहेनबने नलिखे बनिआवै । गायेअनैन बताये ब नै समुझावत सैननमें नसमावै ॥ ज्यों षटहूरस मिश्रितजो रस सोकस पंडित भाषि बतावै । मंगल संत सदारत आतमतोयह भेद सहीलखि पावै ६२७ तोषबिना नछुटै भवदोष विषयरस में मनधाइ मरैरे ॥सत्य असत्य अशुद्धरुशुद्ध न बूझत मूरुखजाइ धरैरे । कोटिउपाय बिधान क्रिया करि भू थकिजाय नकाजस-रैरे । मंगल तोषभये दृढ़ता उर बासलहै सतसंग करैरे ६२८ शांति बिहून न क्रोधकि पावक नाशत कोटि उपायनसौंरे । मोह मिटैन सधै तपसा शुचि कर्मन के न चलै मनजौंरे ॥ कामकला निवसै उरअंतर खोजत नित्य विषयसुख कौंरे । मंगल शांति भये सुख सम्यक पावतजीव समोद अजौंरे ६२९ चित्तसतो-गुणि बूझिभये उपजैउर सात्विक ज्ञान अमाया । जाहिलहे चित चेतन बूझत त्यागि दुवौभ्रम पुण्य अदाया॥स्वर्ग अधोनबिचारत

सोजन पाकन पाकलनारि अजाया। मंगल पंथस्वछंद बिहारत सन्तसदा भवमेलहि काया ६३०ज्ञानबिना सतसंग न आवतसंग त्रिभांति सुमारग केरे।श्रीगुरुपुस्तक साधु बतावत जौनरमैं भ्रम दोषनिबेरे॥सोगुरुता बिभुता थिरता जनपावत सत्य भणेंकबिटेरे। मंगल आनउपायनभूतल बेदकिताब अनेकनहेरे६३१कबित्त। अनघअपार आदि एकन अनादिसब ठामनमें एककी द्वितीयकरि गाइये। रूप औ अरूपदोउ भ्रमहीके भेदभाव सत्य औ असत्यतेन जासुभेद पाइये॥ केतिक बिचारिगये केतिक बिचारैंआगे केतिक बिचारकृत चित्तचुप लाइये। मंगल कोजानै जोअज्ञान नामभाषियत दुबिधा दुरायताकी लीजै शरणाइये ६३२॥ सवैया॥ ब्रह्मते बुद्धिभई उत्पन्नबदैं मुनि ज्ञाननिधान प्रबीना॥बुद्धिते तत्त्वरुतत्त्व तेधातु सुधातुते जन्म बनस्पतिलीना॥ जन्म बनस्पतिते पशुको पशुतेनर औनरते खुरचीना॥ मंगल देवमिल्यो प्रभुमेंयह मारग कुंडल जीवअक्षीना ६३३देवशरीर कुकर्म बिमोहित होतमनुष्य सुबुद्धि अमाना।आतमभूलि पशूनर होवत औपशुतेजो बनस्पति साना॥ होत बनस्पति ते जड़धातु सुधातुते तत्त्वस्वरूप समाना। मंगल तत्त्वते बुद्धिभई बुधितेप्रभु लीन बिलोम बखाना ६३४ ज्ञान कहां मनद्वैत बिमंडित कर्मकहां यदिजीव अनूपा। कौनुउपासक मोह बिबर्जित जापकहां यदि एकस्वरूपा॥ पाठकहां अनुमानबिचारत पूजनको निरबाण निरूपा। मंगल मुक्तकहां भवबंधित कौनुप्रजा यदिहोइन भूपा ६३५द्वैतकिज्ञान बिहाय बिनाश्रितकर्म किकूटतजीव बिजाने। कूटउपास्य कित्यागि अमोह छुटैजपधौं कि बिनायक ध्याने॥ पाठकिकूट बिना निरलोभ किपूजन कूटनिरातम ज्ञाने। मंगल बंधन मुक्तिकि कूट अहम्मद संतबिपथरससाने ६३६ सत्यकहां जो असत्यनहीं अरुलोक कहां जो अलोक न गाइय। देवकहां जो अदेव अभासित ज्ञानकहां जो अज्ञान प्रपाइय॥ वृद्धिकहां जोपै हानिन सजन कौनुअसज्जन जोन बताइय। मंगल चित्तविचारु अरेमन ईशकहांजो अनीश

मिटाइय ६३७ को करतार जो सृष्टिनहीं अरु को भरतार जो दासअभावा। ठाकुरकौनु प्रजाबिनु भाषत उज्ज्वल कौनु अनु ज्ज्वल धावा॥ कोधनवान जो रंकनहीं अरु सौख्य कितैजोपै दुःख नआवा। मंगल चित्त बिचारु अरेमन ईशकितै बिन जीव कहावा ६३८॥ कवित्त॥मानकोन त्यागै मन दीनताको दूरिगन प्रीतिन प्रतीतिसन संत रूपधारेहैं। लोभकोनिवास तन हिये नाहीं ज्ञान बनखोजै प्रतिद्वार धन कंतको बिसारेहैं॥तोष नाहीं एकक्षण बेद औ पुराणभण बाधै घ्रान नारिजन दंतकथ्य टारेहैं। मंगल प्रवीणबन आननको तुच्छगन कूरधौं बिनोदैरण बस्त्रदूरि डारेहैं ६३९ब्रह्मको बखानै जाहिं बेदहून जानै बानिदै निरबानै माह माया चित्तबासीहैं।ज्ञान गीत गानै औ प्रमाण कोटि आनै झूठीबात अनुमानै द्वैत कायामें बिलासीहैं॥ ऊंच नीच जानै हरिदासन पिछानै जोन क्षारदेह सानै छोह छायाधौं विनासीहैं। मंगल नठानै एकभावन समानै और दुःख सुखमानै ताते कैसो धौं उदासीहैं ६४०जहांदेखौ तहां एकरूपको बिलासहोत भांति भांति भाषत प्रमाणज्ञान सानीहैं। बिबिध किताब ग्रंथ एकभाव सत्यकहै द्वैतनाहीं शून्यबादै बौधजैन बानीहैं॥ पंचनकीबात किप्रमाण भूमि स्वर्गलोक एकनर बात तात कौने सत्यमानीहैं। मंगलको भासैशून्य एककोन भाव दासै बड़ोभ्रम भासै जाकीक थान कहाभीहैं ६४१जाको बुद्धिगावै ताको बानिन बतावैजाहि बाणि समुझावै सोनबुद्धिहू प्रमानैहैं। काननको काम कहांआंखि करपावै अरु नैननको काज कबै श्रवण बखानैहैं॥जाको जौनका जतौन करत स्वभाव नित्य दूसर न जानै व्यवसावै झूठ ठानैहैं। मंगल सुजान संत जांचि देखैं कोटिभांति शून्यको अभाव इहां एकही प्रधानैहैं ६४२ एकतन सकल समाज भूमि देखियतना- कहूमें एकरूप तारागण भासैहैं। देवगुरु दैत्य गुरु होतन खगे- श शूर कीट औ पतंग एक कायामें निवासैहैं॥एकभूमि नीरबायु पावक मव्योम हेरु द्वितियन होतयदि मिलित बिलासैहैं। मंग

ल सुजान संग जांचिदेखैं बार बार शून्यको अभाव इहां एकही प्रकासैहै ६४३ देह बिनु जीवको निवास कौन भाषिसके जीव हीन कायाकौन चलत उपायहै। आतप बिहायन प्रकाश भानु भाषियत भानुहीन आतप न त्रिपुर लखायहै॥ पितुबिनु सूनुन प्रमाण तन सूनुबिनु पितुहू कहावै ऐसो दुबिधाको भायहै। मंग ल सुजान संतजांचि देखैं बारबार तैसे ब्रह्ममाया एकह्वै तमैंदढ़ा यहै ६४४॥ सवैया॥देवनमें मनसर्ब समर्थ जो देवयजै सोलहै मनचीती। दुष्टनमें जड़ता अति देखिय जेनभजैं सुरमोह प्रती ती॥ दानि अभिप्रिय देवफली बिनु पासगये कहँद्रब्य चहीती। मंगलकाम कलानि लिये नित ध्यावत देव बिषय मति जीती ६४५ दीपसुगंधि लिये जलगंग सप्रेम स्वदेवनको मनमोदैं।पाय मनोरथ होत समोदित कोटिकज्ञान सुनैन बिनोदैं॥ ज्योंरसनी रस एकन होवत त्यों इतकाम अकाम प्रमोदैं। मंगल एक गहे सुख होवत दोउनमें किमि जाय दुकोदैं ६४६ मुक्तिदई प्रभुको- टिनकी बिनु युक्ति बदैं कबि कोबिद ज्ञानी। स्वर्ग निवासअपा रनको तुमदीन्ह कृपालु स्वयीजन जानी॥केतिक गोपुरमैंबिल सेबहु सन्थ सुलोक बसे बरप्रानी। मंगल कोनहिं नर्क बिहाय बसायलको कहुंशारंगपानी ६४७ पुण्य प्रभाव तरे कितने नर केतिक मोक्षभये ब्रतधारी।पूजन पाठनसों अघमेटि भयेबहुधा जन स्वर्ग बिहारी॥योग बियोग लियेभव केतिक जायसमीप बसे सुखकारी। मंगलकेघिर पातक गाठरि क्योंतुम तारिसकौ गिरिधारी ६४८ जाकर पूरब पुण्य प्रकाश कृपाकर ताकहँतारि दयोहै। बाजेहि कर्मकिये भव उत्तम ताफल उच्च अबासलयो है॥ पूरब पुण्य नजीवतके कृत जन्म कुमारग में बितयो है। मंगल कोकस तारिसकौप्रभु याभ्रम में जियशोच भयोहै ६४९ कौन दुराव अहै तुमसों प्रभु जानतहौ मनकी सब मेरी। चाठहु यामन भावत हैजग पाप बिहाय बिषयमति घेरी॥ ज्ञान बिराग बिवेक नभावत कामकथा किउछाह घनेरी।मंगल कोनगलीजग

मोषकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५० कर्मकिये जगनर्कनिवा
सके क्यों अब होउ सुधामबसेरी। निंदक पंथ गही निधिवास
र त्यागि सुबाट जो मुक्तिकि ढेरी॥ नीच प्रसंग नसाधु समाज
बिबाद किये बहु ज्ञान निबेरी। मंगल को न गली जग मोषकि
आनिपरो शरणागत तेरी ६५१ जात जिते तित मोह पयोनिधि
काम समीर कुबीचि करेरी। मुक्ति उड़ो भरमैन रहैथिर खेवक
ज्ञानथको बुधि प्रेरी॥ कर्म बिबाद उड़े पतवार सहाय नकोउ
कहीं जेहिटेरी। मंगल कोनगली जग मोषकि आनिपरो शरणा-
गत तेरी ६५२ शुद्ध स्वभाव नहोत स्वधी इत कर्म उपायनसों
चितहेरी। जो समुझावत स्रोनगुणी मन आनकिआन बदैबहुते-
री॥सत्य असत्य गुणानिकरै चुप ओकतहूं बरणै खल टेरी। मंग
ल कोनगली जगमोषकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५३ जोजन
जानि दयाकरिकै करशीश धरो पकरो भुजमेरी॥ तौ श्रमहीन
तजौं भवसागर जाय नभाय अधोरध फेरी। नातरु योंहि भ्रमों
भव बीथिन संसृत में दुखसों भटभेरी॥ मंगल को न गली जग
मोष किआनि परो शरणागत तेरी ६५४ कोउतरैकरि तीरथसेव-
नकोउतरै ब्रत साधन साधी। कोउतरै करिनेम अचारनि कोउ
तरै मनकीहत व्याधी॥ कोउतरै पढ़ि वेदपुराणनि कोउतरैप्रभु
नाम अराधी। मंगल कैसेतरै करुणाकर कीन्ह सुकर्म नहीं क्षण
आधी ६५५ ज्ञानगुणे तरिगे कितनेकरि योग समाधि तरेकितने
हैं। तापसरूप बनायतरे बहु गायतरे बहुनाम सनेहैं॥पाठकिये
बहु मोचिगये करिजाप अनेक स्वमुक्त भनेहैं। मंगल कैसे मुचै
करुणाकर एकहुभांति न कर्म बनेहैं ६५६ संत समाजहि सेइमुचे
बहु पूजत मूरति मुक्त भयेहैं। मंत्रप्रभाव लही बहु मुक्ति अगूढ़
गुरुभ्रमरूप हयेहैं॥ बाण अबाण बिबेकमुचे बहुध्यान अखंड
शिवै चितयेहैं। मंगल कैसेतरै करुणाकर एकहुअंगन शुद्धभयेहैं
६५७ बंधनको यक झूठबखानि स्वच्छन्द प्रमाणत शुद्धकहावै।
शून्य बिचारि बिमोचत हैं यक आपन ग्रंथ प्रसिद्ध सुनावै॥

एकन मूरति तीरथ मानत व्यापक जानि भलीगति पावै। मंग-
ल कैसे तरै करुणाकर एकहुभांतिन जीवदृढ़ावै ६५८ पण्डितके
बल बुद्धि प्रसिद्ध कोहै कबिकोबल बाणि सुहावनि। गौरवको
गुरुकेबल देखिय शिष्य सुमंत्र लियेदृढ़ भावनि॥ ज्ञानबली
धनवानबली बलवान बली पदउच्च प्रभावनि। मंगल कौनुभरो
सकरै प्रभुदेहु बताय परीमन तावनि ६५९ बिष्णुपद॥सबबिधि
बिषयक मोमन स्वामी। यत्नअनेक किये याभवतल होहुंनाथ
अनुगामी॥पैन सुदृढ़ मनभयो कृपानिधि हौतुम अंतरयामी१
कादुराव तुमसन करुणाकर मोह मलिनहौं कामी। कियेअपार
कुकर्म देहधरि अजामीलको नामी २सोअब समुझि होत मन
बावर भूतकाल गति बामी॥ क्यों निर्बाह होइगो हरिजू कूर
भये संग्रामी ३ अखिल ज्ञान बिज्ञान निरस रस बूझिधाम पर
धामी। मंगल शरणगही प्रभुतेरी तारिय द्विजवर गामी ६६०
आन कौनकी शरण गहौंहौं॥ देखिन परत द्वितिय दयानिधि
दीनपाल पुरतीनों। निज स्वारथ रत सकल बेदबद फिरि कस
सुगम लहौंहौं १ केतिक जन्म बूझ बिनु भटक्यो सेवतचरण
थकानों। हारिमानि तुवपदरज बन्दी अब अघओघ दहौंहौं २
जो भयरहै नरक सुरपुरको सोमनते बिसरायो॥बंधन मुक्तिदुवौ
करुणानिधि तुवपद तजिन चहौंहौं ३ दुख सुखको व्यवहारदेह
धरि नरक स्वर्ग स्वइगायो॥मंगल प्रभुपदरजशिर लावत कोमुद
बरणि कहौंहौं ६६१ जानिपरी तुमहीं जनतारण। अबलगि रहै
महाभ्रम चितमें बिबिध ग्रंथ मतिलागी॥ सोभ्रम मिट्यो भयो
तवपद रज नेह समोद अकारण १ दास बिपति नाशकनद्वितिय
प्रभु त्यागि तुमहिं तिहुंलोकनि॥ बासवकोप जानि रक्ष्यो ब्रज
गिरिकीन्ह्यो नख धारण २लक्षधाम सुतअंध बिरचि तहँपांडुसुत
न दियबासा॥ पावक प्रबल अर्द्धनिशि प्रज्वलित तुवप्रभु कीन्ह
निवारण ३ द्रुपदसुता लज्जा गोपिनप्रण तुम राख्यो बनवारी॥
मंगल शरण गही करुणाकर अब करिये उद्धारण ६६२ आपन

मोह कहीं अत्र कासन ॥ बेदपुरान कुरान ग्रंथबहु रचेगुणिन गुणिहीमें ॥त्यहि मारग बिचरत सुख भवसल होत मोद ग्रति दासन १ जो बिपरीत चलत निजपथते तजि मर्याद पुरानी॥ त्यहि बिलोकि जगकरत बतकही यहजड़ धर्म बिनाशन२ जित तित अत्र निंदकमत देखिय गहत सकलजन हीते ॥ मिटीमेड़ श्रुति कलिदिशि चारौ युग प्रभाव है तासन ३ प्रथम मोरमन अचल सचलअब सचल अचल पहिंचानो ॥ मंगल चुपकि रहौ जनि भाष्यौ त्यागि नाम गरुड़ासन ६६३ निजमनकी मनधरौ चुराई ॥गुप्त प्रकट इतहू मत देखिय दूनौंकी निपुणाई ॥ यक अंतर यक बाहिर हेरत निजनिज बूझ बड़ाई १ तिमि निर्गुण सरगुणकी गणना यथा अग्नि युगरूपा॥एकदृश्य यक काष्ठान्तर है क्योंबड़ छोट लखाई२ कष्टसहित यकमिलत सुलभही प्रकटगुप्त मिलिजाई ॥ सन्त सुजान ज्ञान मूरतिजे ते समुझैं चित लाई ३ अगुण सगुण तनजीव कथाहै यकबिनु द्वितिय कोजानै॥ मंगल यहिकारण तनुधरिकै भजिय सदा यदुराई ६६४ पाल्यो काहिन सेवक जानी ॥जिनहिं देखि शिव थलतजि भागे जानि गोत्रबधकारी ॥ समरभूमि तिनकी रक्षा हित प्रणत्याग्यो रुचि मानी १ भिक्षा द्वारदेत कोउनाहीं द्विज व्याकुलयुत नारी ॥ भुज भरिभेंटि दई संपति त्यहि गिरान सकत बखानी २ मगधनाथ गृह भूमिपाल गण बन्दि परे दुखरूपी ॥ ते तुमहीं मोचे लखि अघमय जरासन्ध खलभानी ३ यहि प्रकार अगणित जनभवतल पाले पालत पालौ ॥मंगल दीन शरणतव मोहन हरिय बिपति सुखदानी ६६५ अबको आन भजौं गिरिधारी ॥ जानिबूझि जन बल्लभ श्रीप्रभु बनौंमूढ़ अबिचारी॥साहबत्यागिगहौं सेवकपदकौ नकहै भ्रमभारी १ तजिमंदारगहौं बदरीतरु कामदुधा तजिआंके ॥ गंगत्यागि पुष्करी पानजल ज्ञानकि बुद्धि क्यकारी २ कामक्रोध मदलोभ मोहबश रहौं सदा भ्रमनाहीं ॥ सुगति पंथकोउ दृष्टिन आवत अबहौं शरण तुम्हारी ३ जो जी रुचैकरो करुणामय हो

स्वतंत्र सबलायक ॥ मंगलके दुख दोष नाशिये समरथआपमुरारी ६६६ करि बहुदंभ थकी मति मेरी॥ काहूबिधिन भयोथिर मनप्रभु बिषयक खल अघकारी ॥ प्रतिक्षण बामपंथ जड़धावत निडर इंद्रियन प्रेरी १ शास्त्रविहित मग गहतन जड़मतिकृत बिपरीत पसारै॥ यद्यपि सीख दई सुन्दरहौं होतन स्थलबसेरी २ मोह निशा सोवत सुख अपने जानि मोहिं बकबादी॥ बिषयभोग सुनि उठत मुदितप्रभु कितै ज्ञानकीढेरी २ ब्रततीरथ संयम जपपूजन पाठध्यान बशनाहीं। मंगल बिकल हरियदुख मोहन परो शरण प्रभु तेरी ६६७ ॥ सवैया ॥ काल अनन्त भ्रम्योबहु पंथबिचार अनेकन भांति बिचारे। जोजस जानत सो तस भाषत अर्थ निरर्थ समर्थ बिसारे॥बूझतहौं मनतोष नआवत आनकि आनक्रिया चितधारे। मंगल त्यागिसबै मग मोहन हौं शरणागत द्वार तुम्हारे ६६८ दृष्टि पसारि लखे सबमारग शंकित सर्ब अशंकन कोई। क्यों भटकौं फिरि भूमि बृथा जित लाभ नहीं तित हानिहि होई॥मुक्त गृहस्थ उदासिनमें मतकी दुबिधा बुधि सत्य बिगोई। मंगल भाषि थको बहुज्ञान परो प्रभुद्वार द्वयीमति खोई ६६९ पूजत देवन बैठिके एकखड़े यक पूजत मोहग्रसी मति। बैठिउठैं यक नाचत गावत धूप जलाय स्वछंद कथैंश्रति ॥दैबलिभाग रिझावत एक करैं ब्रतयोग सुयोग लगीरति।मंगल मौनित स्वांग बिलोकि चहौंसोकरौ प्रभुहौं शरणागति ६७० काहुको होइरहै भव आइकै मूढ़कहै कबि कोबिद गावै। सो मनबूझि बिवेक किआँखि लखे सबपै नहिंदृष्टि समावै॥ त्यागितुम्हैं करुणाकर नाथ द्वितीयन रक्षक मोमन भावै। मंगल भूल मिटायपरो तव द्वारकरौ जोतुम्हैं बनिआवै ६७१ कीरयथा ललनी लटको कपि अन्नलिये करबन्दि परोहै। भूकत श्वानकि दर्पण मंदिर मत्स्य किकांट सलोभ धरोहै॥ त्यों इतधर्म लिये नर धामिक कूटनको न उपाय करोहै।मंगल त्यागि सबै दुबिधा अब आपहि आपकेद्वार परोहै ६७२ ज्ञानि कहा समुझावत ज्ञान

नध्यानि बुझावत ध्यान नहींहै । तर्ककिये कब्रभासत चित्तकबि-
त्तसत्रिच प्रतिष्ठ महीहै ॥ अंतसमय जपपाठन पूजन केवलज्ञान
कि वृत्तिकहीहै । मंगल तौनबनै अपनी यहितै प्रभुकी शरणाइ
गहीहै ६७३ बालक नारि हितू पितुमातु महीधन धाम सबै अप
नोहै । त्यागि सुधा हरिनाम बिषयरत सेवत मृत्युकि ज्ञान घनो
है ॥ अंत जितो परिवार सकाय बिहाय स्वधर्म किधौं सपनोहै ।
मंगल शोचियहै मनमोहन संतन रंक अरंकबनोहै ६७४ मोहमते
कुमतो सुमतो सब्रकाम मते तपसा सब फीकी । क्रोधमते भ्रम
भ्रांति स्वभावजु लोभमते कबितालघु हीकी ॥ गर्वमते सबकर्म
अकारथहै पचकूटफँसी मति जीकी । मंगल ताते इतैन बनैकछु
मोहनकी शरणागति नीकी ६७५ पक्षमते नहिंज्ञान बिभातिचप-
क्षमते नहिं धर्म सोहावै । भोगमते नतजै मन आधि अभोगमते
बुधिकी रुचिजावै ॥ आनमते अपनीमति नाशत आपुमते श्रुति
निंदक गावै । मंगल सत्यबनै तबहीं जबहीं प्रभुकी शरणागति
आवै ६७६ ॥ महाभुजंगप्रयात ॥ महामोहसें बुद्धिहै नित्यही लीन
कैसेबनै श्यामको ध्यान जीमें । बँध्यो लोभके दामज्यों कीट
केधाम मोचै यथा सोनहै ज्ञानहीमें ॥ जरैक्रोधकी आँचनाचैवृथा
नाच जामेंबचै सांच नारशान धीमें । इतैकाम मात्सर्य धौंकाल
कूटै कितैभागिये ठौरहै ज्ञानसीमें ६७७ कहौं काहि पाखंडकी
वृत्ति जीमें निवासै नभासै कृपासिंधु ज्ञानै । कथौं काव्य बिज्ञान
श्रद्धानहीं चित्तसंताप कामादिको सत्यध्यानै ॥ नहींमोक्ष रथ्या
कहूं दृष्टिआवै जितैहौं चलाऊं सुधी शुद्ध जानै । सबै आशकोत्यागि
हौं पाहिश्री श्याम मो योगजो होइसो देहुथानै ६७८ कहाकीजि
येजाइये धाइको आश कोऊ नहीं मुक्तिको पंथ देखौं । बड़ोदंभ
आचारहेरों निराचार अद्यापि निर्मोहनो ग्रंथलेखौं । बनैसोन मो
सों जुहै वेदगाये पुराणादि भाषा सुकर्मी बिशेखौं । यहैशोचकेत्रा
हिहै पाहिश्री श्यामहौं दूसरो मुक्तिदाता नपेखौं ६७९ तुम्हींसत्य
संधा तुम्हीं सत्यबाणी तुम्हीं अब्ययी आदिअंतावसानी । तुम्हीं

देवदाता तुम्हीं वेदधाता तुम्हीं सर्बत्राता अबादी सबानी ॥ तुम्हीं कौतुकी योद्धयो एककाया तुम्हीं दिग्गजौ दैत्यमानापमानी। नहीं दूसरो चारिषष्ठास हेरौं बदौं श्याम श्रीश्याम ज्ञानानुमानी ६८० तुम्हैं औहमैं कौनु एकत्व भासै तुम्हैं औहमैं द्वैतकोमूढ़ गावै। तुम्हैं औहमैं स्वामिऔ भृत्यदेखै तुम्हैं औ हमैं देवता पुंसभावै ॥ तुम्हैं औहमैं कोअनीमीश जानैतुम्हैं औहमैंबूझि आपैसमावै। तुम्हैं औहमैं जोनजाने महाराज सोई महामूढ़ द्वै पंथ धावै ६८१ तुम्हैं औहमैं गाइके बोधपावै तुम्हैं औहमैं ध्याय भेदेदुभावै। तुम्हैं औहमैं पूजिके जन्महारै तुम्हैं औहमैं यांचि दारिद्र दावै ॥तुम्हैं औहमैं वंदि बंदैनआनै तुम्हैं औहमैंएकही चित्तलावै। तुम्हैं औहमैं जोनजानै महाराज सोई महामूढ़ द्वैपंथधावै ६८२ तुम्हैं औहमैं बूझते द्वैतनाषै तुम्हैंऔ हमैंशोचते द्वैतआवै। तुम्हैं औहमैं सत्यऔ झूंठजानै तुम्हैं औहमैं धन्य बाणीसुनावै॥ तुम्हैं औहमैं एकही रूपदेखै तुम्हैंस्वामिजूजो हमैं त्यागि गावै। वहैसंत ज्ञानी गुणी ब्रह्मध्यानी न तौमूढ़भूलो दुवौपंथ धावै ६८३ करै जोई तूनाथ सोईभलीगाथ कोई नहीं साथमाया बसेरो। परो द्वारतेरे नजानौं द्वयीभाव याचौं न दूजो सदा दासतेरो ॥ इहां औउहां आषतेरी दयासिंधु पापी बड़ोहौं किधों मोहचेरो। बदौं दीनबाणी सुनो श्यामश्यामा गहौ बांहमेरी रहैमान मेरो ६८४ अहोनाथतारे कितेतारिहो सांचुमोकौंलखे क्योंगही मौनबानी। बड़ोभिक्षुहट्ठी टरौंगो न टारो सुभिक्षालहौं जोकितैधावखानी॥ नतौभी तजौं द्वाररैहोंपरो आरि बाढ़ी सुतैका करोगे अमानी। यहै शोचिके पोषिये सूनु श्रीश्याम दीजैबसेरो निजै राजधानी ६८५॥ दोहा ॥ समरथ सब विधिनाथतुम भाषतवेद किताब॥ मंगलको दुखदारिये अब न सहैनी ताब ६८६ जय श्रीगुरुजय श्यामजू जयतिसंत छलहीन ॥ जयतिसार बाणीकथन जय जन हरिपदलीन ६८७ उक्तियुक्तिकरि सप्तमत सारकहा चितलाय। मिळित सातहू विबुधजन बूझिहि बाणि सुभाय६८८

निजमत परमत बहुमती पक्षअपक्षबखान ॥ शिक्षामतसर्वांगयुतकियेसात परमान ६८८ समुझि सप्तमत संतजन बूझैसहित विवेक ॥ बूझभये सर्वाङ्गकी तजै बादिनीटेक ६८० मूढ़पढ़ै समुझै नहीं निंदककरै बिचार ॥ कीमति गुणजानेबिना ज्यों मणितजे गवांर ६९१ आतमबादी ब्रह्मबिद विज्ञानी जोप्रवीन ॥ सोसमुझेगो मुदितमन मणिजौहरि कबदीन ६९२ सत्यबस्तु औसत्यमत सत्यरूप सतकाय ॥ क्योंसमुझै मायाग्रसित कर्मबशी भव आय ६९३ गोपुरमें प्रभुशरणपरि जीवकृतारथ होत॥ इहांध्याय श्रीश्यामपद पावत परम उदोत ६९४ अपनी करणी सबतरै हरिकरणीसंसार ॥ मंगलयह जानेबिना मायाबश यमद्वार ६९५ जो अपनीमति मोहमय औसतसंग बिहीन ॥ तौ न बोधनीगाइये रहैभवस्थल दीन ६९६ राजाराम सुनामशुभ श्रीवासी कायस्थ ॥ बसतग्राम सरहीसदा निजमत कायासुस्थ ६९७ बुधगणेश तिनके तनय हरिसेवक अयकाल॥ तिनके सुत निजमत सुदृढ़ भये बिहारीलाल ६९८ महाशुद्धमति छलरहित तिनतन बकसीराम ॥ तिनको बालक मूढ़मति हौं मंगलममनाम ६९९ कियेकाव्य बहु हरिकथा ज्ञानमार्ग बिस्तारि ॥ बोधभये यह सप्तमत बरनो सुमन बिचारि ७०० ॥

महिगुणमयखगभूमियुत संवतआश्विनमास।
प्रतिपदशुक्लावाररवि पूरणग्रन्थनिवास ७०१ ॥

इतिश्रीमत्समस्तअज्ञानतिमिरसूरप्रकाशिकासर्वसिद्धान्त
सप्तशतिकामंगलदासविरचितासमाप्ता॥१ ॥

मुंशीनवलकिशोरके छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊमें छपी
जून सन् १८८६ ई०॥

—✱—

छोड़ने का फल, प्रीति,मान,बड़ाई के फल, अहंकार भ्रम और छलके बुरेफल, त्यागका बर्णन, सन्तोष, भय, आशा, निर्धनता, वैराग्यबिचार, प्रेम, नियम के फल ऐसेही अनेक विषय इसीमोक्षदायक पुस्तकमेंहैं ॥

बीजककबीरदाससटीक

जिसमें आदिमंगल,रमैनी,शब्द,ककहरा,बसन्त, चौतीसी,साखी इत्यादि अनेक दुःखी जीवों के उपकारक योग और उपासनादि मतका प्रकाश और श्रीरामचन्द्रजी के स्वरूप का ज्ञान है इसमें टीका महाराजाधिराज रीवां राज्याधिपति श्री १०८ विश्वनाथ वैकुण्ठवासीकी है यह अपूर्व पुस्तक भी युगलानन्यशरणजी के स्थानापन्न उन्हीं के पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीजानकी वरशरणजी के द्वारा व परिश्रम से प्राप्त हुई थी ॥

ब्रह्मप्रकाश

भगवत्प्रसाद रचित जिसमें बैराग्य, पुरुषार्थ, त्रिगुणयोग, उत्पत्ति चित्तत्रिपुटी पांचों अवस्था संक्षेपसे बर्णनकीगई हैं ॥

आनन्दामृतवर्षिणी

आनन्दगिरिरचित यहपुस्तक मानों बेदांत का मूलहै इसमें सब बेदांतकी बारीकियां लिखीहैं और हरमंत्रके समझनेके वास्ते कथायें भी साथ हैं ॥

युगलसम्बाद बोधप्रकाश

मुन्शीयुगलकिशोरजी रचित जिसमें योगवाशिष्ठादि वेदांतके ग्रन्थ से अध्यात्मबिचार वेदांतरूप कथनपूर्वक आत्मस्वरूपब्रह्मको लखायाहै ॥

सुन्दरविलास

श्रीपरमहंस- सुन्दरदासजी रचित जिसमें ज्ञान,भक्ति,वैराग्यपूर्वक नानाप्रकार के बिचार, तृष्णा छोड़ने के उपाय, धीर्य्य रखना,बिश्वास, नारी की निन्दा, मनका जीतना, नीति बिबेक स्वरूप, बिस्मरण की निषेधता,अद्वैत ज्ञान है ॥

सत्यनामविहारवृन्दावन

महात्मा वृन्दाबन जी आचार्यरचित जिसमें मनुष्यकेलिये अतिउपकारक पद्य में उपदेश और उनकी टीका, छहों शास्त्र और अपने

मतका आशय और उनमें अपनी मतिका प्राकट्य और उनके निर्णयके लिये दृष्टांतपूर्वक विचित्र कथा, वेदांतका परिपूर्ण आशय, नाद की उपासनाका परिणाम अंतमें चौपाई, छन्द, ककहरा, बिनती, बारहमासा, होली, रेखता आदि रागों में श्रीमद्भगवद्यश है इसमें सबों का विशेष करके उपकार है ॥

भगवद्गीता नवलभाष्य

जोकि सकल निगम, पुराण, स्मृति, सांख्यादि का सारभूत परमरहस्य है जिसको फ़र्रुख़ाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी ने गीता भाष्यानुसार संस्कृतसे देश भाषा में रचना किया जिसमें भगवद्गीता का मूलश्लोक उसके नीचे संस्कृत शंकरभाष्य तत्पश्चात् आनंदगिरि और श्रीधरस्वामि कृत टीका और सब से पीछे शंकरभाष्य का भाषानुबाद नवलभाष्य नाम से वर्णित है-इस पुस्तक को जिसने अवलोकन किया है अवश्यही उसने मोलली है यह पुस्तक देखने ही के योग्य है ॥

——*——

इश्तहार ॥

माहमार्च सन् १८८६ ई० से मुमालिक मग़रबी व शिमाली का बुक-डिपो इलाहाबाद क्यूरेटर बुकडिपो से मतबा मुन्शीनवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ में आ गया है इस बुकडिपो में मग़रबी व शिमाली एजूकेशनल बुकडिपो के सिवाय और भी हर एक विद्या की किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबों की ख़रीदारी की कुल शर्तें क़ीमत के सहित इस छापेख़ाने की छपी हुई फ़िहरिस्त में दर्ज हैं जो दरख्वास्त करने पर हर एक चाहनेवालों को बिला क़ीमत मिल सक्ती है जिन साहबों को इन किताबों का ख़रीदकरना होवे इसे ख़रीदकरें और फ़िहरिस्त तलबकरें ॥

द० मनेजर अवधअख़बार

लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज

——*——